जंगल के दावेदार

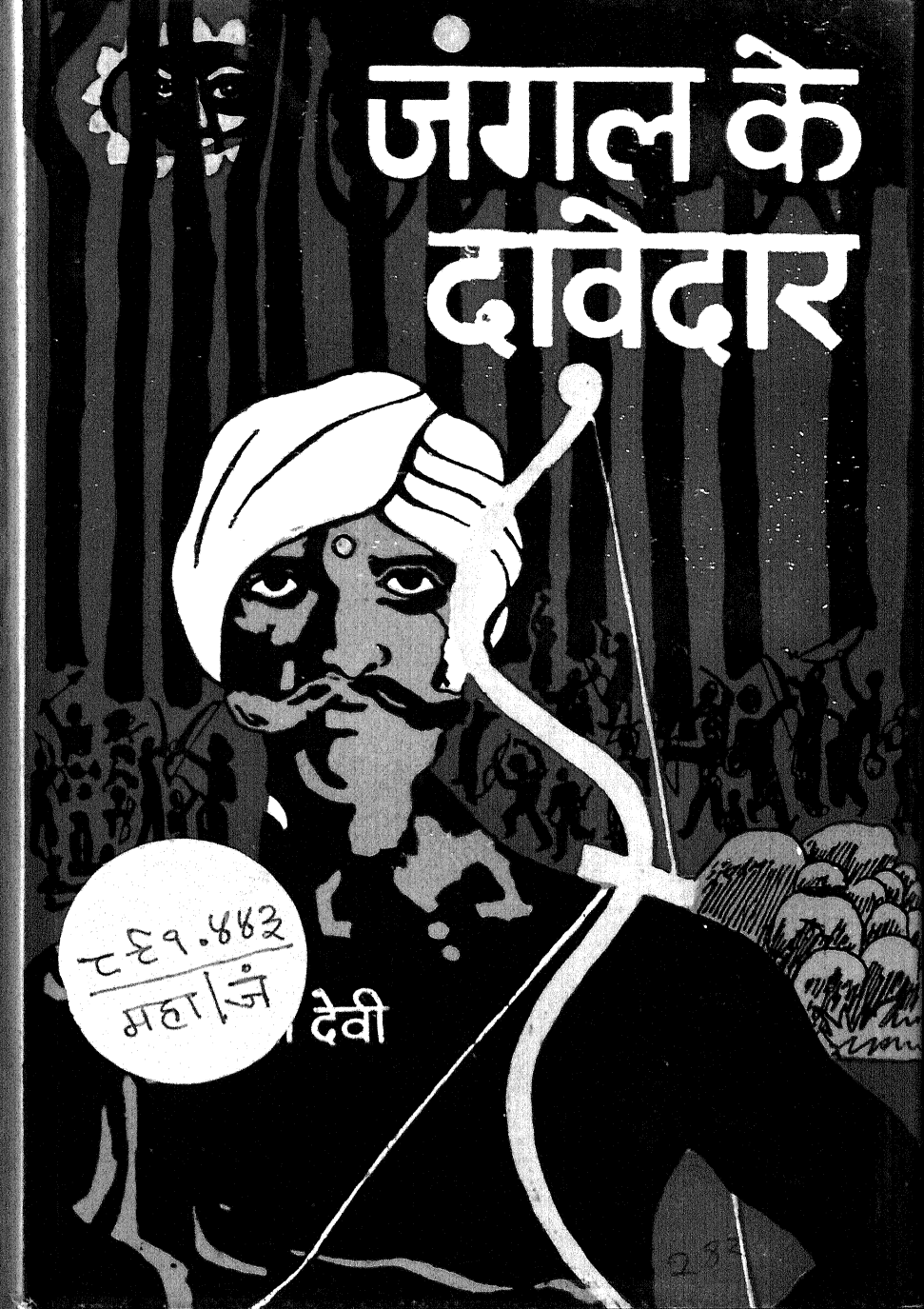

८९१.४४२
महा/जं

देवी

जंगल के दावेदार

बिहार के अनेक ज़िलों के घने जंगलों में रहनेवाली आदिम जातियों की अनुभूतियों, पुरा-कथाओं और सनातन विश्वासों में सिझी सजीव, सचेत आस्था का चित्रण !

जंगलों की माँ की तरह पूजा करनेवाले, अमावस की रात के अँधेरे से भी काले—और प्रकृति जैसे निष्पाप—मुंडा, हो, हूल, संथाल, कोल और अन्य बर्बर (?), असभ्य (?) जातियों द्वारा शोषण के विरुद्ध, और जंगल की मिल्कियत के छीन लिए गए अधिकारों को वापस लेने के उद्देश्य से की गई सशस्त्र क्रांति की महागाथा !

25 वर्ष का अनपढ़, अनगढ़ बीरसा उन्नीसवीं शती के अंत में हुए इस विद्रोह में संघर्षरत लोगों के लिए 'भगवान' बन गया था—लेकिन 'भगवान' का यह संबोधन उसने स्वीकार किया था उनके जीवन में, व्यवहार में, चिंतन में और आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में आमूल क्रांति लाने के लिए।

कोड़ों की मार से उधड़े काले जिस्म पर लाल लहू ज्यादा लाल, ज्यादा गाढ़ा दीखता है न ! इस विद्रोह की रोमांचकारी, मार्मिक, प्रेरक सत्यकथा पढ़िए—**जंगल के दावेदार** में। हँसते-नाचते-गाते, परम सहज आस्था और विश्वास से दी गई प्राणों की आहुतियों की महागाथा—**जंगल के दावेदार** !

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय
इलाहाबाद

वर्ग संख्या ८९१.४४३

पुस्तक संख्या महा/जं

क्रम संख्या १०७६४

जंगल के दावेदार

[आदिम जातियों के सशक्त विद्रोह की
मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत महागाथा]

राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित
महाश्वेता देवी की अन्य रचनाएँ

- 1084वें की माँ
- घहराती घटाएँ
- भटकाव
- दौलति
- ग्राम बांग्ला, भाग 1-2
- शालगिरह की पुकार पर
- श्री श्रीगणेश महिमा
- मूर्ति
- ईंट के ऊपर ईंट
- भारत में बंधुआ मजदूर
- अक्लान्त कौरव

जंगल के दावेदार

महाश्वेता देवी

रूपान्तर
जगत शंखधर

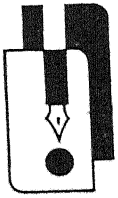

अंकुर प्रकाशन

दिल्ली-51

ISBN 81-7119-354-4

जंगल के दावेदार (उपन्यास)
© महाश्वेता देवी, कलकत्ता

पहला हिंदी संस्करण : 1981
चौथी आवृत्ति : 1997

मूल्य : 125 रुपये

प्रकाशक
अंकुर प्रकाशन
जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110 053

मुद्रक
तरुण प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110 032

JANGAL KE DAWEDAR (Novel) by Mahashweta Devi

भूमिका

भारतवर्ष के स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास में बीरसा मुंडा का नाम और विद्रोह अनेक दृष्टियों से स्मरणीय और सार्थक है। इस देश की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि में उसका जन्म और अभ्युत्थान केवल एक विदेशी सरकार और उसके शोषण के विरुद्ध नहीं था। यह विद्रोह साथ ही साथ समकालीन सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध भी था। इतिहास की इन सब विवेचनाओं से काटकर बीरसा मुंडा और उसके अभ्युत्थान की सही-सही विवेचना असंभव है।

लेखक के रूप में, समकालीन मनुष्य के रूप में एक वस्तुवादी ऐतिहासिक का समस्त दायित्व वहन करने में हम सदा ही प्रतिश्रुत हैं। दायित्व स्वीकार करने का अपराध समाज कभी क्षमा नहीं करेगा! मेरा बीरसा-केन्द्रित उपन्यास उसी प्रतिश्रुति का ही परिणाम है।

फिर भी उपन्यास की विधा सदा ही अपनी आंगिक रीति मानकर चलती है। इस उपन्यास का भी इसीलिए बीरसा की मृत्यु से अन्त होता है। किन्तु जीवन—विद्रोह—जो भी प्रचलित और प्रवाहित है—उसकी सचाई किसी काल में किसी भी देश में नेता की मृत्यु से समाप्त नहीं हो जाती। कालान्तर में उत्तराधिकार के पथ पर वह बढ़ता रहता है। विद्रोह से जन्म लेती है क्रान्ति। इस उपन्यास के अंत के बाद भी उपसंहार के संयोजन से यही अभीष्ट है।

इस उपन्यास को लिखने में सुरेशसिंह रचित Dust Storm and Hanging पुस्तक के प्रति मैं विशेष रूप से ऋणी हूँ। इस सुलिखित तथ्य-पूर्ण ग्रंथ के बिना 'जंगल के दावेदार' का लेखन संभव न होता।

'अरण्येर अधिकार' (मूल उपन्यास का बंगला नाम) वर्ष 1975 के 'बेतार जगत् पत्रिका' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पुस्तक उपन्यास का परिवर्धित, परिमार्जित और हिन्दी रूप है। पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक मेरे धन्यवाद के पात्र है।

—महाश्वेता देवी

डॉ० कुमार सुरेशसिंह को

9 जून, साल 1900। राँची की जेल।

सवेरे आठ बजे बीरसा खून की उलटी कर, अचेत हो गया। बीरसा मुंडा—सुगाना मुंडा का बेटा; उम्र पच्चीस वर्ष—विचाराधीन बन्दी। तीसरी फ़रवरी को बीरसा पकड़ा गया था, किन्तु उस मास के अन्तिम सप्ताह तक बीरसा और अन्य मुंडाओं के विरुद्ध केस तैयार नहीं हुआ था। उस समय मुंडा लोगों की ओर से बैरिस्टर जेकब लड़ रहे थे। वह अब भी लड़ रहे हैं। बीरसा को पता था कि जेकब उनकी ओर से लड़ेंगे। बीरसा को पता था कि जेकब को उसके लिए लड़ना न पड़ेगा। क्रिमिनल प्रॅसीजॅर कोड की बहुत-सी धाराओं में बीरसा को पकड़ा गया था, लेकिन बीरसा जानता था कि उसे सजा नहीं होगी।

भोला बीरसा अनजान है, लेकिन वह एक तसवीर के बाद दूसरी तसवीर—इसे पहचान सकता है—सब देख सकता है। भात मुंडा लोगों के जीवन में स्वप्न ही बना रहता है। घाटो[1] एकमात्र खाद्य है जो मुंडा लोगों को खाने को मिलता है। इसी से भात का मिलना एक सपना बना रहता है। किसी-न-किसी तरह भात के सपने ने ही बीरसा के जीवन को नियंत्रित कर रखा था। अधिकतर समय बीरसा की ज़ोरों की शिकायत रहती है 'मुंडा केवल घाटो ही क्यों खायें? दिकू[2] लोगों की तरह वे भात क्यों न खायें?' और भात राँधा था, इसलिए तीसरी फ़रवरी को बीरसा पकड़ा गया। बीरसा सो रहा था। औरत भात पका रही थी। नीले आकाश में धुआँ उठ रहा था, बीरसा नींद की गोद में था; तभी लोगों ने उठता हुआ धुआँ देख लिया।

उसके बाद बनगाँव—उसके बाद खूंटी—उसके बाद राँची। बीरसा के

---

1. मिला-जुला मोटा अनाज।
2. गैर-आदिवासी; आदिवासियों का शोषण करने वाले।

हाथों में हथकड़ियाँ थीं; दोनों ओर दो सिपाही थे। बीरसा के सिर पर पगड़ी थी; धोती पहने था। बदन पर और कुछ नहीं था—इसी से हवा और धूप एक साथ चमड़ी को छेद रहे थे। राह के दोनों ओर लोग खड़े थे। सभी मुंडा थे। औरतें छाती पीट रही थीं; आकाश की ओर हाथ उठा रही थीं। आदमी कह रहे थे : 'जिन्होंने तुम्हें पकड़वाया है वे माघ महीना भी पूरा होते न देख पायेंगे। वे अगर जाल फैलाये रहते हैं तो उस जाल में पकड़े शिकार को उन्हें घर नहीं ले जाने दिया जायेगा।'

किन्तु बीरसा उन पर ख़फ़ा नहीं होगा। पकड़वा दिया; क्यों न पकड़वा देते ? डिप्टी-कमिश्नर ने उन्हें गिनकर पाँच सौ रुपये नहीं दिये क्या ? पाँच सौ रुपये बहुत होते हैं ! किसी भी मुंडा के पास तो पाँच सौ रुपये कभी नहीं हुए; नहीं होते। मुंडा अगर रात में सोते-सोते सपना भी देखता है तो सपने में बहुत होता है तो वह महारानी[1] मार्का दस रुपये देख पाता है। उन्हें पाँच सौ रुपये मिले हैं—क्यों न बीरसा को पकड़वा देते ?

असल में बीरसा को अपने ऊपर गुस्सा आ रहा था। नींद क्यों आ गयी ? नींद न आ जाती तो वह जागता रहता। आग जलाकर भात न राँधने देता। जब आग न सुलगती, आसमान में धुआँ न उठता, कोई भी देख या जान न पाता ! राह चलते-चलते बीरसा के मन में हो रहा था—इस समय भी अचेत बीरसा के मन में आया—वह आग उन्होंने बुझा तो दी थी न ? मुंडा लोगों को कम ही ध्यान रहता है। धक-धक जलती आग से जंगल जल जाता है, दावानल लपलपाकर फैल जाती है, और बरसों के लिए जंगल सूखा, और बड़ा गरम हो जाता है। इसी से तो बीरसा ने 'उलगुलान'[2] में सब-कुछ अच्छी तरह जला डालना चाहा था। उलगुलान की आग में जंगल नहीं जलता; आदमी का रक्त और हृदय जलता है ! उस आग में जंगल नहीं जलता ! मुंडा लोगों के लिए जंगल नये सिरे से माँ की तरह बन जाता है—बीरसा की माँ की तरह; जंगल की संतानों को गोदी में लेकर बैठता है।

इसीलिए तो बीरसा ने जंगल का अधिकार चाहा था !

वह जंगलों को दिकू लोगों के अधिकार से छीन लेगा। जंगल मुंडा लोगों की माँ है और दिकू लोगों ने मुंडा लोगों की जननी को अपवित्र कर रखा है। बीरसा ने उलगुलान की आग जलाकर माँ-जंगल को शुद्ध करना

1. महारानी विक्टोरिया।
2. बीरसा मुंडा द्वारा संचालित आंदोलन।

चाहा था। उसके बाद मुंडा और हो, कोल और संथाल उरांव लोगों ने जंगल के स्वामित्व का दावा, छोटा नागपुर के अरण्य का अधिकार, पलामू, सिंहभूम, चक्रधरपुर—सारे जंगलों का अधिकार चाहा था जिससे वे माँ की गोद में फिर से पसर सकें।

बीरसा समझ गया कि अब वह चला जायेगा, क्योंकि आज ही सवेरे उसने खून की बड़ी भयानक क़ै की थी। अचेत होते-होते भी अपने खून का रंग देखकर बीरसा मुग्ध हो गया था। खून का रंग इतना लाल होता है! सबके ही खून का रंग लाल होता है; बात उसे बहुत महत्व की और ज़रूरी लगी। मानो यह बात किसी को बताने की ज़रूरत थी! किसे बताने की ज़रूरत थी? किसे पता नहीं है? अमूल्य को पता है, बीरसा को मालूम है, मुंडा लोग जानते हैं। साहब[1] लोग नहीं जानते। जेकब जानता है। लेकिन जेल का सुपरिटेंडेंट, डिप्टी-कमिश्नर—ये लोग नहीं जानते। नहीं जानते—इसलिए न वे लोग फ़ौज की टुकड़ी, और बन्दूक, और तोप लेकर लँगोटी लगाये तीर-बरछा-बलोया[2] और पत्थर का सहारा लेने वाले मुंडा लोगों को मारने आये थे। बीरसा अगर बोल सकता तो कह जाता : साहब लोगो! खून के रंग में कोई अंतर नहीं होता। मारने पर जितनी तुमको चोट लगती है, मुंडा लोगों को भी उतनी ही लगती है। मुंडा लोगों के जीवन पर तुम लोगों ने ज़बरदस्ती अधिकार जमा लिया है। उस अधिकार को छोड़ने में तुमको जैसा लगता है, जंगल की आबाद जमीन को दिकू लोगों के हाथों में देते मुंडा लोगों को भी वैसा ही लगता है।

किन्तु बीरसा कुछ कह न पाया। वह आँखें नहीं खोल पाता है—किसी ने अंदर जैसे महुआ के तेल की मशाल और ढिबरी बुझा दी हो। जैसे कोई बीरसा को हिला रहा है। कह रहा है : सो जाओ, सो जाओ, सो रे।

सवेरे आठ बजे बीरसा खून की क़ै करके अचेत हो गया। उस समय राँची जेल की हर कोठरी में रोना सुनायी पड़ा था, लेकिन राँची जेल के सुपरिटेंडेंट साहब ने उस पर ध्यान नहीं दिया। सब समझ रहे हैं कि

1. अंगरेज।
2. एक ख़ास आकार का फरसा।

बीरसा मर जायेगा। लेफ़्टिनेंट-गवर्नर को क्या खबर देंगे, वह इस बात की सोच में हैं। जल्दी-जल्दी घड़ी देख रहे थे। इस आदमी का शरीर आश्चर्य-जनक रूप से शक्तिशाली था। मई महीने की तीस तारीख से भोग रहा है, तो भोगता ही जा रहा है। फ़रवरी से अकेला एक कोठरी में बन्द है। फ़रवरी के पहले बहुत दिन तक पहाड़ों, जंगलों में भागा-भागा फिरता था। खाने-पीने को कभी क्या मिला—यह वही जाने! शरीर टूटता नहीं, मरता नहीं। अब उसे मर जाना चाहिए। नहीं तो प्रमाणित हो जायेगा कि बीरसा सचमुच भगवान है। भगवान न होता तो इतने दिनों में वह मर ही जाता!

सवेरे नौ बजे बीरसा मर गया। जेल के सुपरिंटेंडेंट हाथ में घड़ी लिये खड़े थे। बीच-बीच में उसकी नब्ज देख रहे थे। वह क्षीण, बहुत क्षीण थी। बीरसा की आँखें बंद थीं—कपाल कुछ सिकुड़ा हुआ। ऐंडरसन कुतूहल-वश झुके।

अब झुका जा सकता है। जिन गोरे हाथों, गोरी चमड़ी से वह घृणा करता था, वही हाथ उसके चिपचिपाते कपाल, गाल को छूते हैं। उसका चेहरा छूकर ऐंडरसन को आश्चर्य की अनुभूति हुई। यही बीरसा है, जिसके लिए दो जिलों की पुलिस और सेना भाग-दौड़ कर कर रही थी? सुकुमार सुन्दर चेहरा! कौन कहेगा कि मुंडा का लड़का है? इस समय उसके मुंह पर मौत की छाया है। ऐंडरसन ने उसकी नाड़ी को टटोला। नौ बजे के लगभग नाड़ी क्षीण होते-होते रुक गयी। सहसा शरीर लुढ़क गया। कपाल की रेखाएँ मिट गयीं। मुख शांत और स्थिर हो गया। मृत्यु के सिवा और कोई भी शक्ति या घटना बीरसा मुंडा के शरीर में ऐसी अनन्य शांति नहीं ला सकती थी!

नौ बजे वह मर गया। उस समय उसके हाथ-पैर की जंजीरें खोल दी गयीं। जीवित रहने पर इस साथी-रहित कोठरी में जब वह अनजान, बिना चिकित्सा के बीमारी भुगत रहा था, उस समय जंजीरें खोलना संभव नहीं हुआ था। उस पर किसी को विश्वास ही नहीं होता था। संथालों का 'हूल'[1] नहीं, सरदारों की 'मुल्की लड़ाई' नहीं—बीरसा ने हाँक लगायी थी—उलगुलान की, एक बड़े भारी विद्रोह की।

मर गया बीरसा। उस समय उसके शरीर से जंजीरें खोल दी गयीं। मुंह

1. संथालों द्वारा चलाया गया 1855 का एक आंदोलन।

से खून पोंछ दिया गया। उसे बाहर ले आया गया। एक-एक कर उन सब लोगों को भी बाहर लाया गया—मुंडा क़ैदियों को। भरमी, गया, सुखराम, डोन्का, रमई, गोपी—चार सौ साठ-सत्तर बन्दियों को बाहर आने में समय लगता है—कमर, हाथ-पैरों की जंजीरें साथ ही खींचकर लाने में समय लगता है। उसके सिवा आकाश तो अभी भी तप रहा है। जून महीने की भीषण गरमी में लोहे की बोझल जंजीरों से झुके काले शरीरों की गति भी श्लथ हो जाती है।

इसीलिए उनके आने में समय लग गया—बीरसा के शरीर का एक चक्कर लगाकर वापस चले जाने में। ऐंडरसन का धीरज टूट रहा था। वही जेल के सुपरिंटेंडेंट और सरकारी डॉक्टर भी हैं। बीरसा का शरीर काटना-कूटना होगा! उसके पहले खसखस के पंखे वाले कमरे में बैठकर ठंडे होने होने की ज़रूरत है—ठंडी बीयर पीने की और भी ज़्यादा ज़रूरत है! राँची ज़िले से दूर की जेल में उन्हें तकलीफ़ होती थी। लेकिन यह मुंडा लोग आसानी से दबाये नहीं जाते। किसी तरह आँखें भी नहीं उठाते। आँखें नीची किये वे लोग अपने भगवान को देखकर चलते जाते हैं! मृत ईश्वर के शरीर को घेरकर जंजीरों से बँधे काले, लँगोटी वाले क़ैदी चल रहे हैं, परिक्रमा करके चले जाते हैं। सब चले गये; एक ने भी शनाख्त नहीं की। नहीं कहा : हाँ, यही हमारा बीरसा, भगवान है।

'शनाख्त करो। शनाख्त करो!' ऐंडरसन ने चिल्लाकर कहा।

हाँ, एक आदमी रुक गया। कपाल पर किरच से लगा घाव है—उसी से जाना, यह भरमी मुंडा है। नहीं तो इनमें हर एक का चेहरा, काले-काले मुँह, ऐंडरसन को एक-से लगते हैं। भरमी खड़ा है, देख रहा है।

'कौन है? किसे देख रहा है?'

भरमी कुछ बोला नहीं, खड़े-खड़े थोड़ा झूलने लगा। उसके बाद, जैसे उसके अंदर से गाना फूट पड़ा हो। दुर्बोध, मुंडारी भाषा का गाना, रोने का-सा स्वर, मंत्रोच्चार-सा गंभीर स्वर! भरमी बोला :

हे ओते दिसुम सिरजाओ
नि' आलिया आनासि
आलम आनदूलिया।
आमा' रेगे भरोसा
बिश्वास मेना।[1]

1. हे पृथ्वी के स्रष्टा, हमारी प्रार्थना व्यर्थ मत करो। तुम पर हमारा पूर्ण विश्वास है।

अर्थहीन आक्रोश से उबलकर एंडरसन बोला : 'हटाओ, हटाओ।' वार्डर ने भरमी को धक्का दिया। वे सब चले गये।

नौ जून को बीरसा सवेरे नौ बजे मर गया, लेकिन शाम को साढ़े-पाँच बजे के पहले सुपरिंटेंडेंट मुआयना न कर सके। मुआयना करके लिखा : 'पाकस्थली जगह-जगह सिकुड़कर ऐंठ गयी है। क्षीण होते-होते छोटी आँतें बहुत पतली पड़ गयी हैं। बहुत परीक्षा करने पर भी पाकस्थली में विष नहीं मिला।' यहाँ तक लिख कर उठे—हाथों में ओ-डि-कलोन लगाया। हाथ सूँघे। सुगंधित साबुन से नहाने के बाद भी शरीर से बीरसा की गंध नहीं जा रही थी। ताज्जुब है! फ़ार्मलीन और स्पिरिट से पोंछे हुए शरीर से भी सड़ाँध की हलकी बू निकल रही थी। शरीर का सड़ना बिलकुल शुरू होने के वक़्त इस तरह की गंध निकलती ही है!

सुपरिंटेंडेंट ने लिखा : 'खूनी पेचिश के बाद हैज़ा हो जाने से बड़ी आँत का ऊपरी हिस्सा सिकुड़कर जुड़ गया। परिणामस्वरूप ड्यूडिनम की बायीं ओर ख़ून बहा है और धीरे-धीरे निस्तेज होकर बीरसा मर गया।' उसके बाद सोचकर देखा, बीरसा ने कभी जेल के बाहर एक बूँद पानी भी नहीं पिया। हैज़े की बात लिखी, इससे मन कचोटने लगा। अंत में लिखा : 'क़ैदी को किस तरह हैज़ा हो गया, यह पता नहीं लगा।' लिखते-लिखते सिर उठाया : 'कौन?'

'मैं।' मुआयने के कमरे का डोम आ खड़ा हुआ।

'बाबू कह रहे थे...।'

'कौन बाबू?'

'डिप्टी बाबू।'

'क्या कहता था?'

'उसका क्या होगा?'

'किसका?'

'भगवान का।'

'भगवान का? वह क्या तुम्हारा भी भगवान है? तुम क्या मुंडा हो?'

'नहीं।'

'नहीं तो भगवान मत कहो।'

'ना हुजूर, नहीं कहूँगा।'

'क्या कहता था?'

'भगवान का क्या होगा?'

'चुप रहो !'
'हाँ, हुजूर।'
'ठीक से बताओ।'
'भगवान के शरीर का क्या होगा ?'

ऐंडरसन का शरीर और मन जैसे पराजय की ग्लानि से अवसन्न हो गया। जो बन्दूक लेकर बीरसा के साथ लड़े थे, उनकी लड़ाई ख़त्म हो गयी। जो बीरसा को बाँधकर ले आये थे, उनकी लड़ाई समाप्त हो गयी। उनके साथ बीरसा क्यों नहीं लड़ाई खत्म कर रहा है ? उन्होंने क्या किया है ? उसे सूनी कोठरी में रखा था ? उसके हाथ, पैर और कमर को ज़ंजीरें बाँधकर रखा था—और क्या किया था ?यह लड़ाई किसलिए है ?क्यों मुंडा लोगों ने बीरसा को बीरसा बताकर शनाख्त नहीं की ? क्यों उनकी नौकरी में लाश-घर का यह नगण्य डोम बीरसा को 'भगवान' कहे जा रहा है ?

'जाओ, डिप्टी बाबू को भेज दो।'
'बाबू आये हैं।'
'अन्दर आने को कहो।'

डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट अमूल्य बाबू आये। उम्र कम थी। देखने में और भी कम लगती थी। लड़के की बातचीत और व्यवहार संयत और भद्र था। साहब के आगे मुँह बन्द कर खड़े रहने की उसकी आदत थी। फिर भी ऐंडरसन के मन में आया करता था कि बीरसा के विद्रोह की खबरें कलकत्ता में 'अमृतबाज़ार पत्रिका', 'द बेंगाली' और 'द हिन्दू पेट्रियट' अख़बारों में वही भेजता है। मन में ऐसा आता था, पर प्रमाण कुछ नहीं था। लगता था कि उसके मन में मुंडा-क़ैदियों के प्रति बड़ी सहानुभूति है। नहीं तो हर कोठरी में जिस तरह पीने के पानी का इन्तज़ाम ठीक-ठीक रहे, उसके लिए वह इतना मुस्तैद क्यों रहता है ? क्यों क़ैदियों को नहाने के लिए वह दो लोटे पानी की जगह दस लोटे पानी का इंतज़ाम करता था ? क्यों बात-बात में 'जेल कोड बुक' लाकर कहता है : 'सर, इसमें लिखा है, उन्हें पेट-भर खाने लायक चावल किचन से देना होगा !'

लगता है, पर प्रमाण कुछ नहीं है। डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट, क्रिस्तान लड़का। अच्छी तनख़्वाह पाता है। लेकिन राँची शहर में हमेशा मुहल्ले-मुहल्ले घूमता है, सबके साथ मिलता-जुलता है; समाज-सेवा करने जाता है।
'क्यों, अमूल्य बाबू।'

लड़का अजीब है। सिर्फ़ 'बाबू' कहने से ख़फ़ा हो जाता है। एक दिन उनसे कहा था, बहुत मीठे ढंग से हँसकर ही कहा था : 'ख़फ़ा होना ठीक नहीं है, यह मैं जानता हूँ। लेकिन जो यह सुना था कि 'बाबू' शब्द 'बैबून'[1] से बना है, इससे सिर्फ़ बाबू सुन कर अजीब-सा...!'

ऐंडरसन ज़्यादा कुछ न कह सके, क्योंकि अगर गुस्सा हो जाते है—अगर वह सचमुच कलकत्ता के उन निक्कमे अख़बारों में छिपाकर खबरें भेजना शुरू कर दे तो मुश्किल होगी। देसी अखबारों का उतना डर नहीं है, डर है बैरिस्टर जेकब से। वह आदमी अंगरेज़ है, लेकिन मुंडा लोगों की ओर से बिना पैसे के लड़ता है। इस बार भी उनका वकील बनकर लड़ने आ रहा है। मुंडा लोग उनके ही अधीन जेल की हवालात में हैं। जो उनके विरुद्ध जाये, ऐसी एक खबर पाकर भी जेकब उन्हें छोड़ेगा नहीं।

ऐंडरसन बोले, 'क्यों, अमूल्य बाबू ?'

'मृत के अंतिम संस्कार के बारे में निर्देश नहीं मिले।'

'सो ?'

'क्या करना होगा ?'

'किस तरह अंतिम संस्कार होगा ? उनके यहाँ का रिवाज तो समाधि देने का होता है।'

'जेल की हवालात में बिना मुक़दमे के रखे किसी कैदी के अचानक हैजे से मर जाने पर जिस तरह अंतिम संस्कार करना होता है, वैसा ही अंतिम संस्कार करना पड़ेगा। निश्चय ही सरकारी अंत्येष्टि क्रिया की व्यवस्था नहीं होगी। निश्चय ही यह कोई खास मामला नहीं है !'

पराजय, पराजय ! ऐंडरसन क्या वास्तव में इस मामले को ख़ास समझते हैं ? मन की बात छिपा देना चाहते हैं—इसीलिए इतना चीख़ते-चिल्लाते हैं ! अमूल्य बाबू के चेहरे को देखकर कुछ समझ में नहीं आया।

'ऑलराइट, सर।'

'और कुछ कहना है ?'

'क्या उसका भाई कनू मुंडा आग देगा ?'

'ओ नो ! कभी नहीं। बहुत-से बीरसाइत[2] अगर अंतिम संस्कार

1. दक्षिण अफ्रीका का बंदर।
2. बीरसा के अनुयायी।

देखेंगे तो उसी वक़्त जाकर क़िस्से फैलाना शुरू कर देंगे। वे कहते फिरेंगे कि धूमधाम से बीरसा को जलाया गया। उसके बाद तरह-तरह की कहानियाँ गढ़ेंगे। मैं, मैं बीरसा के बारे में और क़िस्से नहीं सुन सकता!'

अमूल्य बाबू का चेहरा पत्थर की तरह हो रहा था। बिलकुल सपाट।

'तुम्हारे लिए भी उन सब बातों को ठीक मान लेना ठीक नहीं है। तुम पढ़े-लिखे हो। तुम हमारे धर्म के हो। देखो, मैं आज कई बरसों से बीरसा के नाम के क़िस्से सुनते-सुनते...क़िस्से सुनते-सुनते...लेकिन अब, इसके पहले भी वह इस जेल में ही था। तुमने भी देखा कि वह एक मामूली आदमी था, एक साधारण मुंडा, हैज़े में मर गया तो क्या...?'

'हम लोग क्या कोठरी को कार्बोलिक से धोएँगे?'

'कार्बोलिक? क्यों? क्या पागल हो गये हो?'

'लेकिन सर, हैज़े तो छुतहा रोग है न!'

'हैज़ा? हैज़े का तुमको कहाँ से खयाल आया?'

'आपने ही तो कहा कि बीरसा हैज़े से मर गया।'

ऐंडरसन का जबड़ा कुछ देर तक हिलता रहा। उसके बाद प्रतिकार करते हुए जैसे रुखाई से बोले, 'हाँ। मैंने ही कहा था—बीरसा हैज़े से मरा। मैं कहता हूँ कि वह कहाँ से हैज़ा ले आया, यह समझ में नहीं आता। मैं कहता कि कार्बोलिक से कोठरी धोने की ज़रूरत नहीं है। मैं कहता हूँ कि उसका अंतिम संस्कार जेल के मेहतर करेंगे। एक भी बीरसाइत संस्कार न देख सके—नोट करो—एक भी बीरसाइत संस्कार न देख सके। देखने से वे तरह-तरह के क़िस्से फैलायेंगे, और जेकब कहेगा कि अभागे मुंडा का संस्कार देखने को बाध्य करके जेल के अधिकारी लोगों ने मृत देह का अपमान किया! अब सब साफ़ हो गया?"

'समय?'

'जेब में घड़ी नहीं है?'

'संस्कार का समय?'

'और भी अँधेरा हो जाने पर।'

'मैं जाऊँगा क्या?'

'नो। यह मेरा ऑर्डर है।'

'राइट, सर।'

'तुम काम में बहुत ज्यादा फँसे रहते हो। तुम छुट्टी लेकर घर घूम आओ न! कब मुक़दमा शुरू हो, इसका क्या कुछ ठीक है?'

'मेरे जाने की कोई जगह नहीं है, सर। मैं अनाथाश्रम का लड़का हूँ।

राँची के अनाथाश्रम का।'

'जाओ, अभी जाओ।'

'येस, सर।'

अमूल्य बाबू उसी तरह भावहीन, सपाट चेहरा लेकर निकल आये। जेल के एक ओर उनका क्वार्टर था। वे सीधे घर आये। शिब्बन मेहतर उनके कमरे के फ़र्श पर झाड़ू लगा रहा था। शिब्बन की ओर देखे बिना ही अमूल्य बाबू बोले : 'और रात को दाह होगा। क़बर नहीं होगी। मेहतर लोग दाह करेंगे। जाना हो तो अभी से जेल में जाना ठीक रहेगा।'

'हाँ, सर।'

'मैं साहब नहीं हूँ।'

'हाँ, बाबू।'

शिब्बन चला गया। अमूल्य बाबू ने एक काग़ज़ पर लिखा : बीरसा मुंडा पहले बीमार पड़ा 1900 की 30 मई को। 1900 की 20 मई को सिंहभूम का एक अन्य विचाराधीन क़ैदी राँची जेल में ही हैज़े से मर गया। बीरसा ने जेल से अदालत जाने के रास्ते में गार्डों की मदद से बोनपोर में मिला प्रसाद खाया था। बीरसा के संबंध में सरकारी विवरण तैयार हो गया है। उसमें कहा गया है कि जेल से कचहरी जाने के रास्ते में बीरसा ने भी बाहर कुछ खा लिया था। लेकिन गार्ड और क़ैदियों से कड़ी जिरह करने पर पता चल सकता है कि बीरसा ने सिर्फ़ माथा और गरदन धोने के लिए पानी माँगा था—और वह पानी भी हवलदार के लोटे से। पानी लेते-न-लेते कमर की ज़ंजीर खींच कर गार्ड ने कहा था : 'वक़्त हो गया है।' इसलिए बीरसा ने वह पानी भी इस्तेमाल ही नहीं किया!

फिर कुछ और सोचकर लिखा : 30 मई से ही बीरसा की तबीयत ख़राब लग रही थी। बीमारी की हालत में उसकी चिकित्सा और पथ्य, सबका निर्णय ख़ुद जेल-सुपरिंटेंडेंट ने किया था।

अमूल्य बाबू ने काग़ज़ को लिफ़ाफ़े में बन्द किया। ऊपर बैरिस्टर जेकब का नाम और पता लिखा। पिछली बार जब बीरसा पहली बार क़ैद हुआ था तो उसके साथ अमूल्य बाबू की कलकत्ता में बातचीत हुई थी। बीरसा ने अगर शोहरत पायी थी तो जेकब भी कम नहीं हैं। कितने दिनों से वह कोल, ओराँव, मुंडा लोगों की तरफ़ से लड़ रहे हैं, यह वह स्वयं ही बता सकते हैं।

'तुम मेरी मदद क्यों करते हो, बाबू ?'

सब ही अमूल्य बाबू को बाबू कह सकते हैं, उन्होंने सबको अधिकार दे दिया है, सिर्फ़ ऐंडरसन के लिए इसकी सख़्त मनाही है। जेकब की बात का उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

'क्यों सहायता करते हो ?'

'मेरा नाम मत बताइयेगा।'

'तुम बहुत दुस्साहस का, या नासमझी का काम कर रहे हो !'

'पता नहीं।'

'इसे पागलपन भी कह सकते हैं। अब डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट हो गये हो, या अभी पक्के नहीं हुए हो ?'

'शायद हम सभी कुछ-कुछ पागल हैं। डी०एस०[1] का काम कर रहा हूँ; पक्का हो जाऊँगा।'

'तुम राँची के लड़के हो न ?'

'हाँ।'

'यहीं स्कूल-कॉलेज में पढ़ा है ?'

अमूल्य बाबू ज़रा चुप रहकर बोले, 'चाईबासा में जर्मन मिशन के स्कूल में मैं बीरसा का सहपाठी था।'

'ओ ! लेकिन उसी कारण तुम मुंडा लोगों की सहायता क्यों करते हो—यह समझ में नहीं आता।'

'समझने-समझाने को कुछ नहीं है।'

अमूल्य बाबू ने अब बाहर अँधेरे की ओर देखा। चौदह बरस, या पंद्रह बरस की बात है। बीरसा दाऊद बहुत राह चलकर क्षत-विक्षत, पैदल ही चाईबासा के स्कूल गया था।

अमूल्य बाबू ज़रा हँसे। जेल में मुलाक़ात होने पर बीरसा ने उसे जान-बूझकर नहीं पहचाना—उस बार नहीं, इस बार भी नहीं।

रात के आठ बजे के लगभग काठ की खटुलिया पर बीरसा का मुआयना

1. डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट।

हुआ, सिलाई किया शरीर लेकर मेहतर बाहर आये। रात को, मुंडा क़ैदियों ने रात का खाना नहीं खाया। हर कोठरी में ठुसे हुए, भयंकर गरमी में उबलते-उबलते हुए भी वे गा रहे थे। उस गाने का सुर रोने की तरह का था। और गाने की भाषा थी दुर्बोध—जंगल की छाती पर जोरों से बहती आंधी की भाषा की भाँति ही आदिम। वह गीत किसी मंत्र की तरह गंभीर था!

लाश-घर के संतरी, पुलिस, गार्ड, शव ढोने वाले मेहतर—सभी ने वह गाना सुना और एक-दूसरे की ओर देखा। बेचैनी से उनका मन घुट गया। आज की रात की गरमी की तरह ही घुट गया उनका दबा हुआ डर, क्षोभ, दुःख। क्यों यह भय है, क्यों क्षोभ है, क्यों दुःख है? क्या हुआ है? एक विचाराधीन क़ैदी मर गया है न! लेकिन मुंडा क़ैदियों को बिना विचार के जानवरों की तरह बंद रखना, उसी हालत में बीच-बीच में उनकी मौत हो जाना, ऐसा क्या पहले नहीं हुआ?

इस तरह तो होता ही रहता है। बीच-बीच में होता है। आज शायद गरमी बहुत ज़्यादा है। आज सूखा तो दो बरस से चल ही रहा है। उस पर बीरसा के उलगुलान की आंच से भी तो सब सूख गया है। मन में विवेचना, विचार—सब उलगुलान की गरमी में जल गये हैं। ऐसे भस्म होकर जल गये हैं कि किस तरह मुंडा क़ैदी छोटी-छोटी कोठरियों में बदन-से-बदन रगड़कर जानवरों की तरह दीवार के कुंडों से ज़ंजीर से बंधी हालत में पड़े हैं, इसकी किसी को फ़िक्र नहीं। कोई भी तो नहीं सोचता कि शरीर पर लगे गोली के ज़ख्म से, उस ज़ख्म के सड़ने और बुखार से सुनारा मुंडा किस तरह बिना इलाज मर रहा है।

लेकिन अब? बीरसा का शरीर उठाकर जेल से बाहर निकालने में जैसे आग की तरह गरम हवा काटकर फेंक रही हो—सबको ऐसा डर लगा। शिब्बन मेहतर बोल पड़ा: 'यह कैसा हो गया है रे? जात का आदमी, धरम का आदमी कंधा देगा कबर देगा। यह क्या हो रहा है?'

'चुप कर, शिब्बन।'

'तुम कह क्या रहे हो सिपाही साहब, यह तो बहुत पाप हुआ है न?'

सिपाही मुनेश्वरप्रसाद बोला: 'पाप होगा तो साहब को होगा। हम तो हुक्म के नौकर हैं।'

'बाप है, माँ है, भरी जवानी का लड़का है तू। बता तो, मरने क्यों गया?'

'उसका बाप जंगली जात है, जंगली अकल है। मेरे दादा ने क़ानून की मंजूरी से जमीन ख़रीदी, तो बोला, हमें क्यों उखाड़ फेंका? कहा, तुम

लोग भी दिकू हो। क़ानून नहीं समझता था, अदालत नहीं समझता था, जज क्या कहता है, वह नहीं समझता था। बस कहता था, क्यों ? क्यों जमीन छोड़ें ? जंगल हमारा नहीं है ? ले शिब्बन, यह लालटेन ले ! तुम लोग चले जाओ।'

'तुम कोई नहीं आओगे ?'

'न, हरमू नदी तो वह उधर है; जा, चला जा।'

'बड़ा अँधेरा है जी।'

'अँधेरे में जा, चुपचाप जा। किसी को पता न लगे—किसे जलाया, कहाँ जलाया।'

'उसे उन्होंने भगवान कहा था !'

'बड़ा साहब और भी बड़ा भगवान है, शिब्बन।'

'हरमू में पानी नहीं है।'

'पानी का क्या करेगा ? चिता धोयेगा ? आग लगाकर मत चले आना। ख़तम देखकर आना।'

शिब्बन आदि ने देखा कि सिर्फ़ वे ही रह गये हैं—संतरी, सिपाही, गार्ड, सभी लौटे जा रहे हैं। वे चलने लगे। जमीन में, हवा में, अंधकार में बड़ी गरमी है। उनकी बातचीत अपने-आप बंद हो गयी। चुपचाप चलते-चलते शिब्बन को लगा कि उन्होंने भगवान को एक नया कपड़ा तक नहीं दिया !

चिता सजाने में बहुत देर न हुई। लकड़ी नहीं थी। सिर्फ़ सूखे गोबर के कंडे थे। धरमू ने सिर झुकाकर कहा : 'यह अधर्म है। हम जात-पात के आदमी नहीं हैं। बीरसा के मुँह में आग नहीं दी गयी, उसका स्नान नहीं हुआ। कबर नहीं हुई, पुरोहित नहीं आया। लकड़ी से जलता। राँची में क्या लकड़ी का कोई अकाल है ?'

'लो भाई, जल्दी-जल्दी उठाओ। शायद सड़ गया है।'

बीरसा को चिता पर लिटाते-लिटाते धरमू बोला, 'कैसा हैज़ा हुआ, किसी को पता ही न चला !'

'लो, आग दो।'

धरमू हाथ जोड़कर बोला : 'बीरसा, तुम सब देख रहे हो, सब जानते हो। हम हुकुम के चाकर हैं। हुकुम पर काम करते हैं। तुम हमें दोष न देना।'

धरमू ने चिता में आग दी।

वे दूर हट गये। बीरसा को घेरकर आग लपक के जल उठी, आकाश की ओर उछल पड़ी।

आग की ओर देखकर धरमू मेहतर बोला : 'उलगुलान में बहुत आग जलायी थी—आग उसे पहचानती है। देख, कैसी तो जल रही है!'

'हाँ, तेरे उलगुलान का क्या यहीं अन्त है रे?'

भीखन मज़ाक करने चला था, मज़ाक बीच में ही रुक गया। सब डर से एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

शिब्बन देखने लगा—चिता जल रही है।

उसके बाद, चिता जल-जलकर जब राख होने पर आयी, तब हाथ की लाठी से आग खोदकर शिब्बन बोला : 'तुम जाओ। मैं चिता को धो दूंगा।'

'तू अकेले?'

'हाँ, अकेले।'

उन्होंने शिब्बन की ओर देखा, कुछ कहने को थे, बोले नहीं। चले गये।

उनके चले जाने के बाद शिब्बन ने सामने की ओर देखा। चिता की आग अब भी रह-रहकर जल रही थी। शिब्बन जानता था कि ऐसी आग बहुत देर तक जलती है रुक-रुककर, धुंआ देकर, बहुत देर तक। हज़ारीबाग में, उसके छुटपन में जंगल से वे लोग बसन्त के समय में बन के किनारे की सूखी झाड़ियाँ इकट्ठा कर, लाकर आँगन के कोने में ढेर बनाकर रखते थे। जाड़ा आने पर वही लकड़ियाँ जलाकर हाथ-पाँव सेंकते। वह आग बहुत देर तक जलती। शिब्बन की माँ कहा करती थी : मुझे ठंड नहीं लगती रे। मेरी छाती में तेरा बाप, तेरे दादा, तेरे भाई इसी काठ के अंगारे जला गये हैं!

शरीर चिता पर राख हो चुका था। शरीर में तो कुछ भी न था—जैसे सूखे पत्तों का-सा हो गया था! उसकी कोठरी साफ़ करने के लिए जाने पर शिब्बन ने कितने ही दिन देखा था कि जंजीरों का भार खींच-खींचकर भी बीरसा उस छोटी-सी कोठरी में टहलता है। सूनी काल-कोठरी में। बात करने को कोई आदमी नहीं। वह अकेले-अकेले भौंहें चढ़ाये चक्कर लगाता रहता। कोठरी कितनी छोटी थी! इधर से उधर जाने में कुल चौदह क़दम चलना होता। उसके बाद दीवार! उत्तर-दक्षिण-पूरब-पच्छिम में दीवार—केवल दीवार थी। भरमी, घानी, सुखराम, कनू मुंडा लोग कान

लगाकर उसकी ज़ंजीरों के घिसटने की आवाज़ सुना करते !

कनू कहता : 'बचपन से दादा को कोई बाँध न सका। उसकी तरह जंगल और पहाड़ों पर कोई भी किसी दिन भी नहीं घूमा। इस उलगुलान की काली अँधेरी रातों में पहाड़ लाँघकर दादा कहाँ-कहाँ पैदल नहीं जा पहुँचता था !'

लेकिन तीस तारीख़ की रात को जब ज़ंजीरों की आवाज़ न सुनायी पड़ी तो मुंडा लोगों ने डर से एक-दूसरे की ओर देखा। धानी मुंडा डकरा-कर रो पड़ा था : 'ज़ंजीर घसीटो भगवान, थोड़ा चलो तो। हाय रे, उस ज़ंजीर की आवाज़ सुनकर ही तो हम ज़िन्दा हैं रे।'

लेकिन भगवान फिर नहीं उठा। फिर माथा और भौंहें सिकोड़कर उसने चलते-चलते घंटे-पर-घंटे नहीं बिताये !

तीस तारीख़ से ही उसकी नाड़ी कमज़ोर और तेज़ चलने लगी थी। जीभ सूखी थी—जलती थी। असीम प्यास के मारे वह माँग-माँगकर पानी पीता था। खाने को एक दाना नहीं खाता था। एक दिन में ही आँखें धँस गयीं। लेकिन दूसरे दिन से पहले डिप्टी-कमिश्नर न आ सके। डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट बाबू डॉक्टरी पास किये हुए थे, लेकिन उन्हें उस कोठरी में जाने का हुक्म नहीं था। डी० सी०[1] की बात पर सुपरिंटेंडेंट साहब ने आकर बीरसा की जाने क्या जाँच की। बीरसा अंगरेज़ी में बोला। उस दिन ही सुपरिंटेंडेंट ने कह दिया था कि उसे हैज़ा हुआ है; वह बचेगा नहीं। शिब्बन आदि ने बहुतों को हैज़ा होते देखा है। हैज़ा, चेचक, साँप का काटा—कितनी ही तरह से तो मौत उनकी बस्ती में घूम-घूमकर लोगों को यमपुरी में दास बनाने के लिए ले जाती थी ! दस्त नहीं, उलटी नहीं। ऐसा हैज़ा शायद भगवान को ही होता है !

चिता बुझ गयी। अब शिब्बन गहरी प्रत्याशा में चिता की आग से आलोकित वृत्त के उस पार अंधकार की ओर देखने लगा। अँधेरे में से निकल आया साथी, भगवान का उलगुलान का साथी, मित्र। उसके काले बदन पर पीले रंग का-सा कपड़ा और आँखों में धुँधलापन था।

साथी के हाथ में कलसी थी। उसने और शिब्बन ने कुछ बात किये बिना हरमू से पानी लेकर चिता पर छिड़कना शुरू किया। चिता फुफकार

1. डिप्टी-कमिश्नर।

उठी। थोड़ी-सी राख, और भाप आसमान की ओर उठ गयी। उसके बाद सब शान्त।

साथी ने मुट्ठी-भर राख आँचल में बाँध ली। शिब्बन के पास आया। हँसा—गंभीर, मीठी, आश्चर्यजनक हँसी। बीरसा ने उसे इसी तरह हँसना सिखाया था।

साथी शिब्बन के पास, बहुत पास आया। पर शिब्बन का बदन निश्चल, अभिव्यक्ति-विहीन था। और साथी इतने पास, कि उसकी साँस शिब्बन के बदन में लग रही थी।

साथी बोला : 'तूने मुझे बहुत कुछ दिया, शिब्बन।'

'अब क्या करेगा ?'

'जंगल में उड़ा दूँगा।'

'क्यों ?'

'कहा था कि जंगल में राख उड़ा देने से जंगल को पता चलेगा कि बीरसा उसे भूला नहीं। राख धरती पर गिरेगी; धरती पर पेड़ उगेंगे। वही पेड़ बड़े होंगे, साथी।'

'कहा था ?'

'हाँ।'

'तू चला जायेगा ?'

'हाँ।'

'मुझसे कुछ कहेगा।'

'कहूँगा। सुन।'

'कह।'

'उलगुलान का अंत नहीं है। भगवान का मरण नहीं होता।'

'मरण नहीं हुआ ?'

'नहीं।'

'तो मैंने किसे जलाया ?'

'भगवान का मरण नहीं होता।'

साथी चला गया—क्षण-भर में कसौटी के-से काले अंधकार में समा गया।

शिब्बन के रक्त में चिता की चिंगारियाँ एक के बाद एक जलने लगीं। एक-एक शब्द एक-एक चिनगारी थी—उलगुलान की। अन्त ? नहीं। भगवान का—मरण—नहीं—हुआ !

शिब्बन ने डरकर चौंककर आसमान की ओर देखा। उसका रक्त

बीते अतीत का है—सनातन काल से उसकी रगों में बह रहा है। कृष्णांग आदिवासियों का रक्त बहुत आदिम रक्त है। उनके रक्त में अनाहार, दारिद्र्य, लांछना, घुले-मिले रहते हैं। परियों की कहानियों में, किंवदन्तियों में, अलौकिक में, असंभव रूप से विश्वास रखकर उनका रक्त चिरकाल से वेग से धमनियों में उछलकर जीवित रहना चाहता है। छः शब्द उनके प्राचीन रक्त में छः चिनगारी बनकर जल उठे!

शिन्बन कलसी फेंककर भागने लगा।

जेल में धानी मुंडा बैठा हुआ था। बैठे थे भरमी, कनू, गोपी, रमई—सैकड़ों मुंडा-शरीर जंजीरों से बँधे हुए थे। बँधी जंजीरों के साथ लेटना बहुत मुश्किल होता है। एक सौ दस, एक सौ पंद्रह डिग्री की गरमी में जड़े पत्थरों की दीवार दोपहर में बहुत गरम हो उठती है, और देर रात तक गरम रहती है। उस गरमी में आँखों में नींद नहीं आतीं।

छाती में असफल उलगुलान की तपन, बाहर जेठ की गरमी—आज उस गरमी में बीरसा की चिता की आँच लगी। मुंडा लोगों की आँखों में नींद नहीं थी। वे बैठे हुए थे। लेटा था सिर्फ़ सुनारा। किशोर, अठारह वर्ष का मुंडा-किशोर, सुनारा। वह बदन दुहरा किये लेटा हुआ था। होंठ के पास से खाल से बहकर खून बह रहा था। आज कई दिनों से बह रहा है। छाती में पत्थर लगा था डोमवारी की लड़ाई में—उसी से।

आज वह बीरसा को शनाख्त करने न जा सका। उसमें चलने की शक्ति न थी।

'तू जा न, सुनारा,' धानी ने कहा था।

'मुझे तुम लोग ले चलो।'

'तू जा न!'

'मुझे ले चलो।'

'मरेगा?'

'तुम लोग भगवान को देखोगे, मैं नहीं देखूंगा?'

'मरना चाहता है, सुनारा?'

'तुम्हें क्या पता, भगवान ने मुझसे कहा था न, अगर बिजली बनकर लौट आऊँ, तो तुम लोग डरोगे। अगर बिजली बनकर गिर जाऊँ, तो तुम

लोग डरोगे। अगर बाघ बनकर लौट आऊँ तो तुम लोग डरोगे। अगर जानवर बनकर लौट आऊँ तो तुम लोग मुझे पहचानोगे नहीं। इसीलिए मैं मानुस होकर ही लौट आऊँगा; नयी धरती गढ़ूँगा। बाँभन बनकर आने पर, गोसाईं बनकर आने पर तुम लोग मुझे पहचानोगे नहीं। मैं मुंडा बनकर आऊँगा रे। जो मुंडा फिर उलगुलान की बात कहेगा, उसे मैं पहचान लूंगा।'

'कहा था, कहा था क्या ?' भरमी चिल्ला पड़ा।

'क्या कहा था ?'

'बानी, तू बता।'

'मैं बताऊँ ?'

'वह तुझसे सब बात कह गया है।'

'तो तुम लोग सुनो ! उससे जो कहा, उसने जो कहा, सारी बात भरमी से कही थी।'

'भरमी, तू बता।'

'मुझसे कहा—भरमी, जेहल में इन चार सौ मुंडाओं को बचा जाऊँगा। मैजिस्ट्रेट जब अदालत में हमको खड़ा करेगा तो मैं कहूँगा : तुम लोगों को नहीं पहचानता। जो कुछ किया, औरों को लेकर। तुम में से कोई भी तो उसमें नहीं था। तुम लोग भी कहोगे—मुझे नहीं जानते।'

'कहा था ?'

'कहा था। कहा—ये लोग हमें जेहल से निकलने नहीं देंगे। और यह मट्टी का शरीर छोड़े बिना तुम नहीं बचोगे। आशा मत छोड़ना। मत सोचना कि मैं तुम लोगों को डुबा गया। सारे हथियार तुम्हें दिये थे, सब-कुछ सिखाया था। उन्हीं से लड़कर जिन्दा रहना।'

'कहा था ?'

'और बहुत कुछ कह गया। मैं लौट आऊँगा रे भरमी। बुन्दू, तमार, तमाम जगहों में होली की आग जलाऊँगा। सोनपुर में धूल की आँधी उड़ाऊँगा। पता लगेगा—बानो के पहाड़ पर रेशम के कीड़ों ने अंडे दिये हैं। उन अंडों से जैसे बहुत-से कीड़े निकलते हैं, मेरी बातों से नयी बातें निकलेंगी।'

'चल, सुनारा को ले चलें।'

तब वे लोग सुनारा को ले गये थे। बीरसा के शरीर को घेरकर उस कोठरी में चले आये, तभी से वह सिर नहीं उठा सकता। अब सभी जानते हैं कि वह मर रहा है। लेकिन वह जानता है या नहीं, यह किसी को नहीं मालूम।

वह उमर में सबसे छोटा है। जमीन नहीं थी—गाय, बैल, घर कुछ नहीं था। चेंदू गाँव में सूरजसिंह ने शाम को एक थाली घाटो और एक डेला नमक, बरस में तीन मोटे कपड़े देकर उसका जीना-मरना ख़रीद लिया था!

अपना कहने को उसके पास थी एक काठ की कंघी, एक बाँसुरी, एक कमान। उसी को लेकर वह जंगल-जंगल सूरजसिंह की गायें चराता, तीर छोड़कर भेड़िया या बाघ-चीतों को भगाता, नहीं तो टीन पीटकर ही भगा देता।

और गीत गाता। बीरसा उस समय आनन्द पांडे के घर रहता, भगवान के गीत गाता। सुनारा उसे दूर से देखता। उसके गाने सुनता।

बीरसा गाना गाता, बस गाने गाता; वह उस वक्त भी मानुस के रक्त में मादल[1] बजा सकता था। सुनारा के खून में तभी से गीत गूँज उठे थे। तभी उलगुलान की पुकार पर उसने सूरजसिंह की गाय-बकरी मैदान में छोड़कर, सूरज के घर में चकमक[2] से आग लगा दी थी। चीना घास का दाना—जिस दाने को पकाकर वह घाटो राँधा करता था—उसी चीना घास के दानों का बोरा और एक डेला नमक लूटकर बीरसा के पास चला आया था। फिर लौटकर नहीं गया।

वही सुनारा लेटा-लेटा मर रहा था। दूसरे मुंडा लोग बैठे थे। वे सोच रहे थे : दाह ख़तम हो गया, शिब्बन अब तक क्यों नहीं आया है!

तभी पगली[3] बज उठी—टन्-टन्-टन्-टन्-टन्।

घंटी क्यों बजी? कौन गारद का पहरा-घेरा तोड़कर भाग गया? अचानक क्या हो गया? बाहर से बूटों के खट्-खट् की आवाज़ क्यों आ रही है? संतरी भाग क्यों रहे हैं? कौन चिल्ला रहा है? कौन कह रहा है: 'साहब को ख़बर दो जी।' कौन चिल्ला रहा है यह?

उलगुलान का अंत नहीं है। भगवान का मरण नहीं होता।

मुंडा लोगों ने बिजली की चाबुक की चोट खाकर जैसे चौंककर मुंह उठाया। सभी दरवाज़े की ओर बढ़ना चाहते हैं; मुंह आगे कर सुनना चाहते हैं।

1. ढोलक की तरह का संथालों का एक बाजा।
2. पत्थर पर चोट मारने से इससे आग पैदा होती है।
3. जेल में कुछ उत्पात होने पर बजने वाली घंटी।

सिर्फ़ धानी, वृद्ध धानी सुनारा को पकड़े अचल बैठा रहा। वह बहुत, बहुत दिनों से लड़ रहा है। संथालो के हूल[1] में उसने तीर चलाये हैं। सरदारों की मुल्की लड़ाई में शामिल हुआ है। बीरसा के उलगुलान में योग दिया है।

अकेला वह जानता है कि उलगुलान समाप्त नहीं हुआ है, भगवान मरा नहीं है। भगवान फिर मुंडा होकर किसी मुंडा माँ की गोद में लौट आयेगा। वह क्यों सुनने जाये ? जो अनजान हैं, वही सुनें !

'उलगुलान का अंत नहीं। भगवान का मरण नहीं हुआ।'

शिब्बन की आवाज़ है। शिब्बन चिल्ला रहा है।

आवाज़ तेज़ी से इधर बढ़ी आ रही है। मानो कोई कह रहा हो, शिब्बन मेहतर पागल हो गया जी !

'पकड़ो, उसे पकड़ो !'

'उलगुलान का अंत नहीं। भगवान का मरण नहीं हुआ रे। मुंडा लोगो, मैं देख आया। उलगुलान का, तुम्हारे उलगुलान का अं...।'

शिब्बन की आवाज अचानक थम गयी।

सारा कोलाहल शान्त ! चाबुक की चोट, लाठी की मार मनुष्य के शरीर पर पड़ रही है; अब उसीकी आवाज़ आ रही है। शोर-शराबा चल रहा है, कराहने की आवाज़ के साथ। घसीटकर आदमी को बूटों वाले पाँव खींचे लिये जा रहे हैं, उसी की आवाज़ है।

सुनारा बोला : 'धानी, मेरा मुँह पोंछ।'

धानी ने उसका मुंह पोंछ दिया।

'भगवान ने कहा था—सिंहभूम का सारा जंगल और धरती हमें वापस मिलेंगे।'

'चुप हो जा।'

'सारा जंगल मिलेगा। वैसे ही जब कि धरती छोटी बच्ची-सी कोमल थी। धरती वैसी ही हो जायेगी। उस धरती पर महाजन नहीं, दिकू नहीं, साहब नहीं होंगे। बस सारा जंगल और पहाड़ रे, धानी !'

'चुप हो जा।'

'वैसी धरती तू देखेगा। मैं नहीं देखूंगा। मेरा मुंह पोंछ, धानी। ठाकुर का नाम सुना; धानी, तू वह गान गा। वह 'बोलोपे' गान सुना, जो कभी मैं तुम लोगों को सुनाया करता था।'

---

1. मुंडाओं का एक आन्दोलन।

फिर घड़घड़-घड़घड़ की आवाज़ हुई। सुनारा की आवाज़ रुक गयी।

'सुनारा मर गया, धानी।'

धानी ने जवाब नहीं दिया। सुनारा का सिर गोद में लेकर वह हिलाने लगा। उसके बाद गाने लगा :

बोलोपे बेलोपे हेगा मिसि होन् को
होइओ डुडुगार हिजू ताना
बोलोपे, बेलोपे...।
ओते रे डुडुगार सिरया रे को आन्सि
दिसूम तावु बुआल ताना
बोलोपे, बेलोपे...।
ताइओम् ते दो ठोरा कापे नामिया
दिसूम तावु नुवा जाना !
बोलोपे, बेलोपे... ।[1]

धानी रुक गया। सारे मुंडा लोगों के गलों से, रक्त से, छाती के भीतर से, मंत्र की तरह, यंत्रणा की तरह, गंभीर दुःखपूर्ण गीत एक साथ निकला :

'बोलोपे, बेलोपे... ।'

जेल में बैठकर धानी मुंडा, भरमी मुंडा बीरसा की बातें करते।

बहुत, बहुत चाँद पहले बीरसा के पर-दादा के पर-दादा, शायद उनके भी पर-दादा आये थे घर बनाने के लिए, जगह खोजते-खोजते। उस समय जंगल, पहाड़, जमीन बिना किसी के क़ब्ज़े के पड़े रहते थे। जगह खोजते-खोजते आकर जिस कोरी धरती पर कुदाल चलाकर खूँटा गाड़ देते, वही खूँटा एक नये गाँव की नींव बन जाता।

वे दो भाई आये थे—चुटिया हरम और नागु। तब श्रावण मास था।

---

1. ओ भाई, ओ बहनो, ओ बच्चो, भागो, जान बचाओ। आँधी उठी है। ओ भाई, ओ बहनो... । आँधी धूल की छाती में, आकाश को ढके कुहासे में देखो, अपना देश वह छीन ले गये। ओ भाई, ओ बहनो... । बाद में फिर राह नहीं मिलेगा रे। सब अँधेरा-अँधेरा हो रहा है। ओ भाई, ओ बहनो... ।

डोम-डागरा नदी में दोनों किनारों को डुबाकर बाढ़ आयी थी। वहाँ, उसी नदी के किनारे उन लोगों ने चुटिया गाँव बसाया। उन दोनों भाइयों के नाम से क्रम से उस आँचल का नाम हो गया—छोटा नागपुर।

वे थे पूर्ति मुंडा। जहाँ गाँव बसाते वहीं रहने के लिए आदमी जुड़ जाते। फिर किसी दिन उनमें से कोई-कोई किसी नयी जगह पर भी चले जाते। काले-काले आदमी-औरतें, गाय-बकरी-भेड़ें, दुनिया का साज-सामान, टोकरी-कुदाल-सब्बल-खेती-तीर-कमान। धीरे-धीरे बस गया तिलमा, तमार, उलिहातू, चालकाड़—एक के बाद दूसरा गाँव।

तब सब सहज था। वे जंगल में शिकार खेलते। जंगल में गाय चराते। जंगल से काठ-पत्ते लाते; जंगल काटकर जमीन आबाद कर लेते। वे सब देवताओं से बड़े देवता सिबोंडा[1] को जानते थे। सारे बोंडाओं पर उन्हीं देवता का राज था। पहान उन सिबोंडाओं का पुरोहित था।

लेकिन बीरसा क्यों? बीरसा के पैदा होने के बहुत पहले, शायद बीरसा के पर-दादा लकरा के पैदा होने से भी पहले, सब-कुछ बदल गया था। किस तरह बदल गया था—वह बात सिर्फ़ धानी मुंडा को मालूम है, और किसी को नहीं। धानी उस बात को कैदी मुंडा लोगों को सुनाता। उसकी बात सुनने के लिए मुंडा लोगों के पास बहुत समय था, क्योंकि उन्हें तो जेल में बन्द रखा गया था। विचाराधीन अभियुक्तों में एक के बाद एक कैदी मर भी रहे थे। किन्तु सरकार की जाँच फिर भी पूरी नहीं हो पा रही थी। जाँच पूरी हुए बिना मुक़दमा चलाया जा नहीं सकता! बीच-बीच में कई सौ बेसहारा मुंडा लोगों की जंगल के दावे की लड़ाई ऐसा भीषण अपराध हो सकती थी कि ब्रिटिश गवर्नमेंट का सारा शासनतंत्र उपयोग में लाने पर भी मुक़दमे को पेश करने में अनन्त समय लग जाता। मुंडा क़ैदी विचाराधीन रहते। फ़र्दजुर्म तैयार नहीं होता!

'धानी, तुझे कैसे मालूम हुआ?'

'नहीं तो क्या तुमको मालूम होगा? मैं क्या आज का मानुस हूँ रे? संथालों ने जब हूल किया था, तब मैंने पाँच सौ चाँद पार कर दिये थे। मैंने किसे नहीं देखा? सिद्धू को देखा, कानू को। भागनादिही जाकर मैं उनके हूल में सामिल नहीं हुआ? कुचले से विष बनाता था; साँप का विष निकाल लेता था। मेरी तरह विष बनाना किसे आता था, बता तो?'

---

1. दिन के देवता=सूर्य।

'भुइ हूल देखा था ?'

'नहीं देखा ? तब मेरे बेटे जुआन थे। दो के घरों में मेरे नाती हो गये थे।'

'वे कहाँ हैं ?'

'उनको मैं छोड़ आया।'

'क्यों ?'

'कह आया साहब के सामने—वे मेरे कोई नहीं हैं, मैं उनका कोई नहीं हूँ, नहीं तो उनको भी फंदे में झुलाता !'

'झुलाता ?'

'हाँ रे। उस वक़्त देख लिया दिकू कैसे होते हैं, कैसे होते हैं साहब !'

'तब से जान गया ?'

'जान गया। और देख, बीरसा के वंश के आदि-पुरुषों ने छोटा नागपुर की नींव डाली थी, लेकिन राजा हुए और। उससे हमारी धरती पर, जंगलों में बाहर से लोगों ने आकर क़ब्ज़ा जमा लिया, सब छीन लिया। दूसरी जात के, दूसरे देश के आदमियों ने।'

चारों ओर से लोग आये थे। जो आये, वे ही दिकू थे। धानी को मालूम था कि मुंडा लोगों की जो आदिम ग्राम-व्यवस्था टूट गयी, जिन लोगों ने मुंडा लोगों को उखाड़कर उनकी जमीन-जायदाद पर दखल कर लिया, वे ही दिकू हैं। उन्होंने 'बेठबेगारी'[1] का नियम चलाया। बिना मजूरी के बेगार करना पड़ता था। धानी को मालूम है; जीवन में सब यातनाओं-यंत्रणाओं के अवसरों को मुंडा लोगों ने गान-गान में भर रखा है। वह गाने किसने बनाये, कौन सुर देता था, किसी को पता नहीं !

वह बात याद आने पर धानी कहता : 'और देख, दिकू घोड़ा चाहता है, पैसा मुंडा देगा। दिकू को अपनी पालकी चाहिए, दाम मुंडा देगा, फिर कंधे पर ढोयेगा ! दिकू को जो चाहिए—मुंडा सब देगा। दिकू के ठेकेदार को साहब की अदालत में जुरमाना होने पर रुपये जमा करेंगे मुंडा लोग ! और बाद में ज़बरदस्ती रुपयें उधार देगा मुंडा को, और बाद में उसे ही उखाड़ फेंकेगा ! उसके बाद हैं भरती करने वाले। वे बुद्धू मुंडा लोगों को कुली बनाकर कहीं भी ले जायेंगे ! मेरे बहन-बहनोई को वे कहीं ले गये। एक बार देश छोड़ने के बाद मुंडा लौटकर नहीं आते हैं। उन्हें राह की पहचान नहीं रहती। विदेस में भूख से परेशान होकर मर जाते हैं। कोई

1. बेगार।

१०७६४

भी मुंडा बाहर जाकर अच्छा खाता नहीं। अच्छी तरह रहता नहीं।'

इसी तरह का था धानी का जीवन। उस जीवन में घुस आये थे महाजन, ज़मींदार, मिशनरी, जेल-कचहरी, पक्की सड़कें, रेलगाड़ी, बेनट[1], बंदूक, गरमी की तपन, सूखा, दुर्भिक्ष, मज़दूर भरती करने वाले, बेगारी...।

जवानी में धानी गाता :

बेठबेगारी दिते मोर माँधे भरे लो गो।
जमिदारेर पेयादा ओइ राते दिने।
ताड़ाय मोरे, काँदि आमि राते दिने।
बेठबेगारी दिये मोर एइ हाल गो—
घर नाइ, सुख मोरे के दिवे गो।
काँदि आमि राते दिने।
चोखेर ललेर मतइ लूनपारा मोर लो गो।[2]

धानी के जवानी की जमीन, जंगल, पहाड़, जन्म से मिली मुंडारी दुनिया से मुंडा उखाड़े जा रहे थे।

उन दिनों धानी आदि बूढ़ों से सुनते, एक दिन काले-काले मानुसों के घर में ही जनम लेगा उन लोगों का त्राता। एक दिन वह आयेगा! तब सिंहभूम—राँची के पलाश खिले जंगलों में जैसे आग जलती है, उसी तरह वह ख़बर आसमान को लाल करके सारी मुंडारी दुनिया में चमक उठेगी। काले मानुस की गोद में आयेंगे अनार्य कृष्ण! तभी मुंडा लोगों का जीवन कंस का कारागार बन गया है!

शायद वह आ गया है, इसलिए बड़ी आशा से 1855 साल में छियालीस बरस का धानी मुंडा चला गया था वारसाइत होकर भागनादिही के मैदान में, सिधू और कानू संथालों के दल में मिलने। मुंडा लोगों की अपनी व्यवस्था में सब लड़के चंदा देकर जमीन पर दख़ल बनाये रख सकते थे। संथाल लोग जंगल काट कर जो जमीन लेते, उसका नाम 'दामिन-इ-को' होता। संथालों के जीवन में भी, उनके 'दामिन-इ-को' के जीवन में भी, दिकू घुस पड़े थे।

---

1. किरच, जो सैनिक रायफल के आगे लगायी जाती है (बेयोनेट)।
2. बेगार करते-करते मेरे कंधों से खून बहने लगा है। ज़मींदार का सिपाही मुझे रात-दिन डाँटता रहता है। मैं दिन-रात रोता रहता हूँ। बेगार करते-करते मेरा यह हाल हो गया है। घर नहीं है, तो मुझे सुख कौन देगा? मैं दिन-रात रोता रहता हूँ। आँसुओं की तरह ही मेरा खून नोनखरा (नमकीन) हो गया है।

'इसीलिए उन लोगों ने हूल किया था।'

'तूने क्या किया था?'

'उनकी बंदूकें, हमारे तीर-धनुक। फिर भी हूल दो बरस चला।'

'तूने क्या किया?'

'कुचला तैयार करता था। तीर के फल पर लेपता था। विष-कंटिका के फल के रस को सिझा कर काढ़ा बनाता। उस काढ़े में तीर डुबाता। सुखाता। यही करता था।'

'गया क्यों था?'

'सुना था, भगवान आ गया है। इस भगवान को गोद में लेकर मानुस डोलता नहीं, भूलता नहीं। इसके हाथों में तीर-धनुक और बलोया है।'

'भगवान आया नहीं?'

'भगवान नहीं आया।'

'तूने क्या किया?'

'बीस बरस का बेवकूफ़-सा, छिपा-छिपा फिरता रहा। महाजन के खेत गोड़े, गाय चरायीं, पेट के लिए घाटो खाया, मोटा कपड़ा पहना। और बाद में गंज घूमा, हाट घूमा। किसी ने नहीं कहा कि हूल होगा। लेकिन मैं कान खोले रहता, सब सुनता रहता। एक दिन वही भरमी, अब बैठा-बैठा भलामानुस बना है, बोला : चल धानी भगनादिही चलें।'

'फिर बाद में?'

'मैंने कहा, क्यों? तो उसने कहा, वहाँ सिधु-कानू के गाँव में सब संथाल जा रहे हैं; पूजा दे रहे हैं। तो मैंने कहा, तब शायद भगवान आया है; ठहर, पाव-भर कुचला बना लूँ। सो उसने मुझे थप्पड़ मारा। बोला, बुद्धू। पहले जाकर देखें, तभी तो कुचला निकालेंगे। कूँच फल कहाँ नहीं है? सो चला गया। इस बार दूसरी राह पर।'

'रेल पकड़कर?'

'न, पैदल गया। तब मैं आठ सौ चौदह पार कर लगभग सत्तर बरस का बूढ़ा था। वह जवान। दोनों जंगल-जंगल की राह चलकर गये। जाकर देखते हैं—साँउतालों ने अपना पुराना खारुआ[1] नाम रखा था। खारुआ के तीन दल हो गये थे। हूल के बाद संथाल-परगना बन गया था। उस परगना से लड़ाई हजारीबाग तक चली आयी।'

'तूने क्या किया?'

'कुचला तैयार किया। तीर के फल पर लेपा। विष-कंटिका का फल

1. लाल रंग का मोटा कपड़ा।

पानी में सिझाकर काढ़ा बनाया। उस काढ़े में तीर डुबाया। सुखाया। यही किया।'

भरमी मुंडा बोला : 'तेरा यही काम है।'

'यही काम है। खारुआ बोले —वही हजारों-लाखों चाँद पहले हम चम्पा देश में रहते थे। तब हम खारुआ थे। तब हम किसी को लगान नहीं देते थे, अब भी नहीं देंगे! खूब लड़ाई हुई। लेकिन बंदूक के आगे धनुक की लड़ाई नहीं टिकी।'

'नहीं टिकी?'

'तब मैं था जुआन। तब अढ़ाई सौ चाँद पार किये थे। तुम लोग बरस का हिसाब समझते हो। एक बरस में बारह-ठो चाँद होते हैं: उससे समझो। तब एकबारगी पाँच परगनों से मुंडा लोग उखाड़ दिये गये। उस बार छोटा नागपुर के राजा का भाई, उसी हरनाथ शाही ने, हमारे अपने गाँव लेकर दे दिये थे दूसरे देश के महाजन-ठेकेदारों को। मेरी वहीं कुचला की तैयारी से काम शुरू हुआ।'

'क्या हुआ?'

'कितनी बार तो तुझे बताया, बीरसा। मुंडा लोगों को दिकू लोगों के हाथों कई सौ गाँव छोड़ने पड़े। मुंडा लोग चले गये खूँटी, तामार। शुरू हो गयी लड़ाई। तब मैं जंगल-जंगल घूमता था। कुचला तुम सब बनाते हो; मेरी तरह कोई कुचला न बना सकोगे। उस बार ही मुझे सिखाया उस भरमी के बाप के काका ने, पहान[1] था वह। कह दिया, सब लाल घुंघची खोजते हैं। तू काली घुंघची से विष बना। लाल घुंघची के बीच का काढ़ा होने से धीरे-धीरे मरता है। कुचला में काली घुंघची का काढ़ा रहने पर मौत झटपट हो जाती है, एक पल में। वही सीख लिया मैंने।'

'उसके बाद?'

'उस बार भी भगवान को नहीं देखा। सिधु-कानू ने भी नहीं दिखाया। खारुआ लोगों ने भी भगवान नहीं दिखाया। कलेजे में बड़ा रंज हुआ। इधर मेरी उमर बढ़ी जा रही थी। दिकू लोगों से देश छा गया। खोजने पर एक मुंडा नहीं मिलता था जिसके घर में दस रुपये भी हों। सब भिखारी हो गये। कितनों ने जाकर मिशन में नाम लिखा लिया। अकाल पर अकाल से देश उजाड़ हो गया। महाजनों ने तमाम से बेगारी के पट्टे लिखा लिये। मुंडा लोगों ने अँगूठे की निशानी लगा दी। मैंने भी लगा दी।'

---

1. प्रधान, सरदार।

'किसके पास ?'

'जगदीश साउ; खूँटी के बाज़ार में कभी नहीं देखा ?'

'हाँ-हाँ, गोरू की गाड़ी से उस दिन लाश लाया तो था।'

'धुत्, जगदीश तो कब का मर गया—देखा होगा उसके बेटे को।'

'जगदीश मर गया ?'

'मरेगा नहीं ? घाटो देता था कम-कम, खटाता था रात-भोर। अन्त में तीर खाकर मर गया।'

'उसके बाद।'

'मार कर भागा। जंगल में फेंक दिया। उसके मरने के दस बरस बाद अब भी उसे सब खोजते हैं।'

'उसके बाद ?'

'मैं जाकर चालकाड़ पहुँचा।'

'उसके बाद ?'

'उतने दिनों तक सरदारों ने मिशन के मुंडा लोगों से मुलक की लड़ाई की बात कही। दस बरस से उन लोगों ने मुलकुई लड़ाई चलायी। जेकब साहब ने उनकी ओर से मिशन के साथ, सरकार के साथ, कितनी लड़ाई की, जीते नहीं। मुलकुई लड़ाई धीमे-धीमे चलती रही। मैं उनके पास रहता था।'

'किसके पास ?'

'सरदारों के पास।'

'क्या करता था वहाँ ?'

'कुचला तैयार करता था। कुचला तीर के सिरे पर लेपा, और हँसा।'

'क्यों ?'

'वाः हँसू नहीं ? उतने दिनों तो सुगाना मुंडा के घर आ गये थे भगवान। बीरसा तब छोटा था। मैं उसे देखता। देखता और कहता सरदारों से—अब दुख किस बात का ? बीस बरस का हो जाने दो, भगवान को पाओगे। यह भगवान मानुस को भुलाता नहीं; गोदी में झूलता नहीं, इसके हाथों में बलोया रहेगा, तीर-धनुक रहेंगे !'

'सरदार लोग क्या कहते थे ?'

'उन लोगों ने क्या वह बात मुझसे कही ? पर उनकी मुलकुई लड़ाई चलती रही। चलती रही धीमे-धीमे। जब बीरसा ने उलगुलान की हाँक लगायी, तो सब चले गये।'

'बीरसा नहीं है। अब क्या होगा ?'

'उलगुलान का अन्त नहीं है,' भगवान का मरण नहीं होता है, शिब्बन से सुना नहीं ? ले, सो जा। आकाश देख, दूध-बरन हो गया। गिरजा का घंटा बज रहा है।'

'चालकाड़ में तब तू था, धानी ? बाम्बा में जब भगवान जन्मा ?'

'था।'

बीरसा के बाप सुगाना मुंडा का आदिम गाँव उलिहातू था। किन्तु उलिहातू में, उसी थेरोया की लड़ाई के पहले ही, फिर रहना न हुआ। गया, छपरा, भागलपुर, तिरहुत जगह-जगह महाजनों ने क़ानून का डर दिखाकर मुंडाओं के हाथों से आदिम गाँव ले लिये थे। जिनके गाँव थे, उन्हें खेत-मजूरी के कामों में भी नहीं रखा। तभी दूसरे सारे मुंडाओं की तरह सुगाना भी आज खेत-मजूरी की खोज में कुरुंबदा, कल गाइचरी काम की खोज में बाम्बा घूमता-फिरता था। पूंजी थी—एक पोटली, मट्टी की कड़ाही, मट्टी की हाँड़ी, घास की बनी चट्टी, एक डिब्बा चीनाघास के बीज, एक डेला नोन।'

अपने बास की भूमि में सुगाना को घर नहीं मिल रहा था। घर बाँधेगा जंगल के काठ और पत्तों से, सो जमीन नहीं मिल रही थी। उन्हें क़ानून की समझ नहीं थी—अपना घर अपना है, यह बात हाकिम को अदालत में समझा नहीं पाते थे। अदालत में जाने पर सभी बेचन मुंडा बन जाते। बेचन का घर-द्वार सब जब जगदीश साउ ने ले लिया तो बेचन ने एक वकील को खड़ा किया।

हाकिम अंगरेज़ था। दुभाषिये और वकील ने उसे जो कुछ समझाया, उसने वही समझा। बेचन की बात, किसी मुंडा की बात वह समझते नहीं थे। अंगरेज़ी के अलावा कुछ समझते नहीं थे, और मुक़दमा करते थे मुंडा, संथाल, ओराँव, हो, कोल आदि लोगों का। वकील जो कहता, दुभाषिया जो कहता, वही सुनकर फ़ैसले लिखते।

मुक़दमे में बेचन का सब-कुछ चला गया। बकरा-बकरी, भेड़, हल बेचकर वकील को रुपये दिये थे। हार हुई।

बेचन को जमीन वापस नहीं मिली। जगदीश की जमीन पर गायें चराने के अपराध में उस पर जुरमाना अलग से पड़ा।

वही सुगाना मुंडा छोटा नागपुर के प्रतिष्ठाता का वंशधर होकर भी

भिखारी की तरह फिरता था; भटक-भटक कर मर रहा था। अकाल के दिनों मुंडा लोगों की भेड़ें भी ऐसे ही हड्डी-पसली लिये-लिये हरी घास की खोज में गाँव-गाँव घूमती फिरतीं!

फिरते-फिरते उसका एक लड़का कोम्ता, दो लड़कियाँ दासकिर और चम्पा पैदा हुईं। अन्त में बाम्बा आकर उसकी बहू करमी बोली: 'एक नया घर खड़ा करो। बच्चे होंगे। तब तक दिकू आकर उठा देंगे। चले जायेंगे।'

सुगाना ने एक घर बनाया। उस घर में हुआ लड़का। बिष्युतबार को पैदा हुआ। नाम हुआ बीरसा।

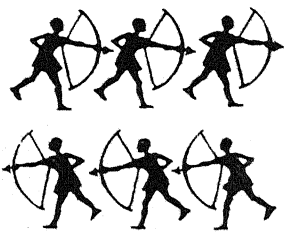

जंगल से बहुत ही सटा हुआ घर, पहाड़ के किनारे। पाश्ना के लड़के को बाघ ले गया। उसके बाद एक दिन एक दिकू आ गया—भोजपुरी महाजन। फिर मुंडा लोग उखड़े।

सुगाना बोला: 'मेरी माँ के गाँव चालकाड़ चले चलें। वहाँ बीरसिंह मुंडा है।'

'वह क्या करेगा? तुम्हें गाँव दे देगा?'

करमी ने बात बिना किसी जोश के कही थी। वे लोग बिना गरमी खाये ही जीवन-मरण की बातें किया करते थे। दुर्भाग्य के थपेड़ों से ही उनमें यह उदासीनता थी।

सुगाना शांत था। वेदना से भरी आँखें उठायीं: 'न, कभी कोई देता है? रहने जरूर देगा।'

'कहा था—मिशन में जाकर क्रिस्तान होगा?'

'चल, हो जायें। बड़ा अच्छा है। मिशन के साहब देखते हैं, चावल देते हैं। लड़कों को पढ़ाते हैं।'

'पढ़ के क्या होगा?'

'मेरे दो लड़के बड़े हैं, और भी होंगे। पढ़ना-लिखना सीख कर वे कचहरी के हाकिम की बात समझेंगे, उसे अपनी बात समझा पायेंगे।'

'तुम क्या कचहरी में मुक़दमा करोगे ?'

'दरकार होने पर करूंगा। बता, कितने गाँवों में घर बनायेगा, कितने गाँवों से दिकू उठा देगा ? अपनी कहने को एक जगह तो चाहिए। नहीं तो बच्चे भरती करने वाले के पीछे चले जायेंगे और फिर बच्चों का मुँह न देख सकेंगे।'

वे लोग चालकाड़ चले आये। आने के पहले सुगाना, पाश्ना, कोम्ता, बीरसा—सभी जर्मन मिशन में किरस्तान हो गये। सुगाना बना किरस्तान सुगाना मसीहदास, बीरसा बना दाऊद मुंडा, या दाऊद बीरसा।

बीरसा को पता था कि उसे एक दिन लिखना-पढ़ना सीखना पड़ेगा। दिकू लोगों की भाषा सीखने से ही वह दिकू लोगों के हाथों से घर-ज़मीन बचा सकेगा। जानते सब थे, लेकिन चालकाड़ के मुंडा सुगाना के लड़कों और लिखे-पढ़े जाने हुए जीवन—दोनों के बीच बहुत-सी दीवारें थीं—महाजन, ग्राम-प्रधान, पुलिस, दारोगा, हाकिम, पक्का रास्ता—बहुत-बहुत दीवारें थीं! उन सब को कैसे लाँघा जाये! वह तो अभी भी छोटा था।

छोटा, लेकिन कोई भी मुंडा लड़का आठ बरस की उम्र में पढ़ने नहीं बैठता। बीरसा भी नहीं बैठा। बकरियाँ चराकर, जंगल से काठ-पत्ते-फल-कंद-शहद लाकर घर में मदद करता। करमी, उसकी माँ कहती : 'घर तो हो गया है कथरी की तरह। इधर सियो, उधर फट जाता है। सब फट जाने पर फिर एक दिन जुड़ न सकेगा।'

बीरसा जानता था कि मुंडा लोगों की गृहस्थी इसी तरह फटी गुदड़ी की तरह ही होती है। उसके लिए उसे दुःख न था। सिर्फ़ दिन को घाटो के साथ नमक न मिलने पर उसे तकलीफ़ पहुँचती।

दादा कोम्ता कहता : 'बड़े होने पर वह बाज़ार से एकदम एक बोरा नमक ले आयेगा। जिसकी जितनी तबियत हो उठाकर घाटो में मिलाकर खाना।'

बीरसा दादा के दंभ की यह असंभव बात सुनकर हँसता; बंसी लेकर निकल जाता। लौकी के खोल से बना टुइला और बंसी—दोनों ही उसके

लिए जरूरी होते।

टुइला की झंकार, बंसी का सुर, उसके साथ-साथ घूमते !

जंगल में बैठकर वह अपने मन से बंसी बजाता।

जब भी वह जंगल में जाता, धानी मुंडा उसके साथ-साथ जाता।

'तुम मेरे साथ-साथ क्यों फिरते हो ?'

'क्यों न फिरूँ ? जंगल क्या तेरा खरीदा है ?'

'खरीदा ही तो है।'

घर जाकर देखता कि माँ महुआ के बीज ओखली में कूटती जा रही है। माँ बीजों को कूटेगी, दीदी पीसेगी। तब तेल निकलेगा। घर में बत्ती जलेगी। उसे बड़ा होने की तबियत होती। कोम्ता के साथ जाकर हाट से एक नमक का बोरा, तेल का डिब्बा लाकर करमी को रानी बना देने की साध होती !

जंगल में आकर वह उन सब बातों को भूल जाता। दिगन्त में फैले नीले पहाड़ों की ओर देखकर जाने क्या-क्या सपने देखता। सपने में वह केवल अपने दो आदि-पुरुषों को देखता। दोनों भाई बाढ़ से पगली नदी पार कर चले आ रहे है। बिजली की चमक से प्रकाशित एक कुँआरे जंगल की ओर काले-काले हाथ फैला कर कहता : 'यह सब हमारा है।' उसके मुँह से वर्षा हो रही है। नदी का जल उसके पैरों पर लोटा पड़ रहा है। कुँआरे जंगल का प्रहरी विशालकाय हाथी आकाश की ओर सूँड उठाकर ज़ोरों की आवाज़ से उसका स्वागत कर रहा है।

'अपने साथ अकेले-अकेले रहता है, इसलिए वह अपने को भूल जाता है।'

इसीलिए खफ़ा होकर उसने धानी से कहा था : 'यह जंगल मेरा है।'

धानी कुछ देर तक उसकी ओर देखता रहा।

उसके बाद सहसा रूखे स्वर में बोला : 'याद रखना, कहा है कि यह सब तेरा है।'

धानी चला गया था।

घर लौटकर बीरसा केंदू के पेड़ के नीचे बैठकर पत्ते के दोने में बेस्वाद घाटो खाते-खाते दादा से बोला : 'धानी मुंडा कैसा है ? पगला या दीवाना ?'

'लड़ाई का दीवाना !'

'कैसे ?'

'जहाँ लड़ाई है, उसका अन्तर वहाँ है। उसकी बयस आठ सौ अट्ठासी चाँद हो गयी। इस बीच वह उस पहली मुंडा लड़ाई, हूल खारुआ की लड़ाई, सरदारों की मुल्की लड़ाई—सब जगह लड़ आया है।'

'वह बूढ़ा ?'

'बूढ़ा हुआ तो क्या ? तीर-धनुक में उसका निशाना पक्का है। उसका-सा निशानेबाज देश-विदेश में देखा है किसी ने ?'

'मुझे तंग कर रहा था।'

करमी ने झाड़ू लगाते-लगाते कहा : 'उसकी बात न सुनना, बेटा। ज़िन्दगी-भर में उसने लड़ाइयों में दस बेटों को उतारा है।'

'मुझे वह नहीं मार पायेगा।'

'जा, बीरसा ! साँझ-बेला मरने की बात मत कर।'

'उसे मैं किसी दिन मार दूँगा।'

'तुझसे बड़ा है न धानी ? बूढ़ा है।'

'मुझे तंग क्यों करता है ?'

'क्या कहता है ?'

करमी पास आकर खड़ी हो गयी। कोम्ता नहीं, दोनों लड़कियाँ नहीं : इस लड़के के लिए करमी का कलेजा भारी हो जाता है !

बीरसा लौकी के खोल में तार बाँधकर टुइला बना रहा था। बिना आँख उठाये ही वह बोला : 'बहुत-सी बातें !'

'क्या कहता है ?'

'कहता है कि ये जो सारे जंगल, सारे पहाड़ हैं, सब मेरे हैं।'

'यह बात कहता है !'

'माँ, तू रो रही है ?'

बीरसा ने अपनी आश्चर्य-भरी, निष्पाप, निर्मल आँखें उठाकर अवाक् होकर कहा।

'बीरसा, तू मेरे कलेजे का टुकड़ा है, एक बात सुन।'

'बोल।'

'धानी की बात पर ध्यान मत दे।'

'क्यों ?'

'वह पागल है।'

'क्यों ?'

'वह भगवान को खोज रहा है रे, बीरसा।'

'भगवान को खोज रहा है ?

'हाँ रे !'

'यह कैसी बात है ?'

'यही बात है।'

'भगवान क्या हाट-गाँव में घूमता-फिरता मिल जायेगा ?'

'वही जाने किस भगवान को खोज रहा है। वह भगवान सायद मुंडा बनकर जनम लेगा। वह मुंडा लोगों को उनके अपने गाँव देगा, दिलायेगा। उसके आने के बाद दिकू नहीं रहेंगे। उसके आने से सारे मुंडा लोगों के बदन पर कपड़ा, हाँडी में घाटो, डिब्बे में नमक रहेगा। बर्तनों में रहेगा महुआ का कड़ुआ तेल। तब मुंडा राजा बनेंगे।'

'धत् ! कैसी पागलों-सी बातें !'

'हाँ बाबा ! उसकी बातें तुम मत सुनना।'

'भला क्यों सुनूंगा ?'

'वह पागल है : मुंडा लड़कों को परेशान करता है।'

'माँ, उसकी बात छोड़ ! एक तमाशा देखेगी ?'

'क्या तमाशा, बेटा ?'

'उ—स चिड़िया को पेड़ से उतार लाऊँगा, देखेगी ?'

'उसे मारना मत बेटा, वह किसी का नुकसान नहीं करती। उसे तीर मत मारना, बेटा मेरे।'

'घ—त् ! तीर क्यों मारूँगा ?'

'तो ?'

'तो देख ?'

कोम्ता बोला : 'अपने बेटे के गुण नहीं जानतीं तुम। वह बंसी बजाकर हिरण को बुला लेता है, खरगोशों को जमा कर लेता है। बन के पशु-पाखी उसके बस में हैं।'

करमी बोली : 'हट।'

बीरसा बोला : 'तो देख।'

बीरसा 'टुं टं' 'टुं टं' कर टुइला बजाता रहा। बहुत हलकी-हलकी चोट लगाकर उसे बजाता रहा। संध्या की वायु में वह 'टुन टुन' 'टुन टुन' घुल गया, मानो संध्या के साथ एक-रस हो गया हो ! उसके बाद सुनहरी सुरों-सी उतर आयी पीले रंग की चिड़िया। बीरसा के सिर के ऊपर पंख फड़-फड़ाकर फिर कहीं चली गयी।

करमी बोली, 'हाँ बीरसा, तेरे हाथ में क्या है ?'

बीरसा बोला, 'जादू है।'

'किसने सिखाया है ?'

'जंगल में जाती है, जंगल में बाजा बजते नहीं सुना है, माँ ? पत्ते-पत्ते में बाजा बजता है। वही सुन-सुनकर सीखा है।'

'जंगल में अकेले मत जाया कर, ओ बेटे मेरे।'

'एक दिन टुइला बजा कर तुझे नीलपाखी पकड़ कर दूंगा। तू कहती है न कि वह पाखी घर में रहने से स—ब भला होता है ?'

कोम्ता बोला : 'जा, कितना कहा तीतर पकड़, मांस खायें, सो तो सुनता नहीं।'

'क्यों सुनूं ? तीतर मारेगा जाल-फेंक, तीर-मार ! मैं क्यों उसे पकड़ूं ?'

करमी बोली, 'जाओ, सो जाओ। अँधेरा हो गया ! घर जा।'

करमी रात में सुगाना से बोली : 'बीरसा को कहीं काम में लगा दो।'

'क्यों ?'

'मुझे डर लगता है।'

'कैसा डर ?'

'पता नहीं। पेट का लड़का। फिर भी अनचीन्हा-सा लगता है।'

'क्यों ?'

'वह कोम्ता की तरह नहीं है, किसी मुंडा लड़के की तरह नहीं है; वह अजीब लड़का है !'

'लो ! ऐसी बातें मत सोचा कर।'

लेकिन सुगाना मुंडा भी समझता था कि उसका लड़का बीरसा मुंडा लड़का है—फिर भी वह जैसे और जात का लड़का हो। और सबकी तरह देखने में उसका मुंह और आँखें दूसरों की तरह की ही थीं। सभी मुंडा लड़के बंसी बजाते हैं—टुइला बजाते हैं—बीरसा भी बजाता था।

लेकिन बीरसा किस साँस से बंसी बजाता था ? कैसे सुरों से ? सुगाना जब छोटा था तब मुंडा लोगों के आदि देवता हरम् असूल की पूजा में जोयार उत्सव में बड़ी धूमधाम होती ! ग्राम-प्रधान कहता : 'हरम् असूल को क्या बाँसुरी सुनना अच्छा लगता है ! इसीलिए पैदा होते समय किसी-किसी लड़के की उँगलियों और ओंठों को अपना आशीर्वाद दे देते हैं !'

बीरसा को क्या उन्हीं ने आशीर्वाद दिया है ? नहीं तो हाथों में टुइला और कमर में खोंसी बाँसुरी लेकर बीरसा जब मुंडा लड़के-लड़कियों को

बारोयारी[1] नाच के मंडप के अखाड़े में ले जाता है, तो क्यों सुगाना की उमर के, उसकी माँ-बाप की उमर के चालकाड़ के सब मुंडा लोग जाकर दो क्षण खड़े हो जाते हैं ? बीरसा का बाँसुरी बजाना क्यों सुनते हैं ?

सुगाना का दादा कानू पलुस था; वह तो कब का क्रिस्तान हो गया था। कहने को सुगाना से उसकी भेंट ही नहीं होती थी। वह भी क्यों उस बार कह गया : 'तेरा यह बेटा बड़ा गजब का है रे, सुगाना। उसकी बाँसुरी सुनी, ऐसे सुर मैंने कभी नहीं सुने !'

अखाड़े में बीरसा गया है, यह जानकर बीरसा की उमर के सभी लड़के जाकर जमा हो जाते। मुंडा माताएँ करमी से कहतीं : 'ओ री करमी, वह अढ़तिया दिकू नन्द, जो ठाकुर पूजता है, उसी किशन की तरह तेरा बेटा बंसी बजाता है रे ! लड़का बंसी बजाता है सब मुंडा लोगों के घर में। उसी बंसी को सुनकर भागते खरगोश, भयानक सुअर, बन के हिरन—सब शान्त होकर दो दंड रुक जाते हैं। ऐसा कभी कहीं देखा है ?'

सुगाना का बेटा ऐसा क्यों हुआ—उसके क़िस्से सबकी ज़बान पर रहते।

'बीरसा रे, तू सब की तरह बन।'

मैं सुगाना मुंडा, मुझे याद नहीं आता कब मेरे पुरखे चुट और नागु ने आकर इस अछूती धरती पर चोट लगायी थी ! कुँआरी धरती का कौमार्य हर कर मुंडारी लोगों की बस्ती कब आबाद की थी ! कब उनके नाम पर यह बाघ, बराह, भालुओं से भरा शाल-गजार-सिधा-शीशम के पेड़ों का जंगल और किशोर धरती के ऊँचे कुसुमित वक्ष से कम ऊँचे पहाड़ों से ढका जो अपरूप है, अपरूप देश है—उसे नाम दिया था छोटा नागपुर।

छोटा नागपुर जिनके नाम पर है, उनके वंश का आदमी होकर मैं—सुगाना मुंडा—भिखारी से भी अधम, जिसके पेट में घाटो भी नहीं पड़ता, फटा कपड़ा पहने घूमता हूँ। कितनी बार सोचा है कि इससे तो बन का पंछी होकर खेत से दाने इकट्ठा कर जीवित रहना अच्छा होता !

लेकिन वह बात मेरे मन में नहीं रहती। सारे मुंडा लोग मेरी ही तरह जीते हैं, मर-मर के जीते हैं। हाँ रे, मेरे कपाल में वही सेंगेल-दा[2] की आग जलती है। उस आदि जुग में सेंगेल-दा की आग में धरती जलकर राख हो गयी थी। सिबोङा ने आकाश से आग फेंकी थी। उससे सारे

1. बस्ती में सबकी सहायता से मनाया जाने वाला उत्सव।
2. अग्नि-वर्षा।

मानुस जलकर मर गये। केकड़ों के एक गड्ढे में ठंडा पानी था—माटी के कलेजे का ठंडा जल! एक लड़का एक लड़की—वे मुंडा थे—शाल बन की छाया में टुइला बजा रहे थे—लड़की नाच रही थी। वे आग देख ठिठककर खड़े हो गये।

सिंबोङा ने आसमान से सिर निकालकर कहा: 'अरे तुम भागो। तुम्हारे हाथों में जन्म-मरण का भार पड़ा है। तुमसे फिर जगत सिरजेगा।'

वे बोले: 'कहाँ भागें?'

'व—ह देखो।'

आग के रंग का साँप, वे नाग-देवता नागीरा थे, वे फन की छाया कर लड़के और लड़की को उस केकड़े के गढ़े में ले गये। शीतल जल में वे डूबे रहे। नींद में कितने दिन बीत गये, उन्हें पता न चला। उसके बाद वे सिंबोङा के पुकारने पर उठ गये।

बाहर आकर देखा—न मालूम कब की बरखा बन्द हो गयी थी। सिंबोङा ने जैसे आग उँड़ेली थी, उसी तरह बरखा उतारकर भुवन मात्र को ठंडा कर दिया था। पता नहीं कब से अरण्य, नदी, पहाड़, पशु, पाखी, फूल, फल, कीट पतंग, स—ब की सृष्टि कर डाली थी!

सिंबोङा ने बादलों में से सिर निकालकर ज़ोर से कहा: 'जाओ, दुनिया में सब है, मानुस नहीं है। तुम सिरजो। सुनो, मानुस, मानुस—मुंडारी मानुसों से भुवन को भर दो!'

उसी लड़का, उसी लड़की से सारे मुंडारी लोगों का—मुंडारी जगत का आरंभ हुआ।

लेकिन सुगाना के कपाल में तो सेंगेल-दा का ताप है! कपाल में ताप, पेट में ताप, मन में ताप!

उसने सब तापों को स्वीकार कर लिया था। कोई प्रतिवाद नहीं किया। इतना ताप, इतनी आग क्या एक बारगी बुझ जायेगी? मुंडा-जाति के जीवन में आग जलती ही रहती है।

उससे भी सुगाना के मन में कोई दुःख नहीं था। पेट भरके खाना, साबित कपड़ा पहनना, बिना टूटे घर में सोना कैसा होता है—यह भी उसे नहीं पता था। इसी से कम खाने, फटा कपड़ा पहनने, टूटे घर में सोने में उसे दुःख नहीं होता।

इससे उलटे सुगाना और करमी अपने भाग्य को सराहते रहते। वे लोग बहुतों से अच्छे थे। नौकरी का पट्टा लिखकर ज़िन्दगी-भर के लिए दास नहीं बने; किसी दिकू के पास बेगार देने का दंड नहीं था—वे बहुतों

से अच्छे थे।

कोम्ता, बीरसा, गोद का लड़का कनू—तीनों पास हैं। दोनों लड़कियों का ब्याह हो गया है।

कुली भरती करने वाला हर बरस आकर चायबाग़ान में कुली का काम करने के लिए बहुत रुपयों का लालच दिखाकर मुंडा लोगों को ले जाता।

वे लोग तो नहीं गये। अच्छा ही तो है।

यही उधार-कर्ज़-अभाव-अनाहार—सुगाना की धारणा में इस दुनिया में यही उनका प्राप्य है। इस दुनिया को छोड़कर वे और तरह से नहीं जीना चाहते।

बीरसा और तरह का कैसे है? बोहोन्वा के जंगल में तो सब मुंडा लोगों के लड़के गाय-बकरी चराने जाते हैं। अकेले बीरसा कैसे जंगल का सारा रहस्य जान जाता है?

कहाँ कन्द है, कहाँ गढ़े में मछली है, कहाँ मीठे बेर और खट्टे-कसैले आँवले, जंगली अरबी और मोटे खरगोश, साही हैं—सब बातें उसी अकेले को कैसे मालूम हो जाती हैं? मानो जंगल अपने सारे भेद उस अकेले के सामने ही खोल देता हो! अकेले बीरसा के हाथों सब छिपे ऐश्वर्य का ढेर उँडेल देता हो! ऐसा क्यों होता है?

'बीरसा, तू सब की तरह बन। जो सब की तरह होता है, वह लड़का बाप और माँ की गोद से लगा रहता है। हारी-बीमारी, इस साल अकाल होने से मिशन में जाकर किरस्तान होगा। फिर फ़सल के खड़ी हो जाने पर अपने धरम में लौट आना।

'तू उनकी तरह बन, बीरसा।'

सुगाना ने निश्चय किया कि पहले मौक़े पर ही बीरसा को कहीं गाय चराने के काम में लगा देगा।

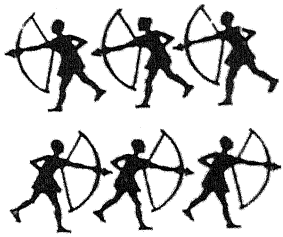

सुयोग आ भी गया। सुगाना मुंडा के जीवन में छोटे लड़के को गाय चराने के काम में लगा देने का सुयोग छोटी-सी वजह से गृहस्थी की रोजाना की किसी भी घटना के समान होता है।

दोनों लड़कियों के ब्याह से सुगाना पर उधार का पैसा बहुत चढ़ गया था—कोई चौदह-पंद्रह रुपये ! —बीरसा के बाद का भाई कनू भी घुटनों के बल चलकर घाटो खाने लायक बड़ा हो गया था।

सहसा गृहस्थी को मुश्किलों का सामना होने लगा। सहसा करमी के ताऊ का लड़का, उसका बड़ा भाई एक दिन चालकाड़ चला आया। बोला : 'बहू अच्छी नहीं है, समझी करमी। काउन[1] बेचकर दो रुपये मिले। बोला, मद्य ले आ। जल्दी कर। दो मुर्गी काटीं, सो वे छीन लीं। बोली, चावल खरीदूंगी। यू: !'

निबाई मुंडा ने जमीन पर थूका। 'बोली : चावल मोल लेंगे। सो चावल मोल लिये। मैं भी तब एक खूंची[2] चावल बोरे में से लेकर चला आया। जा, भात राँध दे। आज खूब खाऊँगा।'

करमी ने जाल लगाकर खरगोश पकड़ा। सबने मिलकर भात और मांस खाया। उसके बाद निबाई बोला : 'चल, दोनों लड़कों को दे दे। ले जाऊँ। तुम लोगों के पास खाने का जरिया नहीं है—खाने के लिए बड़े-बड़े मुँह हैं।'

'लड़कों को कहाँ ले जायेगा ?'

'तेरे बाप का घर नहीं है ? दिबाई मुंडा, तेरा बाप, मेरा चाचा। उसका घर नहीं है ? वहाँ हम नहीं हैं ?'

'वहाँ जाने पर भी तो तुम्हारे घर में खाने वाले मुंह बढ़ जायेंगे। बता,

---

1. एक प्रकार का खाद्यान्न।
2. चावल आदि नापने का डिब्बा।

ठीक है न ?'

'देखता हूँ; कोम्ता काम का हो गया है। उसे लेकर जाता हूँ कुंडी-बरतोली। वहाँ भूरा मुंडा है।'

'कौन भूरा ? वही चिक्नी भूरा ?'

'हाँ रे, वही चिक्नी भूरा।'

'उसके पास क्यों ?'

'अरे ! उसने तीन कूड़ा भुंइ आबाद कर अब आँगन में कोठा खड़ा किया है। लड़का नहीं, चार बेटियाँ हैं। कहाँ कोम्ता गाय चराकर जीवन काट देगा। वे लोग भात खाते हैं। और नोन कितना है ! डोल भरा नोन देख आया हूँ।'

'कोम्ता ने दस बरस पार कर लिये। बीरसा और भी छोटा है।'

'बाप रे बाप ! छोटा है ? उसकी बयस में तो तेरे बाप ने मेरी पीठ पर लाठी मारी थी। गायचरी करता था न मैं ?'

'तेरी तरह क्या सभी हैं ?'

'तेरी बहन, जोनी उसे खूब प्यार करती है। अब वहाँ जाकर रहे।'

'उससे क्या उसका जीवन कट जायेगा ?'

'सालगा में जयपाल नाग है न ? उसके पास बाद में गायचरी के काम में लगा दूँगा। हाँ देख, जयपाल नाग ने पाठशाला खोली है। वहाँ पढ़ेगा भी।'

'पढ़ के क्या होगा ?'

'बाप रे बाप ! रहती है चालकाड़ में, हवा नहीं समझती। अब किरस्तान-भर होने में लाभ नहीं है। पढ़ना-लिखना सीखने से मिशन में जायेगा, प्रचारक बनेगा, सिर पर पाग बाँधकर हाट-हाट में घूमकर यीशु की बातें कहेगा।'

'वह मेरे भाग्य में बदा नहीं है, दादा। ले जाना है, ले जा। मैं और सोच नहीं सकती हूँ। तीन लड़के और लड़कों के बाप को क्या खिलाऊँ ? कैसे जिन्दा रखूँ—सोच-सोचकर जैसे पागल हो जाती हूँ—क्यों रे बीरसा, जायेगा मामा के साथ ?'

'जाऊँगा।'

'बड़ा हो गया, बेटा। खाना नहीं दे पाती। कलेजे में बड़ा दर्द लगता है। तभी जाने को कहती हूँ। नहीं तो तुझे मैं अपने पास से कभी दूर न करती।'

'तुम्हारी बात। आठ बरस का हो गया। अब क्या इतना बड़ा लड़का बैठकर खाता है ?'

'कितना बड़ा बेटे ?'
'बहु—त बड़ा।'
'बहु—त बड़ा ?'
'बहु—त।'

करमी का माँ का मन बोला : आठ बरस के बच्चे को आँचल से ढककर रखा जाता है। लेकिन वह तो केवल माँ नहीं, मुंडारी माँ थी। मुंडारी माँ जानती है—आठ बरस का लड़का गाइचरी करे, या किसी दिकू के खलिहान में झाड़-बुहार का काम करे; पेट के लिए घाटो का जुगाड़ तभी कर सकता है।

करमी का बाप दिबोई मुंडा ज्ञानी-गुणी आदमी था। उससे करमी ने सुना था कि कभी सारे जंगल और पहाड़ मुंडा, ओराँओ, हो और संथालों के थे। तब मुंडारी माँ मुंडारी लड़कों को दिकू लोगों के घर के लड़कों की तरह बहुत दिनों तक अपनी छाया-माया मे पास रखतीं, रख पाती थीं!

यह हज़ारों-लाखों चाँद पहले की बात है। तब धरती ऐसी कठोर नहीं थी। सब-कुछ सीधे हरम् असूल के शासन में था। जब वे लडके और लड़कियाँ केकड़ों के गड्ढे में सोती थीं, तब हरम् असूल ने पानी की बौछार कर धरती की आग बुझा दी थी।

पहले बनाये जल के जीव! मछलियों को बुलाकर बोले : 'सागर के नीचे से माटी लाओ। ऊँची धरती पर जीव सिरजेंगे।'

सागर माटी क्यों दे? माछ मुख में माटी लेकर उठतीं; सागर की लहरें माटी बहा ले जातीं। इधर हरम् असूल सिंहभूम से भी बड़ा और चौड़ा हाथ बढ़ाये ही थे। माटी पायें तो माटी के जीव गढ़ें!

अंत में केंचुआ निकल आया। पेट की मट्टी मल के साथ निकाल दी।

उसी माटी को पाकर हरम् असूल ने स—ब गढ़ डाला।

वे थे, सुख-शान्ति के सरल, सहज दिन!

वही थे लड़का और लड़की—उनके हुआ एक बेटा। लड़का तो बीमारी से मरने-मरने को हो रहा था। वे आदि मुंडा नर-नारी सोच में परेशान थे। सन्तान मर जाने से हरम् असूल का मुंडारी संसार, सिंबोंगा की मुंडारी धरती काले-काले मानुसों से किस तरह छा जायेगी?

'हे अब्बा हरम् असूल!' कहकर वह आदि-जननी बहुत रोयी थी। कठोर काले पत्थर से गढ़े चेहरे से हीरे की तरह बहुतेरे उज्ज्वल

आँसू बहे थे।

हरम् असुन बोले : 'बेटा ! भुवन सिरजकर आँखों में थोड़ी नींद आ गयी थी, या यों ही पुकारा ?'

वह जनक-जननी बोले : 'बेटा तो मरा जा रहा है, देवता ! तुम्हें छोड़कर किसे पुकारें ?'

'इसके लिए दरवाजा घेरकर, चौखट के पास कोयले से तसवीर बना। देखेगा कि बीमारी भाग जायेगी। मेरी पूजा दे। सफ़ेद मुर्गी की बलि दकर पूजा दे।'

वही पूजा देकर लड़के की बीमारी दूर हुई !

कैसे थे वे सब दिन ! कितने सहज में देवता खुश होते थे। अब करमिया क्रिस्तान होकर, फिर बोङा-बोङी की भी पूजा करता है। किन्तु रक्षक-देवता फिर मुंडाओं के बीचोंबीच अब मृत मुंडाओं के समाधि के पत्थर की तरह बड़ी-बड़ी बाधाएँ हैं। वैष्णव-धर्म, संन्यासी-धर्म, गोसाईं-धर्म, क्रिस्तान-धर्म, दिकू—कोर्ट-कचहरी-अदालत, महाजन-सूद, बेगार-सेवक-पट्टा—सैकड़ों बाधाएँ हैं। इतनी बाधाएँ हैं कि देवता लोग भी अब मुंडाओं का भला नहीं कर सकते !

करमी गहरी साँस लेकर बोली : 'वही हो। अब मैं सोच नहीं पाती। उपासे-उपासे रहते सिर चक्कर खाता है ! आँखों के आगे पीले-पीले कन उड़ते हैं, सर सनसनाता है।'

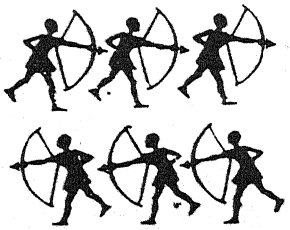

वही हुआ।

निबाई के साथ गये कोम्ता और बीरसा। कोम्ता चला गया कुंडी बरतोली। वहा वह भूरा मुंडा के खलिहान में काम करेगा, गाय चरायेगा।

करमी की बहन जोनी बोली : 'तू यहीं रह, बीरसा। दूसरे देश क्यों जायेगा ?'

बीरसा सिर हिलाकर बोला : 'माँ से कहकर आया हूँ। मैं बड़ा हो गया हूँ। मैं बड़ा बनूँगा।'

जोनी ने मुसकराकर मुँह पर आँचल डाल लिया। बोली : 'तू पागल है, दीवाना। बड़ा होगा ! क्या करेगा बड़ा बनकर ?'

'माँ को बोरा-भर नमक लाकर दूँगा, डब्बा-भर दाल और दाना ला दूँगा।'

'तू क्या डकैत बनेगा ?'

'प्रचारक बनूँगा।'

'किस तरह ?'

'पाठशाला में पढ़कर।'

'और क्या करेगा ?'

'तेरी गायें चरा दूँगा, बेड़ा बाँध दूँगा, काठ ला दूँगा।'

'पाठशाला कितनी दूर है, यह मालूम है ?'

'मालूम है।'

'जयपाल नाग बड़ा गुस्सेवर है।'

'क्या करता है, मारता है ?'

'न-न, मारता नहीं है। पर गुस्सा बहुत होता है।'

'मुझ पर गुस्सा नहीं होगा ?'

'तो वह डुँगरी पहन। तेरे कपड़े सज्जी मिट्टी से धो दूँ।'

जोनी ने बीरसा के कपड़े धो दिये। साफ़ कपड़े पहनकर लकड़ी की तख्ती, लकड़ी का कोयला और एक छत्ता लेकर बीरसा जयपाल नाग की पाठशाला में गया। बोला : 'मुझे ले लो अपनी पाठशाला में।'

'अरे, तू कौन है ?'

'दिबाई पहान का नाती जी, मेरी माँ करमी है। मुझे पाठशाला में ले लो।'

'तेरा घर चालकाड़ में है न ?'

'चालकाड़ से कोई सालगा आ सकता है ? मैं आयूभातू आ गया हूँ। वहाँ से आऊँगा।'

'सवेरे-सवेरे पाठशाला लगती है। होशियारी से आना, बेटा। राह में बन है, बाघ का डर है।'

'बाघ मैंने बहुत देखे हैं।'

'डरता नहीं ?'

'नहीं डरता।'

नन्हा बीरसा किसी तरह किसी से कभी नहीं डरा। बड़ा वह बनेगा ही, बहुत बड़ा ! खट-खटकर जंगल की राह पैदल सालगा से आयुभातू आता और जाता।

एक दिन बीरसा चिल्लाता-चिल्लाता घर लौटा। जोनी सूप से जौ फटक रही थी।

जोनी बोली : 'क्या हुआ ?'

बीरसा वीरदर्प से कुछ देर खलिहान में नाचता फिरा। उसके बाद तख्ती उठाकर बोला : 'क्या देख रही है ?'

'यह क्या है ?'

'यह 'क', यह 'ख', यह 'ग'—मैंने सब सीख लिया !'

जोनी हँस-हँसकर, रो-रोकर हैरान हो गयी। बीरसा से बोली : 'तूने इतना सब सीख लिया ?'

'सीख लिया ?'

'आ, खाना दूँ।'

तली हुई जई, तीतर का मांस और जंगली चेंच की तरकारी थी। मौसी के पास खाने-पीने का बड़ा सुख था। बस घाटो नहीं देती थी मौसी। बन की अरबी और कन्द, चिड़ियाँ, खरगोश, साही का मांस खाते-खाते बीरसा को लगता कि इस दुनिया में तो खाने-पीने का बहुत सामान है ! फिर उसकी माँ करमी को घाटो के साथ नमक क्यों नहीं मिलता ?

मौसी के घर बड़ा सुख, बड़ा आराम था। मौसी का घर महुए के तेल से चिकनाता रहता था।

लेकिन चिड़िया का घोंसला हवा में हिलता-डुलता था ! जोनी का एक दिन ब्याह हो गया।

'मौसी री,' कहकर बीरसा रोकर आकुल हो उठा। जोनी ने हल्दी-भरे हाथों से बीरसा को खींचकर कहा : 'तू तो मेरे साथ खटंगा चलेगा। रो क्यों रहा है ?'

'वे लोग रहने नहीं देंगे।'

'चुप रे चुप। वहाँ गाय चराना बनिये के घर। मेरे पास रहेगा ?'

'रहूँगा।'

जोनी ने बीरसा के बालों में हाथ फेरकर कहा : 'तू तो बड़ा हो गया

है—बड़ा बनेगा ! इतना बड़ा मत बनना रे तू !'

'क्यों ?'

'मुझे छोड़कर नहीं रह सकता है ?'

'तेरे चले जाने से मुझे खाना कौन देगा ?'

'यह तो है।'

लेकिन बीरसा की मामी, निबाई मुंडा की बहू बोली : 'जाना मत, बीरसा। तेरी बंसी सुनने को नहीं मिलेगी। टुइला बजाकर तू नाचेगा नहीं। आयूभातू सूना हो जायेगा !'

जयपाल नाग बोला : 'जाना मत, बीरसा। तुझ-सा दूसरा लड़का पाठशाला में नहीं है। मैं जो जानता हूँ, जितना जानता हूँ, तुझे सब सिखाऊँगा !'

गाँव के लड़कों ने कहा : 'जाना मत, बीरसा। तेरे चले जाने से अखाड़ा सूना हो जायेगा।'

बीरसा बोला : 'मुझे बहुत बड़ा बनना है न ? यहाँ रहने से मैं बड़ा होऊँगा ?'

बीरसा को नहीं मालूम था, जोनी को नहीं मालूम था, जयपाल नाग नहीं जानता था, गाँव के लड़के नहीं जानते थे—कि बीरसा को मुंडारी-जगत और जीवन से कौन-सा बाहरी आकर्षण खींच रहा था !

भीषण, दुर्दमनीय, प्रबल आकर्षण !

मुंडारी जीवन—माने हज़ारों अनुशासनों से दबा-पिसा, और हर खून में अनेकानेक विश्वास ! आज तुम मुंडारी हो, कल तुम किरस्तान हो, फिर मुंडा, फिर किरस्तान, लेकिन तुम्हारा नाम आज सुगाना, कोम्ता, डोलका, भरमी, धानी—कल पलुस, दाऊद, मेथ्यू, जोहाना, अब्राहम—कुछ भी क्यों न हो, खून में रहता है—सिबोङा का शासन, हरम् असूल की त्योरी !

तभी तो जो जंगल-पहाड़-झरना—सब तुम्हारी माँ है—उनसे भी तुम कितना डरते हो ! हमेशा डर लगता है, बाप रे बाप ! सिबोङा ने जब असुरों को जला मारा था, तो असुरों की पत्नियों ने सिबोङा के पास जाकर प्रार्थना की थी।

और सिबोङा ने असुरों की पत्नियों के बालों को मुट्ठी में पकड़कर उन्हें नीचे पहाड़ों और जंगलों में फेंक दिया। उसी से वे पठारों-जंगलों-बनों में दुष्ट-आत्मा बनकर फिरती रहती हैं !

उन लोगों का जो गुस्सा है, स—ब मनुष्यों के ऊपर है। कभी अपरूपा मुंडारी युवती, कभी चकितनयना हरिणी, कभी मुँह से आग निकालती सियारिन बनकर वे मुंडा-आदमियों को भुलाकर जंगलों की गहराई में ले जातीं !

वहाँ ले जाकर उन्हें मार डालतीं।

बीरसा इन्हीं विश्वासों में बड़ा हुआ। उसे पता है कि मुंडा बनकर कई लाख मुंडा जिस तरह का जीवन बिताते हैं, उसके बाहर के जीवन की बात सोचना भी महापाप है।

लेकिन बीरसा वही महापाप कर रहा था। उसके खून में उसके अन-जाने कहीं विरोध पनप रहा था, जमा हो रहा था।

खटंगा में जोनी के वर ने कहा : 'तू लड़के को प्यार करती है। तो फिर उसे किसी के पास क्यों रखेगी ? वह हमारे यहाँ गायचरी करेगा।'

जोनी की भी यही तबीयत थी। वर के पास तीन जानवर और सात बकरियाँ हैं, वह तो उसे मालूम ही था। उसके सिवा वर ने जमीन-जायदाद भी पायी थी।

जोनी ने बीरसा से कहा : 'यह कैसा अच्छा हुआ। मेरे पास लड़के की तरह रहेगा !'

मौसा बोला : 'एक बात है। मैं पढ़े-लिखे मुंडा को नहीं देख सकता। गाइचराई कर, पेट-भर खा, अखाड़े जाकर नाच-गाना कर। मुंडा जब लिखना-पढ़ना करता है तो दिकू होकर मरता है। मुंडा बनकर जनम लेंगे, फिर लिखा-पढ़ी करेंगे—यह सब चालबाज लोगों का ढँग है।'

कुछ दिनों में ही बीरसा समझ गया कि मौसा बुरा आदमी नहीं है, फिर भी बराबर खिटखिट किया करता है। खटंगा गाँव में ऐसा आदमी नहीं जिससे उसका झगड़ा न हुआ हो। उस आदमी के झगड़ालू स्वभाव की बात बहुत फैल गयी थी। इसीलिए ग्यारह मील दूर आयूभातू से पत्नी को लाना पड़ा। आस-पास के किसी मुंडा ने उसे लड़की नहीं दी।

उसका सबसे अधिक झगड़ा घासी मुंडा से हुआ। घासी मुंडा और उसकी जमीन पास-पास थी। दोनों की जमीन के बीच काँटों की झाड़ी का बेड़ा था। लेकिन मौसा को यक़ीन था कि बेड़ा खिसकाकर घासी ने उसकी बहुत-सी जमीन बेदखल कर दी है।

उन काँटों की झाड़ी की बाढ़ खिसकायी नहीं जा सकती—यह उसे कोई समझा नहीं पाया। और तो और, गाँव का पहान भी नहीं। कुछ कहते

ही वह कहता : 'किसने कहा ? किसी ने आँखों से देखा है ?'

लोग उसे ज्यादा उत्तेजित करने में भी डरते थे। वह गुस्सावर हो, या जो हो, दवा-दारू, जंतर-मंतर बहुत जानता है !

सभी को मालूम था कि बीरसा के मौसा के साथ दुष्ट-आत्मा नासान् बोङाओं की बातें होती हैं। उन्हें और मालूम था—झरना, नाला, दह, गड्ढों में बोङा नाग आदि रहते हैं, उस जल में स्नान करने से बेरेन सूद, बोर सूद, पूंडि सूद—किसी-न-किसी जात का कुष्ट होगा ही।

किस जल में नाग इरा अब हैं या नहीं—एक बीरसा का मौसा ही यह बता सकता था।

इसीलिए पहान भी उसका आदर करता था।

दुर्भिक्ष-अनावृष्टि-अतिवृष्टि-दावानल-पशुओं की बीमारी—चेचक-हैजा—किस-किस नासान् बोंङा के अभिशाप से होता है, वह भी बीरसा का मौसा ही बता सकता है।

वह डाइन भी पकड़ सकता है। डाइन कब काली बिल्ली, कब अँगूठे के बराबर मानुस बनकर मुंडा लोगों के घर में घुसकर सोते मानुस को चूक चटा दे ! वैसा मानुस जरूर मरेगा।

कौन डाइन है, कौन इस तरह दूसरे की आयु चुराकर अपनी आयु बढ़ा लेती है—वह बीरसा का मौसा सब बता सकता है।

ऐसे आदमी से घासी मुंडा भी खफ़ा नहीं होता। बीरसा ने मौसा की किसी बात का विरोध नहीं किया। उसे लगा कि मामा कैसा आदमी है ? जोनी-सी लड़की के लिए एक जवान वर नहीं ढूंढ़ा। अच्छा-सा एक बलशाली मुंडा, जो टुइला बजाकर, वंशी बजाकर, नाच-गाकर गाँव को मस्त कर सकता !

लेकिन कुछ दिनों में बीरसा भी समझ गया कि रोज भरपेट भोजन पाना, शरीर और सिर पर तेल लगा सकना, बिना फटा कपड़ा-गमछा पहनना—इनका भी एक और सुख है। वह सुख मनुष्य में कुछ और कमजोरी पैदा कर देता है। यह बड़ा तमाशा है ! खाना न मिले, पहनने को न मिले तो आदमी बीरसा के बाप की तरह कमजोर और डरपोक हो जाता है। तब हमेशा माँ-बाप याद आते हैं। जोर से बोलेंगे नहीं, कि कोई खफ़ा न हो जाये !

और खाने, पहनने, तेल मलने को सब-कुछ पाकर आदमी जोनी मौसी की तरह कमजोर और डरपोक बन जाता है। तब मन में उठता है : माई-बाप ! जोर से बात नहीं करेंगे। कहीं यह सुख चला न जाये !

जोनी बहुत बदल गयी। करम-परब के नाच से वह, यह कहकर कि किसी ने उसका पैर कुचल दिया है, सिर का फूल फेंककर चली आयी थी।

उसी जोनी ने मौसा के हाथ की मार खाकर भी सब मान लिया।

बीरसा के मन में करुणा उत्पन्न हुई।

एक दिन जोनी ने बीरसा से कहा : 'रोगी आदमी है, लेकिन सामर्थ्य बहुत है रे। कितना कुछ जानता है, देखा है न ? उसे पकड़े रह। तुझे सब सिखा देगा। तब तू गुणी बनकर मान पायेगा। तेरी गोशाला में भी गाय-बैल-भेड़-बकरी रहेंगे; ओसारे में अनाज का कोठा होगा।'

बीरसा कुछ न बोला। वह कह सकता था : मौसी, मेरे बाबा ने मिशन में जाकर नाम लिखाया। वह किरस्तान है, मैं भी अभी बीरसा दाऊद हूँ। मेरी जात-बिरादरी के, जान-पहचान के कितने ही मिशन में आते-जाते हैं, आते-जाते रहते हैं। मिशन में नाम लिखाये कितने ही मुंडा-प्रचारकों को हम देखते हैं। मिशन में तो कहते हैं—नासान् बोङा, नाग आदि सब झूठ है ! सिबोङा हरम् असूल झूठ हैं। कुष्ट होता है छूत से, रक्त-मिश्रण से ! हैजा होता है सड़े-गले पानी से; चेचक की छूत हवा-बतास में उड़ती है। वे सब बातें सच हैं या नहीं, पता नहीं। पर तुम्हारी तरह गुणी-ओझा-जादू-मंत्र—इन सबसे भी जैसे डर कम हो जाता है।

जोनी बोली : 'कुछ बोला नहीं ?'

'सोचता हूँ।'

'क्या सोचता है ?'

'मेरे कहने से होगा ? माँ नहीं, बाप नहीं !'

'मेरे कहने से भी नहीं होगा ?'

जोनी को जैसे बड़ी चोट लगी। बोली : 'तू पहले है—मेरे पेट में जो है वह तेरे बाद। मेरे कहने से भी नहीं होगा ?'

बीरसा मानो अचानक बड़ा हो गया। जोनी का पिता दिबाई मुंडा जिंदा होता तो जिस तरह सांत्वना देता, उसी स्वर में सांत्वना देकर बोला : 'उसकी बात और मेरी बात नहीं है रे, मौसा खुश रहे, तभी तो।'

'खुश ही तो रहता है।

'बहुत बिगड़ता है।'

'उस तरह का आदमी जो है।'

जोनी ने ठंडी साँस ली। बोली : 'तू न होता तो मैं मर जाती। अब झुककर आँगन बुहारते-लीपते, झरने से पानी लाते, बदन थक जाता है।'

बीरसा ने आंगन में झाड़ू लगायी। मुर्गियों को बंद किया, गोशाले में धुंआ देकर जानवर बाँधे। उसके बाद कलसी लेकर झरने पर गया।

कलकल-छलछल—झरने का जल बह रहा था, बहता जा रहा था। बीरसा ने कलसी भरी; भरी कलसी पत्थर पर रखकर खड़ा हो गया।

संध्या उतर रही थी—विषण्ण, क्लिष्ट, उसकी माँ की तरह शीर्ण और क्लांत संध्या! संध्या-तारा की चमक उसकी माँ की आँखों की चमक की तरह थी!

लुकास आया हुआ था, लुकास प्रचारक। मिशन के काम से आया था। बीरसा के मौसा ने उसे गाँव से भगा दिया था।

लुकास ने बीरसा से कहा: 'गायचरी करके जीवन काटेगा? चल, लिखना-पढ़ना सीख; बहुत काम कर सकेगा।'

बीरसा लिखना-पढ़ना सीखना चाहता था। वह क्यों इतने ग़रीब बाप का बेटा हुआ? बाप खाना नहीं दे सकता; मौसी के पास रहता है। मौसी का ब्याह हो गया, मौसी के साथ यहाँ है। यहाँ जीवन के माने हैं—गाय चराओ, भरपेट घाटो खाओ, खुश रहो।

पर बीरसा जानता है: बीरसा खुश नहीं है।

उसने ठंडी साँस ली, कलसी लेकर उठ खड़ा हुआ। चारों ओर उन्मुक्त वनांचल और पहाड़ थे। आँखें किसी ओर अटकती न थीं। लेकिन फिर भी ऐसे लगता—मानो जीवन बहुत बँध गया हो। खटंगा इतना विच्छिन्न, अलग-थलग गाँव था। चालकाड़ में सब था—दुःख, दारिद्र्य, अनाहार! किंतु फिर भी जैसे बहती हुई जीवन-धारा चालकाड़ को छूती हुई जाती थी।

हाट से आते-जाते आदमी चालकाड़ होकर जाते। मिशन से लोग आते। धानी की तरह के खानाबदोश लोग आते। राँची, खूँटी, तामार, बनगाँव—सब जगह की ख़बरें मिलतीं।

खटंगा इस सबसे बहुत दूर है। कैसा बँधा, और क़ैदी-क़ैदी-सा लगता था!

ग्रीष्म में वन के पानी के सारे झरने, तलैया, नदी सूख जाते। कहीं-कहीं फिर भी पानी रह जाता, जिसका पता जीव-जन्तुओं को रहता था, और रहता था बीरसा को।

उस बार वह छिपे हुए, मनुष्यों के अजाने तलैया और दह भी सूख गये थे। झरना और नदी की बालू के कलेजे से, गड्ढे के शरीर से बूँद-बूँद जल उसी

स्रोत से जमा होता रहता। भोर होते-न-होते औरतें वह जल ले आतीं, क्योंकि सूर्य वहीं सेंगेल-दा की आग छोड़ता हुआ निकलता। धूप लगते ही पानी सूख जाता।

उसी समय बीरसा जंगल के पेट के भीतर तक गया था, गंभीर गहन जंगल में। वहाँ एक गढ़ैया का पानी सूखकर बीच में ज़रा-सा पानी था और आसपास कीचड़ थी।

उसने देखा था कि एक बड़ा-सा साँभर हिरन उस कीचड़ में फँसकर खड़ा था। पैरों का बहुत-सा हिस्सा कीचड़ में धँस चुका था। लगता था कि कीचड़ में से पैर निकालने का उसने प्रयत्न किया था और उसी हिलने-डुलने में पैर धीरे-धीरे और भी गहरे-से-गहरे में फँसते गये।

उसके बाद हिरन ने समझ लिया कि वह सामने के जल के पास नहीं पहुँच सकेगा, कीचड़ से पैर भी न निकाल सकेगा। सामने पानी रहते भी वह प्यास से मर जायेगा। चारों ओर बनभूमि रहते हुए भी वह मुक्त जीवन न पा सकेगा। उसके सामने भयंकर और निर्मम मृत्यु आ खड़ी हुई थी। भीषण और दारुण मृत्यु सामने होने की बात सोचने के परिणाम-स्वरूप उसके खड़े रहने के ढंग में संपूर्ण रूप से पराजित हो, आत्म-समर्पण करने का भाव था।

बीरसा क्या इस समय वही साँभर है? चारों ओर मुक्त और बृहत्तर जीवन है; फिर भी वह यहाँ क्यों फँसा हुआ है? सोचने से भी डर लगता है!

साँभर का सड़ा-गला शव—वर्षा न आने तक वहीं खड़ा रहा।

बीरसा पानी की कलसी लेकर घर की ओर चला। आजकल वह दिन-रात यही बातें सोचता रहता था। जब सोचता कि इस समय वह कहाँ है, चारों ओर क्या हो रहा है, यह सब वह भूल जाता। मन में कुछ भी न रहता।

आदमी पशु नहीं है—इसीलिए भयंकर मजबूरी और विवशता से भी सहसा मुक्ति पा सकता है!

बीरसा वह मुक्ति पा गया।

मौसी की गाय-बकरियाँ लेकर वह चराने गया था। उस समय फाल्गुन का अंत था। खेतों में वसन्त के फल रहे पेड़ थे।

एक सीधे पेड़ के नीचे बैठकर बीरसा मन-ही-मन कुछ सोच रहा था। उसके बाद शीतल छाया में, हवा के सुख से वह सो गया। मौसा का डंडा

शरीर पर पड़ने के पहले उसकी नींद नहीं खुली।

उसके मौसा के कोश में जिन अपराधों के लिए क्षमा कर देने की संभावना तक नहीं थी, बीरसा वे सब कर चुका था।

अब गाइचरी करके आकर वह सो गया था!

गाय-बकरियाँ घासी मुंडा के खेत में घुसकर रबी की फ़सल चर गयी थीं। घासी ने लाठी फेंककर मारी थी जिससे एक बकरे की टाँग टूट गयी थी। उस बकरे को अब काटकर खाना पड़ेगा!

घासी हमेशा से अपराधी था; मौसा था निरपराध। अब उसे बातें सुनाने के लिए अच्छा बहाना मिल गया। उसका खेत बिलकुल तहस-नहस हो गया था।

मौसा ने बीरसा को बहुत पीटा। बीरसा कुछ भी न बोला। चुपचाप मार खाता रहा।

जोनी के मन से भी जैसे डर निकल गया। उसने तेल गरम कर बीरसा के बदन पर मालिश की। उसके बाद पति को गालियाँ देने लगी।

'अभागे! बुड्ढा हो गया। जानता है कि लड़का मेरे बेटे-सा है। उस पर हाथ उठाया। मैं अपने पेट का बच्चा तुम्हें नहीं दूंगी; लेकर दादा के पास चली जाऊँगी।' फिर बोली :

'बड़े गुणी बनते हैं! बहुत जानने-सुनने का गर्व है! अगर इतना ही जानते होते तो घर के पास बहू क्यों न मिली? इसी गुस्से के मारे! रहो अपना गुस्सा लेकर! मैं तुम्हारा भात नहीं खाऊँगी। दादा के पास चली जाऊँगी।'

शरीर में और पैरों में बड़ा दर्द था। फिर भी बीरसा को हँसी आ गयी। वह समझ गया, जोनी को पति के आक्रामक आचरण से बड़ी चोट लगी है। गुस्से से और दुःख से सब डर-भय भूलकर इतनी बातें करने की हिम्मत इसी से पैदा हो गयी। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात थी कि मौसा चुपचाप बैठा सब सुनता रहा! जोनी ने गाल आगे कर दिया। उसके बाद पैर फैलाकर रोने बैठ गयी।

तब मौसा बोला, 'अरे, अपनी दुलारी लड़की को दादा ने कुछ सिखाया नहीं?'

'क्या नहीं सिखाया?' जोनी हुंकार उठी।

'बच्चे वाली औरत को साँझ की बेला में रोने से हवा-बतास के साथ डाइन पेट में घुसकर बच्चे को नुकसान पहुँचाती है। सो उठ, मुंह पर, आँख पर पानी छिड़क। मुझे खाने को दे, बीरसा को दे, खुद खा। गालियाँ तो बहुत दे चुकी। अरे, जो कुछ किया गुस्से में। नहीं तो मुंह बिगाड़ता

रहता हूँ; हाथ से मारा किसी दिन ? मेरा गुस्सा बहुत है, बता क्या करूँ ?'

यह कहना ही पड़ेगा कि यह एक तरह से हार मान लेने के समान था। दुश्मन हार मान ले तो उससे फिर लड़ा नहीं जाता। जोनी उठी। मुँह और आँखें धोयीं। आँचल खोंसकर पति को खाना दिया, बीरसा को दिया, खुद भी खाया।

दूसरे दिन सबेरे बीरसा हड्डी जोड़ने वाली एक लता ले आया। जिस बकरे की टाँग टूटी और चमड़ी फाड़कर हड्डी बाहर निकल आयी थी, उस पैर को खींचकर हड्डी के जोड़ पर हड्डी बैठा दी। उस बेल को पीसकर कई जगह उसका लेप कर दिया। उस लेप पर रेंड़ी का पत्ता लपेटकर एक पतली लकड़ी से टाँग को बाँध दिया। उसके बाद एक जगह घेरा बनाकर उसमें बकरे को बाँध दिया।

मौसा सब देख रहे थे। बोले : 'हाँ रे, काम चल जायेगा ? पैर फिर ठीक हो जायेगा ?'

'दिकू लोगों के घोड़ों का पैर टूटने पर इसी तरह जुड़ता है। यह लता बड़ी अच्छी है।'

मौसा शायद बहुत खुश हो गया, क्योंकि उसी दिन कुछ देर बाद उसने पीतल की एक आरसी निकालकर बीरसा को दी। बोला : 'मैं मुँह नहीं देखता, उमर हो गयी। तू मुँह देखा करना, पास रख।'

जोनी से बोला : 'ना रे, गुस्से में मारा था। पर जैसा हिल-डुल रहा है, ध्यान से देखा—वैसी कोई चोट नहीं लगी है।'

बीरसा ने शाम के पहले घर के हज़ारों काम कर लिये। झरने का पानी ला-लाकर डोल भर डाले। आँगन में झाड़ू लगा दी। सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कर लता से बाँधकर आँगन के कोने में एक के ऊपर एक पुलिंदा रखकर जलाने का ढेर-सा सामान खड़ा कर दिया। गोशाला साफ़ कर चिकनी कर दी।

जोनी हँसकर बोली : 'पागल क्यों हो गया है ? क्या घर में ससुराल से कोई आ रहा है ?'

बीरसा बोला, 'बाहर-बाहर घूमता रहता हूँ। यह काम करने में तुझे बहुत कष्ट होता है।'

रात को बीरसा रोज़ की तरह सोने गया। लेकिन भोर होने के पहले ही वह उठ गया। चुपचाप निकल आया, घर से निकला, उसके बाद भोर का तारा देखकर ठीक रास्ते का अनुमान लगाकर चलने लगा। वह जायेगा

कुंडी बरतोली। वहाँ भूरा मुंडा के घर कोम्ता काम करता है। कोम्ता गाइचरी का काम तो करता है, लेकिन सबको मालूम है कि उस घर में उसकी जगह बहुत ऊँची है, क्योंकि जल्दी ही वह भूरा का जमाई बनेगा। कोम्ता के पास जाकर बीरसा सब खोलकर कहेगा।

जोनी को बहुत कष्ट होगा। क्या करे बीरसा? कष्ट तो उसे भी होगा। इतने दिनों तक सुख-दुःख में इकट्ठे रहे हैं। लेकिन उस दिन मौसा ने उसे मारकर अच्छा किया। वह घटना न होती तो बीरसा खटंगा से कभी निकल न पाता।

और बीरसा अच्छी तरह समझता है कि जोनी उस पर निर्भर करती है, यह बात ठीक भी है; पर उसी कारण से जोनी को बहुत असुविधा भी है—यह भी सच है। उसके न रहने से उसको लेकर उन पति-पत्नी में अब झगड़ा न होगा। मौसा मन में सोचेगा कि मौसा ने मारा, इसलिए बीरसा गुस्सा होकर चला गया। लेकिन बीरसा, ग़रीबी का सहारा लेकर कह सकता है कि वह गुस्सा नहीं कर सकता, क्योंकि मौसा ने कोई ग़लत बात नहीं की। जाति के शत्रु का खेत खिला देने से झगड़े की राह खुल गयी। एक जानवर ज़रूमी हुआ। टाँग मरम्मत करने से काम ज़रूर चल जायेगा, पर बीरसा पर मौसा खुश क्यों होंगे?

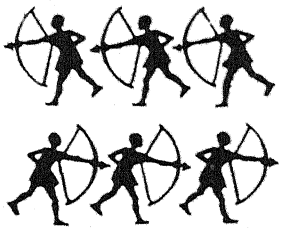

तीसरा पहर होते-होते बीरसा कुंडी बरतोली पहुँच गया। कोम्ता उसे मिल नहीं पाया। कोम्ता अखाड़े पर गया हुआ था। भूरा मुंडा की पत्नी ने उसकी खूब आवभगत की। गेहूँ का दलिया खाने को दिया। सीसे की कटोरी में तेल भी पैरों में मलने के लिए दिया। कोम्ता के घर लौटने पर भूरा बोला: 'तेरा भाई आया है। कुछ कहना मत। लड़का हठी और उद्धत है। नहीं तो इतनी राह पैदल चलकर आता?'

रात को बड़े भाई के पास लेटे-लेटे बीरसा बोला: 'तू यहाँ शादी

करेगा ?'

'हाँ रे !'

'लड़की देखने में कैसी है ?'

'अच्छी नहीं है। नाक से बोलती है, धीरे-धीरे काम करती है, धीमे-धीमे चलती है।'

'तो शादी क्यों करेगा ?'

'भूरा के ससुर के पास अच्छी जमीन है, तीन भेड़ें हैं। उसके लड़का नहीं है। भूरा की पत्नी की एक ही संतान है। कहती है, बड़ी नतनी की शादी हुई है, यह देखते हुए सब-कुछ नतजमाई को देगा।'

'भूरा क्या कहता है ?'

'कहता है कि सब लेकर यहाँ रहो। अपने माँ-बाप को भी ले आ।'

'बाबा आयेंगे ?'

'आयें तो अच्छा है, बीरसा। मुझे गृहस्थी से लगाव है।'

कोम्ता उठकर बैठ गया। बीरसा और उसके बड़े भाई के बीच बचपन से लेकर गहरी हमदर्दी और मेल-मिलाप है। बीरसा अगर देखे कि उसका तेरह बरस का दादा भूरा मुंडा की रोगी और बदशक्ल लड़की से शादी कर रहा है—तो कोम्ता को कुछ समझाना न होगा। बीरसा जान जायेगा कि कोम्ता यह काम कर रहा है, गृहस्थी जमाने के लिए।

कोम्ता ग़रीब बाप का दुलारा लड़का था। उसके मन में एक फ़िकर थी कि किस तरह तीनों भाई, बाप-माँ, एक छत के नीचे रूखा-सूखा खा-पहनकर रहें। बाप असमर्थ था—इसी से कोम्ता सोचता था कि अपना भला-बुरा लगना या न लगना छोड़कर घर बसा ले।

कोम्ता के स्वभाव में एक और बात थी। उसे मालूम था कि बीरसा उससे अलग तरह का है। भाई की स्वतंत्र प्रवृत्ति के प्रति उसे श्रद्धा थी। तभी उसने बीरसा से कहा : 'तू क्या करेगा ?'

'तू क्या कहता है ?'

'मेरी बात छोड़।'

'मेरी तो इच्छा है कि लिखाई-पढ़ाई करूँ।'

कोम्ता ग़रीबी की चक्की में पिसकर बड़ा हुआ था। कुछ सोचकर बोला : 'बुरा नहीं है रे, बीरसा।'

'क्या ?'

'यही लिखाई-पढ़ाई।'

कोम्ता फिर विवश और करुण हँसी हँसा, बोला : 'मुझसे तो होगा नहीं।'

'तेरे लिए किसने कोशिश की ? कोशिश करने पर न कर पाता तो कहता 'नहीं हुआ'—अब क्यों कह रहा है ?'

'क्या कोशिश करे, बीरसा ? आबा और माँ बहुत तकलीफ़ उठा रहे हैं। बड़े अकाल में भी हम लोगों को बचाकर रखा। हमारी जानें बचाकर रखने में दोनों मर मिटे। पढ़ाते कैसे ?'

'मालूम है।'

'तेरा होगा। पता है क्यों ? तेरे दिमाग ज्यादा है ? उसके सिवा घर का भार मैंने लिया है। तेरे ऊपर भार नहीं है; तू पढ़ सकता है।'

'तू कहता है, मैं पढ़ूँ ?'

'हाँ रे ! पढ़ने से प्रचारक होगा। एक लड़का मिशन में रहने से हमारा बल-भरोसा बढ़ जाता है।'

'तो कहाँ जाऊँ ?'

'क्यों ? लुकास प्रचारक खटंगा गया था न ? वह यहाँ है। तुझे बुर्जू में, जर्मन मिशन में ले जायेंगे।'

बीरसा समझ गया, भाग्य उसे बाहर घसीट रहा है—मुंडारी-संसार के बाहर।

लुकास प्रचारक उसे जर्मन मिशन ले गया। रेवरेंड पुट्सकिंग बोले : 'भरती कर लूँगा। पर एक बात है। लोअर प्राइमरी परीक्षा देकर निकलना पड़ेगा। मुंडा लड़कों के बुद्धि भी रहती है; पढ़ने की इच्छा भी रहती है। लेकिन घर के दबाव से उनका लिखना-पढ़ना नहीं होता। वे पढ़ना छोड़कर चले जाते हैं।'

बीरसा बोला : 'मैं नहीं जाऊँगा।'

बुर्जू का जर्मन मिशन निराला था। बस्ती से बहुत दूर। वहाँ बीरसा का नया जीवन शुरू हुआ। मिशन का साफ़-सुथरा, नियमों में बँधा सुन्दर जीवन बीरसा के जाने-पहचाने जीवन से बिलकुल भिन्न प्रकार का था। बीरसा उस जीवन में डूब गया।

पढ़ाई-लिखाई की दुनिया एक नयी प्रकार की दुनिया थी। एक-एक अक्षर, एक-एक शब्द पढ़ पाने पर बड़ी विजय का अनुभव होता था—रग-रग में उल्लास—तीर से लक्ष्य वेधने का-सा उल्लास ! मूर्ख लोमड़ी और खट्टे अंगूर की कहानी जिस दिन उसने पढ़ी, अंगरेजी पढ़कर समझ पाया, उस दिन बीरसा रो पड़ा। वह पढ़ पाया, पढ़ पाया और समझ सका। एक अपूर्व विजय थी। बीरसा के भाग्य ने उसे दूसरे ही जीवन से बाँध दिया था। उस अनुशासन को हेय करके बीरसा ने दूसरे जीवन में जन्म लिया

था। प्रमाणित कर दिया था कि वह पुरुष है—नियति के निर्देश को अमोघ और अन्तिम नहीं मानता!

'वन डे ए फ़ॉक्स...,' बीरसा ने फिर पढ़ा। क्लास में रेवरेंड बोले : 'तुम कर सकोगे।'

बीरसा ने लोअर प्राइमरी परीक्षा दो बरस में पास कर ली। रेवरेंड बोले : 'हमारे यहाँ और पढ़ाने की व्यवस्था नहीं है। तुम चाईबासा जाओ। तुम पढ़ाई मत छोड़ना। तुम्हारा भविष्य बहुत उज्ज्वल है।'

ग्यारहवें बरस बीरसा एक दिन चालकाड़ लौट आया। सुगाना से बोला : 'आबा! मैं चाईबासा जाऊँगा। और पढ़ूँगा।'

'चाईबासा जायेगा?'

सुगाना ममता-भरी अपनी आँखें फाड़े बेटे के मुँह की ओर देख रहा था। मिशन के साहब किरस्तान लड़कों को पढ़ने को कहते हैं। पढ़ने जाने पर जयपाल नाग की पाठशाला, बुर्जू का मिशन स्कूल, जहाँ भी हो वहाँ पढ़ने जाने पर पता लगता कि दुनिया बहुत बड़ी है। उस दुनिया का स्वरूप, स्वभाव, लक्ष्य, जीवन—दूसरी तरह के हैं। करमी के साथ सुगाना का जब विवाह हुआ, तो उस विवाह के उत्सव में सुगाना की माँ ने रंग घोलकर महावर लगायी थी।

सुगाना आदि के विवाह के दिनों दुनिया की तसवीर तिकोनी थी। लेकिन अब लड़के की आँखों की ओर देखकर सुगाना की समझ में आया कि दुनिया वैसी नहीं, और क़िस्म की ही है। उस धरती की सीमा नहीं—उसी विशाल, अपरिचित धरती की पुकार बेटे ने सुनी है।

डरा हुआ सुगाना हँसा। उसकी दुनिया बस इस चालकाड़ से बाम्बा, बाम्बा से कुंरबदा तक फैली है—महाजन के हाथ से बेहाथ होकर मानो एक गाँव से दूसरे गाँव जाना।

उसकी दुनिया और भी अनेक सीमाओं से जकड़ी है। वह धरती पर दो वक़्त दो थाली घाटो, बरस में चार मोटे कपड़े, जाड़े में पुआल भरे थैले का आराम, महाजन के हाथों छुटकारा, रोशनी करने के लिए महुआ का तेल, घाटो खाने के लिए काला नमक, जंगल की जड़ें और शहद, जंगल के हिरन और ख़रगोश-चिड़ियों आदि का मांस—ये सब मिल जायें तो राजा हो जाता!

सुगाना बोला : 'बहुत पढ़ चुका, बाप मेरे! इतना पढ़ा है कि चालकाड़ में किसी ने नहीं पढ़ा। अब हाथ-पैर जोड़ने से मिशन के साहब तुझे बग़ीचे में काम दे देंगे। साहब का माली बनने से दो-बेला भात खाने को मिलेगा—

शादी में, पूजा में जैसा भात खाने को मिलता है, वैसा भात !'

'आबा, मैं चाईबासा जाऊँगा। और पढ़ूँगा।'

'और पढ़कर क्या करेगा, बाप ? पढ़ने के बाद इस घर में, इस संसार में तेरा मन नहीं बैठेगा। मुंडा-लड़कों को असभ्य, लँगोटी पहनने वाला समझने लगेगा। जितना पढ़ेगा बाप, उतना ही दुःख है। मुझे दुःख नहीं है। मैं तो भूखे-नंगे रहकर भिखमंगा होकर रहा ! तू बेकार में दुःख पायेगा। बहुत पढ़ने पर भी कोई तुझे बाबू नहीं कहेगा। गाँव में कोई मुखिया नहीं बना देगा। अन्त में खेतन के लड़के की तरह कोयला की खान में कुली बनेगा। मजूर-ठेकेदारों के साथ चायबागान में चला जायेगा। तू घर में रह। अब कर्ज़-उधार कर एक गाय और मोल लूँगा, चराना।'

बीरसा ने शान्त दृष्टि से पिता की ओर देखा : 'आबा ! पढ़ने के बाद मैं साहबों-सा बनूँगा, साहब ने कहा है।'

सुगाना ने गहरी साँस छोड़ी। बोला : 'तो हाट से सब्जी मट्टी ले आऊँ। कपड़े काच दूँ। खेतन के घर से सुई माँग ला। माँ कपड़ा सी देगी।'

'और तीन लड़के जायेंगे। लान्दिरूली का अभिराम, कुंदारी के इशाक और बाम्बा।'

दूरी की बात मन पर निर्भर करती है। किसी-किसी वक़्त थोड़ी ही दूरी यथार्थ में बहुत ही दूर हो सकती है, और बड़ी दूरी कम दूर लग सकती है।

चालकाड़ से चाईबासा ज़रूर ही दूर है। साल 1886 में चार लड़के सुगाना मुंडा के साथ चाईबासा गये थे। लान्दिरूली की जोहाना का बेटा अभिराम, मसीहदास का लड़का बाम्बा, कुंदारी के प्रचारक दाऊद का बेटा इशाक—इन्होंने केवल रास्ते की दूरी नापी थी।

बीरसा को पता न था—वह चला था एक जन्म, एक जीवन से एक दूसरे जीवन की ओर !

उसके चेहरे को ओट-ही-ओट रखकर सुगाना देख रहा था। लड़का बहुत अपरिचित लग रहा था। उसके बेटे ने लोअर प्राइमरी बुर्जू मिशन से पास किया था। यह बहुत पढ़ाई हो गयी ! वह और क्यों पढ़ना चाहता है, क्यों जानी-पहचानी दुनिया को छोड़कर बाहर निकलना चाहता है ?

सुगाना समझता है जमीन-जायदाद, खेती-बारी, खेतिहर बनके रहना। सुगाना का छोटा भाई पसाना तो बाम्बा में ही रह गया। उस वक्त बीरसा छोटा था; लड़की पैदा नहीं हुई थी। पसाना के बेटे को चीता उठा ले गया। तब बीरसा छोटा था—अब लगता है कि बीरसा कभी छोटा नहीं था। हमेशा से वही समझदार, और होशियार था। जैसे किसी दिन नंगे शिशु-सा आँगन में घुटनों के बल नहीं चला हो। एक बरस का भी जब था तो आबा कहकर सुगाना की गोदी में कभी उछल नहीं पड़ा था!

कोम्ता भी सुगाना की तरह घर-गृहस्थी समझता था। बीरसा गृहस्थी का जितना काम कर सकता था कोम्ता उतना भी नहीं कर सकता था। लेकिन बीरसा में कोई लगाव नहीं था।

सुगाना के मन ने कहा : ओ बीरसा, मेरे आबा! चाईबासा न जा, मेरे बाप! चल, घर लौट चलें। करम-परब में इस बार नयी धोती मोल ले दूंगा। कुसुम से रँगा दूंगा। मेरे आबा, तुम बालों में गुंजाफल की माला पहनकर नाचना। चालकाड़ को लौट चल।

बीरसा बोला : 'वह, वह रहा! मिशन का घर दिखायी पड़ रहा है। देख, आबा!'

सुगाना धीरे से बोला : 'देख रहा हूँ, बच्चा!' उसकी आवाज़ भीतर उमड़ते हुए आवेग से घुट रही थी।

बीरसा बोला : 'कितना बड़ा मकान है! ब्बाबा रे! कितनी ईंटें पकवायी होंगी, बता तो! तभी तो ऐसा गुम्बद खड़ा किया है।'

सुगाना बोला : 'ब—हुत ईंटें!'

'यहीं मैं पढ़ूंगा?'

'हाँ, बच्चा।'

'दादा...!'

'क्या कहा?'

'चिरकाल गृहस्थी लेकर बैठा रहा। न सीखा लिखना-पढ़ना, और न कुछ जाना।'

'सबके क्या सब होता है?'

'दादा...!'

'ले बीरसा, आ पहुँचे।'

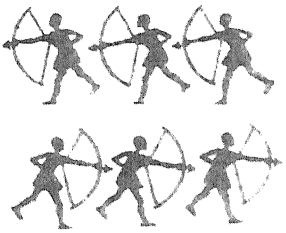

जब वे लोग चालकाड़ से चलते-चलते चाईबासा पहुँचे, तब संध्या हो गयी थी। धोती का पल्ला बदन पर छोड़, पैरों के दर्द के मारे बीरसा जमीन पर बैठ गया। रेवरेंड साहब बोले : 'भरती होने का टाइम निकल गया। तुम लोग लौट जाओ।'

'दक्षिण तामार, सब जगह से तो लड़के यहीं आते हैं, हम भी आये हैं।'

'जगह नहीं है।'

'जगह नहीं ?' अभिराम, इशाक, बीरसा का मुँह निहारने लगे। जगह नहीं है क्या ! इतना बड़ा पक्का दालान, इतने कमरे, जगह नहीं है ?

बीरसा बोला : मैं लौटकर नहीं जाऊँगा। मेरे पैर में पत्थर से चोट लग गयी है। मैं चल नहीं सकूँगा।'

'चोट अच्छी हो जायेगी। दवा दे रहा हूँ।'

'न। मुझे बुर्जू के साहब ने चिट्ठी दी है।'

'वहीं जाकर पढ़ो।'

''वहाँ पढ़ना खतम कर दिया है। पास कर लिया है।'

'अच्छा, कल आओ। भरती कर लूँगा।'

वे मिशन के सामने पाकड़ के पेड़ की छाया में रात को लेटे रहे। सवेरे साहब ने बीरसा को भरती कर लिया। बाम्बा, अभिराम और इशाक को लौटा दिया।

मिशन में उन लोगों ने बीरसा को दिये—दो साबुन, दो कमीजें, दो पैंट, एक गमछा। एक लड़के से कहा : उसे बता दो—कैसे साबुन लगाकर नहाया जाता है।

लड़के का नाम था अमूल्य। छरहरा बदन, शान्त चेहरा ! वह बीरसा से बड़ा ही होगा।

कुएँ के किनारे जाकर उसने बीरसा को साबुन मलकर स्नान करना

सिखाया। एक डोरी देकर कहा : 'इसे पैंट की कमर में बाँध लो। शर्ट को इस तरह इकट्ठा क

'तेरा ना

'अमूल्य।'

'तू क्या बाबू है ?'

'हाँ, मैं बंगाली हूँ।'

'तू तो मुंडारी बोल रहा है ?'

'मैं अनाथाश्रम का लड़का हूँ। मुंडारी जानता हूँ।'

'तू मेरे साथ रहेगा ?'

'रहूँगा। सुनो, किसी से 'तू' मत कहो। 'तुम' कहना। ऐसा करने पर देखोगे कि साहब लोग बड़े अचंभे में पड़ जायेंगे। वे सबसे पहले मुंडा लड़कों से यही कहते हैं कि 'तू' नहीं कहा जाता है।'

बीरसा कुछ सोचकर बोला : 'तुम क्या बड़े होकर दिकू हो जाओगे ? बाबू लोग तो दिकू हो जाते हैं।'

'दूसरे बाबू शायद हो जाते हैं। मैं नहीं हूँगा।'

'क्या बनोगे ?'

'डाक्टर बनूंगा। नौकरी करूँगा।'

'हो: !'

'क्यों ?'

'नौकरी करने से दिकू होता है।'

'तुम क्या बनोगे ?'

'लिखना-पढ़ना सीखूँगा, ब—हुत-सा लिखना-पढ़ना। उसके बाद कचहरी जाकर बाप को अपने गाँव की जमीन लौटाऊँगा।'

'उसके बाद ?'

'प्रचारक बनूंगा। सबको यीशु की बात बताऊँगा।'

'उसके बाद ?'

'तब देखा जायेगा।'

बीरसा बहुत अच्छी तरह रहा। उसने मिशन में जितने गाने सीखे, उन सब गानों को सुरों में बाँधकर बाँसुरी पर बजाता। अमूल्य उसे नक्शे बनाना, हिसाब लगाना, किताबें पढ़ना सिखाता। स्कूल की पढ़ाई के बाद अमूल्य उसे पढ़ाता।

बीरसा उसे देश की, गाँव की, जंगल की बातें बताता।

एक दिन वे साहब से कहकर शहर घूमने गये। अमूल्य को वजीफा मिलता था। उसके पास चार आने थे। उन्होंने ईख खरीदी; गरम-गरम

तिल के लड्डू खरीदे।

बीरसा बोला : 'दूकान में कितना नमक है, देखा ?'

'नमक तो दूकान में रहता ही है।'

'और मिट्टी का तेल भी तो कितना है !'

'दूकान में तेल नहीं रहेगा ?'

'बड़ा होने पर मैं माँ को बोरे-के-बोरे-भर नमक ख़रीद कर दूंगा। टीन-के-टीन तेल गाँव ले जाऊँगा। माँ बत्ती जलाएगी।'

'बोरे-के-बोरे नमक ?' अमूल्य ताज्जुब में पड़ गया।

'हाँ ! नमक से घाटो का स्वाद कितना बढ़ जाता है ! माँ सारा नमक हम लोगों को दे देती है। ख़ुद अलोना घाटो खाती है। उससे ही तो माँ का शरीर सूखता जा रहा है।'

'बीरसा, वह बूढ़ा तुम्हें बुला रहा है।'

पीछे घूमकर बीरसा ठिठक कर रुक गया। धानी मुंडा था। साथ में एक बुढ़िया थी।

'तू यहाँ भी आ गया ?'

'आऊँगा नहीं ? चाईबासा क्या तेरा ख़रीदा है ?'

पुरानी बातें याद आते ही बीरसा हँसा। हँसते-हँसते कहा : 'हाँ, मेरा ख़रीदा ही तो है।

'देखा जायेगा।'

'क्या देखेगा ?'

'तुझे देखूँगा रे !' धानी के साथ की बूढ़ी आगे बढ़ आयी। बोली : 'तेरा कपाल कैसा है, हाथ-पाँव कैसे हैं ? तू कौन है रे ?'

'मैं बीरसा हूँ।'

'तो जा न, चला जा।'

'कहाँ जाऊँ ?'

'तुझे खोज रहे हैं न !'

'कौन खोज रहे हैं ?'

'मेरा भाई यह धानी, सरदार लोग।'

'सरदार लोग ?'

'मुलकी लड़ाई की ख़बर नहीं सुनी ? तू कैसा मुंडा है रे ?'

बीरसा उसकी बातें सुनकर ताज्जुब में पड़ गया। उसे—सुगाना मुंडा के सोलह बरस के बेटे को—खोज रहे हैं ? कौन ? क्यों ?

आश्चर्य, मिशन में ही सब बातें सुनायी देने लगीं।

मिशन में हैं डॉक्टर ए० नॅट्रट। एक दिन उनके पास ही चले आये जर्मन लूथरन चर्च में जो किरस्तान हुए थे, वे ही मुंडा लोग।

'अर्जी है।'

'कैसी अर्जी ?'

'छोटे नागपुर का काश्तकारी का कानून कहता है कि जिसकी जमीन है वह रख सकेगा। तुम साहब हो। हम लोगों का आदिम गाँव लौटा दो।'

'आदिम गाँव नाम से कुछ है ?'

'नहीं।'

'तब ? जो है ही नहीं वह कैसे वापस होगा ?'

'नहीं क्यों ? दिकू लोगों ने ले लिया था—इसलिए।'

'मैं क्या करूँ ?'

'तुम साहब हो। देश की सरकार भी साहब है। साहब सरकार से कह दो, व्यवस्था कर दे।'

'मैं मिशन का साहब हूँ, सरकार मेरी बात नहीं सुनेगी।।'

'तो मर! हम लोग तुम्हारे मिशन में नहीं रहेंगे। चले जायेंगे तोरपा मिशन। कैथॅलिक मिशन बहुत अच्छा है। मुंडा लोगों का दुःख तोरपा मिशन के लियेवेंस साहब समझते हैं।'

वे लोग झुंड-के-झुंड जर्मन मिशन छोड़कर तोरपा चले गये। लियेवेंस साहब के पास जाकर कैथॅलिक हो गये। बीरसा ने सुना कि लियेवेंस साहब ने कह दिया था : 'जो अत्याचारी है, उनसे जाकर लड़ो। लड़ने से वे झुक जायेंगे।'

सुना कि सरकार फ़ौज भेजकर सरदारों को पकड़ रही है। लियेवेंस की बदली कर दी गयी। सरदार लोग पकड़े जाने लगे। चालीस लोगों के नाम मुक़दमा चला। लेकिन अदालत के कठघरे तक पहुँचने के पहले ही आठ लोग मर-खप गये।

सुना कि सरदार लोगों ने जिन वकीलों को ठीक किया था उन्होंने कुछ नहीं किया। मुंडा लोगों की ओर से लड़े थे सिर्फ़ बैरिस्टर जेकब। कलकत्ता से आकर मुक़दमा लड़े थे।

बीरसा बड़े दिनों की छुट्टियों में घर गया। रोकोम्ब्रा से धानी मुंडा ने उसका साथ किया। धानी की उमर इस वक़्त बहुत थी।

धानी क्षोभ के साथ बोला : 'नौ सौ साठ चाँद पार कर दिये, एक भगवान नहीं आया रे !'

'भगवान तो एक ही है ; साहब लोग कहते हैं।'

'उनकी बात छोड दे।'

'कौन भगवान ?'

'जो भगवान मुंडा लोगों की ओर से आयेगा। मुलकी लड़ाई को मंद-मंद आग से सब-कुछ जला देगा !'

'उसके बाद ?'

'साहब-दिकू—सबको भगा देगा। हमारे अपने गाँवों में मुंडा लोगों की बस्ती बना देगा।'

'मुझसे क्यों कह रहा है ?'

'बीरसा, तू कर सकता है। छोटा नागपुर तेरे आदि-पुरुषों का बनाया हुआ है। तू भगवान बन सकता था।'

'धानी, घर जा।'

'क्यों ?'

'नहीं तो बन जा, तामार बन में चला जा। सुना है, तेरी तलाश में इधर घुड़सवार पुलिस आ रही है।'

'ऐसी बात है ?'

'हाँ। अँधेरे-अँधेरे चले जाना।'

'अब से सरदार लोग साहबों से लड़ेंगे। जमींदार और महाजनों से भी लड़ेंगे।'

'धीमे-धीमे लड़ेंगे !'

'तब देखना। पुराने सरदारों से काम न होगा।'

'तब ?'

'आदमी चाहिए।'

बीरसा धीरे-से बोला : 'जंगल चला जा। तुम लोगों को पकड़वाने के लिए अब पाँच-पाँच रुपये की बख्शीश रखी गयी है।'

'तू वह मिशन छोड़ दे। साहब क्या कहते हैं—मुंडा जंगली हैं, नंगे रहते हैं। सारे मुंडा चोर और डाकू हैं। वह मिशन छोड़ दे।'

'चला जा, धानी।'

छुट्टियों के बाद बीरसा मिशन में लौट आया। उसका मन बहुत मथा जा रहा था। मुंडा लोगों में जो क्रिस्तान हो गये थे वे जर्मन लूथरन चर्च के क्रिस्तान थे, रोमन कैथॅलिक चर्च के क्रिस्तान—फिर सरदारों की मुलकी लड़ाई में शामिल हो गये थे। बीरसा सुन आया था, वे कहते हैं : मिशन के साहब और साहब सरकार—सब एक हैं। साहब लोगों से मुंडा लोगों की कोई भलाई नहीं होगी। उनकी बात मुंडा लोगों की जुबानों पर फिसलती-फिसलती फैल रही थी।

मिशन में बीरसा के लिए दूसरे मुंडा लड़के बड़ी उत्सुकता से अपेक्षा कर रहे थे। एलियाज़ेर, गिडियन, जोहाना, माइका, टोगा, भुट्का—सबने उसे घेर लिया।

'बता बीरसा, क्या सुन आया ?'

'सरदारों की लड़ाई शुरू हो गयी है।'

'हम क्या करें ?'

'साहब क्या कहते हैं ? फ़ादर नॅट्रट ?'

'फ़ादर कहते हैं, तुमसे कोई बात नहीं करेंगे। बीरसा के आने पर उससे करेंगे।'

'तो यह कहो।'

'तेरा बाप क्या कहता है ?'

'बाप दोनों हवा-बतास में डोल रहा है। एक बार कहता है, सरदार लोग जो कहते हैं वह सुन। मिशन छोड़कर आ जा। फिर कहता है, कि ऐसा काम मत करना, मेरे बाप। मिशन को न छोड़ना।'

'फ़ादर तुमसे क्या कहते हैं, सुन।'

फिर दूसरा लड़का बोला : 'तू जो कहेगा हम लोग मानेंगे।'

किसी और ने कहा : 'तू हम लोगों का पहान[1] है।'

बीरसा बोला : 'चुप-चुप। पहान क्या होता है ? मिशन में ऐसी बातें नहीं करते हैं। खदेड़ देंगे।'

मुंडा लड़के बोले : 'तू अमूल्य के साथ क्यों मिलता-जुलता है ? वह बाबू है, दिकू बनेगा। वह मुंडा लोगों का दुश्मन है।'

---

1. प्रधान, सरदार।

'किसने कहा ?'

'यह हम लोगों की बात है। कोई बाबू लड़का किसी दिन मुंडा लड़कों का दोस्त नहीं हुआ। हो ही नहीं सकता।'

बीरसा की आँखें लाल हो आयीं। वह बोला : 'पढ़ना सीखे, लिखना सीखे—मुंडा मुंडा ही रह जाता है। अमूल्य मेरा दोस्त है। मैं उसे नहीं छोड़ूंगा। उसके लिए अगर तुम मुझे छोड़ते हो तो छोड़ दो।'

मुंडा लड़के एक-दूसरे की ओर देखने लगे। उसके बाद टेंगा बोला : 'झूठमूठ के लिए आँख क्यों लाल कर रहा है ? तू हम लोगों से अच्छा है। तू अगर चाहता है, तो दोस्त रखेंगे।'

फ़ादर नॅट्रट समझ गये थे कि मुंडा लड़कों को बाहरी हवा लग गयी है। उन्होंने बीरसा को बुलाया। बोले : 'तुम हम लोगों के भरोसे के हो। विश्वास करो; सरदार लोग जो बात कह रहे हैं, वह मानने से मुंडा-लड़कों का भला न होगा। मिशन छोड़कर जाने से कुछ फ़ायदा है ?'

'पता नहीं, समझ में नहीं आता।'

'देखो, मिशन में रहने से सब तरह से अच्छा रहेगा। मेरी बात मान कर चलने से सरकार तुम पर खुश रहेगी, बहुत भला भी होगा।'

'जमीन वापस मिलेगी ?'

'ज़रूर।'

'सारे मुंडा लोगों को जमीनें मिलेंगी ?'

'मिशन के मुंडाओं को मिलेंगी।'

'लड़कों से यह बात बताना ठीक रहेगा ?'

'देखो, सरदार लोग मुक़दमा लड़ने गये हैं। मुक़दमा टिकेगा क्या ? कानून के आगे उनकी बात धरी रह जायेगी।'

बीरसा चुप रहा। साहब से सारी बातें नहीं कही जाती हैं। साहब समझता भी तो नहीं है।

अमूल्य समझता है। अमूल्य बोला : 'यह तो जानी-मानी बात है, बीरसा। मुंडा वकील खड़ा करते हैं। वकील मुंडा लोगों का पैसा खाता है—हाकिम को समझाता है उलटा-पुलटा !'

'मुंडाओं को देखकर सब दिकू बन जाते हैं !'

'यही लगता है।'

'इसी से विश्वास नहीं होता। समझे ?'

'समझता हूँ, बीरसा।'

'तुम आज अच्छे हो। जब मिशन से निकलोगे, जब डाक्टर बनोगे, तब क्या अच्छे रहोगे ? मेरे साथ बात करने में भी शरम आयेगी !'

'कभी नहीं।'

'कभी नहीं ?'

'कभी नहीं।'

'देखा जायेगा।'

'देख लेना।'

'देखूँगा तो।' बीरसा की आँखें मुसकरा उठीं।

'फ़ादर कुछ बोले ?'

'बोले तो बहुत बातें।'

'बातों से कुछ होगा ?'

अमूल्य को कुछ मालूम न था। बीरसा को भी सब नहीं मालूम था। बहुत कुछ काम होने वाला नहीं था।

साल 1879 में मुंडा लोगों ने सरकार को अर्ज़ी लिखकर कहा था कि छोटा नागपुर की जमीन उनकी मिल्कियत है। उस प्रदेश पर उनका अधिकार उन्हें दिलाया जाये।

मुंडा लोग देख नहीं सकते थे। सब जैसे धूल की आँधी से ढका हो—सब मानो कुहासे से भरा हो। वे हैं, छोटा नागपुर की धरती में ही हैं, लेकिन नहीं, छोटा नागपुर में नहीं, क्योंकि उस जमीन पर उनका अधिकार नहीं है। उनके और उनकी मातृभूमि के बीच सैकड़ों दीवारें हैं। मिशन और मिशन के साहब एक बड़ी दीवार हैं। वे हैं—इसलिए सिंबोङा की सर्वशक्तिमत्ता के प्रति आत्मसमर्पण नहीं किया जा सकता है। इसीलिए सिंबोङा भी मुंडा लोगों को इस तरह सुरक्षित नहीं रख सकता। वे पुराने दिन ही अच्छे थे। सिंबोङा के सिवा मुंडा किसी को नहीं जानते थे। इसीलिए सेंगेल-दा की अग्नि-वर्षा के समय सिंबोङा ने मुंडाओं के भावी बाप-माँ को केकड़े के छिछले गढ़े में छिपाकर बचा लिया था।

साल 1879 की अर्ज़ी का कोई नतीजा नहीं निकला। 1881 में सरदारों का एक दल मुंडा मिशन को तोड़कर निकल आया था। उन्होंने कहा था : 'हम लड़कियों के-से चिलरेन[1] सही। हमारा नेता एक मुंडा जॉन द बैप्टिस्ट है। छोटा नागपुर के राजाओं के आदिम ठौर दोयेसा जाकर हम राज क़ायम करेंगे !'

लेकिन उनके इस दुस्साहस के पाँव नहीं जमे। वे पकड़े जाकर जेल

---

1. चिल्ड्रन, बच्चे।

में डाल दिये गये। वे फिर नॅट्रेट के पास आकर ज़िद करने लगे कि छोटा नागपुर की धरती की मिल्कियत संबंधी क़ानून से सब जमीन उन्हें लौटा देना होगी। उसके बाद ही वे फ़ादर लियेवेंस के पास चले जायेंगे।

यही सब-कुछ हो गया। मुंडा मिशन में फिर विश्वास नहीं रख सकते। सरदारों के आंदोलन में सभी को उतरना होता। सभी मिशन छोड़कर चले जा रहे हैं। प्रवीण सरदार कहते हैं: 'क्या सिंबोंडा खराब था? तब मुंडा लोगों के जीवन में रोशनी जली रहती थी। जिस दिन से दिकू आये, उसी दिन से जीवन में अँधेरा है। फिर मिशन में आने से क्या फ़ायदा हुआ? जीवन में अँधेरा बढ़ ही तो गया है!'

चाईबासा मिशन के सुन्दर शांत परिवेश में सरदारों की हज़ार-हज़ार बातों की आँच फैलती जा रही थी। मुंडा लोगों के मिशन पर विश्वास के अंकुर उस आँच से सूखे जा रहे थे।

फ़ादर नॅट्रेट को डर लग रहा था। उधर पहिये का ढलना शुरू हो गया—क़ानून के पहिये का। लियेवेंस के निकट जो गये थे, उनमें चालीस पकड़ लिये गये। विचाराधीन अवस्था में—पहले की तरह, आठ-दस लोग मर गये!

मुंडा लोग अब मिशन पर विश्वास नहीं करते थे। उनका सारा विश्वास कलकत्ता के बैरिस्टर जेकब पर था। जेकब को अंगरेजों में कलक से कम नहीं समझा जाता था। सरकार और मिशनरी मुंडाओं को रोक-थाम कर रखना चाहते थे। जेकब उन्हें सिखाते थे कि अधिकार के लिए क़ानून की सहायता से ही लड़ना चाहिए।

फ़ादर नॅट्रेट डर रहे थे।

उन्होंने सब लड़कों को बुलाकर विश्वास दिलाया: 'तुम किंगडम ऑफ़ हेवन में विश्वास न खोना। मिशन पर विश्वास करो। सब जमीन तुमको वापस मिलेगी।'

अमूल्य ने बीरसा से कहा: 'फ़ादर निश्चय ही बेकार घबरा गये है। नहीं तो ऐसी सब बातें चिल्लाकर कही जाती हैं?'

लेकिन समय बीरसा को दूसरे जीवन की ओर खींच रहा था। साल 1887-88 के बीच सरदारों और मिशन के बीच परस्पर कुट्टी हो गयी थी।

उसके बाद एक दिन फ़ादर नॅट्रेट बोले: 'सरदार धोखेबाज हैं, वे ठग हैं।'

बीरसा के मन को बड़ी चोट लगी। वह तो विश्वास करना चाहता था किंगडम ऑफ़ हेवन में। उसने तो विश्वास करना चाहा था कि फ़ादर

नॅट्रेट का कपड़ा जैसा सफ़ेद है, अन्तर भी वैसा ही शुभ्र है। उसने तो विश्वास करना चाहा था कि असली क्रिस्तान किसी में ख़राबी नहीं देखता। उसने तो प्रेम किया था इस परिवेश से, सुन्दर प्रार्थना-सभा और गिरजा के गानों से। वह तो कृतज्ञ था फ़ादर के निकट। उन्होंने उसे पढ़ना सिखाया था—आलोकित ज्योतिर्मय जगत का दरवाज़ा दिखा दिया था।

लेकिन सरदार तो मुंडा हैं। उन्होंने मुंडाओं का भला चाहा था। नहीं तो कोई क़ैद होता है? जेल जाकर ऐसे मरता है? सरदारों को धोखेबाज़ और ठग कहने से बीरसा के अंदर के मुंडारी रक्त में उबाल आ गया। मुंडा शरीर की एक बूंद रक्त से अभिप्रेत है सारा कृष्ण-भारत! वह भारत सेंगेल-दा की आग में सहज ही जल सकता है, अत्यन्त सहज रूप से—क्योंकि उस भारत में जलने वाली धरती, सूखे और दावानल की प्रत्याशी रहती है।

बीरसा मुंडा ने लड़कों से कहा: 'फ़ादर लोग बदमाश हैं। वे सरदारों को अब धोखेबाज़ कहते हैं। सरदार मिशन छोड़ गये, इसलिए साहबों में गुस्सा भर आया है।'

फ़ादर नॅट्रेट ने बीरसा को बुलवा भेजा। बोले: 'बीरसा दाऊद! तुम मिशन की चुगलियां क्यों करते हो?'

'आप लोग सरदारों को धोखेबाज़ क्यों कहते हैं? उनको गाली क्यों देते हैं?'

'वे धोखेबाज़ हैं।'

'नहीं।'

बीरसा सहसा बड़े गुस्से से बोला। नॅट्रेट अवाक् हो गये। बीरसा इतना गुस्सा कर सकता है, यह वह नहीं जानते थे।

'बीरसा, तुम मेरे साथ बात कर रहे हो। धीमी आवाज़ से बात करो।'

'नहीं।'

बीरसा चीख उठा। बोला: 'सरदारों ने क्या धोखेबाजी की? वे मुंडाओं के अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं; क़ैद हुए; जानें दीं। वे धोखेबाज़ हैं? नहीं—नहीं—नहीं।'

फ़ादर नॅट्रेट काँपते-काँपते बोले: 'सभी मुंडा एक-से हैं। मिशन के पास आते हैं भिखारी की तरह, लेकिन अंदर-ही-अंदर सरदारों की बातें मानते हैं। सब मुंडा बेईमान हैं।'

'नहीं! अपनी बात वापस लो। मुंडा बेईमानी नहीं जानते। बेईमान होने पर वे मिशन-का-मिशन उड़ा देते!'

'तुम चले जाओ। इस मिशन में अब तुम्हारे लिए जगह नहीं है।'

'चला जाऊँगा।'

बीरसा की आँखें जलने लगीं। गुस्से में अभिभूत होकर बीरसा बोला, 'सब साहब-साहब एक बराबर हैं। सरकार जैसी, वैसा ही मिशन है, सब एक-से हैं!'

बीरसा मिशन से चला जायेगा, सुनकर अमूल्य भागा-भागा आया। बोला : 'जाना मत बीरसा, एक बार साहब से माफ़ी माँग लेना। माफ़ी माँग लो।'

'ना।'

'तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई? तुम्हारा भविष्य?'

'मुंडाओं की पढ़ाई-लिखाई? मुंडाओं का भविष्य? मुंडा क्या बाबू हैं? मुंडा क्या दिकू हैं? भविष्य की चिंता में रह कर पड़े-पड़े लात खाऊँ?'

'बीरसा, मेरी बात सुनो।'

'ना।'

अमूल्य ने उसका हाथ पकड़ लिया। हँसकर बोला : 'हाथ पकड़ने से तुम हाथ छुड़ा सकते हो? मैं तुम्हारा मित्र हूँ। तुम माफ़ी माँग लो, बीरसा। मिशन से पढ़ाई-लिखाई कर बहुत बड़े बनना। उससे मुंडा लोगों का बड़ा उपकार कर सकोगे।'

'हाथ छोड़ो।'

'अगर न छोड़ूँ?'

बीरसा ने ज़ोर से झटका मारा। अमूल्य ने हाथ नहीं छोड़ा। बीरसा ने और ज़ोरों से झटका दिया। अमूल्य ने हाथ छोड़ दिया। बीरसा का हाथ दरवाज़े के कुंडे से जा टकराया। हाथ कटकर खून बहने लगा।

बीरसा चाईबासा मिशन छोड़कर चालकाड़ चला गया। उससे सब-कुछ सुनकर सुगाना ताज्जुब में आ गया।

सुगाना बोला : 'गाली क्यों दी?'

'उसने सरदारों को चोट्टा क्यों कहा?'

'तू तो सरदार नहीं है?'

'सरदार लोग मुंडा हैं। मैं भी मुंडा हूँ।'

'पर इसके बाद?'

'आबा, सब साहब-साहब एक-से हैं। सारे सरदार लोग दोनों मिशनों को छोड़कर—जो जिसका पहले धर्म था—अपने-अपने धर्मों में लौट गये।'

'मान लो, लौट गये। तो क्या फिर से सिबोडा को पूजूँ ? या सदान[1] मत का हो जाऊँ ? या महाप्रभु का रास्ता पकड़ूँ, या संन्यासियों की राह लूँ ?'

'वह देखा जायेगा। चलो, मिशन तो छोड़ें ?'

'यह तेरा हाथ कैसे कटा ?'

'एक बाबू लड़के ने हाथ पकड़ लिया था। उसका नाम है अमूल्य। उससे हाथ छुड़ाने में कट गया। लड़का मेरे लिए रो रहा था। कह आया, अगर देखूँगा कि दिकू नहीं बना, तभी उससे बातचीत किया करूँगा—नहीं तो कभी नहीं बोलूँगा।'

'चल, कल ही नाम कटा आयें।'

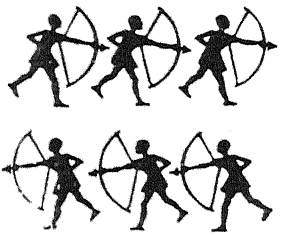

लेकिन धानी ने उसका साथ नहीं छोड़ा। एक दिन चला आया। बोला : 'सरदारों की मुलकी लड़ाई रुक जायेगी, बीरसा। मिशन छोड़ दिया, तू वहाँ जा। या तू मुंडा नहीं है !'

'धानी, तू सपना देख रहा है !'

'क्यों ?'

'तेरे 'जा' कहने से मैं चला जाऊँगा ?'

'तब ?'

'मेरी समझ में नहीं आता रे ? मन बहुत अस्थिर-सा हो रहा है।'

'जंगल में पागल की तरह क्यों घूमता रहता है ?'

'किसने कहा ?'

'मुझे मालूम है।'

'पता नहीं। कितनी बातें मन में उठती हैं। मैं कहाँ से आया ? क्यों

---

1. हिन्दू।

आया ? कैसे आया ?'

'तूने सेंगेल-दा की आग की कहानी नहीं सुनी ?'

'सुनी है।'

'तब तो सब जानता है। सिबोडा ने एक बार देखा कि दुनिया-भर में मुंडा ही मुंडा हैं। इतने मुंडा हैं कि बदन से बदन ठेलने से सब समुद्र में गिर जायेंगे, या नदी में। खेतों में जितना धान होता है, खाने को पूरा नहीं पड़ता। बन में जितने जानवर हैं उनका मांस खाने को पूरा नहीं पड़ता। सबकी कमी पड़ गयी। गुस्से होकर सिबोडा ने सेंगेल-दा की आग उतारी। कैसी थी वह आग की वर्षा, बीरसा; एक मुंडा आदमी और एक मुंडा औरत जाकर केकड़े के गड्ढे में जा छिपे। बाद में वे निकल आये। उन्हीं से हम हुए।'

'इस कहानी को मेरा मन नहीं मानता।'

'तो क्या करेगा ?'

'पता लगाने जाऊँगा। देखता हूँ, कोई जानता भी है !'

'कहाँ ?'

'बनगाँव के जमींदार जगमोहनसिंह के यहाँ। उनका मुंशी आनन्द पांडे सब जानता है। उसने सिखाने को कहा था।'

'क्या सिखायेगा ?'

'ठाकुर-भगवान की बात।'

'कह दिया, तू चल, भगवान बन। मुंडा के घर पैदा हुआ। मुंडाओं को देख। पर जा, दिकू लोगों की तरह जनेऊ पहनकर पूजा कर !'

'करना होगा तो करूँगा। तू जा धानी, मुझे तंग न कर।'

'जाऊँगा नहीं तो क्या रुका रहूँगा ?'

खफ़ा होकर धानी चला गया। बीरसा चला गया बनगाँव, आनन्द पांडे के पास। जनेऊ पहना, चन्दन लगाया, तुलसी की पूजा की। रामायण-महाभारत-पुराण—सब सुने, कुछ-कुछ पढ़े।

लेकिन मन जैसे भरा नहीं। बीरसा बड़ा अस्थिर और बड़ा अशांत रहने लगा। शकल बड़ी सुन्दर निकल आयी। मुंडा लोगों के घर इतना लम्बा, सुगठित शरीर, ऐसी नाक, ऐसी आँखें देखने में नहीं आतीं !

आनन्द और उसका भाई सुखनाथ पांडे बोले : 'बीरसा, तू कहाँ-कहाँ चला जाता है ?'

'घूमता फिरता हूँ।'

'क्यों ?'

'खून बहुत चंचल-चंचल-सा रहता है।'

'रहता है, क्योंकि लड़कपन की उमर है।'

'छिः !'

'क्यों ?'

'तुम कुछ नहीं समझते।'

'क्या नहीं समझता रे ? तेरी बाँसुरी सुनकर ही सब समझते हैं।'

'कुछ नहीं समझते।'

'शांत हो। जप-पूजा कर। तुलसी-माला को उँगलियों से फेर।'

'उससे तुम लोगों को शांति मिलती है, मुंडाओं को मिलेगी ?'

'सबको मिलेगी।'

'हम लोगों का भगवान अलग है। हम सिंबोंगा की प्रजा हैं। हरमबो हमारे आदि-पुरुष हैं।'

'भगवान एक है रे, कृष्ण भगवान !'

मन बहुत अस्थिर बना रहता है। तभी तो बीरसा संध्या होने पर पोखरे के किनारे बैठकर बंसी बजाता है। तभी वहाँ भागी-भागी आयीं थीं दो मुंडा लड़कियाँ—गुंजा और राता। बोलीं : 'तू हमें ले चल, बीरसा। गाँव ले चल।'

'क्यों ?'

'तुझसे ब्याह करेंगे,' गुंजा कहती।

राता कुछ न बोलती। सिर्फ़ कहती : 'तू घर जा। साँझ हो गयी है, शरद् की साँझ। राह में भेड़िये घूमते-फिरते हैं।'

राता ने एक दिन उससे कहा : 'मेरा बाबा मानकि गाँव में रहता है। बाबा कहता है कि मेरी शादी करेगा। जमीन-जायदाद, गाय-बैल देकर गृहस्थी जमवा देगा।'

बीरसा ने कहा : 'घर जा, राता।'

बीरसा ने कहा था : 'घर जा, राता !'

'तू क्या गाना बजाता है ?'

'गाना नहीं आता। सुर जानता हूँ।'

सरदार लोग पहाड़ों और जंगलों में दूर-दूर गाने गाते। गाने के सुर बड़े सुन्दर होते थे। यह बात बीरसा को नहीं मालूम थी।

सुनारा मुंडा, एक खरीदे दास किशोर को गाना सुनाता था। बीरसा से सब डरते थे। ऐसा कौन मुंडा लड़का है ? मिशन में साहब से आमने-सामने झगड़ कर मिशन को छोड़ आया ? ब्राह्मण के घर जाकर गले में जनेऊ पहन लिया। बराबर अस्थिर, अशान्त, चंचल रहता है। क्यों किसी चीज़ से उसे सुख-शान्ति नहीं मिलती ?

कोई उसके पास न आता। लेकिन सुनारा एक दिन उसे सुनाकर उसकी बाँसुरी के सुरों का गाना गाकर भाग गया था।

बोलोपे बेलोपे हेगा
मिसि होन् को।
होइओ डुडुगार हिजू ताना
बोलोपे, बेलोपे...।

भागकर चट्टान की ओट से सुनारा ने कहा था : 'मैं सारे गाने जानता हूँ।'

'तो सब गा।'

सुनारा ने सब गाये। बीरसा ने उसे पास बुलाया। पास बिठाकर गाने सीखता रहा।

'इन गानों के माने क्या हैं रे, सुनारा ?'

'पता नहीं।'

'तब गाता क्यों है ?'

'यह गाने जो गाता है और जो उन्हें सुनता है, सब भाई होते हैं !'

बीरसा ने उसे चले जाने को कहा।

लेकिन सुगाना ने जिस दिन उसके पास भरमी, दासो और मातारी को भेजा, उस दिन बीरसा उनसे चले जाने को न कह सका।

भरमी आदि आये थे सिंग्रिड़ा गाँव से। बोले : 'बाहर आ, बीरसा। मुंडा लोगों का जीवन बरबाद हुआ जा रहा है। सरकार ने सबको जेहल में भर दिया है। तुलसी को पूज कर क्या होगा, बता ?'

'क्या हुआ है ?'

'हम लोगों को जंगल से खदेड़ दिया गया है।'

'किसने खदेड़ा ?'

'सरकार ने। तेरी साहब-सरकार ने।'

'मेरी साहब-सरकार ?'

सहसा उलटे हाथ से भरमी के मुंह पर बीरसा ने थप्पड़ मारा। बोला 'मेरी साहब-सरकार ? मेरी ? मेरी ? फिर से मेरी तो कह !'

भरमी ने मुँह पोंछ लिया। बोला : 'यह क्या किया ? तेरे हाथ में लोहा है क्या ?'

'बोल, फिर कहेगा ?'

'जंगल का क़ानून अब लागू हुआ है।'

'कहाँ ?'

'पलामू, मानभूम, सिंहभूम में।'

'सिंहभूम में नया क्या हुआ ? क़ानून तो साल 1878 का है।'

'क़ानून था, चालू नहीं किया गया था। अब ढोल पीटा है सब गाँवों में। सारी जमीन-जंगल वापस ले लिये हैं। जंगल में हमने लाखों-लाख चाँद से-गाय-छागल चराये; जंगल से काठ लिया। हाँ बीरसा, वही जंगल तो ले लिया। अब से कोई जंगल में गाय-छागल नहीं चरा सकेगा। जंगल से काठ-पत्ता-शहद नहीं ला सकेगा। शिकार नहीं खेल सकेगा। जंगल के भीतर जितने गाँव थे, सब उजाड़ दिये।'

'नहीं !'

बीरसा चीख़ उठा था। उसके खून में चुटिया और नागु डोल उठे थे। जंगल का अधिकार कृष्ण-भारत का आदि-अधिकार है। जब सफ़ेद आदमियों का देश समुद्र के अतल में खोया हुआ था, तब से ही कृष्ण-भारत के काले आदमी जंगलों को माँ के रूप में जानते-पहचानते हैं।

बीरसा बोला 'ना' ! वह नहीं बोला—उसके रक्त ने उससे कहलवाया था। उसने नहीं कहा—सारा कृष्ण-भारत और सारे काले आदमी उसकी वाणी में बोल उठे थे।

फिर बीरसा घर न लौटा। वहीं से उनको लेकर चाईबासा चला गया। अर्ज़ी लिखकर जंगल-आपिस में दे आया था।

जंगल-आपिस के सामने मुंडा लोगों की हाट बैठ गयी थी। सभी अर्ज़ी लेकर आये थे।

अर्ज़ी देखकर आफ़िस के बाबू लोग हो-हो कर हँसे थे। बोले : 'क्या करोगे ?'

'जंगल पर हमारा दावा है, अधिकार देना होगा।'

'कौन देगा ?'

'सरकार।'

'समुद्र तैरकर विलायत चले जाओ। वहाँ महारानी बैठी है। वह मुंडा लोगों के डर से थर-थर काँपती है !'

'अर्ज़ी फाइल करो।'

'फाइल कहता है ! शायद पढ़ना-लिखना सीख लिया है ?'

'तू-तू क्यों कहते हो ? मुंडा आदमी नहीं हैं ? साहब को देखकर 'आप' कहते हो ? बनिया देखकर 'तुम' कहते हो, मुंडा देखकर 'तू' कहते हो ?'

'चुप रहो।'

'ए दिकू ! मेरा नाम बीरसा है। मैं साहब से नहीं डरता हूँ। ठीक ढँग से बात करो।'

'ओहो !'

'नहीं तो तुम पर कुचला-बाण छोड़ दूंगा।'

फुफकारते हुए बीरसा बाहर निकल आया था। भरमी आदि से कहा था : 'अर्ज़ी ? अर्ज़ी से सरकार सुनती है ? देख आया रोगोता, गुडरी, दूरकार-पीर—सब जगह आपिस के बाबू लोग अर्ज़ी डाले रखते हैं।'

'तब क्या होगा, बीरसा ?'

'सरकार शहर में रहती है। वहाँ बैठकर क़ानून बनाती है। जो क़ानून बनाते हैं वे मुंडा-कोल-उराँव लोगों की बात नहीं सोचते।'

'तब ?'

'तब क्या होगा, खुद सोचो। कोई नहीं सोचेगा। हमेशा कोई और सोचेगा। तुम लोग जाकर उसके साथ शामिल होगे—वह हट जाये तो जेहल में सड़ोगे। अपनी बात खुद नहीं सोचते, उससे ही तुम मरते हो, और मरते हो महुआ और हँडिया से। कैसा मद पीना सीखा है ! ऐसे जीवन में आग लग जाये ! जंगल में जाने का हक़ चला गया। तुम चेत उठे, भभक उठे—फिर थोड़ी देर बाद मद पीकर सब भूल जाओगे।'

'तू क्या करेगा ?

'देखता हूँ, क्या करता हूँ !'

'तेरे माँ-बाप तो भूखे मरते हैं।'

'मरेंगे ही। जंगल से ही तो जी रहे थे।'

'जंगल में गाछ के नीचे जो चीना घास होती है, उसका दाना कैसा मोटा होता है रे बीरसा, धाटो से अधिक मोटा।'

'मालूम है।'

क्षोभ से डाँवाडोल, अशान्ति की उत्ताल लहरों से थपेड़े खाता हुआ बीरसा बनगाँव चला आया। लेकिन आनन्द पाँडे बोले : 'तेरे लिए जगह नहीं है।'

'क्यों ?'

'सरकार के नाम अर्ज़ी देता है, सरदारों की बातों में आता है, तुझे रखने से ज़मींदार गुस्सा हो जायेंगे।'

बीरसा आँखें कुंचित कर ताक रहा था। जिस कुंच से कुचला होता है, उसी की तरह उसकी आँखें लाल हो गयी थीं। उसने कहा: 'मैं तो चला जाऊँगा। लेकिन तुम एक बात बताओ।'

'क्या ?'

'मुंडा न होता तो क्या भगा देते ?'

'इसके मतलब ?'

'मतलब हुए बेवकूफ़, जानवर था—इसीलिए गाय चरायीं। बहुत लकड़ियाँ फाड़ीं। आज मुंडा चिल्लाने लगे हैं, इसी से उन्हें भगाते हो, यही न ?'

'जा, तू पागल हो गया है !'

'तुम्हारा भगवान तुम्हें यही सिखाता है ? ऐसे भगवान से मेरा कोई वास्ता नहीं है।'

'जा, जाकर सिंबोङा को पूज !'

'सिंबोङा नहीं पूजूँगा, तुम्हारे ठाकुर को भी नहीं पूजूँगा। तुम्हारा नमक खाया था, इसी से तुम बच गये !'

'नहीं तो ?'

'पत्थर मारकर मैं तुम्हें पीस डालता !'

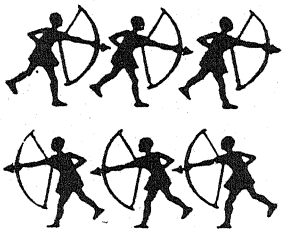

बीरसा चालकाड़ चला गया। उसके मन, उसकी बुद्धि में बहुत अँधेरा छा रहा था। वह कुछ देख-समझ नहीं पा रहा था—मानो सिंबोङा की अग्नि-वृष्टि के बाद के अंधकार की-सी अवस्था हो !

चालकाड़ में उस समय सुगाना और करमी उपवास से मर रहे थे। करमी रोकर बोली: 'हाँ बीरसा ! कहाँ तू बोरा-भर नून, टीन भरकर

माटी का तेल लायेगा ! गाइ-बलद, जमीन-जायदाद करेगा। बाप को देखेगा। माँ को देखेगा। हाँ रे, तेरे जन्मने पर तीन गाँव के लोगों ने मेरे घर के आकास पर तीन तारे जलते-बुझते देखे थे। जंगल के कलेजे से किसी ने पुकार कर कहा था : इतने दिनों बाद धरती पर आबा ने जन्म लिया है। यह तेरी कैसी शकल है रे ! भिखमंगे से भी गयी-गुजरी। मिशन छोड़ने से तेरी यह हालत कैसे हुई ? साहब लोग भी तो अब भीख नहीं देंगे !'

बीरसा कुछ न बोला। उसका अन्तर जल-बुझ रहा था। केवल मन में हो रहा था—अब वह मरेगा या जियेगा।

लेकिन बड़ी भूख लगी थी। जंगल में घुसा नहीं जाता है। मुखिया आदि अब जंगल के आपिस में जाकर रपट कर देंगे। रपट करते ही हाथों-हाथ रुपये ! रपट देते ही मुंडाओं को जुरमाना ! आपिस से इलाक़ेदार को हुक्म मिलेगा ! इलाक़ेदार से चौकीदार को हुक्म मिलेगा !

उसके बाद जुरमाना और हवालात। उसके बाद एक-के-बाद-एक करके तीन बार जंगल का क़ानून तोड़ने पर घर के पास की जमीन भी अचानक जंगल की हद में बताकर जंगल का आपिस ले लेगा।

बीरसा ने बाप से कहा : 'नदी में मछली नहीं मिलती ?'

'कहाँ है मछली ! जंगल में इस वक़्त पहरेदार ने तंबू डाल दिया है। वे पत्थर फेंककर, पानी रोककर मछली पकड़ लेते हैं।'

'रात में जाने पर जंगल में कंद-मूल नहीं मिलता ? शकरकंद ही।'

'नहीं रे।'

'इमली के पत्ते उबालकर खाकर देखा है ?'

'उलटी हो जाती है !'

बीरसा को अजीब-सा लगा, अदृष्ट शक्तियाँ उसे हराने को हैं। वह मन से पुराने विश्वासों में रम नहीं सकता था। इसीलिए बोङा अंधकार की शक्ति की तरह उसे हराये दे रहे थे !

वही होगा। यह निश्चय ही बोङाओं का प्रतिशोध है ! बीरसा का मन आदि-देवता में क्यों आश्रय नहीं पा रहा है ? क्यों बीरसा कभी किरस्तान बने और कभी आनन्द पाँडे के पास जाये ? क्यों बीरसा को लगता था कि उसका प्राचीन धर्म अब उसे चैन नहीं दे सकेगा ? अब इसी कारण क्रुद्ध बोङा बदला ले रहे हैं !

वह गाँव के बाहर चला गया। जहाँ श्मशान था—जहाँ चाल्की मुंडानी को वे लोग गाड़ गये थे, उसी पत्थर पर बैठा। बच्चा होने पर चाल्की मर गयी थी। चाल्की और उसकी सन्तान की आत्मा—'गाड़ी हुई'—परलोक में क्या बेचकर खायेगी, यह सोचकर मुंडाओं ने चाल्की के बदन पर से चाँदी की अँगूठी नहीं उतारी थी। चाल्की के पति ने आठ आने पैसे भी साथ में दफ़न कर दिये थे !

श्मशान के रखवाले बोङा को तुच्छ मान कर बीरसा ने कबर खोद चाल्की को खींचकर बाहर निकाला। खींचकर निकालते समय वह स्वयं से मन-ही-मन कह रहा था : 'डरना मत।' वह सचमुच नहीं डरा। चाल्की की लाश अँधेरे में टटोलते-टटोलते बीरसा ने एक बात और समझी। भूख, पेट की भूख की शक्ति सबसे अधिक अविजेय होती है। भूख ही बोङा की शक्ति की उपेक्षा करने का साहस मन में जुटाती है। वह अँगूठी और पैसे लेकर रात-ही-रात बड़ाबाँकी के बाज़ार की ओर भाग गया।

वहाँ सनीचर के हाट में उसने चाँदी की अँगूठी बेच दी; उन आठ आने पैसों के चावल खरीदे। सुगाना और करमी भात राँधकर कम ही खा पाते थे !

वहीं उसे उसके दादा कोम्ता के साले ने देखा था। उसने यह बात चालकाड़ में फैला दी।

करमी गुस्से और दुःख से रो पड़ी थी। ठोकर मारकर चावल फेंक दिये। गुस्से में कहा : 'तुझे बिरादरी से बाहर करा दूँगी रे, बीरसा। तू पिशाच हो गया। अब आदमी नहीं रहा।'

उस वक़्त बहुत गरमी थी, जेठ का महीना था। बीरसा के दिमाग़ में आग लग गयी। उसने माँ को शाप दिया। चीखकर कहा था : 'प्रेतात्मा नाम की कोई चीज़ नहीं होती। प्रेतात्मा आदमी नहीं होता ! प्रेतात्मा को भूख नहीं लगती। आदमी को भूख लगती है। प्रेतात्मा होने पर तेरे पेट में भात पड़ने से बहुत अच्छा होता। लात मारकर चावल फेंक दिये ! चावल लात मारकर फेंक दिये, माँ ? यह तूने क्या किया ?' चिल्लाकर पेट पीटता हुआ वह जंगल में चला गया।

बन में जाते ही उसे हमेशा शान्ति मिलती थी, अब नहीं मिल रही थी। 'सब मेरा है, कोई क़ानून मुझ रोक नहीं सकता'—कहता-कहता वह जंगल के अंदर घुसा जा रहा था। करमी का आर्त चीत्कार—'तुझे जेहल में डाल देंगे रे, बीरसा !'—उसके कानों तक नहीं पहुँचा।

वह फिर भी कहता था : 'धानी ने कहा था कि सब मेरा है, किसी को नहीं दूँगा। अरे जंगल ! तुम बताओ न, तुम्हारी दया छीन लेने का हक़ किसी को नहीं है न !' जंगल का पेट चीरकर वह घने-से-घने में घुसा। जंगल तो सारे मुंडाओं की माँ है। किन्तु बीरसा समझ रहा था कि उसकी जंगल-माँ रो रही है। जंगल ही उत्पीड़ित है—दिकू लोगों के हाथों, क़ानून के हाथों आज बन्दी है। जंगल-माँ कह रही थी : 'मुझे बचा, बीरसा ! मैं फिर शुद्ध, पवित्र, निष्कलंक बनूँगी !'

बीरसा जमीन पर सिर रगड़ रहा था, पेड़ों से बदन रगड़ रहा था। बच्चों की तरह दुःसाहस से जंगल को असंभव वचन दे रहा था : 'करूँगा, करूँगा, तुम्हें शुद्ध करूँगा। हाय, तुम मेरी माँ तो हो ही, तुम सारे मुंडाओं की माँ हो; तुम्हारे होते घर की छत, घर की दीवारें, भूख के लिए कन्द-फल-मूल—खरगोश-सूअर-साही-हिरन-चिड़ियों वगैरह का मांस है, माँ।'

बातें कहने के बाद वह सतर्क और सचेत पक्षी की तरह अपने ही कंधे पर सिर टिकाये रहा, क्योंकि उसके रक्त में बसा जंगल बातें कर रहा था। अभिमान में नासमझ, दरिद्र, निःस्व, शुष्कस्तना मुंडा-जननी की तरह जंगल रो रहा था—और बीरसा सुन रहा था।

'अरे, मैं अपवित्र हूँ रे !'

'शुद्ध कर दूँगा, माँ !'

'अरे देख, दिकू लोगों ने, साहबों ने मिलकर मुझे बार-बार अपवित्र किया है !'

'तुझे शुद्ध कर दूँगा, माँ !'

'मेरे बेटों को बेघर कर दिया है।'

'उनको लौटा लाऊँगा, माँ !'

'मुंडा-कोल-उराँव-हो-संथाल—सब कुलियों के ठेकेदार के बुलाने पर चले जा रहे हैं।'

'नहीं जाने दूँगा, माँ !'

'मेरा रोना कोई नहीं सुनता।'

'मैं सुन रहा हूँ, माँ !'

'मेरी ओर कोई नहीं देखता।'

'तुम कहाँ हो, माँ ?'

'तेरे कलेजे में, तेरे खून में।

'मेरे कलेजे में, मेरे खून में ?'

'और कहाँ रहूँगी मेरे आबा, मेरे बाप ?'

'कहाँ ?'

'ध्यान से देख।'

बीरसा ने खून की ओर देखा। आहा, उसका शरीर छोटा नागपुर की धरती—उसका खून नदी की धारा—उसी नदी के तीर पर माँ, उसकी माँ, उसकी जंगल-माँ—नग्नदेह, युवती-मुंडारी लड़की-सी—किन्तु यह नग्नता देखकर लोभ नहीं जागता था—लालसा नहीं जागती थी—छाती के नीचे दुःख से आग भड़क उठती थी !

'किसने तुम्हें नंगा किया, माँ ?'

'जिन्होंने अपवित्र किया था।'

'मैं तुम्हें खून दूंगा।'

'दे, बाप मेरे !'

'तुम्हारी लाज ढक दूंगा।'

'ढक दे, बाप मेरे ! उन्होंने मुझे नंगा, निरवसना कर आकाश के नीचे छोड़ दिया है। तू मेरी लाज ढक दे।'

'ढक दूंगा, ज़रूर ढकूंगा।'

'बहुत कष्ट होगा, बाप !'

'क्यों ?'

'तुझे बहुत कष्ट देंगे।'

'क्यों ?'

'ऐसा होने पर तुझे भगवान बनना पड़ेगा, बाप मेरे !'

'भ—ग—वा—न ?'

'हाँ बाप, धरती का आबा बनना होगा। धरती का बाप बने बिना कोई धरती की लाज ढक सकता है ?'

'तो तेरा आबा बनूंगा।'

'तुझे जिन्दा नहीं रहने देंगे।'

'भगवान बनने पर वे मारेंगे, माँ। यीशु को मारा था, यह मिशन में जाना था। किश्न को मारा था पाँव में बाण मारकर।'

'कष्ट पायेगा, सुख देगा।'

'सुख दूंगा ?'

'तुझसे ही सब मुंडा सुखी होंगे।'

बीरसा चिल्ला पड़ा था : 'दूंगा, सबको सुख दूंगा। हाँ, मैं भगवान बनूंगा, बीरसा भगवान ! तब धरती का आबा बन जाऊँगा। हाँ, मुझमें उन चुटिया

और नागु के रक्त का रक्त है। मेरे किये मुंडा जीवित रहेंगे—मेरे कलेजे पर चोट करके, हाँ, मैं अपने खून से जानता हूँ।'

भीषण शब्द के साथ वज्रपात हुआ, बिजली ने आकाश को झुलसा दिया था। हाथी ने कहीं चिंघाड़ मारी थी, बाघ ने गर्जन किया था। बीरसा ने आकाश की ओर मुँह उठाकर वर्षा के जल से मुँह भरते-भरते कहा : 'सब मेरा है! यह सारा जंगल मेरा है! मैं धरती का आबा हूँ।'

उधर चालकाड़ में किसी की आँखों में नींद नहीं थी।

सभी को पता चल गया था कि सुगाना मुंडा का बेटा बीरसा मुंडा पागल हो गया है। करमी कह रही थी : 'ना-ना-ना!'

सभी ने कहा : 'क्यों मिशन में जाकर साहब से झगड़ा किया?'

'हमेशा से जिद्दी है।'

'जनेऊ क्यों पहना, जब आनन्द पाँडे के पास जाकर रहा था?'

'हमेशा से बड़ा चंचल रहा है।'

'चाल्की की लाश क्यों खोद निकाली थी?'

'मुझे चावल लाकर देने के लिए।'

'जंगल-जंगल क्यों घूमता है?'

'मेरे ऊपर गुस्सा करके चला गया है।'

'तेरा लड़का पागल है!'

करमी सिर पीटकर आँगन में बैठी रही। सुगाना बोला : 'जो कपाल में है वही तो होगा। जो कपाल में नहीं है वह भी कभी होता है?'

'चार दिन से आँधी चल रही है, आकाश गुस्सा कर—हाथी बनकर—सूँड से पानी बरसा रहा है; नदी में बाढ आ गयी है; बिजली कड़क रही है; जंगल में वह अकेला-अकेला क्यों फिर रहा है? कैसे?'

'कैसे बताऊँ?'

'तुम उसके बाप जो हो!'

'उससे क्या हुआ?'

'हाथ-पाँव सिकोड़कर बैठे रहोगे?'

सुगाना धीरे-से बोला : 'मेरी बात वह सुनेगा? कभी सुनी है? किसी दिन भी सख्त बात नहीं कही। खफ़ा नहीं हुआ। जो कहा सो सुन लिया। लेकिन जब काम-कराने की बात हुई तो जो उसके मन में आया, वही किया। वह मेरा बेटा है, लेकिन मैं उसे पहचान न पाया, तू भी नहीं पह-

चानती। मुंडाओं के घर ऐसे लड़के नहीं होते।'

'हुं, तुम भी ऐसी बात कह रहे हो ?'

'कह रहा हूँ।'

'मत कहो ! यह बात सुनकर मुझे डर लगता है, मैं डर जाती हूँ। ऐसा लड़का—ऐसा लड़का—कैसा लड़का ? वह सब लड़कों की तरह होता तो मुझे डर न लगता। वह अजीब-सा है। उसका क्या होगा ? माँ का मन कहता है कि पता नहीं, क्या मुसीबत पेश होगी !'

'होने पर भी उस मुसीबत को तू और मैं नहीं रोक सकेंगे। सारे सरदार उसकी ओर आँख लगाये बैठे हैं।'

'पता है।'

करमी बराबर रोये जा रही थी।

बोली : 'इतने लड़कों के रहते वे मेरे बेटे की ओर क्यों आँखें गड़ाये हुए हैं ? क्यों बीरसा के जन्म के समय आकाश में तीन तारे दिखायी दिये थे ? क्यों सबने कहा था—तेरे घर में धरती के आबा ने जन्म लिया है ? हाय रे ! मुझे धरती का आबा नहीं चाहिए। मैं अपने बेटे को कलेजे में रखना चाहती हूँ। मुझे अपना बेटा चाहिए।'

करमी सिर पीट-पीटकर ज़ोरों से रो रही थी। कह रही थी : 'माँ की बिथा कोई बूझता नहीं रे !'

उसके बाद वज्र-विद्युत्-शिलावृष्टि में, हवा के चाबुक से साल-महुआ-सेगुन-केंदू वृक्षों के हाहाकार के बीच, उसके दरवाज़े के सामने अचानक नगाड़ा बजने लगा।

यह नगाड़ा पहान के घर रहता है। बड़ी विपत्ति में, दावानल में, बाढ़ आने पर, पुलिस के अत्याचार पर, पहान इस नगाड़े को निकालता था। इस नगाड़े की आवाज़ बड़ी भीषण, गंभीर, खून को कँपा देने वाली थी। भूकंप होने पर पृथ्वी के पेट में से इसकी आवाज़ की तरह गंभीर, चेताने वाली हुंकार निकलती थी। सुगाना ने दरवाज़ा खोल दिया।

'क्या हुआ ?'

मानुस, गाँव के सारे मानुसों को वज्र-विद्युत के नीले प्रकाश में दिखायी पड़ रहा था—काली चमड़ियों पर वर्षा का जल चमक रहा है, उन्हें धोकर बह रहा है !

सब ने कहा : 'ध्यान से देखो। धरती के आबा को ध्यान से देखो।'

सभी ने एक साथ सिर झुका दिया था।

वह एक अद्भुत, अत्यन्त आश्चर्य का दृश्य था। उस दृश्य को सोचने से भी कलेजा काँप जाता है। नगाड़ा गंभीरता से बज रहा था। जंगल तूफ़ान के कोड़े से पिटकर आर्तनाद कर रहा था। आकाश वज्र-विद्युत में हँसता दिखायी पड़ रहा था, और पानी बरसाये जा रहा था। आकाश की ओर दोनों हाथ उठाये बीरसा आ रहा था। बीरसा की आँखों और मुँह पर वर्षा का जल था; उसकी दृष्टि उज्ज्वल, भीषण—भविष्य के समान, मुंडाओं के भविष्य के समान—भीषण थी!

बीरसा बढ़ा चला आ रहा था। सिर ऊँचा किये, दोनों हाथ उठाये। सुगाना और करमी के मुँह से कोई बात नहीं फूट रही थी।

'बीरसा!' करमी के चेहरे पर अविश्वास का भाव था।

'बीरसा मत कहो, माँ! मैं भगवान हूँ। मैं ही भगवान हूँ। मैं मुंडाओं के लड़कों को झुलाऊँगा नहीं। गोद में खिलाऊँगा नहीं। मैं सबके लिए यह जंगल-पहाड़-धरती—सब जीतकर ला दूँगा। इन लोगों ने भगवान चाहा था माँ, मैं भगवान बनकर लौट आया हूँ।'

'आ, मेरे कलेजे से लग जा।'

करमी की शीर्ण, कुंचित छाती पर बीरसा ने सिर टेक दिया, फिर करमी के दोनों हाथ अपने हाथों में उठाकर कहा: 'मैं भगवान हूँ, माँ! अब तेरी गोद मुझे संभाल नहीं सकेगी। मैं उसमें समा न सकूँगा। मैं इस धरती का आबा हूँ।'

करमी का आर्त, हृदय-विदारक हाहाकार सारे मुंडाओं के जयोल्लास में डूब गया—डूब गया नगाड़े की डुमडुम-डुमडुम, गंभीर नाद की तरंगों के नीचे!

मुंडा चिल्ला रहे थे: 'बीरसा भगवान हो गया। सब रोगियों-भोगियों को बचायेगा, मरों को जिलायेगा, भूखों को भात देगा!'

नगाड़े पर लगातार चोट पड़ रही थी।

सुगाना ने कानों पर हाथ लगा लिये। बोला: 'करमी, तुझसे कहा था कि नहीं कि यह लड़का तुझे जितना हँसायेगा, उतना रुलायेगा भी?'

'हाँ, अब क्या होगा?'

'भगवान का बाप मैं हूँ, माँ तू है। जैसा हँसायेगा-रुलायेगा, वैसे ही हँसेंगे-रोयेंगे।'

सुगाना गहन, अजाने दुःख से, भय से बार-बार सिर हिला रहा था।

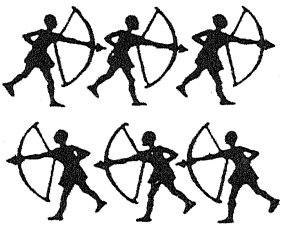

कुछ ही दिनों में सुगाना का घर तीर्थ बन गया।

बीरसि मुंडा, जिसने उन्हें इस गाँव में बसाया था, सरदारों के दल में बहुत दिनों से था। उसने सब सरदारों को खबर पहुँचा दी।

सेमल का फल फट-फटकर रुई के रेशे चारों ओर उडते हैं। बीरसा की ख़बर भी दूर-दूर तक फैल गयी। लोडा, कुरिया, नारोगा, तुबिल, मुचिया, बनपिरि, बरतोया, गोपाला, बीरबाँकी, बोंदो, बाम्बा—दूर-दूर से लोग आने लगे।

मुंडाओं की सारी प्रत्याशाएँ पूरी कर भगवान ने मनुष्य के रूप में जन्म लिया है! दल-के-दल—सभी भगवान को देखने आते थे। वह किशोर गायक सुनारा मालिक की बकरियाँ जंगल में छोड़कर एक पहाड़ी के ऊपर एक पियासाल के पेड़ की डाल पर चढ़ गया। सुनारा ने भौंहें सिकोड़कर गालों को हाथ से छूआ। सोचा : कैसी बाढ़ आ रही है? किस सहारे की तलाश में वे लोग बीरसा के पास जा रहे हैं?

सुनारा ने बीरसा को वही 'बोलोपे बेलोपे...' गान सुनाया था। यह लोग इस समय कौन-सा गान गा रहे हैं?

ने मुलुक दिसूम्रे, धरतिआबाय हाइजि लेखाये भाद्रमासे,
मानोया होन्को रसिकतानारे भाद्रमासे...।
प्रार्थना जानाय मानुष सार बेंधे एसे
चले जाय दल बेंधे।

चल जाइ, आनन्द करि, धरति आबा के प्रणाम करि
से आमादेर दुशमनदेर बन्दी करबे भाद्रमासे।[1]

1. इस देश में धरती के आबा ने भाद्र मास में जन्म लिया, मानव भाद्र मास में आनन्द करता है...। मनुष्य पंक्ति बाँधकर प्रार्थना करते हैं और दल बाँधकर चले जाते हैं।...चलो चलें, आनन्द मनाएँ, धरती के आबा को प्रणाम करें। वह हमारे शत्रुओं को भाद्र मास में बंदी बनायेगा।

सुनारा आश्चर्य में आ गया।

कल सुनारा मालिक के साथ हाट गया था। हाट से वह कितनी ही नयी-नयी बातें सुन आया।

सुना, बीरसा धरती का आबा है—यह खबर पलामू तक पहुँच गयी थी। अब कोई जात-पाँत की रुकावट नहीं है; अब बीरसा के नाम पर बड़ी भारी लहर लहराने लगी है। बड़े-बड़े पत्थरों की रुकावटें उस लहर में बह गयी हैं। पत्थर जमीन की छाती पर बह चले हैं भाजने नदी में, कान्‌चा नदी में। उन नदियों में बाढ़ आने से पत्थर बहे चले जा रहे हैं।

बीरसा अब धरती का आबा है। कितने दिनों से आदि-वासी बीरसा की तरह पता नहीं किसको चाहते थे—सिंबोङा के साथ, मिशन के धर्म के साथ जो एक साथ युद्ध में उतर सके—उसी धरती के आबा को चाहते थे। ओराँव, कोल, खारिया आदि की रक्षा सिंबोङा अब नहीं कर पा रहे थे। उन्हें यीशु की शरण का आसरा नहीं रह गया था। वे नया भगवान चाह रहे थे, जो भगवान केवल जादू और भूत-प्रेत और अभिशाप के प्रपंच दिखाकर उन्हें भुलावे में न रखे। जो देवता भूखे लोगों से किंगडम ऑफ़ हेवन की बात न कहे!

जो देवता कहे : भूत-प्रेतों को नहीं, दिकू और सरकार को समाप्त करो! अपने अधिकार खुद छीनो!

जो देवता कहे : जरूरत हो तो मर जाओ, मरने के लिए तैयार रहो।

उसी देवता की बात दूर-दूर तक पहुँच गयी थी। कहाँ पलामू, कहाँ छोटा नागपुर। पलामू की बारोयारी[1] और चेचारी[1] में खबर फैल गयी थी। अधिकांश ओराँव और मुंडा बीरसाइत[2] बन गये थे।

न, जात-पाँत की बाधा नहीं रह गयी थी। हिन्दू-बनिया-मुसलमान—सब चालकाड़ की ओर चल पड़े।

बीरसा के देखबे तारा।
मुंडारा गान गाइछिल, गाइछिल हिन्दू सदानरा—
पाये पड़ि बल कतदूर चालकाड़?
आमि धीरे याब
के बले पूर्बे, के बले दक्षिणे
आमि धीरे याब

---

1. जनता के दो उत्सव-विशेष।
2. बीरसा के अनुयायी।

जंगले गर्जाय चिताबाघ, डाके भालुक
ओगो धीरे याब ! याब दल बेंधे !
बीरसार कथाय नाकि आलो झरे ?
आमि धीरे याब, शुनब तार बाणी ।[1]

हाट में सुगाना सुन आया था कि सरकार के पास भी खबर जा पहुँची है । उसमें कहा गया है : रोगी, लूले, लँगड़े, अंधे—सभी चालकाड़ जा रहे हैं। चालकाड़ कितनी दूर है, कितने दुर्गम जंगल में है ? वहाँ रहने के लिए कोई जगह भी है कि नहीं ? फिर भी इस घनघोर वर्षा में, दुर्गम जंगल में, चालकाड़-भर में—भक्तों का मेला जुड़ गया है !

सुनारा से गोतंग मुंडा ने बताया : 'मैं भी गया था।'

'देखा ?'

'देखा ।'

'क्या देखा ?'

'भ-ग-वा-न ।'

'भगवान !'

'हाँ रे ! पहले कितना देखा था, तूने भी देखा था। अब देखने में वह बीरसा कहने से पहचान में नहीं आता। वह क्या वर्षा थी रे, सुनारा ! आकाश से पानी ढुलक रहा था। मैं सिर पर, किसी और का बाँस का छाता लगाये बैठा रहा। सत्तू और नमक लेकर गया था। जितने दिनों सत्तू चला, थोड़ा-थोड़ा खाकर बैठा रहा। खाना चुक गया, तभी लौटा। हम इतने लोग गये थे कि क्या बताऊँ !'

'क्या देखा ?'

'कितने ही अंधे-लूले-रोगी-दुःखी—सभी जाकर बैठे थे। रालूडू के गोमी मुंडा ने गाना खूब बाँध रखा था।'

'क्या गाना ?'

'चल, तुझे सुनाऊँ।'

'चलूँ कहाँ ?'

---

1. वह बीरसा को देखेंगे। मुंडा लोग गान गाते थे, गाते थे हिन्दू। तुम्हारे पैर पड़ता हूँ, बता दो कितनी दूर है चालकाड़ ? मैं धीरे-धीरे जाऊँगा। किसने कहा पूर्व में, किसने कहा दक्षिण में ? मैं धीरे-धीरे जाऊँगा। जंगल में चीते-बाघ गरजते हैं, भालू बोलता है। अरे, धीरे जाऊँगा। झुंड में चलूँगा। क्या बीरसा की बातों में प्रकाश चमकता है ? मैं धीरे-धीरे जाऊँगा, उसकी वाणी सुनूँगा।

'तो सुन !'

चल हे मिता चालकाड़े जाइ, बनरे बूके चालकाड़ जाई
तारे देखते चल जाई
सबाई जाये मोराओ चल तारे देखते जाई।[1]

बीरसा ने क्या कहा था, सफ़ेद है साहबों का रंग। मुर्गी भी सफ़ेद है, सुअर भी सफ़ेद हैं—सब अपवित्र हैं। इसी से मुंडा सफ़ेद मुर्गी, सफ़ेद सुअरों को काट-काट कर खा लेते हैं।

बीरसा ने आकाश-बतास-जंगल-धरती की गति को देखकर कहा : साल 1895-96 में भीषण अकाल होगा ! सब-कुछ पाप से जो भर गया है।

अग्नि-वर्षा—सेंगेल-दा की आग से भी बड़ा विनाश आकाश से उतरेगा !

सारे अविश्वासी मर जायेंगे !

बच रहेंगे केवल बीरसा के विश्वासी !

उसके बाद आयेंगे सुख के दिन !

सुख की उसी प्रत्याशा में आदिवासी खेती-बारी—काम-काज—छोड़े दे रहे हैं। आये अविश्वासों को ध्वंस करने के लिए प्रलय ! पाप के राज्य का नाश हो ! खेती करके—काम करके—बेगारी देकर—गुलामी के पट्टे को लिखने के फलस्वरूप मेहनत कर दिकू-महाजन-बनियों की तोंद बढ़ाकर क्या होगा ?

बीरसा नया दिन ला देगा। नये दिनों के लिए, मुंडा लोगों के सुख के लिए तब मेहनत करनी होगी। इस समय सब काम बन्द !

सरदार लोग कहते घूमते हैं : 'भगवान कह रहा है—महासर्वनाश आ रहा है। दस सेंगेल-दा के अग्नि-पात से भी बड़ा सर्वनाश ! कोई खेतीबारी मत करो। लगान मत दो; सब अपने खेतों की फ़सल खा डालो !'

यह सुनकर मुंडा लोग कुछ आनन्द से, कुछ डर से पागल हो रहे हैं। यह भगवान की बात है या सरदारों की बात, यह कोई नहीं सोचता। गाय-

1. आकाश से सहारे सूत के आया उतर, नयी बातें लिये आया उतर। लोकी के खोल में जल ले जाऊँगा, मन की आस पुराऊँगा। ओ जो सूरज-सा उदित हुआ, पूरन चाँद-सा—नित-नित आयेगा नहीं। हठात् कभी मिले तो मिले, चल, हम चलें, उसे देखें। चला गया तो फिर न सकेंगे देख। नित-नित आयेगा नहीं वह। कब देख छोड़ चला जाये, मिल जाये अँधेरे में !

बछड़ों को खेत में छोड़ दिया है। आमन[1] का कोमल चारा सब निर्मूल हो गया। अपनी-अपनी मुर्गियाँ काटकर खा डाली गयीं। सब-कुछ बेचकर हाट से नये कपड़े खरीदे गये। नये कपड़े पहनकर गाने गाते-गाते भगवान को देखने जा रहे हैं! बनिये कपड़े बेच-बेचकर पुलकित हो उठे हैं!

सुनारा ने सिर हिलाया। कुछ समझ में नहीं आ रहा है। कटुई गाँव में हैज़ा फैल गया। ख़बर पाकर भगवान ख़ुद दौड़ा गया। बोला : 'रोगी को अलग रखो, नमक सिझा कर पानी पिलाओ। उसके कपड़े कुँए के किनारे, झरने में मत धोओ। सब लोग पानी सिझा कर पियो। तुम लोग यही करो। भात-पान्ता[2], घाटो, अमानी धान, जो भी खाओ—उसे ढक कर रखो। बासी-सड़ा मत खाओ।'

'भगवान, तुम्हारी पूजा करें न?'

'वही मेरी पूजा है।'

'तो मंत्र नहीं बताओगे?'

'बताऊँगा।'

भगवान धूरा नदी के किनारे गये। बोले : 'पत्थरों से पानी को किसने घेर दिया है? रुककर पानी सबुज हो गया है।'

'हम लोगों ने किया है।'

भगवान ने पत्थरों को उठाकर फेंक दिया। हाथ जोड़, आँखें बन्द कर बोला : 'इन्हें ज्ञान दो, बुद्धि दो, हे मेरे भीतर के भगवान! मुंडा हज़ारों तरह की मौत मरते हैं।'

बोला : 'इस बहते सोते का पानी पियो। मंत्र पढ़ दिया है। अब हैज़ा नहीं होगा। आपाङ पौधा सब पहचानते हो। उसकी जड़ पीसकर खाना मत भूलो।'

सचमुच किसी को हैज़ा नहीं हुआ। सरदार लोगों ने कहा : 'तुम लोगों ने देखा? हैज़ा की बुढ़िया भगवान का मंत्र सुनकर किस तरह चिड़िया की तरह पंख फैलाकर उड़कर चली गयी!'

सुनारा ने सिर हिलाया। बीरसा अगर भगवान हो जाये, मुंडाओं का

---

1. जड़हन, जाड़े की फ़सल।
2. पानी में भिगोया बासी भात।

भगवान, तो सुनारा उसका चेला हो जायेगा। अगर सेंगेल-दा की अग्नि बरसने लगे तो वह क्यों मालिकों के घर गुलाम होकर पड़ा रहेगा? मालिक, उसकी जात-बिरादरी के बनिये, महाजन, मालिक का मालिक जमींदार, जमींदार का मालिक राजा—सब पगला गये हैं?

'एक पागल, दीवाना! नव-वय-प्राप्त लड़का, स्वभाव बिगड़ने पर जो नहीं चाहिए, वही कहकर भूतों को चिढ़ाता है।'

यह बात मालिक-महाजनों में हुई। महाजन बोले : 'इस बार आसमान का हाल देखा है? बीरसा को जंगल में ले जाकर भगवान बनायेंगे—इसलिए कई दिन आँधी-पानी हुआ। उसके बाद से आकाश कैसा खराब हो गया है, देखा है? पानी का नाम नहीं है!'

'न, आकाश की हालत देखकर बेटा कह रहा है कि इस बार उपज जल जायेगी। सब-कुछ खाक़ हो जायेगा।'

'सरदार लोग क्या कम बदमाश हैं? वे कहते हैं कि इसके बाद सूखे खेतों में आग लगा देंगे। मुंडा लोग समझेंगे कि भगवान ने ठीक ही कहा था।'

'लेकिन हालत बहुत खराब है।'

'क्यों?'

'अकाल आ रहा है। मुंडा आ रहे हैं। नौकरीपट्टा लिखा लें। उन्हें ख़रीद लें, सो बाद में कितना आराम रहेगा! खेत में काम करते हैं, पालकी ढोते हैं, बेटे लोग नासमझ बुद्धू हैं! खेत पर पहरा देंगे, एक दाना चोरी नहीं करेंगे, घर में ठाकुर-पिटारी, पूजा-पाठ देखकर दूना डरते हैं!'

'नासमझ, बेवकूफ़!'

'लेकिन इस बार कोई आदमी बिकने के लिए नहीं आ रहा है! सरदारों ने यह बात फैला दी है कि आदमी की ख़रीद और बिक्री ग़ैर-क़ानूनी है। अरे, ग़ैर-क़ानूनी है, यह तो हम भी जानते हैं। पट्टा तो उन्हें डराने-भर के लिए है।'

'हाँ, बात तो मैंने भी सुनी है। इस बार तो सब जल जायेगा। तो फिर किसका डर? देखो, जो लोग हमेशा डर को हौआ बनाये रहते हैं, वे जब डर को भुला देते हैं, जब मुंडा हँसते-हँसते अपना खेत नष्ट कर देता है, तब लक्षण बहुत खराब होते हैं। इस बीरसा से हमारा बड़ा नुकसान होगा। अब तक मुंडा क्या करते थे? डरते थे कि नहीं?'

'अब तक डरते थे!'

'बीरसा ने उन्हें समझा दिया है कि जब मरना है, तो डरते क्यों हो?'

'हम तो हम—मिशन में साहब लोग कितना डर रहे हैं! कोई क्रिस्तान नहीं रहना चाहता। सभी मिशन छोड़कर चले जा रहे हैं। वे कहते हैं—हमारे पास बीरसा ने चार बरस रहकर जो-जो सीखा, बेटा वही सुना कर मुंडाओं को भुलावे में डाल रहा है।'

'इसमें डर की क्या बात है? अकाल पड़ता है, चावल मिलते हैं, जाकर क्रिस्तान हो जाते हैं! बीच-बीच में बेवकूफ़ की तरह खफ़ा होकर सरकार से लड़ने जाते हैं। मार खाते हैं, जेहल-फाँसी-क़ैद-कोड़ों के डर से जाकर क्रिस्तान हो जाते हैं! दो बरस फ़सल पाकर भरपेट खाते हैं, मिशन छोड़ देते हैं। साहब लोगों को डर की क्या बात है?'

'बीरसा से डरो। वह क्या करता है, कुछ समझ में नहीं आता!'

'समझने के बाद डर नहीं रहता है। न समझो तो बड़ा डर लगता है।'

सुनारा के मन में सब आ रहा था। उसने देखा था कि आदमी चालकाड़ की ओर जा रहे हैं।

बीरसा की बातों के बारे में जो कुछ कहने-सुनने में आ रहा था, सब बीरसा की अपनी बातें हैं या नहीं, किसी को नहीं मालूम था!

बीरसा करमी का परोसा खाना खा रहा था। करमी के घर में ही सोता था। लेकिन करमी को पता था कि उसके बेटे को अब उसकी गोद संभाल नहीं सकेगी। वह धरती का आबा है। वही बन गया है मिट्टी की पृथ्वी का मूर्त रूप! करमी का साहस नहीं कि लड़के से कहे: 'तुझे देखकर मुझे डर लगता है, बीरसा; तेरे लिए भी डर लगता है। इतने आदमी जिसकी पूजा करते हैं, उसके लिए बहुत आशंकित होना चाहिए। आदमी बहुत भूल जाता है बीरसा, आज सिर पर उठा लेता है, कल जमीन पर लथेड़ता है।'

हरमू ओझा को डर लगता था। हमेशा से मुंडा लोगों पर भूत आये, डाइन की नज़र पड़ी, दुश्मन ने बाण मारा। हमेशा से वे हरमू ओझा के पास आते रहे। हरमू ओझा चावल, मुर्गी, खसी लिया करता। तंत्र-मंत्र-यज्ञ आदि किया करता। कभी सब उसकी बात मानते थे।

अब बीरसा अगर सिंबोङा बन जाये, उसी की तरह शक्तिमान, तो मुंडा लोग हरमू को क्यों मानेंगे? बीरसा कहता है: 'मंत्र-तंत्र में विश्वास मत करो, मन का अँधेरा हटाओ, बहुत बड़े दुर्दिन आ रहे हैं!'

इसीलिए, गाँव में जब चेचक हुई तो हरमू बोला: 'बीरसा के पाप

से गाँव में चेचक आ गयी है।'

बीरसा बोला : 'मैं चला जाऊँ तो चेचक चली जायेगी ?'

'चली जायेगी।'

चालकाड़ की हद छोड़कर बीरसा चला गया। लेकिन महामारी कम न हुई। घर-घर लोग मरते रहे।

मुंड बोले : 'हरमू ओझा ! हम तुझे मारकर तेरी लहास बन में फेंक देंगे। भगवान को तूने खदेड़ दिया। उसी पाप से चेचक गाँव में घुस आयी।'

हरमू ओझा डर गया। उसने भी जाकर बीरसा से कहा : 'बीरसा, तब मैं नहीं समझा था। तू धरती का आबा है। तेरे रहते और बोंगा-बोंगी पूजने की जरूरत नहीं है। अब तू चल। चेचक को खदेड़ दे। नहीं तो वह मुझे मारकर मेरी लहास जंगल में फेंक देंगे।'

बीरसा लौट आया। सबको बुलाया। घर के सामने काठ का माचा बना। उस पर चढ़कर खड़ा हुआ। हल्दी से रंगी नयी धोती पहने—गले में जनेऊ, माथे पर चन्दन ! आकाश की ओर हाथ उठाकर बहुत देर आँखें बन्द किये रहा। उसके बाद बोला : 'सब सुनो।'

'बोलो, भगवान !'

'जिन्हें चेचक नहीं हुई है, सब लोग नीम के पत्ते उबालकर उसका पानी पियो। नीम के पत्ते जल में सिझा कर उस जल से बदन पोंछो। जिसके चेचक निकली है, लेकिन दाने नहीं निकले, सफ़ेद तुलसी के पत्तों का रस अदरक के रस में मिलाकर उसे पिलाओ; दाने निकल आयेंगे। उसके बाद सारे चेचक के रोगियों को करेले के पत्तों और हल्दी का रस मिलाकर पिलाना।'

'और बताओ।'

'जो रोगी का बदन पोंछे, जो खाना दे, वह अलग रहे। दूसरे लोग जाकर जिस घर में चेचक नहीं हो वहाँ, उस घर में पड़ोसियों के साथ रहें। जो कहता हूँ—ध्यान से सुनो।'

'मेरा बेटा बहुत नन्हा है, भगवान ! चलता भी नहीं है। उसे चेचक हो गयी है।'

'मैं उसे देखूंगा। और देखो, जो मर जाये उसके कपड़ों की माया मत करो। ऐसा कपड़ा जलेगा। धोकर उसे मत पहनना। जिस घास की चटाई पर सोया हो, वह चटाई भी जलायी जायेगी।'

'उसके बाद ?'

'तुम जाओ। मैं चन्दन घिसने जा रहा हूँ। घावों पर चन्दन लेप दूँगा।'

बीरसा घर-घर घूमने लगा। मुंडा हैज़ा-चेचक-साँप के काटने-बाघ से पकड़े जाने को भाग्य का लेख समझते थे। बीरसा उन्हें सिखाने लगा कि चेचक, हैज़े के साथ भी लड़ा जाता है। जीवन्त भगवान के साथ रहने से हैज़ा-बूढ़ा, चेचक-बूढ़ी—ख़ुद ही भाग जाते !

गाँव से चेचक की महामारी चली गयी। उसके बाद करमी बोली : 'बीरसा ! तू क्या सचमुच भगवान हो गया, बाप ? चेचक होने पर बीस-पचास मुंडा न मरें, यह तो अपने जीवन-काल में नहीं देखा !'

बीरसा बोला : 'इतने आमदियों के बीच में मैं तेरा बीरसा नहीं रे, माँ ! मैं धरती का आबा हूँ।'

'धरती का आबा तो है ही।'

'भगवान बनकर आया हूँ। तुम लोगों को राह दिखाऊँगा। उसके बाद चला जाऊँगा। दिकू लोग मेरी क्षमता देखकर बस न मानें तो मुंडा ज़िन्दा न रहेंगे, यह समझ लिया है।'

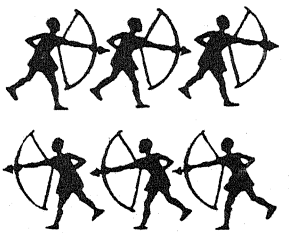

बीरसा ने समझा, नये धर्म का प्रचार—महामारी रोकने के उपाय बताना—सिर्फ़ इतने से धरती का आबा नहीं माना जायेगा। अब तक उसने जो-जो किया, उसके पीछे थी उसके मिशन के जीवन की शिक्षा—शायद कुछ वैष्णव धर्म की शिक्षा भी हो—इसके पीछे है उसके जीवन के विगत छः-सात वर्षों के अनुभवों का निचोड़। लेकिन उसे दूसरी भूमिका में भी उतरना होगा।

अन्तर के भी अन्तर में उसे जंगली-माँ का रोना सुनायी दिया करता था !

'मैं शुद्ध पवित्र बनूँगी।'

अन्तर के भी अन्तर में अपने ख़ून की नदी के तट पर वह उस माँ को

देखा करता था—नंगी, मुंडा युवती-सी उसकी कृष्णवर्णा माँ—आदिम जंगल—रोना रो रही थी, और कह रही थी : मैं निर्वसना नहीं रहूँगी। उन्होंने मेरी लज्जा-शरम छीनकर नंगा कर आकाश के नीचे खड़ा कर दिया है।

रो रहा था उसके अन्तर का अकेलापन। उसके अन्तर के अंधकार के सूनेपन में निर्वासिता माँ का रूप कृष्णवर्ण के भारत का था। माँ कह रही थी : मेरी छाती में अभी भी दूध है, फिर भी मेरी संतानों को उन लोगों ने बेघर कर रखा है, ऐसा मेरा दुर्भाग्य है!

बीरसा अस्थिर हो उठा।

उसकी अस्थिरता की प्रतीति कर करमी एक दिन रात में उठकर आयी। करमी ने कहा : 'धरती का आबा हो गया, फिर भी तेरी छठपटाहट क्यों नहीं जाती, बाप मेरे? फंदे में पड़ा बाघ जैसे चक्कर लगाता रहता है, उसी तरह सारी रात तू चक्कर लगाता रहता है? अरे बीरसा, तू चाहता क्या है?'

'माँ, क्या तू रात में सोती नहीं है?'

'ना बाप! जिस दिन से तुम धरती के आबा बने, मेरी आँखों की नींद छिन गयी।'

'क्यों माँ, कैसे?'

'बाप! तुम तो अब मेरे कलेजे की बिथा नहीं समझोगे। अब तो तुम्हें सबकी बिथा से मतलब है। कोई जानता नहीं था, मुझे चीन्हता नहीं था—अब मुझे देखकर पहान-बनिया उठ खड़े होते हैं। कहते हैं, ब्बाप रे ब्बाप! तोरा बेटा भगवान, तुम्हारे सामने हम बैठ सकत हैं?'

'उससे तुझे दुःख है, या सुख?

'जितना सुख है, उतना ही दुःख है, बीरसा! तू कोम्ता-सा होता, घर में बहू लाता, लड़के-बच्चे होते तो कुछ दुःख न रहता। तू क्यों भगवान हुआ, बीरसा? इतना बड़ा क्यों हुआ कि मेरी गोद में अब नहीं संभलता? मेरी छाती में नहीं समाता? क्यों कहता है, चला जाऊँगा? कहाँ जायेगा मेरे बाप, मेरे आबा? क्यों तेरे जन्म पर लोगों ने मेरे घर पर तीन तारे देखे? क्यों घानी की बहन ने तुझे चाईबासा में देखकर सब लोगों में आकर फैला दिया : करमी के पेट से भगवान ने जनम लिया है? क्यों, क्यों, क्यों रे?'

'चल, सुलायेगी? चल!'

'सब सो रहे हैं, भगवान के सहारे हैं, निश्चिन्त सो रहे हैं। मेरी आँखों

में नींद नहीं है। मैं भगवान की माँ हूँ। भगवान का क्या होगा, इसी डर से मैं जाग-जागकर रोती रहती हूँ।'

'चल माँ, तुझे साथ लेकर सोऊँगा।'

'कब मेरी गोद में सटकर सोता था, कब तुझे भूख में खाने को दिया था, कब तुझे बिथा होने पर गोद में लेकर रोती थी, सारे मन में छाया-सा अँधेरा-अँधेरा लगता है, बीरसा!'

'चल, माँ।'

'सुना है। किसी मुंडा माँ का लड़का काठ के लिए गया था। जिस राह से लड़का लौटेगा उसी राह पर देखती नदी के किनारे बैठे रोते-रोते—रोते-रोते—रोते-रोते वह माँ पत्थर हो गयी थी। तू मुझे जितना रुलायेगा बीरसा, वह तो जानती हूँ। जानती हूँ, मैं भी पत्थर की हो जाऊँगी।'

'ना, माँ! डर मत।'

'आ, मेरे पास आ।'

बीरसा पास आया। करमी ने अपने सूखे शीर्ण कलेजे से लड़के का सिर सटा लिया। सिर सूँघकर बोली: 'तेरा वही शरीर-सिर होने पर भी वह जानी-पहचानी गंध चली गयी है रे!'

'लेटो तो, माँ! सिर पर हाथ फेरूँ?'

'फेर। तू पास है, आज मेरी आँखों में नींद आ जायेगी।'

'दिन भर मेहनत क्यों करती रहती है?'

'ब्बापो रे! अब मैं भगवान का घर देखती हूँ। मैं नहीं मेहनत करूँगी तो इतने-इतने आदमियों को कैसे भात-जल मिलेगा? घर कैसे लिपा-पुता रहेगा?'

'अब सो जा।'

करमी सो गयी। बीरसा भौंहें सिकोड़कर सरदारों की भूमिका की बात सोचने लगा।

माझिया मुंडा, बुधू मुंडा, परान पहान, उसके सबसे निकट के जो लोग हैं, वे कहते हैं: 'भगवान, सरदार लोग तुम्हारे कंधों पर कुल्हाड़ी रखकर साल का पेड़ काटना चाहते हैं!'

बीरसा जानता है, वह बातें समझता है।

सरदारों के आन्दोलन के मतलब हैं—अर्जीदारों का आन्दोलन। उस आन्दोलन में किसी दिन यह बात स्पष्ट नहीं हुई कि आन्दोलन सरकार के ख़िलाफ़ है। सरकार की ही तरह मिशन वाले भी वास्तव में मुंडाओं के हितों के विरोधी थे। दाँत भींच कर लड़ाई करना ही एकमात्र रास्ता

था—उसे भी शायद सरदार नहीं मानते थे। सरदारों ने मुंडाओं के स्वार्थ के लिए ही आन्दोलन चलाया था, किन्तु वह जैसे केवल छोटा नागपुर के ज़मींदारी क़ानून को सफल बनाने का आन्दोलन था। इस बार ही उन्होंने मिशन का सहारा छोड़ा था। इस बार ही देखा गया, मानो वे अपने उद्देश्य में कुछ पक्के हैं, साधना-मार्ग पर हताश होकर मुसीबतें झेलने को कुछ तैयार हुए हैं।

सभी सरदार आकर उसके साथ शामिल हो रहे हैं। लेकिन इसके पीछे बहुत-से उद्देश्य काम कर रहे हैं।

यही तो, बीरसि मुंडा—जिसने उन्हें ठौर पर बिठाया था, उसी की बात ली जाये। बीरसि मुंडा होशियार सरदार था। साल 1831-32 के कोल विद्रोह में शामिल होने के लिए उसके परदादा ने अपनी ठौर समेत बाईस गाँवों की मिल्कियत खो दी थी। बीरसि चाहता था कि बीरसा आन्दोलन करे—उस आन्दोलन में शरीक होकर अपनी खोयी जमीन का वह फिर मालिक बन जायेगा।

मांगा मुंडा, जन मुंडा, माटिन मुंडा-से सरदार उसके पास आये थे। उसका सबब था : वे जानते थे कि सरदारों का आन्दोलन कमज़ोर है।

उन्हे मालूम था, बीरसा पर मुंडाओं की असीम आस्था है। वे बीरसा को साधन बनाना चाहते थे। इससे उनका आन्दोलन सफल हो सकता था।

सरदार लोग ही बीरसा की अलौकिक सामर्थ्य की कहानियाँ फैला रहे थे। गिडियन, इलायाजार प्रभुदयाल के-से विशिष्ट सरदार बीरसा के पास आते रहते।

अच्छा, बहुत अच्छा!

उनके आन्दोलन में सरदारों का आन्दोलन मिल जाये, लेकिन बीरसा सरदारों के हाथों का खिलौना नहीं बनेगा। वह बनेगा नेता।

तो क्या बीरसा मुंडा-राज का दावा करेगा? जिस राज से सारे विदेशी निकाल बाहर किये जायेंगे? जिस राज का प्रधान बीरसा खुद होगा?

बीरसा समझ गया : केवल एक ईश्वर का धर्म, नयी रीति की उपासना की बात कहने से वह धरती का आबा नहीं बनेगा। उसकी माँ, उस कृष्णवर्ण जंगल का दुःख और लज्जा उससे दूर न होंगे। उसे और भी बहुत-सी बातें करनी होंगी।

बीरसा ने निश्चय किया, अब से वह मुंडाओं के सिवा किसी से बात न करेगा। बनिया और महाजन, दिकू लोगों को अपनी सभा में न आने

देगा। ज़मींदार, महाजन और बनिया, मुंडाओं के दुश्मन हैं—वह इस बात को मुंडाओं से कह देगा।

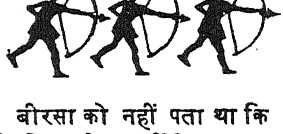

किन्तु दिकू बीरसा के नाम से डरते थे। बीरसा को नहीं पता था कि सरदार लोग सभी उसके दल में मिल रहे हैं, मिशन के साहबों के पास इस तरह की ख़बर सरकारी दफ़्तर से पहुँची है। साहब लोगों ने रिपोर्ट तैयार की है। चाईबासा और राँची में पुलिस मुस्तैद हो गयी है। मुंडा लोग एक नाम के साथ जुड़ गये हैं। सूखा-अकाल, सरकार, पुलिस—सबका डर भुलाये दे रहे हैं; साहब-सरकार डर रही है!

बीरसा को पता नहीं था कि उसके नाम से बड़ी-बड़ी रिपोर्टें भरी जा रही हैं। मिशन के साहब लिख रहे हैं: बीरसा ने हमारे पास से जो-जो सीखा, बाइबिल की वही कहानियाँ कहकर मुंडाओं को बहका रहा है। हम लोगों को जिस तरह महामारी के समय सेवा-सुश्रूषा करते देखा, उसी तरह सेवा करके मुंडाओं को भरमा रहा है। ये लोग तो जाहिल, बदमाश, बेवकूफ़, ठग हैं!

सरकारी चिट्ठी आयी: अगर यह बात सही है तो तामार से मुंडा लोग उसके पास क्यों जा रहे हैं? और वही क्यों मिशन के प्रचारकों के केंद्रों में घूमता है? बीरसा किसका पुनर्जन्म चाहता है? एक आदिम धर्म-विश्वास का, या विद्रोह का? याद रखना होगा, साल 1831-32 में तामार विद्रोह भड़क उठा था। याद रखना होगा, सरदारों के विद्रोह में साहब-सरकार के विरुद्ध कोई विरोध शुरू में नहीं था। सरदार दिकू लोगों के ख़िलाफ़ लड़े थे। साहब-सरकार दुश्मन है—यह विश्वास उनके दिमाग़ में बाद में आया। लेकिन अब सरदार जानते हैं कि साहब-सरकार उनकी दुश्मन है।

जवाब गया: बीरसा जो भी कहे, मुँह से कितनी ही धर्म की बातें कहे, उसके भक्त हथियार जमा कर रहे हैं। बीरसा का धर्म क्या है, यह समझ में नहीं आता। इस बार घोर अकाल है। फिर भी मुंडा मिशन में आकर लंगर खोलने को नहीं कह रहे हैं। बीरसा का प्रभाव ऐसा बढ़ चला है कि सरदार लोग बेकार-से हो गये हैं। उसके एक बार हाँक लगाने से सभी मुंडा विद्रोह कर देंगे!

साहबों की बात जाने बिना ही बीरसा ने मुंडाओं को आह्वान दिया था : 'तरह-तरह से तुमने देख लिया कि मैं ही भगवान हूँ।'

'देख लिया।'

'अब सुनो।' बीरसा ने उन्हें समझाना शुरू किया :

'मुंडा बड़े बंधनों में फँसे हुए हैं। दिकू लोगों ने मुंडाओं को उधार-कर्ज़-कोयला खान-रेल-जेहल-अदालत वग़ैरह के हज़ारों चक्करों में फाँस लिया है। अब हमें सब तरह से आज़ाद होना पड़ेगा। सारे विदेशियों को भगायेंगे। किसी को कोई लगान नहीं देंगे। सारे जंगल ले लेंगे। जैसे पहले लिये थे, वैसे ही अब लेंगे।'

'कब ?'

'मैं बता दूँगा। आज से मैं किसी भूरे आदमी, सफ़ेद आदमी से बात नहीं करूँगा। मुझे कोई 'बाबू' न कहे।'

'नहीं कहेंगे। आदर से कहते थे।'

'बाबू कहने से मुझे आदर नहीं मिलता है।'

'नहीं कहेंगे।'

'कब लड़ाई शुरू होगी, बता दूँगा। अब से गाँव-गाँव में सब तीर पठाओ। पत्ता मिले तो समझना कि धर्म की बात सुनने को बुलाया है। तीर भेजने से समझना कि मैं लड़ने के लिए बुला रहा हूँ।'

'भेज देंगे। भेज देंगे रे, तीर भेज देंगे, कुचला-तीर !' खुशी से धानी मुंडा उछल पड़ा। सफ़ेद बाल कँपाकर, काला, गठीला हाथ आसमान की ओर उठाकर चिल्लाया था : 'ले जाओ तुम लोग। आज पाँच बरस से मैंने बहुत-से तीर तैयार किये हैं। मुझे मालूम था कि बीरसा एक दिन तीर के लिए राज़ी होगा।'

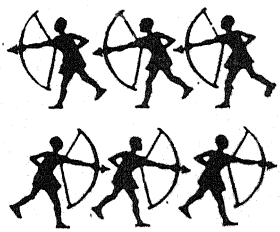

धानी के बनाये तीर सारे गाँवों में पहुँच भी नहीं पाये थे कि उसके पहले

ही सरकारी पहियों में कुछ गति आने लगी।

मुंडा लोग खेती नहीं कर रहे हैं, उधार नहीं ले रहे हैं!

बहुत डर गये थे ज़मींदार जगमोहनसिंह, महाजन सूरजसिंह, पटवारी बनराम साव और मज़दूरों के ठेकेदार शिवलाल जैसे लोग! लगान नहीं देना होगा, सूद नहीं देना होगा, जमीन बंधक रखकर कोई धान-गेहूँ उधार नहीं लेगा! कोई कुली बनने चायबागान में नहीं जायेगा!

डर गये थे मिशन के साहब लोग। कोई क्रिस्तान बनना नहीं चाहता है। मिशन छोड़कर सब चले जा रहे हैं!

सरकार घबरायी। यह अगर विद्रोह की तैयारी नहीं है तो किस बात की तैयारी है? किस भरोसे पर वे खेतीबारी छोड़े दे रहे हैं? खेती करने पर, बरस-भर आसमान की ओर मुँह उठाकर, आसमान की दया पर खेती करने पर भी जिन्हें दो जून घाटो नहीं जुटता—उनके दिलों में ऐसी हिम्मत किसने भर दी?

डिप्टी-कमिश्नर ने तामार के दारोगा को खबर भेजी। साल 1895 की छठी अगस्त को खबर तामार पहुँची—बीरसा ने कहा है: 'सरकार उलगेज[1] में खतम हो गयी है। अब मुंडाओं का राज कायम होगा।' तभी दारोगा ने एक हेड-कांस्टेबल और दो कांस्टेबल वहाँ भेज दिये।

वे लोग बड़ी रात को चालकाड़ पहुँचे। सुगाना के घर के आसपास घर-के-घर बीरसाइत उठ खड़े हुए थे। पुलिस एक घर में घुसकर बैठी रही। बीरसाइत गाँव-गाँव में तीर बाँटने निकल पड़े थे। अँधेरी रात! पानी बरस रहा था।

सवेरे दो कांस्टेबल बीरसा के घर जा पहुँचे। बोले: 'बीरसा, तुझे गिरफ़्तार किया।'

लेकिन बीरसा को गिरफ़्तार नहीं किया गया। सुगाना और दूसरे बीरसाइत लोगों ने कांस्टेबलों से कहा: 'चले जाओ।'

बीरसा बोला: 'उस घर में जाकर आराम करो। इतने पानी में लौट-कर मत जाना।'

हेड-कांस्टेबल बोला: 'सुका चौकीदार, तुम कोचांग चले जाओ। पलुस प्रचारक को ले आओ।'

पलुस प्रचारक और यूसुफ़ खाँ कांस्टेबल दो सौ मुंडा, महतो और पहान को लेकर लौट आये। तब वे बीरसा के घर के सामने फिर आये।

बीरसा हँसकर बोला: 'सरकार का निमक खाते हो, लगता है पकड़ने

1. एक जगह का नाम।

आये हो। मुझे क्यों पकड़ोगे, सबब बताओ ?'

एकत्रित मुंडा बोले : 'जवाब दो।'

'तुम मुंडा लोगों को भड़काते हो।'

'मैं तो धर्म की बातें बताता हूँ।'

'मुंडा क्यों आते हैं ?'

'उनसे पूछो।'

'लगान क्यों नहीं देते ?'

'उनसे पूछो।'

'खेती क्यों नहीं करते ?'

'उनसे पूछो।'

'तू बता। सरकार ने तुझे पकड़ने को कहा है। तू इनके काम में रुकावट डाल रहा है।'

बीरसा धीरे से बोला : 'पलुस, तुम उन पुलिसवालों से पूछकर देखो। हमें मालूम है कि ये नौ तारीख़ की रात से उस घर में हैं। हम उन्हें मार सकते थे, भगा सकते थे। हमने कुछ भी नहीं कहा, न किया। आँधी-पानी में बाहर नहीं निकाल दिया, ग़लती हुई। किसी बात की असुविधा नहीं होने दी। ग़लती हुई। उन्हें कोई चावल नहीं बेचना चाहता था। मैंने कहा—तभी उन्हें चावल-दाल-नमक बेचा गया। वह भी मेरी ग़लती हुई। अब बताओ तो, तुम मुंडा होकर मुझे क्यों पकड़ने आये हो ?'

'तुम सरकार के दुश्मन हो।'

'मैं भगवान हूँ—मुंडा लोगों का भगवान। हाँ, मैं उस सरकार का दुश्मन हूँ जो सरकार मुंडा लोगों के साथ दुश्मनी करती रहे। आज तुम प्रचारक बन गये हो। सरकार मुंडा लोगों को जंगलों से भगाती है; ज़मींदार-महाजन इन अंधों को क़ानून का डर दिखाकर उजाड़ते हैं। अब तुम मुंडा नहीं रहे। इसीलिए मुंडाओं का दुःख तुम्हारे दिल को नहीं लगता। तुम भी अब दुश्मन हो।'

'किसके ?'

'मुंडा लोगों के। मिशन में मुझे कोई 'तू' के सिवा 'तुम' नहीं कहता था। क्यों ? मैं मुंडा हूँ ? ये लोग तो मुझे पकड़ेंगे ही पलुस, इनका सही नाम जानकर भी सरकार इन्हें नौकरी देगी। मुंडा चाहे जितना लिखना-पढ़ना सीखे, सरकार नौकरी नहीं देगी। ये तो मुझे पकड़ेंगे ही पलुस, इनकी जात-बिरादरी वाले जमीन-घर-आबादी-जंगल आदि पर दखल किये बैठे हैं। लेकिन तुम कैसे मुंडा हो, ओ, कैसे हो तुम प्रचारक पलुस ?'

'बीरसा, खराबी बढ़ती जा रही है।'

'क्यों, ऐसी बात नहीं सुनी है ? सुनो पलुस, मैंने लाश निकालकर उस से पैसे चोरी किये थे। माँ के गुस्सा होने पर मैं जंगल चला गया। पागल होकर मारा-मारा फिरता था। सो बाद में जब आकाश में बिजली कड़की, कौंधा चमका, तब मुझमें जैसे सब शा—न्त हो गया। मैं, बीरसा—मैं भगवान हूँ। सिंबोङा से, मिशन में जो भगवान के बारे में कहानी कही जाती है उससे—सबसे मेरी शक्ति बेसी है।'

पलुस डर के मारे काँपने लगा। देखने लगा हेड-कांस्टेबल की ओर। हेड-कांस्टेबल की आँखों में डर समाया हुआ था। मुंडा लोगों ने उन्हें घेर लिया था। काले-काले चेहरों में दुःसाहस की कैसी ज्योति चमक रही थी !

'मुझे सरकार पकड़ेगी ? पकड़कर रख न सकेगी। मारेगी ? मार नहीं सकेगी। जब तक एक भी मुंडा एक धान का पौधा लगायेगा, एक पेड़ काटेगा, एक घर खड़ा करेगा, उसमें मैं रहूँगा, पलुस साहब ! मैं धरती का आबा हूँ। मेरा विनाश नहीं होगा। तुम्हारे हाथों विनाश नहीं होगा।'

पलुस जिन मुंडाओं को लाया था, उन्होंने बीरसा के आगे लाठियाँ झुका दीं। बोले : 'महापाप करने आये थे। भगवान, हमें माफ़ कर दो।'

बीरसा चिल्ला उठा : 'उन लोगों को तुम खदेड़ दो। निकाल दो। उन्हें भगा दो।'

मुंडा लोग कांस्टेबलों को भगाने के लिए बढ़े। अपने हाथों के बरछे पुलिस की पीठ में लगाये रहे। मुंडा औरतों ने पीछे से पीतल की झाँझें बजायीं, गालियाँ दीं। भागते-भागते पलुस ने सोचा—किस तरह इस गड़बड़ से बचकर निकल भागें :

अब आये राँची के पुलिस के डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट मीअर्स। साथ में आये मुरहू मिशन के रेवरेंड लास्टी, बनगाँव के ज़मींदार जगमोहनसिंह। साथ में आयी बंदूकधारी विशाल पुलिस-फ़ौज।

चालकाड़ गाँव घेरकर पुलिस किरचें ऊँची करके बढ़ी। हर घर के आगे पुलिस वाले हाथ में बंदूक लिये खड़े थे। बीरसा उस समय सो रहा था। पुलिस ने आसानी से उसे पकड़ लिया। बाहर आकर बीरसा ने मुंडा

लोगों से कहा : 'तुम फिकर मत करना। मैं लौट आऊँगा। बिलकुल चिंता मत करना।'

उसके बाद मुंडारी में सुगाना से मानों कुछ कहा। मीअर्स ने भौंहें उठायीं। रेवरेंड लास्टी बोले : 'बीरसा कह रहा है—कोई मुंडा रुकावट न डाले।'

'धानी, धानी ने, क्या कहा ?'

'ऐसा कुछ कहा : धानी के तीर अभी भी मजबूत हैं, अभी भी समय है। उसके कहे बिना कोई लड़ने न जाये।'

'भगवान को पकड़ा, भगवान कुछ न कर सका। उसे किस तरह समझाया ?'

'धूर्त शैतान ! बोला : यह बंदी बनाना, ले जाना—यह उसके ईश्वर होने की परीक्षा है !'

'अन्त में हँसकर क्या कहा ?'

'बकवास !'

'फिर भी सुनें तो।'

'काली घुंघची के पौधों को खोजने के लिए कहा।'

'घुंघची के पौधे ?'

'हाँ, हाँ, घुंघची का तेल वे लोग सिर पर मलते हैं।'

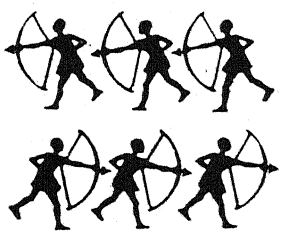

लेकिन चालकाड़ से राँची तक खूंटी, तामार, बनगाँव, कोचांग—धू-धूकर जलने लगे। मुरहू से लास्टी को, बनगाँव के जगमोहन को पुलिस के पहरे की शरण लेनी पड़ी।

प्रदेश की सरकार ने कहा : 'एक पगले बीस बरस के लड़के से राँची के अधिकारी बहुत डर रहे हैं। कुछ ज्यादती ही हो गयी है। मीअर्स यदि इतना कुछ न भी करता तो भी चल सकता था। डरने को ऐसा क्या है ?'

राँची से रिपोर्ट गयी—चालकाड़ और दूसरी दूर की बस्तियों में, ग़रीब मुंडा गाँवों के लोगों के मन में भयानक रूप से असंतोष भर गया है। मुंडा लोग कुछ बात ही नहीं करते; जमींदारों और महाजनों की भी बात नहीं मान रहे हैं। खेत-मजूर मिल नहीं रहे हैं, बेगारी कोई देता नहीं। बिना खाये मरोगे, यह कहने पर मुंडा यह जवाब देते हैं कि हम क्या दिकू हैं कि उपवास करने से, भोजन के न मिलने से डर जायें ?

प्रदेश की सरकार ने जानना चाहा : 'दुर्भिक्ष तो प्रायः प्रत्यक्ष दिखायी दे रहा है। मुंडा लोग खाते क्या हैं ?'

जवाब गया : 'घास के दानों का घाटो। जब मिल जाता है, खा लेते हैं ! जब नहीं मिलता, नहीं खाते।'

सहसा लेफ़्टिनेंट-गवर्नर को परेशानी हुई। कैसी मुसीबत है ! जमींदार-महाजन क्षुब्ध थे। मुंडा लोग खेती नहीं कर रहे हैं, उधार नहीं ले रहे हैं, भीख नहीं माँगते। घास के दाने खा रहे हैं। घास के दाने तो सरकारी लगान देने वाली खेती में नहीं आते ! जैसा सामान्य लगा था, घटना वैसी सामान्य है नहीं।

बड़े लाट उस वक़्त शिमला में थे। लेफ़्टिनेंट-गवर्नर ने शिमला खबर भेजी : सरकार यह ध्यान में रखे कि वह बारूद के ढेर पर बैठी है !

शिमला में उस बात के पता लगने पर उस शैल-आवास में हँसी का फ़व्वारा फूट पड़ा ! बारूद का ढेर क्यों, क्या मुंडे जीवन्त बारूद हैं ? वही देश है न—पत्थर-पहाड़, जंगल और ऊसर धरती का ? फ़सल होती है केवल मुंडा लोगों की जमीन में। जरूरत पूरी करने के लिए भी वह पूरी नहीं होती।

यह देश क्या सुजला-सुफला देश है ? वे कैसे आदिवासी हैं ! प्रायः नग्न, शरीर का रंग कोयले से भी काला, एक बेला घास का दाना पकाकर खाते हैं, शरीर में ताक़त नहीं, बेहद डरपोक ! उनसे ही प्रदेश सरकार डर रही है !

बड़े लाट ने बात को उड़ा दिया। लेफ़्टिनेंट-गवर्नर ने मीअर्स की रिपोर्ट को देखकर भेज दिया।

मीअर्स ने बताया कि अव्वल तो वह इस बारे में निश्चिन्त हैं कि बीरसा का आन्दोलन और सरदारों की मुलकी लड़ाई एक और अभिन्न हैं। दूसरे, पहली बार जो हेड-कांस्टेबल बीरसा को पकड़ने गया, उसने ठीक ही कहा था : मुंडा-जनसाधारण से बीरसा के विरुद्ध कोई काम नहीं कराया जा सकता। उनका विश्वास है कि बीरसा मूर्त भगवान है ! तीसरे, गिरजाघर

के मिशनरियों ने ही कहा है कि बीरसा को छोड़ देने के बाद राँची और खाईबासा जिलों में अशान्ति फैल जायेगी। बीरसा ने एक बार कहा था कि मुंडा लोग मौत की परवाह न करते हुए लड़ाई में उतर पड़ेंगे।

लेफ्टिनेंट-गवर्नर ने जानना चाहा था कि बीरसा के संबंध में मुंडा-लोगों के मन में अविश्वास और संदेह उपजाने का क्या तरीक़ा है ?

मीअर्स ने बताया : 'डॉक्टरों से बीरसा के पागल होने का ऐलान करवाने का प्रबन्ध कीजिये।'

राँची के कमिश्नर ने डॉक्टर रॉजर्स को बुलवा भेजा।

रॉजर्स बोले : 'आपने जो कहा, उस तरह का सर्टिफ़िकेट तो मैं नहीं लिख सकता।'

'क्यों ?'

'बीरसा पागल नहीं है।'

'क्या ?'

'पागल नहीं है बीरसा।'

'लेकिन वह कहता है कि वह भगवान है !'

रॉजर्स खिन्न हो उठे। सूखे गले से बोले : 'यह यूरोप नहीं है। पूर्व का देश है। यीशु भी पूर्व के ही वासी थे। वे भी अपने को अलौकिक शक्ति से युक्त मानते थे !'

'यीशु की बीरसा के साथ तुलना कर रहे हैं ?'

'नहीं। मैंने कहना चाहा है कि यीशु को किसी ने पागल नहीं समझा। किसी मनुष्य को अपने को अलौकिक शक्ति का अधिकारी मानने के मतलब यह नहीं हैं कि वह आदमी पागल है। उसके सिवा उससे बातें करके देखा गया है कि वह पूर्ण रूप से स्वाभाविक है; उसमें समझ है, बात की पकड़ है।'

तब वह मुंडाओं को सरकार के विरुद्ध क्यों भड़का रहा है ? उसे क्या मालूम नहीं कि उसके परिणामस्वरूप मुंडा लोग भारी मुसीबत में पड़ सकते हैं ?'

रॉजर्स धीरे से बोले : 'कमिश्नर, आप या मैं मुंडा नहीं हैं। बीरसा शायद इस तरह सोचता है कि मुंडाओं पर और ज़्यादा क्या मुसीबत आ सकती है ? उन्होंने जमीन-घरबार-गाय बैल—सब एक-एक कर खो दिये हैं। उनकी जमीन पर दूसरे लोग आकर बैठ गये हैं—हम लोगों के ही बनाये क़ानून के सहारे !'

'क़ानून मुंडा और दूसरे लोगों में भेद नहीं करता।'

'वह तो किताबी बात है। काम में वह नहीं आता, यह आप ही सबसे ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं। मुंडा लोग बंगला, हिन्दी, अंगरेज़ी नहीं जानते, नहीं समझते। न्यायाधीश किसी दिन मुंडारी सीखकर मुंडाओं की शिकायतें नहीं सुनते, न्याय नहीं करते। कोर्ट में मुक़दमा होने पर आसामी क्या कहता है, न्यायाधीश यह भी नहीं समझते। दुभाषिया मनमानी झूठी बातें कहकर उन्हें समझा देता है। नतीजा जो होता है वह आप जानते हैं। दूसरे के खेत से एक आने-भर की चीज़ उठा लेने के अपराध में मुंडाओं को एक बरस की जेल होती है, हमेशा होती है।'

'गॉड!'

'बीरसा को अगर लगता है कि मुंडा लोग आजकल इस अंगरेज़ी शासन में जितने कष्ट में हैं, ऐसी मुसीबत उन पर कभी नहीं आयी थी तो मैं उसे दोष नहीं दे सकता।'

'व्हॅट आर यू टॉकिंग? क्या कह रहे हैं आप?'

'अंगरेज़ के रूप में, क्राउन के एक विश्वस्त कर्मचारी के रूप में मैं उसके मनोभाव का समर्थन नहीं कर सकता—फिर भी उसे दोष नहीं दे सकता। बीरसा ने अपने साथी जंगलवासियों के मन में एक आत्म-विश्वास पैदा किया है। अब यही पहले दिखायी पड़ता है कि मुंडा, मुंडा होकर पैदा हुआ है, इसलिए आज उसे गर्व है। इतने दिनों तक मुंडा पैदा होने के लिए मुंडा अपने को दोष देता था, दुःखी होता था।'

'आप भी क्या बीरसा के तंत्र-मंत्र से प्रभावित हो गये हैं?'

'उससे, मेरी तरह दिन-पर-दिन बातें करने से आप भी शायद प्रभावित हो जाते!'

'और आप मैन ऑफ़ साइंस हैं?'

'इसीलिए तो मैं उसे पागल नहीं कह सकता।'

'तो सामान्य अपराधी की तरह उसका विचार करना होगा। बीरसा पर से मुंडाओं का विश्वास तोड़ना ही पड़ेगा।'

वह आपके सोचने की बात है। पर...।'

'क्या?'

'फ़ैसला करने में देर न करें। संभव हो तो मुंडारी जानने वाले, और मुंडाओं को जो जानवर न समझे, ऐसे किसी आदमी से न्याय-विचार करायें।'

रॉजर्स ने विदा ली। कमिश्नर ने उसी समय निश्चय किया : रॉजर्स की फ़ौरन बदली करनी होगी।

कमिश्नर ने पता लगाया कि जेल के कर्मचारियों में कौन अच्छी मुंडारी जानता है। सुना, मेडिकल ऐसिस्टेंट अमूल्य बाबू जानते हैं। मेडिकल स्कूल का लड़का—तरुण बंगाली डॉक्टर अमूल्य बाबू !

उसको लेकर बीरसा से मुलाक़ात करने के लिए कमिश्नर गये। बीरसा के कमरे में कुर्सी लेकर बैठे। बीरसा ने अमूल्य बाबू की ओर देखा। उसके होंठों पर हलकी-सी मुसकराहट फूट आयी।

कमिश्नर बोले : 'पूछो, वह मुंडा लोगों को क्यों उत्तेजित करता है ?'

अमूल्य बाबू के कुछ कहने के पहले ही बीरसा बोला : 'मैंने मुंडा लोगों को उत्तेजित नहीं किया।'

'यह क्या ? तुम्हें अंगरेज़ी आती है ?'

'मेरी फाइल में शायद यह बात नहीं लिखी है ?'

'लिखा है कि मामूली-सी जानते हो।'

'ठीक ही लिखा है।'

'तब डॉक्टर साहब से क्यों कहा था, न, न, उन्होंने खुद ही क्यों कहा कि जो मुंडारी जानता हो ऐसा न्यायाधीश चाहिए ?'

'क्यों न कहें ?'

'तुम तो अंगरेज़ी समझ लोगे।'

'शायद अकेले मुझ पर मुक़दमा होगा ?'

कमिश्नर चुप रहे। बीरसा को कितना मालूम है, कितना नहीं मालूम ? दूसरी बात उठायी।

'चालकाड़ में तुमने क्या किया ?'

'क्या किया ?'

'मुंडाओं को भड़काते थे ?'

'धर्म की बातें बताता था।'

'तुम धर्म की बातें बताने वाले कौन हो ?'

'मैं उनका भगवान हूँ न !'

'तुम खुद जानते हो कि यह बात सच नहीं।'

'तब सच क्या है ?'

'तुम भगवान नहीं हो। तुमने उनसे धर्म की बातें नहीं कीं। उन्हें विद्रोह के लिए उकसाते रहे।'

'मैं भगवान हूँ। मैंने उनसे धर्म की बातें कहीं।'

'तो यहाँ क़ैद क्यों हो ?'

'क़ैदी बनने से कोई भगवान नहीं रहता ?'

'न।'

'यीशु क़ैद नहीं हुए ? उनपर मुक़दमा नहीं चला ? उन्हें मृत्यु-दंड नहीं मिला ?'

'तुम पागल, धोखेबाज, मूर्ख हो !'

'यह तो मेरी बात का जवाब नहीं हुआ।'

'जवाब देने के लिए मैं बाध्य नहीं हूँ।'

'तो हम बातें क्यों कर रहे हैं ?'

'मैं सवाल करूँगा। तुम जवाब दो।'

'मैं जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हूँ।'

कमिश्नर कुछ देर तक आँखें सिकोड़े देखते रहे। बोले: 'तुम पर मुक़दमा चलेगा। सबके सामने। वहीं सब प्रमाणित हो जायेगा। मुंडा समझ जायेंगे कि तुम धोखेबाज हो।'

'ठीक !'

'तुम अपने पक्ष का समर्थन चाहते हो तो वकील भी मिलेगा।'

'वकील ?'

'हाँ, वकील। अंगरेजी न्याय अत्यन्त धर्म- और न्याय-संगत है। वादी और प्रतिवादी, दोनों को ही वकील मिलते हैं।'

'मुझे वकील नहीं चाहिए।'

'क्यों ?'

'वकील होने पर भी मुंडाओं को जेहल होती है। जिन्दगी-भर देखा है। वकील न मिलने से क्या होता है, देखता हूँ। परिणाम तो एक ही होगा, तो क्यों वकील को आने दूँ ?'

कमिश्नर निकल गये। अमूल्य बाबू ने सिर झुकाया। निकल गये।

कमिश्नर बोले, 'लुक आफ्टर हिम, बाबू। इस पर ग़ौर रखना।'

'येस, सर।'

'शोख, बदतमीज ! मैं उसे कठघरे में बन्द करवाऊँगा, दिखा दूंगा कि वह धोखेबाज है। देखो, बीमार न पड़ जाये !' फिर बोले: 'कैसा दुस्साहस है ! कैसी शोख़ी है !'

अमूल्य बाबू कुछ न बोले। बाद में, रात को फिर बीरसा की कोठरी में आये।

'क्यों आये ?'

'तुम्हें देखने।'

'क्यों ?'

'जिससे कि तुम बीमार न पड़ो, यह देखना मेरी खास ड्यूटी है। इसीलिए आया हूँ।'

अमूल्य बाबू बीरसा का हाथ पकड़ने चले। बीरसा धीरे से बोला: 'मुझे तुम मत छूना। तुम दिकू हो।'

'नहीं बीरसा, नहीं।'

'तुम दिकू हो।'

'बीरसा, मैं...।'

'किसलिए दिकू बने, बता सकते हो? खाने के लिए, पहनने के लिए? पालकी चढ़ोगे, टमटम चलाओगे, रायसाहब बनोगे! बड़े आदमी बनोगे, इसलिए?'

नहीं।'

'मुझसे तुम फिर बात न करना। मैं तुमसे फिर बात न करूँगा। तुम जिसे जानते थे मैं वह बीरसा नहीं हूँ। मैं जिसे जानता था वह अमूल्य नहीं रहा।'

'नहीं, बीरसा। तुम वैसे ही हो। तुम किसी दिन बहुत बड़े बनोगे, यह मैं तभी जानता था।'

'एक उपकार कर सकते हो?'

'तुम्हारा? बताओ बीरसा, कैसा उपकार?

'सरकार ने क्या-क्या इंतज़ाम किया है, मुझे बता सकते हो? मुझे मालूम है, सरकार इंतज़ाम करेगी; जानता हूँ, सरकार को मालूम है कि फूस में आग लग चुकी है। धुँआ देखकर सरकार डरेगी।'

'बता जाऊँगा। दो-चार दिन का वक़्त लूँगा।'

'वह ले लो। यह अब बहुत दिनों चलेगा।'

'सुना है, झटपट फ़ैसला होगा।'

'न।'

बीरसा धीरे से बोला, सिर हिलाया, कम्बल खींचकर चित हो लेट कर एक हाथ की कोहनी जमीन पर टेककर हथेली पर सिर रखा। उसकी प्रत्येक भंगिमा, सिर हिलाना, देखना, उँगलियाँ हिलाना—सब में अपार आत्मविश्वास, स्थिरता, व्यक्तित्व, और—और—और—और एक जान, उस जान में वह कितनी सामर्थ्य लिये था, वही जाने!

अमूल्य बाबू मुग्ध हो रहे थे, अभिभूत हो रहे थे। क्यों अभिभूत हो रहे थे? यह तो बीरसा है, बीरसा दाऊद! हतभागे ग़रीब सुगाना मुंडा का बेटा। पढ़ूँगा, इसलिए चाईबासा मिशन गया था। हथेली-हथेली-भर का कौर लेकर भात खाता था। इजार, पैंट कैसे पहने जाते हैं, यह नहीं

जानता था—अमूल्य बाबू उसे चिड़िया की तरह सिखाते थे।

मिशन छोड़ने के बाद से बीरसा कितना रास्ता पार कर आया है? किस तरह वह मुंडा लोगों को भरोसा दे रहा है? सूर्य पकड़ने के लिए वे लोग भी आसमान की ओर छलाँग लगा सकते हैं!

बीरसा फिर बोला: 'झटपट फ़ैसला नहीं होगा। कभी हुआ है? न किया है, न कर रहे हैं, न करेंगे।'

'तुम्हें पता है, मुक़दमे में देर करेंगे? बीरसा, बीरसा, तुम क्या सचमुच प्रॉफ़ेट हो?'

बीरसा ने आँखों पर हाथ रख लिये। बोला: 'मुंडाओं का, कोलों का, ओराँवों का, सरदारों का फ़ैसला जल्दी कब होता है? हवालात में रख देंगे। सबूत नहीं मिलता; मिसिल तैयार करने में देर होती है; कैदी हलाक-परेशान होता है; यह तो जानी हुई बातें हैं। जानता हूँ, इसीलिए कहा, मेरा मुक़दमा होने में भी देर होगी। कहा इसलिए, अगर प्रॉफ़ेट हूँ, तो प्रॉफ़ेट हूँ, लेकिन।'

'क्या?'

'मैं मुंडाओं का भविष्य जानता हूँ, याद रखो। मैं जानता हूँ, और कोई नहीं जानता।'

अमूल्य बाबू नहीं समझे कि बीरसा क्या कहना चाहता है। जिनका वर्तमान नहीं है, है केवल अतीत, उनका कोई भविष्य कैसे हो सकता है? अतीत-वर्तमान-भविष्य—क्या एक-दूसरे पर निर्भर नहीं करते?

बीरसा बोला: 'मुझे बता जाना।'

बीरसा को पहली बार जब पकड़ने जाकर पुलिस लौट आयी, तब से ही अशान्ति और विक्षोभ धुंधुआ-धुंधुआ कर जल रहे थे। काठ-कबाड़ में लगी आग रुक-रुक कर जल रही थी और अनुकूल हवा पाकर किसी भी वक़्त दावानल बन सकती थी।

उसी समय से मुंडाओं की ग्राम-पंचायत में ज़ोरों की आलोचना चल रही थी; हवा बहुत गरम थी...बहुत गरम! मीअर्स या लास्टी इस बात को पूरी तरह नहीं जानते थे।

जिन्होंने खारुआ और सरदारों की लड़ाइयाँ लड़ी थीं वे ही सारे प्रवीण मुंडा कह रहे थे: 'किसी दिन भी मुंडाओं को ठीक फ़ैसला नहीं मिला, ठीक फ़ैसला नहीं मिला। देखो, बीरसा भगवान ने जो बातें बतायीं थीं, उनमें

यह बात नहीं कही थी ?'

'क्या बात ?'

'राजा, ज़मींदार, दिकू, राजपूत, अहीर, ब्राह्मण, गोसाईं—सभी सरकार के साथ मिले रहते हैं !'

'हाँ, यह बात भगवान ने कही थी।'

'मुंडा लोगों के लिए जो बात होती है सब में सरकार मिशनरी, राजा और ज़मींदारों को मदद किया करती है।'

'हक बात है।'

'मुंडा लोगों का लगान बढ़ता है।'

'हक बात है।'

'अदालत भी उनके पक्ष की है। बहुत अर्ज़ियाँ देने पर साहब आता है मुंडा देश में। आने पर खाना-पीना-शिकार कर लौट जाता है।'

'लौट जाता है।'

'फ़ैसला करते हैं दिकू लोग, बाबू लोग !'

'बाबू लोग।'

'वे ज़मींदार के खलिहानों में धान भरते हैं, वही फ़ैसला करते हैं, विचार करते हैं।'

'वे ही विचार करते हैं।'

'दारोगा क्या पट्टी में नहीं आता ? आता है। आता है मुखिया के बहकावे में और पैसे कमाता है !

'सही बात है।'

'भगवान ने कहा है, इस तरह नहीं चल सकेगा !'

'नहीं चल सकेगा।'

'आँधी उठेगी, वह आँधी सरकार को उड़ा ले जायेगी, भगवान ने बताया है !'

'सही बात है।'

बीरसा को पता नहीं था कि उसको पहली बार पकड़ने जाकर जब पुलिस लौट आयी, तब से ही ये सब बातें पंचायतों में चल रही थीं। 'भगवान ने कहा'—कहकर ये सब बातें जो लोग कहते थे, वे बहुतेरी लड़ाइयों के जानकार प्रवीण—अनेकानेक लड़ाइयों में आहत योद्धा थे। बीरसा को बिलकुल नहीं मालूम था यह कहना ठीक न होगा। कुछ-कुछ उसके कानों में भी पड़ा था, लेकिन जंगल में आँधी उठने पर सारे पेड़ों के पत्ते एक साथ मिलकर हवा-बतास में पड़कर चक्कर खाते उड़ते रहते हैं। उस भँवर से

शाल और पियासाल में अन्तर करना मुश्किल हो जाता है। मुंडा लोगों के जीवन में जो आँधी उठी, उस आँधी में मुंडा-जीवन की प्रवंचना की लाखों-हज़ारों बातें उड़ी थीं।

कौन-सी बीरसा की बात थी, कौन-सी सरदारों की, यह भेद करना मुश्किल हो गया था। और वक़्त समझकर, पहर समझकर बात चलाकर आग भड़काने के काम में सरदार चतुर और जानकार थे। बीरसा तरुण था। और कहने को बीरसा की बातें भी बहुत थीं। उसे कभी बातें बनाने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

यह सब पहले हो गया। उसके बाद बीरसा गिरफ़्तार हुआ। अब अमूल्य बाबू ख़बर लाये, खूँटी और तामार के थानों पर अतिरिक्त कांस्टेबल तैनात हुए हैं। जगमोहनसिंह और कोचांग के पहरा देने के लिए, क्या होता है या नहीं होता है यह देखने के लिए, डिस्ट्रिक्ट रिज़र्व फ़ोर्स के चालीस सिपाही बनगाँव भेजे गये हैं।

रेवरेंड लास्टी के पहरे के लिए एक फ़ौजी डिटैचमेंट मुरहू भेजा गया है। राँची के डिप्टी-कमिश्नर ने फ़ौज की एक कंपनी माँगी थी। उन्हें डर था कि बिक्षुब्ध मुंडा सिंहभूम से कहीं और आगे भी आग फैलाएँगे!

राँची के कमिश्नर ने यह प्रस्ताव रद्द कर दिया था। कहा था: चालकाड़ और दूसरे गाँवों में पाँच महीने तक स्पेशल फ़ोर्स रखने पर अशान्ति बढ़ेगी। गाँव बहुत बिखरे-बिखरे हैं। गाँव के रहने वाले बहुत ही ग़रीब हैं। स्पेशल फ़ोर्स को पालना उनके बस का नहीं है। फिर, किसी-न-किसी तरह का भी दबाव उन पर पड़ने से सर्वनाश हो सकता है।

फिर, मुंडा लोगों का उद्देश्य और लक्ष्य विद्रोह है—इसमें कमिश्नर को संदेह नहीं था। वे मुंडा लोगों की समस्याओं और उत्तेजना की रोकथाम करना चाहते हैं। कुछ मुंडा एक जगह जमा होंगे तो कोई बात होगी ही! बीरसा के अनुयायी सभाएँ बुलाना चाहेंगे। तराई पट्टी के मुखिया, सरजुम्डि के ठाकुर, और चारों ओर के ज़मीदारों से कह दिया गया था कि कोई कोल या मुंडा सभा में न जाये, यह देखना उनका काम है। खरसवान के ठाकुर और सिंहभूम के डिप्टी-कमिश्नर को भी इसी प्रकार के निर्देश दे दिये गये थे।

अमूल्य बाबू ने और बताया: 'बीरसा, जितनी बातें तुम्हें बतायी हैं, उससे मेरी नौकरी चली जा सकती है, लेकिन तुम्हें बताना मेरा कर्तव्य है।'

'क्यों?'

पता नहीं। ऐसा ही लगता है।'

'और कुछ मालूम हुआ ?'

'छोटे लाट के पास सब खबरें चली गयी हैं।'

'वह भी जानते हो ?'

'हाँ, तुमको तो मालूम है, छोटे लाट ही सब-कुछ नहीं हैं।'

'क्या उनके ऊपर और भी हैं ?'

'हाँ, बड़े लाट।'

'बड़े लाट सबके ऊपर हैं ?'

'भारत में सबसे ऊपर।'

'वह क्या कहते हैं ?'

'बड़े लाट, सेकन्ड लाट एल्गिन के निकट छोटे लाट लेफ्टिनेंट-गवर्नर की घबराहट को बहुत अयथार्थ, बहुत बेमतलब की, बहुत बढ़ी-चढ़ाई मानते हैं।'

शिमला और दिल्ली बहुत दूर हैं—खूंटी, तामार, राँची से बहुत दूर ! शिमला भारत की गरमियों के दिनों की राजधानी है। वहाँ लाट-प्रासाद के विशाल इन्द्रपुरी के समान महल में जितनी रोशनी होती है, मेज़ पर जितने खाने और तरह-तरह की शराब लगी रहती है, बाग़ों में फूलों के लिए जितना आयोजन होता है, उसके ख़र्च से सारे मुंडाओं को उनके गाँव लौटाये जा सकते हैं ! वहाँ बैठने से जंगल अवास्तविक लगते हैं—काले, लगभग नंगे आदमी—उनकी भूख—उनका घाटो का खाना—उनका नमक का सपना—उनकी बिना चिराग़ की पत्तों की झोंपड़ी ! न, सेकन्ड लाट एल्गिन की समझ में यह नहीं आ रहा था कि एक बीस बरस के अधपगले मुंडा युवक को लेकर छोटे लाट क्यों इतने चिन्तित हैं ? नाम भी तो कैसा भोंडा है ! बीरसा मुंडा ! इस तरह के आदमी कहाँ रहते हैं ? क्यों ये सारे बर्बर, असभ्य नाम सरकारी रिपोर्टों में स्थान पा जाते हैं ? ऐसा क्यों होता है ?

बीरसा ने अमूल्य बाबू से सब सुना। उसकी आँखों की दृष्टि गंभीर हो उठी—स्वप्न गंभीर।

बीरसा बोला : 'और नहीं। और बातें मुझसे मत कहो।'

'क्यों बीरसा, क्यों ?'

'तुम्हारी राह, तुम्हारा जीवन—मेरी राह, मेरे जीवन से अलग है।'

'पता है।'

'झटपट सोचूंगा, इस कमिश्नर के घमंड की बात पर।'

'पता नहीं।'

बीरसा कुछ सोचते-सोचते बोला : 'जो सीखा है, सब भूल जाना होगा। मुझे मुंडाओं से ज्यादा मुंडा बनना पड़ेगा। तुम्हारी राह अलग है।'

अमूल्य बाबू निकल गये।

कमिश्नर ने जो चाहा था, वह नहीं हुआ। अगस्त में बीरसा को पकड़कर लाना हुआ था। केस शुरू होने में अक्तूबर समाप्त हो गया। अन्त में एक दिन मुंडाओं को बता देना पड़ा कि उनके सामने ही बीरसा पर मुक़दमा चलेगा। प्रमाणित हो जायेगा कि बीरसा कितना बड़ा धोखेबाज है! सिद्ध हो जायेगा कि बीरसा भगवान तो नहीं ही है—और तो और—असाधारण आदमी भी नहीं है। बीरसा एक अशिक्षित सामान्य मुंडा है।

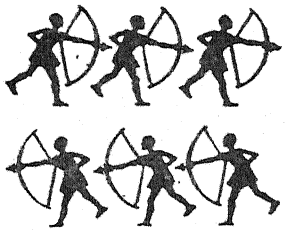

तामार के हेड-कांस्टेबल और कोचांग के बुड्ढे मुंडा ने बीरसा और बीर-साइतों के नाम पर फ़ौजदारी नालिश दाखिल की। बनगाँव में बैठकर मीअर्स ने उसकी जाँच की। उनकी जाँच के आधार पर ही आरोप की नींव रखी गयी।

मीअर्स ने डिप्टी-कमिश्नर को बताया कि बीरसा का आंदोलन और सरदारों का आंदोलन एक और अभिन्न हैं। मुंडा सरदार और आंदोलन-कर्ता बीरसा के आंदोलन में साथ-साथ जुट गये हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

हेड-कांस्टेबल को लेकर जो घटना घटी, उससे कोचांग और दूसरी जगहों के मुंडाओं का बहुत समर्थन बीरसा को मिल रहा था। सारे मुंडा बीरसा के पक्ष में आ जमा हुए थे। कोचांग का बुड्ढा मुंडा नहीं गया। परिणामस्वरूप उसे मार डालने की धमकी दी गयी थी।

लिखते-लिखते मीअर्स ने सोचा : बुड्ढे मुंडे ने कहा था : 'धानी मेरी

ओर एकटक नज़र से देखता है; मेरे ऊपर नज़र रखता है। उससे सब डरते हैं, साहब। उसका कुचला-बाण बड़ा ख़तरनाक होता है।'

मीअर्स ने लिखा : 'देवकी पाँडे और साव मुंडारी कहते हैं कि बीरसा ने मुंडाओं को भड़काया नहीं। सिर्फ़ यही कहा था कि बोंडा-बोंडी को मत पूजो; अच्छी तरह से रहो। मुझे लगता है कि कैथॉलिक और प्रोटेस्टेंट—दोनों तरह के मिशन के लोग जो कहते हैं वही ठीक है। बीरसा के यहाँ लौट आने से मुसीबत हो जायेगी। यहाँ हालत क़ाबू में ज़रूर आ गयी है, लेकिन मामूली-सी एक भी चिंगारी पाते ही दल-के-दल मुंडा जाकर बीरसा का साथ देने लगेंगे।'

डिप्टी-कमिश्नर ने रिपोर्ट को सच मान लिया। जिन सब जुर्मों के आधार पर बीरसा की गिरफ़्तारी का परवाना निकला था, उनमें एक को ही में मुक़दमे की बुनियाद के लिए चुना गया। एक बार सोचा, बीरसा और बीरसाइत लोगों ने जो दहशत फैलायी—ऐसा अभियोग भी जन-साधारण की ओर से लगाया जाये—इस आधार पर भी न्याय हो। उसके बाद सोचा गया, न—तब मुक़दमा खड़ा नहीं रह सकेगा।

तब मुक़दमे का स्थान राँची से हटाकर खूँटी ले जाना पड़ा। बीरसा का मुक़दमा मुंडा लोगों के सामने खूँटी में होगा। मुंडा लोग बीरसा के धोखे में भूले हुए हैं। बीरसा उनका त्राता-पालक-ईश्वर है—इसी मोह में मुंडा भरमा गये हैं। अब अत्यन्त सामान्य लोगों की तरह उस पर मुक़दमा चलाकर जनसाधारण को दिखा दिया जायेगा कि बीरसा बगण्य, साधारण, लोभी, प्रवंचक मात्र है!

24 को मुक़दमा होगा। 23 की रात को कर्नल गॉर्डन ने देखा : दूर-दूर, पहाड़ के किनारे-किनारे सटे हुए, नदी का किनारा पकड़कर, जंगल की राह क़तार-की-क़तार रोशनी का जुलूस आ रहा है। देखकर दारोगा से पूछा : 'वह क्या है?'

'हुज़ूर, मुंडा आ रहे हैं।'

'मुंडा!'

'हाँ हुज़ूर! कमिश्नर साहब ने तो यही कहा था। मुंडा आयें—बीरसा का मुक़दमा देखें।'

'लेकिन इतने मुंडा!'

'अभी सबको ख़बर नहीं मिली है, हुज़ूर। ख़बर पाकर इधर-उधर एक सौ मील से चले आयेंगे।'

'इन्हें ख़बर कैसे मिली?'

'हमने यह बात, हुकुम के मुताबिक़ कुछ गाँवों के मुखियाओं को भेज दी थी। इनके यहाँ तो टेलीग्राफ़ लगा नहीं है, हुज़ूर। पहाड़ पर चढ़कर आग जला देते हैं; देखकर सबको मालूम हो जाता है।'

'आना होगा, यह कैसे बताते हैं?'

'उन्हें सब मालूम है। लिखना-पढ़ना नहीं जानते, जंगली हैं न! सो कभी तीन ढेरों में आग लगा देते हैं, कभी दो में, कभी चार में। देखते ही वे लोग समझ लेते हैं कि राँची जायेंगे, या तामार, या रोगोता।'

'इतने मुंडा आ रहे हैं!'

'अभी क्या देख रहे हैं, हुज़ूर। कल देखेंगे कि कितने आते हैं। बीरसा को देख सकेंगे—यह जानकर सब आयेंगे। जो आ रहे हैं वे दोनों ओर के पेड़ों की डालें तोड़ते-तोड़ते आ रहे हैं। पल-भर में दूसरे भी राह का पता जान लेंगे।'

'हथियार लेकर आ रहे हैं क्या?'

'हथियार तो उनके सदा के साथी हैं, हुज़ूर! जंगल जाते हैं, जंगल के बीच रहते हैं तो साथ में बलोया रहता है। उनकी औरतें भी बलोया चलाती हैं, हुज़ूर। धानी मुंडा की बहन अब चाईबासा में भीख माँगती है। उस दफ़ा उसके नाती को साँप ने काट लिया था—ऐसी ही शाम को। ओझा का घर दो जंगल के पार था। सो लड़के को पीठ पर बाँधकर, बुढ़िया बलोया हाथ में लेकर चली गयी। हम वैसा नहीं कर सकते, हुज़ूर! बाघ-भालू का डर है—जिन्न कहिये—परी कहिये—जंगल में क्या नहीं है?'

कर्नल गॉर्डन ने इसे पागलपन समझा: 'बड़ी मुसीबत हुई!'

'नहीं, हुज़ूर! बीरसा को देखने आ रहे हैं, और तो कुछ नहीं।'

'उसे यहाँ न लाना ही ठीक रहता।'

'हमने वह बात कही थी, हुज़ूर। यों ही यह जात खून बहाकर मेहनत करना जानती है, बात नहीं करती। हम उनके आगे भात खायेंगे; वे घाटो खायेंगे। एक नन्हा लड़का भी मुट्ठी-भर भात की भीख न माँगेगा। लेकिन गुस्सा हो जाने पर...।'

'गुस्सा होने पर क्या कुछ करते हैं?'

'तब मालिक को काट फेंकने से भी वे रुकेंगे नहीं। हम गोली चलायेंगे, दो-तीन लाशें गिरा देंगे—फिर भी वे बढ़ते ही रहेंगे। मुंह से कुछ नहीं कहेंगे; बस बढ़ते ही जायेंगे। वह देखकर मुझे डर लगता है, हुज़ूर!'

'हथियार लेकर आ रहे हैं, अगर बिगड़ जायें तो?'

'नहीं, हुज़ूर! उनकी जमीन लेकर मैंने खेतीबारी की है। यहाँ ज़िन्दगी कट गयी है; मैं उनके स्वभाव को जानता हूँ। मुंडा का मुंह

पत्थर-सा होता है। फाँसी चढ़ने पर भी मुंडा रोता नहीं। वह चेहरा देख-कर आप समझेंगे नहीं। हम बिलकुल समझ जायेंगे कि मुंडा क्या सोच रहा है। मुझे मालूम है कि वे लोग इस वक़्त अपने भगवान को देखने आ रहे हैं। जब से भगवान गिरफ़्तार हुए हैं—मुंडा जात पातक की दशा में है। पातक अवस्था में वे किसी को नहीं मारेंगे। मुझे पता है।'

'तुम उनको खूब समझते हो ?'

'हाँ हुजूर, थाने में जिन्दगी बीत गयी। बाप यहाँ बाँह थमाकर गये थे; उसके बाद मैं काम में लगा। मुझे उनका पता न होगा ? पहले वे लोग हमारे छठ पर, दशेरा पर, होली पर खूब आते थे। यह जगमोहनसिंह, सूरजसिंह—इनकी तरह के लोगों ने उनकी नींव खोदकर, बेगार लेकर, सूद के रुपयों के लिए बात-बात में उनके धान के खेतों में हाथी चलवाकर उन्हें बिगाड़ दिया !'

'पाजी हैं, इसीलिए बिगड़ गये।'

'नहीं, हुजूर ! वैसे नहीं थे। होते तो, देखिये न यहाँ कितने ही थे, और इस अंचल में भले आदमी कितने कम हैं ! मुंडा पाजी होते तो दंगा-फ़साद करने पर एक भी भला आदमी यहाँ टिक पाता ?'

'फिर भी होशियार रहो।'

'हाँ, हुजूर।'

सवेरे देखा गया कि खूँटी के थाना-हवालात-अदालत को घेरकर सैकड़ो मुंडा बैठे हैं। औरतें, बूढ़े, लड़के, बच्चे, अंधे-लूले—कोई बाक़ी नहीं है।

तीस मुंडा मर्द आगे आये। सफ़ेद धोती पहने थे। हाथ में कोई हथि-यार नहीं था। सिर ऊँचा किये हुए, अभिव्यक्ति-हीन भाव !

'अर्जी है।'

कर्नल गॉर्डन, डिप्टी-कमिश्नर, आगे आकर सामने खड़े हो गये। रूखे स्वर में बोले : 'कैसी अर्जी ?'

'हम धरती के आबा से मिलना चाहते हैं।'

'कौन धरती का आबा ?'

'जिसको तुमने पकड़ रखा है।'

'क्यों मिलना चाहते हो ?'

'पूजा करेंगे, फूल चढ़ायेंगे—हम बहुत-बहुत समय से अपवित्र हो रहे हैं। उसे देखेंगे।'

गॉर्डन ने देखा कि औरतों के हाथों में पत्ते के दोनों में फूल थे। तभी उन्हें लगा कि सामने एक बड़ी भारी दीवार खड़ी हो रही है। वे किसी तरह भी उस दीवार को फाँदकर उनके नजदीक नहीं पहुँच पा रहे हैं। दीवार ढहा देने की जरूरत है। मन-ही-मन कमिश्नर को गालियाँ दीं। बीरसा पर उनकी अंध-भक्ति, अचल विश्वास को तोड़ना पड़ेगा। लेकिन किस तरह ?

उन्होंने हाथ उठाये। 'सुनो ! अभी मुक़दमा चल रहा है। कचहरी बन्द होने पर जब उसे हवालात ले जायेंगे, तब उसे देख लेना।'

'हम भगवान को देखेंगे।'

'भगवान नहीं, तुम्हारी तरह का ही मामूली आदमी है बीरसा। भगवान क्यों कहते हो ? कहो, बीरसा को देखेंगे।'

तीस मुंडाओं ने पीछे घूमकर देखा। एक सौ मुंडा भीड़ से निकलकर आगे आये। बोले : 'साहब ने क्या कहा ?'

'बीरसा भगवान नहीं है।'

'बीरसा भगवान नहीं है ?'

'नहीं।'

भरमी मुंडा को हमेशा सब लोग विपद्-आपद में बुला लेते। भरमी की आवाज बाजे की तरह थी। भरमी जोरों से बोला : 'फिर तो कहना।'

'बीरसा भगवान नहीं है।'

'कौन कहता है, वह भगवान नहीं है ?'

'फिर उसका मुक़दमा क्यों हो रहा है ?'

'वह हम लोगों का गुरु भगवान है, सरदार ! तुम्हें क्या पता साहब, वह क़ैद है—इसीलिए हम पातक में हैं। कोई तेल नहीं छूता, शिकार नहीं करता। औरत-आदमी हाथ नहीं पकड़ते। वह हम लोगों का भगवान है। हम लोगों के साथ जियेगा-मरेगा। कैसे कहते हो कि भगवान नहीं है ? अरे धानी, तू बात क्यों नहीं करता ? तू बता। तू सबसे अधिक बुड्ढा है। तू बता।'

'मैं और क्या कहूँ रे भरमी, साहब की बात कुछ समझ में नहीं आ रही है रे। मैं बेवकूफ़ मुंडा हूँ, साहब ! मैं पूछता हूँ, अगर मुक़दमा करोगे तो तुम, सरकार, मुक़दमा क्यों चलाते नहीं ? उसे तीन महीने से हवालात में क्यों रख छोड़ा है ?'

साहब ने आँखें मिचमिचाकर उनकी ओर देखा। उसके बाद दारोगा

को बुलाया। बोले : 'उन्हें समझा दो।'

'कौन समझायेगा ? वह भरत दारोगा ! वह हमें क्या समझायेगा ?'

जनता में मुक्त, उद्धत, व्यंग्य की हँसी सुनायी पड़ी। दारोगा ने गला साफ़ करते हुए कहा : 'तुम लोग घर चले जाओ। नहीं तो आराम से बैठो।'

'तुम बैठो।'

'नहीं तो घर आओ। कचहरी तीन बजे उठेगी—तब मुलाक़ात होगी।'

'क्यों ?'

'मुक़दमा जो हो रहा है।'

'मुक़दमा अभी-अभी ख़तम करो। हम भगवान को देखेंगे। नहीं तो मसीदास को जानते हो। वह बड़ा ग़ुस्सेवर लड़का है।'

'मसीदास, तू उन्हें समझा।'

मसीदास बोला : 'मैं खुद ही नहीं समझा, मैं क्या समझाऊँ ! देखो दारोगा, अगर भगवान को नहीं दिखाओगे, तो मैं बरदाश्त न कर पाऊँगा। मुझे तुम जानते हो !'

'ए ! ए ! नजदीक क्यों आ रहा है ? मारेगा ?'

'मारूँगा क्यों ? मेरे हाथ में क्या है ?'

'नजदीक क्यों आ रहा है, नशे में है ?'

'नशे में तेरा बाप होगा ! मैं मुंडा हूँ, बीरसाइत बनकर शराब पीकर भगवान को देखने आऊँगा ?'

'धानी, तू मसीदास को वापस बुला ले।'

'क्यों बुलाऊँ ? अभी मुक़दमा करो। मुक़दमा कर हमारे भगवान को वापस करो। नहीं तो मेरा गला काट डालो। लो। काटो। मुंडा को मारने के लिए तो तुम्हारा हाथ खूब उठता है न !'

'हुजूर, ये लोग बिगड़ गये हैं।'

मसीदास चिल्लाकर बोला : 'अरे, उस ओर चोर की तरह क्यों देख रहा है ? जगमोहनसिंह को क्यों लाये हो ? गवाही दिलाओगे ? सरकारी गवाह बनाया है ?'

धानी जमीन पर थूककर बोला : 'बाबू जगमोहनसिंह ! बाबुओं को 'बाबू' न कहने से बाबू लोगों को कितना ग़ुस्सा आता है ! उस वक़्त बाबू हाथी पर चढ़े रहते हैं और इतना लम्बा हाथी की सूंड़-सा चाबुक लेकर मुंडाओं को कितना पीटते हैं ! 'बाबू' बोल, मसीदास !'

मसीदास सचमुच ग़ुस्सैल लड़का था। बोला : 'दिकू लोगों को मैं

'बाबू' नहीं कहता।'

पात्रा मुंडा, भरमी मुंडा चिल्लाकर बोले : 'मुक़दमा नहीं होगा। मुक़दमा बंद करो।'

बहुत गड़बड़ शुरू हो गयी। सारे मुंडा चिल्लाने लगे थे—बोल रहे थे। भरमी बोला : 'मेरे साथ-साथ तुम सब लोग चिल्लाओ। भगवान को पता चल जाये कि हम आ गये हैं।'

भरमी आसमान फाड़कर चीख़ उठा : 'भगवा—न!'

मुंडा चिल्लाये : 'भगवा—न!'

'हम लोग आ गये, धरती के आबा!'

'हम सब आ गये!'

'तुम्हारे हवालाती बनने के बाद से हम लोग शुद्ध, पवित्र नहीं रहे।'

'हम पर पातक है।'

'तुम्हारे आने पर ही हम स्नान करेंगे।'

'तुम्हारे आने पर ही!'

गॉर्डन घोड़ा दौड़ाकर कचहरी चले गये। मुक़दमा बंद हो गया। पुलिस का एक दल कोड़े लिये, हथकड़ियाँ लिये, आगे बढ़ आया। पुलिस का एक आदमी घोड़े पर बैठकर राँची की तरफ़ चला गया।

पुलिस के पास हथकड़ियाँ थीं। इधर-उधर देखकर पात्रा झपट पड़ा : 'मेरे हाथों में हथकड़ी पहना दो। मैं भगवान के साथ जेहल में रहूँगा।'

'मेरे हाथों में हथकड़ी लगाओ।'

पुलिस हथकड़ियाँ लगाने लगी। अपने को पकड़वाने के लिए काले-काले शरीरों में धक्कम-धक्का होने लगा। बीच-बीच में कोड़ों की आवाज़ भी सुनायी पड़ने लगी।

राँची से फ़ौज आ गयी। बीरसा को लेकर राँची ले जाया गया।

राँची में मुंडारी जानने वाले डिप्टी बाबू कालीकृष्ण मुकर्जी के इजलास में मुक़दमा हुआ। जो लोग गिरफ़्तार हुए थे, सबका मुक़दमा हुआ। कालीकृष्ण मुखर्जी ने सबको बेक़सूर छोड़ दिया। फ़ैसले में लिखा : 'मुंडा लोगों का गड़बड़ करने का कोई इरादा नहीं था। उनकी बातचीत डिप्टी-

कमिश्नर समझे नहीं। सब अभियोग निराधार हैं।'

कमिश्नर ने डिप्टी-कमिश्नर की बदली कर दी, लेकिन डिप्टी-कमिश्नर ने जो इल्ज़ाम लगाये थे, उन्हें रद्द नहीं किया। कालीकृष्ण मुकर्जी के फ़ैसले को अपने अधिकार से ख़ारिज कर दिया। मुंडाओं को फिर गिरफ़्तार कर लिया गया।

अब नये डिप्टी-कमिश्नर के इजलास में मुक़दमा चला। फ़ैसले में न्यायकर्ता ने कहा: 'सरदार-आन्दोलन और बीरसा के आन्दोलन में मेल-जोल है। मुंडा जन-साधारण विक्षुब्ध है; उस विक्षोभ को बीरसा ने भड़काया है। विक्षोभ-कारियों को मृत्यु-दंड ही देना आवश्यक था। ऐसा करने पर वे पाखंडी, अपने को ईश्वर बताने वाले, हृदयहीन, भोले लोगों को भड़काने वाले बीरसा का अनुसरण न करते। बहुत दुःख की बात है कि वह दंड नहीं दिया जा रहा है। बीरसा भड़काने वाला है, आन्दोलन का प्रवर्तक है। उसने मुंडाओं के मन में अंगरेज़ सरकार के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। परिणामस्वरूप आज हाट-बाज़ार में मुंडा लोग कहते फिरते हैं कि सरकार ख़तम हो गयी! अब मुंडा लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने के लिए सबसे अधिक जो सज़ा क़ानून के मुताबिक़ दी जा सकती है, वही दी जाये।'

साल 1895 की 19वीं नवंबर को बीरसा को दो वर्ष का बामुशक्कत कारादंड दिया गया। दूसरे मुंडाओं को बीस-बीस रुपये जुरमाना। न देने पर तीन महीने के कड़े कारावास का हुक्म हुआ।

बीरसा से अपने पक्ष का समर्थन करने को कहा गया। बीरसा ने सिर हिलाया।

फ़ैसला सुनकर भरमी बोला: 'यह क्या हुआ, भगवान?'

बीरसा बोला: 'दो बरस का समय क्या अनन्तकाल होता है, भरमी?'

'सरकार बहुत जुलुम करेगी।'

'करने दो। कब नहीं करती थी?'

फिर मुंडा लोग दल-के-दल किरस्तान बनने गये। धानी बोला: 'क्यों न बनें? दो बरस तो जिन्दा रहें। उसके बाद देखा जायेगा।'

फिर भी बहुतेरे नहीं गये। हफ़मैन ने सिर हिलाया। चर्च का दरवाज़ा हमेशा खुला रहता है। साहब लोग शरण में आये को लौटाते नहीं।

बप्तिस्मा का पवित्र जल छिड़कते-छिड़कते पलुस प्रचारक बोला:

'बापू, सब क्यों आ रहे हो ? फिर तो जाकर भगवान के चेले बनोगे !'

जानकी मुंडानी डाँटकर बोली : 'उससे तुझे क्या है रे, पलुस ? तू नौकर है, जल छिड़कने को कहा है, छिड़क। इतनी बात किसलिए ?'

'जल कहाँ छिड़कूँ ? सर उघाड़े तो गिरजे में आये हो, बदन से धूल लिपटी पड़ी है।'

'किसी मुंडा के घर में तेल नहीं है।'

'जंगल में कुसुम बीज नहीं है क्या ?'

'हैं। मैं तेल बनाना भूल गयी हूँ।'

पलुस ने सिर हिलाया। बोला : 'तुम लोग बहुत चालाक हो। बीरसा हवालात में है, इसीलिए गमी में हो।'

'धत् तेरे की ! तू छिड़क रहा था, पानी छिड़क न !'

'साली नहीं आयी ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'तुझे क्यों बताऊँ, क्यों नहीं आयी ? जा, जाकर पता लगा।'

'ले, जल ले।'

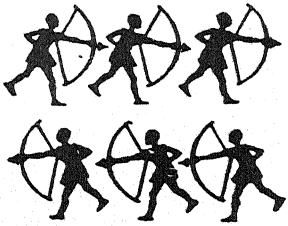

साली के बारे में पलुस प्रचारक ने जानना चाहा था। साली क्रिस्तान होने नहीं गयी। अब जाड़ा था। जंगल में पत्ते झड़ रहे हैं तो झड़ ही रहे हैं। दिन-भर झरझर-सरसर की आवाज़ सुनायी पड़ती है। जंगल में जंगली बेर पक गये हैं। बेर, पके आँवले, करंजा खाने के लिए भालू आते हैं, हिरन आते हैं। जान हथेली पर लेकर साली बेर बटोरती थी। टोकरी-भर बेर जमा करले तो उन्हें खाकर दो दिन चल जाते हैं।

भरत दारोगा थोड़ी दूर पर बैठे थे। साली पर नज़र रखे वह आज कई दिनों से साथ-साथ फिर रहा है। साली पर नज़र रखने से धानी का

पता मिल सकता है। राँची से भागकर धानी साली के घर में ही ठहरा था। जेल काट रहा था। क़ैदियों से पत्थर काटकर सड़क बनाने का काम कराने जेल का दारोगा उसे ले गया था। धानी वहाँ से फ़रार हो गया।

भरत बोला : 'धानी को पकड़ा देने पर तुझे बीस-पच्चीस रुपये मिलते रे। ग़लती कर बैठी।'

साली तनकर खड़ी हो गयी। पेट में बच्चे का भार, शरीर थका हुआ, अवसन्न! थकी आवाज़ में बोली : 'कितानी बार बताया कौन, क्या, मुझे कुछ नहीं पता! मुझे क्या पता कि वह बीरसाइत हो गया। बूढ़ा आदमी! पानी माँगा, पानी दे दिया। ढेर-सा। बकरियों से घिरे मचान पर लेटा रहा। बिहान में भाग गया। सो बाद में सुना कि बूढ़ा बीरसाइत था। पता होता तो घर में घुसने देती? पच्चीस रुपये तो क्या, इस वक़्त तो पच्चीस खोटे पैसे मिल जाते तो भी बहुत थे। धानी मिले तो मैं उसके पैर तोड़ दूँगी। तुम्हें तो बाद में खबर दूँगी।'

'बीरसाइतों पर गुस्सा क्यों है रे, तेरा मरद डोन्का भी तो बीरसाइत बन गया।'

'होगा नहीं? धान बेचकर तमाम बीरसाइतों को खिला दिया। साफ़ कपड़ा चाहिए—बदन में लगाने को हल्दी चाहिए, बड़े बहाने हैं! और देखो तो, एक मेरी गोद में है और एक पेट में। तू बूढ़ा होकर जेहल चला गया। अब मेरी हालत क्या है? तुम लोगों ने भी कहाँ माना? मेरा धान का कोठा तोड़कर बराबर कर दिया। बताओ तो मेरा क्या क़सूर है?'

'उसे ठीक से क्यों नहीं रख सकी?'

'रखने से वह सुनता था! मुंडा आदमी कैसे ज़िद्दी होते हैं, पता नहीं है? कहा कि भगवान तुझे सब देंगे। यही सब दिया भगवान ने! टोकरी दे दी है, झरबेरी इकट्ठा करती हूँ। बलोया दिया है, भालू खदेड़ती हूँ।'

'तेरा शरीर क्या-से-क्या हो गया! तुझ-सा रूप किसका था, बता तो।'

'तक़दीर फूट गयी तो शरीर रहता?'

'वही तो कह रहा हूँ।'

'भाग फूटे न होते तो बाप डोन्का को मुखिया देखकर ब्याह करता? वह था बूढ़ा, मैं उसकी नातिन की तरह थी, है न?'

'तुझसे क्या बीरसा ने ब्याह करने को कहा था?'

'नहीं जी, नहीं! वह शंकरा गाँव की परमी है न। धुराई मुंडा की बहन। धुराई बड़ा बीरसाइत हो गया था। बीरसा ने कहा था—बहन का ब्याह कर दे। ब्याह यों ही नाम का रहेगा। वे पति-पत्नी नहीं होंगे। दोनों

भगवान का काम करेंगे।'

'अरे! परमी तो कनू के साथ घूमती-फिरती है!'

'किस कनू की बात कह रहे हो?'

'बीरसा का भाई कनू है न? यह वही कनू पहान है। कनू और परमी हमेशा साथ-साथ घूमते हैं।'

'कनू ने परमी को कब से मन में बैठाया था! जब ज़रा-सी थी, तभी कहती थी मैं कनू से शादी करूँगी।'

'बीरसा ने सब जान-बूझकर उस लड़की को चाहा था?'

'तुम नहीं समझोगे! बीरसा ने कहा: धुराई, तेरी बेटी से ब्याह कर सकता हूँ अगर तेरी बहन मुझे पति न समझे। मेरा काम करे।'

'ओह, कहाँ हमारे सेठ-महाजन! भिखारी मुंडा। उसकी ज़बान पर बड़ी-बड़ी बातें रहती हैं।'

'मैं भी तो यही कहती हूँ, दारोगा! तू भिखारी, तू मुंडा, तेरी ज़बान पर बड़ी-बड़ी बातें क्यों रहती हैं?'

'लड़की ने क्या कहा?'

'कह दिया, जा, जा, मैं कनू को बिना सबब नहीं चाहती। कनू मेरे मन का आदमी है।'

'यह कहा?'

भरत दारोगा ने बार-बार सिर हिलाया। बोला: 'तुम लोग अच्छी बात तो सुनोगे नहीं। देखो, मुंडा लोगों की मौत किसलिए लिखी रहती है?'

'किसलिए? मैं कह रही हूँ परमी-कनू-बीरसा की शादी की बात। इसमें मरने की बात कहाँ से आयी?'

'बाबा, पेड़ में फल की बात होती है। फल में पेड़ की बात होती है, मुझे कहने देगी न!'

'कहो, दारोगा तुम! ब्बाप रे! कितनी सामर्थ्य है तुम्हारी! तुम्हारे मुँह से बातें सुनने में भी फ़ायदा है।'

'सुन—मुंडाओं की मौत कैसे है! आदमी हट्टे-कट्टे, नरम बात न तो समझते हैं, न कहते हैं। आज कहते हैं—लगान नहीं देंगे; कल कहते हैं—बेगार नहीं करेंगे; परसों कहते हैं—महाजन को नहीं मानते। ऐसा शोर-गुल हाथी को शोभा देता है, कहीं चींटी को भी सजता है?'

साली ने सिर हिलाया। यह उसके मन की-सी बात थी। बोली: 'मुंडा मरद ऐसे ही हैं। बात है न कि जैसे बेर का काँटा!'

'सो देख, आदमी हुआ शिव का अंश। वे बिगड़-बिगड़ा भी सकते हैं।

मैं खुद औरत की खूब पिटाई करता हूँ। लेकिन औरत एक बात नहीं कहती। मुंडा औरतें भी कैसी होती हैं! यही जो तूने बात कही? यह क्या लड़के-लड़कियों की बातें हैं? इससे शादी करेंगे, इसे मन में बैठा लिया है, वह पसंद नहीं है—तुम लोगों में लाज-शरम नहीं है? कपड़े पहनोगी ऊँचे करके—चलोगी लड़कों की तरह—लड़की-लड़के जब औरत-मरद हो जाते हैं, तो जात की मौत होती है।'

'ठीक कह रहे हो।'

'हाँ रे, तू जो जंगल-जंगल फिरती है, तेरा लड़का कहाँ रहता है? किसके पास?'

'माँ के पास रख आती हूँ।'

'सारा दिन?'

'कहाँ रखूँ? साथ में लेकर जंगल-जंगल घूमूँ? मुझे तो किसी दिन बाघ खा जायेगा। उसे भी मरने ले जाऊँ?'

'इस्स! तुझे बड़ी तकलीफ़ है। ओहो, तेरे घर में धान का कोठा था, देखा तो था।'

'स—ब चला गया।'

'जायेगा नहीं? बीरसाइत क्यों बनी?'

'मैं?'

साली गुस्से से आग हो गयी। बोली: 'मैं बीरसाइत बनूँगी? मेरे सोने के संसार में बीरसा ने आग लगा दी। मेरा मरद तो बुद्धू है...वह जाकर बीरसा के नाम पर नाच उठा। कहाँ से अकाल के कीड़े-मकोड़ों की तरह तमाम मुंडाओं को पकड़-पकड़कर लाता। कहता: साली, यह सब बीरसाइत हैं। ले, भात राँध, सब खायेंगे!'

'कह क्या रही है?'

'और क्या कहूँ? मेरा धान का कोठा था। अकाल में, दुर्भिक्ष में, सूखे में मैंने मुंडाओं को बहुत-सा धान दिया। करम-परब नाच में सारी औरतें मेरे घर आयेंगी। मैं सबके सिर में दूँगी कंघी-तेल, हाथों में दूँगी लाख की चूड़ियाँ। किसी दिन घाटो नहीं खाया, जंगल की राह नहीं गयी, फटा कपड़ा नहीं पहना, रूखे बालों नहीं रही।'

'और आज?'

'आज सारी मुसीबतें हैं उस बीरसा के होते। उसी बीरसा के कारण मुंडा लोगों को बड़े कष्ट पहुँचे हैं।'

'तुम लोगों का भगवान है! धरती का आबा! उसे बीरसा कहती है?'

'सुगाना का बेटा बीरसा भगवान ! तब तो चींटी भी हाथी है; बुरुडीह भी राँची शहर है !'

साली ने बेरों की टोकरी उठाकर बुरुडीह का रास्ता लिया। भरत ने सोचा, दिन पूरे होने को हैं—फिर भी कैसी झूमती हुई चलती है, बदन की गठन कैसी भरी-भरी है ! क्या कोई मन से थाने में सब-कुछ कह सकता है ? मुंडा औरतें तो काली आग होती हैं—देखकर भी शरीर का खून जल उठता है। लेकिन बड़ी भोंडी और बदजात होती हैं, औरतों का हाथ थाम लो तो बलोया से कंधे से सिर उतार लेंगी !

भरत ने पीछे-पीछे चलते हुए कहा : 'ओ साली ! एक बात सुन।'

'बोल न !'

'आज की रात अपने गोठ में ठहरने देगी ?'

'क्यों ?'

'इतनी रात को वापस जाऊँगा ? डर लगता है।'

'ठहरने दूँगी।'

कुछ देर तक दोनों चलते रहे।

सहसा साली ने हाथ से टोकरी उतारी। पेट को हथेली से पकड़कर बैठ गयी।

'क्या हुआ रे, साली ?'

साली चित होकर लेट गयी। बोली : 'पेट में दरद उठा है जी, दारोगा। शायद कुछ हो जाये।'

'कह क्या रही है ?'

'तुम जाओ, तुम जाओ।'

'तुझे छोड़कर लौट जाऊँ ?'

'ऐसे वक्त में मरद-बच्चा पास नहीं रहता, रहता ही नहीं। तुम्हारे घर में औरत नहीं है ? तुम्हें नहीं मालूम ?'

'तू अकेली है न !'

'सुनो दारोगा, व—ह गाँव दिखायी दे रहा है। तुम जाकर मानी पहानी को बुला दो। और कोई न सुने, पहानी को ही बुलाना।'

'तू अकेली रहेगी ?'

'पहानी दवाई लायेगी, ठीक करेगी, बच्चा होने पर छुट्टी दे देगी। एक बात और है।'

'क्या ?'

'बुरुडीह में मत रहना। बुरुडीह में कोई आदमी नहीं है। बीरसा के कारण पुलिस ने आकर सबको भगा दिया है। जो हैं, वे जानवर हो गये हैं। पुलिस के नाम से चिढ़े हुए हैं। रात-ब-रात गाँव लूटते हैं, पुलिस को मारते हैं। तुम्हारे रहने पर तुम्हें तो मारेंगे ही, मुझे भी मारेंगे।'

'कह क्या रही है ? मारेंगे ?'

'हाँ जी ! देखो, अभी भी आसमान में लाली है, उजाला मरा नहीं है। लातू गाँव में चले जाओ। वहाँ कोई डर-भय की बात नहीं है।'

भागता-भागता भरत दारोगा चला गया।

उसके चले जाने के बाद बदन से, बालों से, कपड़ों से धूल झाड़कर साली उठ बैठी। पेट का कपड़ा खोलकर एक बोझ तीरों के फल का ज़मीन पर रखा। तेज इस्पात के लोहे के फल, कुचला के काले विष से, इस्पात की सुई से नुकीले और मुंडा युवतियों के समान काले-काले। मुंडा-युवतियों की ही तरह लोभनीय और उद्धत !

बेरियों की टोकरी जमीन पर उलट दी। उसके बाद टोकरी में तीरों के फल रखकर उस पर बेरियाँ रख दीं। उसके बाद बेरियाँ खाने लगी।

मानी पहानी भागी-भागी आयी।

साली बोली : 'इतनी देर करके ? मुझे दरद हो रहा था, पता नहीं ?'

'दरद तो हुआ। लड़का कहाँ है ?'

'उस टोकरी में ?'

'तू कहाँ जा रही है ?'

'और तीर लेने।'

'फिर जायेगी ?'

'जाऊँगी नहीं ? कल भी तो भरत आयेगा। उसे पेट दिखाना पड़ेगा न ? वह पीछा छोड़ेगा ?'

'क्यों पीछे पड़ा है, बता तो ?'

'और क्यों ? जो भागे हैं, उन्हें औरतें भात और पानी देंगी, रखेंगी, यह तो जानता है। उसें आशा है, पीछे-पीछे फिरने से उनका पता मिल जायेगा।'

'इस अँधेरे में फिर जायेगी ?'

'धानी बैठा रहेगा।'

'तो जा।'

'भरत चला गया ?'

'हाँ।'

'बहुत डर गया है ?'

'मैंने उसे डरा दिया है। कहा है, अकाल में सब पागल हो रहे हैं। दारोगा को देखकर जरूर मारेंगे। हम कई लड़के-लड़कियाँ हैं। तुम्हें घर में ठहरने दिया है, यह जानकर मुझे भी मारेंगे। सो डरकर भाग खड़ा हुआ।'

'भागे। लातू गाँव में उसे कोई ठहरने न देगा। अँधेरे में भागे, कायर।'

'राह में बाघ खा जायेगा।'

'बाघ दारोगा को खाता है? दारोगा से सब डरते हैं। बन के पशुओं को जान का डर नहीं है?'

'और तुझे जान का डर नहीं है? इस अँधेरे में फिर जायेगी, फिर आयेगी? बीरसा के लिए तुझे इतना...।'

'चुप रह।'

'तू मुझे बता, साली। यह घोर अँधेरा, किसी को किसी का चेहरा दिखायी नहीं देता, तू मुझे बता? मैं तो बूढ़ी हूँ, मरे गाछ के तने-सा शरीर, मेरे पेट की बात पेट में रहती है, कौए को भी पता नहीं चलता।'

'क्या बताऊँ?'

'बीरसा को भगवान समझकर ही यह कर रही है? वह चंचल लड़का, तू जवान लड़की...।'

'चुप रहो।'

साली ने डाँटा। बोली: 'ऐसी बात किसी को सोचना भी नहीं चाहिए, मुझे भी नहीं। सोचने से भी पाप होता है।'

'कैसे? भगवान के लिए सब अच्छा है। पूछती हूँ, यह गुलान मुझे अच्छा नहीं लगता।'

'क्या?'

'नाच-गान, महुआ-ताड़ी, फूलों से सजकर आदमियों से प्यार करना—सब रोक दिया है।'

'पुरानी राह न छोड़ने से नयी राह कैसे पकड़ेगी? इस फागुन में भी शाल फूल की गंध से मन मतवाला हो जाता था। बन में कितने फूल हैं रे, मानी। एक नहीं छूती। बालों में नहीं लगाती। करम के दिन भी बन में नहीं नाचती।'

'यह बड़ी मुश्किल है। मेरे पैरों में बल नहीं है। फिर भी नाचने को कोई कहे तो खूब नाचूँगी।'

'तुम बूढ़ी हो तो जवान कौन है?'

मानी हँसी, टोकरी सिर पर उठायी और गर्व के साथ बोली: 'जब तक पहान था तब उसे लकड़ी नहीं काटने दी। अब भी कुल्हाड़ी से पूरा

पेड़ काटकर गिरा सकती हूँ। तू नहीं कर सकेगी।'

'अब नहीं मानी, अँधेरा हो गया।'

'तू जायेगी नहीं।'

'जा तो रही हूँ।'

हवा की तेज़ी की तरह, तीर जैसे हवा के साथ फ़र्राटे से जाता है, उसी तरह अचानक उड़कर साली अँधेरे के कलेजे में ग़ायब हो गयी। अंधे जंगल की आत्मा की भाँति सहज ही भाग चली। यह जंगल, यह रास्ता, सब उसका पहचाना हुआ था—अपने शरीर की भाँति ही जाना-पहचाना! जंगल के हृदय में निर्जन छोटे-से कुंड में जिस समय वह स्नान करती, तब स्नान करने के पहले अपने नग्न शरीर की छाया जल में देख लेती। उसी निश्चल प्रतिबिम्ब की प्रत्येक रेखा और उभार, ऊँचे-नीचे मोड़ और गोलाइयाँ उसकी पहचानी हुई थीं, और उसी तरह परिचित था यह जंगल। राह छोड़कर जंगल की गहराई में घुसी। पहाड़ का ढाल पकड़कर उतरी। ढाल के नीचे नदी की ओर—आजकल जिसका कलेजा सूखा हुआ था। केवल क्षीण रुपहली जल की एक धार रह गयी थी। नदी के किनारे-किनारे पहाड़ के ढाल में गुफ़ाएँ थीं। गुफ़ाओं में काँटों के ढेर को हटाकर वह घुस गयी।

'कौन है, साली?'

'हाँ, बहुत तकलीफ़ से आयी हूँ। भरत ने पीछा किया था। बिलकुल छोड़ना ही नहीं चाहता था। चकमा देकर आ पायी हूँ। इस साले के मैं किसी दिन बलोया खुभा दूँगी।'

'भुला-भुलूकर यहीं ले आना।'

'न-न। दारोगा को मारने से गाँव-का-गाँव जला देंगे!'

'यह भी सच है।'

'तीर के फल?'

'ये रहे।'

'दे। बाँधकर रखे हैं न?'

'हाँ।'

धानी के हाथ में बलोया सुन्दर लगता था। बलोया और चकमक पत्थर हो तो धानी को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती। बरसात में धानी जंगल की झाड़ियाँ काटते-काटते घुस जायेगा। बलोया से पेड़ की डाल

नुकीली कर उसी को फेंककर सूअर या हिरन को मार गिरायेगा। उस बार मुलकी लड़ाई में जोतदार का घर-खलिहान-कोठे जलाकर वह जब जंगल की ओर भाग रहा था, तब बलोया से डाल-पत्ते काटकर पेड़ की फुनगी पर एक सुन्दर-सा मचान बना लिया था। बहुत दिनों तक वहीं टिका रहा।

बलोया से डाल काटकर तीर के फल के आकार में काटकर उसने सुन्दर फल बनाया था। वह उसने साली को दिया।

साली बोली : 'आज क्या खाया ?'

'एक खरहा मारा था। खायेगी ? थोड़ा ले जायेगी ?'

'न। हमारे आँगन में ही घूमता रहता है, फंदा डालकर पकड़ लेती हूँ।'

'घर जा।'

'हाँ, जा रही हूँ। लड़का है।'

'कल नमक ले आना।'

'ले आऊँगी।'

'हाँसू ले आना।'

'ले आऊँगी।'

'अँधेरा हो गया है।'

'भगवान का नाम लेती चली जाऊँगी।'

अंधकार में मिलकर साली लौट चली। अब अँधेरे से नहीं डरती। किसी भी चीज़ से नहीं डरती। पहले डरती थी। अब यही लगता—ये दिन भी दिन नहीं हैं; अब जो हो रहा है, जिस तरह दिन कट रहे हैं, सब मिट जायेगा ! सत्य रहेगा केवल बीरसा के लौट आने का दिन। बीरसा के आने से सब बदल जायेगा !

बहुत दिनों से उसका मन जैसे अंधकार से भरा रहा था। छुटपन से साली सुनती आयी थी कि वह बहुत सुन्दरी है। उसका ब्याह होगा, देखने लायक जमाई आयेगा। लेकिन डोन्का के साथ ब्याह होने से मन में सुख नहीं रहा। उस बीच डोन्का की दो पत्नियाँ मर चुकी थीं। डोन्का एक पट्टी का मुखिया था। डोन्का की पट्टी में ग्यारह गाँव थे।

गाँव भी ऐसे ही थे—जंगल के गाँव ! किसी में दस घर थे, किसी में बीस। जो लोग रहते थे उनकी हालत भी यों ही थी। घाटो मिलता तो नमक न जुटता। फिर भी डोन्का की हालत उन सबसे अच्छी ही थी। उसकी उम्र काफ़ी थी। फिर भी सब ले-देकर वह साली को घर ले

आया। साली के बाप से कहा : 'मैं कब तक जिऊँगा ? सभी कुछ तुम्हारी लड़की को मिलेगा।'

साली के बाप-माँ तभी से इस गाँव में उठ आये। बाप एक दिन मर गया। साली के मन में सुख नहीं था। ब्याह का कोई सुख न मिला। लेकिन पेट के लिए भात, पहनने को कपड़ा, सिर के लिए तेल का सहारा बड़ा सहारा था। बूढ़े वर का दुःख साली भूल गयी।

धीरे-धीरे वह सुख भी चला गया। डोन्का एक दिन सफ़ेद कपड़े पहन, सिर पर हल्दी मलकर घर आया। साथ में चार मुंडा और थे। बोला : 'इनके लिए भात राँध दे।'

'क्यों !'

'ये बीरसाइत हैं। मैं बीरसाइत बन गया हूँ। बीरसाइत-बीरसाइत भाई होते हैं। अपने भाइयों को मैं भात दूँगा।'

बीरसाइतों को खिलाने में, देने-दिलाने में, धान का ढेर छोटा होने लगा। जब-तब आदमी आने लगे। उनकी बातचीत छिपकर चलती। इसी-लिए साली को और लड़के को रहने के लिए डोन्का ने दूसरे घर में भेज दिया। साली के मन में आग लग गयी। डोन्का की यह कैसी सत्यानासी अकल हो गयी ? पूजा-त्योहार पर वह मुंडा प्रजा लोगों की प्रणामी—चावल-मुर्गी—लौटा देता; खेती-बारी उठा दी। तब उसने गालियाँ देना शुरू किया—अपने बाप को, डोन्का को, भाग्य को। अन्त में एक दिन डोन्का भाग खड़ा हुआ। बोला, 'भगवान के काम से चला, रे।'

बीरसा के पास जाकर डोन्का बैठा रहा। हिरनों का झुंड आकर साली की अरबी खाता। खेत-खलिहान नष्ट हो गये। गुस्से से जलते-जलते साली बीरसा के पास गयी। मुखिया की बहू थी। इसीलिए बालों में तेल लगाये, जूड़ा बाँधकर, जूड़े में फूल खोंसकर, साफ़ कपड़े पहनकर गयी। मन की आग उसकी चाल-ढाल से फूटी पड़ रही थी।

बीरसा बोला : 'तुम डोन्का को गाली मत देना। वह मेरा काम करता है।'

'हाय रे तुम्हारा काम ! सब उड़ा डाला। लड़के को देखता नहीं, सारा नास कर दिया। गाली न दूँ ?'

बीरसा आँगन में उतर आया। उसके सिर पर हाथ रखा। उसका चिबुक पकड़कर उसके चेहरे की ओर ताका। पता नहीं कौन-सा मंत्र धीरे से कहने लगा। उसकी आँखों में गहरी पीड़ा थी। उसकी उँगलियों में मानो किसी देव का स्पर्श था। साली को लगा कि उसके क्षुब्ध, क्रुद्ध, उदास मन

को जुड़ाकर वर्षा की पुरवैया बह रही है !

साली ने पूछा : 'क्या देख रहे हो ?'

'तुम्हें ।'

'मुझे ?'

'हाँ ।'

बीरसा बोला : 'डोन्का से मेरे बहुत-से काम होंगे। तुमसे और भी ज्यादा काम होंगे ।'

'मुझसे ?'

'हाँ ।'

'मैं कौन हूँ, बताओ तो ?'

'तुम साली हो ।'

'लड़के-बच्चों के होने पर लड़ाई का काम होता है ?'

'होता है । मैं तुम्हें सिखला दूंगा ।'

साली आश्चर्य से सिर झुकाकर घर लौट आयी थी। डोन्का से बोली थी : 'तू तो मुखिया है । और क्या मिलेगा जिससे उसके पास गया था ?'

डोन्का खिन्न हँसी हँसकर बोला : 'उसे देखकर, उसकी बातें सुनकर लगता है कि मेरी छाती में बाढ़ आ गयी है साली, जैसे पहाड़ टूटता है। उसके पास जाकर ही मुझे पता चला कि मुंडा होने में कितना गर्व है !'

साली ने तब समझा था कि डोन्का क्यों बीरसा का भक्त बन गया था। मुंडा माने जंगली, असभ्य । मुंडा लोगों का जीवन दिकू लोगों के लिए है। दिकू लोगों के खलिहान में धान-सरसों-ईख आयेगी, दिकू आकर जंगल हासिल कर जमीन पर दखल करेंगे, बोङ्गा-बोङ्गी का थान, बलि की जगह —आदि गाँव का, सबका चिह्न तक मिटाकर वहाँ दिकू लोग अपने देवी-देवताओं के स्थान बनायेंगे। मुंडा लोगों के जीवन में वह और ही है ! मुंडा क्योंकर मुंडा कहलाकर गर्व करेंगे ? किस तरह अपना आत्म-विश्वास अटूट रखेंगे ?

न, बीरसा किसी मुंडा के घाटो के बदले भात, बेगार के बदले आज़ादी जेल-कचहरी से छुटकारा, खेती की जमीन—रहने को घर—जंगल का अधिकार नहीं दे सका।

लेकिन डोन्का का कलेजा साहस और गर्व से भर सका।

साली ने गहरी साँस ली। बोली : 'मैं भी कुसुम के फूल से कपड़े पीले रँग लूँगी। पति-पत्नी जिस तरह रहते हैं, वैसे नहीं रहूँगी। मैं भी जाकर चाल-

काड़ से उसकी बातें सुन आऊँगी।'

'जायेगी ?'

'नहीं तो क्या तू ही अकेला जायेगा ? तू बूढ़ा है, तुझे रतौंधी उतरी है, रात में तुझे दिखायी भी देता है ?'

साली ने सब-कुछ किया। बीरसा के लिए बहुत काम करके उसने बीरसा की आँखों में प्रशंसा का भाव देखने को उसने सब-कुछ किया। उसके बाद धानी जब तीरों के फल बाँट रहा था तो बीरसा पकड़ा गया। डोन्का भी जेल ले जाया गया।

साली ने गाँव-गाँव में पुलिस की नृशंसता देखी। देश में अकाल तो था ही। दूर-दूर तक तपन से जंगल में पत्ते तक नहीं रहे थे। मुंडा लोग फिर दल-के-दल किरस्तान होने चले गये।

देखा कि अब बीरसा के दुश्मन कह रहे थे : 'मुंडा लोगो, बीरसा के पापों से ही सब-कुछ जल-झुलस गया!'

मुंडा कहते : 'तब ?'

'तब क्या ! सारे बोङा-बोङी छोड़कर अकेले बीरसा को भगवान मानकर पूजने से देवता ग़ुस्सा नहीं हो जायेंगे ?'

'फिर ?'

'जाकर पूजा दो। पानी नहीं है। खेती नहीं। किस बोङा-बोङी के पाप से सब हो रहा है, पहान बता देगा।

'उसके बाद ?'

'उसी बोङा-बोङी को संतुष्ट करो। जाओ।'

फिर सिंबोङा के थान पर बलि में मुर्गी कटी। फिर पहान ने रक्त से भरा मिट्टी का प्याला लेकर, अँधेरे में भागकर—सूखे कुँए, नदी के सूखे गढ़े में छोड़ दिया। फिर सुखी डाइन ने आकर झाड़-फूँक के तंत्र-मंत्र शुरू किये।

यह सब देखकर साली को बड़ी रुलाई आयी। ऐसा रोना तब आया था जब उसके बाप ने डोन्का के साथ उसका ब्याह किया था। लगा था कि वह मर चली है।

जंगल जल गये थे। हिरन गाँव में आकर कोठे तोड़कर धान खा जाते थे। घर के अंदर लकड़ी के खंभों से एक जगह और घेर ली गयी थी। वहाँ माँ अपने नन्हे बच्चे को लेकर सोती। साली घर के बाहर हाथ के नीचे बलोया रखकर सोती। चरचराकर खंभा टूटने की आवाज़ मिलते ही बलोया मारेगी या बरछी चला देगी।

एक दिन रात को पैरों की आवाज़ आयी। साली समझी कि बाहर कोई आदमी आया है। उसने बरछी उठा ली। धीमी आवाज में पूछा : 'कौन ?"

'धानी रे, धानी मुंडा।'

साली ने दरवाजा खोला। धानी अंदर आया। बोला : 'जेहल से भाग आया हूँ।'

'तू अकेले ?'

'हाँ।'

'यहाँ आया ?'

'कहाँ जाऊँ ?'

'तेरे पीछे पुलिस आयेगी ?'

'एक दिन का मौक़ा तो देगी !'

दूसरे दिन रात होने पर साली धानी को गुफ़ा में ले गयी। बोली : 'किसी को सुराग नहीं है। दिन में साफ़ कर गयी थी। सामने ओट डाल दी है। तू यहाँ रह। बाद में आऊँगी। न आने पर समझ लेना कि गाँव में पुलिस आयी है, इसलिए नहीं आयी। भूख लगने पर यह मकई का सत्तू खा लेना; चकमक और पानी का घड़ा रखा है।'

तभी से धानी यहाँ है। धानी को यहाँ पहुंचाकर तब साली को लगा —नहीं, सब ठीक है। धानी ने कहा है कि बीरसा दो बरस बाद लौटेगा। जब तक न लौटे तब तक मुंडा लोगों को बताना होगा कि सब ठीक है।

हृदय में साहस लेकर साली लौट गयी। फिर जीवन स्वाभाविक लगा। लगा कि सब ठीक है। पुलिस धानी की तलाश में उसके धान का कोठा तोड़ गयी। साली माँ से बोली : 'रो क्यों रही है ? ज़िन्दगी में धान मड़ाई कर तेरे आँगन में रहे ? मेरे बूढ़े के घर में ही तो मड़ाई देखी ?'

'अब खायेंगे क्या ?'

'पहले जो खाते थे !'

साली ने जंगल में घूमना शुरू किया। जंगल में फल होते हैं, कंद होते हैं; खरगोश-साही मारने से भी चलता है। जंगल में औरतें झुंड बनाकर जातीं, बिखर जातीं। बातों-बातों में, मन की बातें जानकर साली समझी —न, सभी बीरसा के नाम से नहीं काँपती हैं।

मानी पहानी ने उसे समझाया। बोली : 'जिस हाट में दिकू आते हैं उस बड़े हाट में नहीं जाऊँगी। छोटे-छोटे जंगलों के अंदर-अंदर गाँवों में तीर लेंगे, ऊपर अरबी-केला-साग रखेंगे। हम टोकरी में बेचेंगे। उसकी टोकरी मैं लूँगी। वह जाकर रातों-रात लोगों के घर की दीवार में तीर

खोंस आयेगी। मेरी बात सुन।'

साली ने मानी की बात सुनी। सभी ने देखा कि साली, डोन्का मुखिया की पत्नी, पेट में बच्चा लिये जंगलों में घूमती फिरती है। इतना अकाल, इतनी तपन—जंगल के सिवा मुंडा की गति कहाँ है ? दिकू लोग अब धान और रुपये उधार में नहीं देते। कहते हैं : दिकू लोगों को तो तुम भगाना चाहते हो। तब दिकू तुम्हारी फ़िक्र क्यों करें ?

बड़ा अकाल, बड़े दुर्दिन हैं। बीरसा जेल गया—तब से ही एक के बाद एक कर दो बरस तक बरसात नहीं हुई।

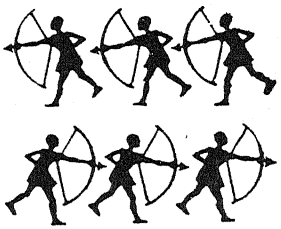

बरसात नहीं। धरती जलकर ख़ाक हो गयी। दूसरे बरस की हवा में नमी तक नहीं थी; धरती सूखी-फटी थी। जाड़ों में भी रात को ओस भी नहीं पड़ती थी। सवेरे दिखायी पड़ता कि जंगल में गाछ के पत्ते सूख कर लटक रहे हैं। औरतें नदी की रेत खोदकर गड्ढा बनाये रहतीं। रात-भर में उस गड्ढे में एक अंजुली पानी भी न जमा होता ! साल 1897 में छोटा नागपुर में भदई फ़सल जल गयी; रबी की खेती भी न हुई।

साल 1897 के नवंबर में बीरसा छूटा।

साथ-ही-साथ यह समाचार बही हवा के झोंकों से पहले फैल गया। फिर मुंडाओं के गाँव-गाँव में मादल बजने लगे। औरत-मर्द नाचे—उन्होंने गान गाये। जो किरस्तान हो गये थे उन्होंने पलुस प्रचारक से कह दिया : 'अब तेरे गिरजे में नहीं जायेंगे, तू जा। भगवान आ गये हैं !'

'मिशन के साहब लोगों ने तुम्हें इस अकाल में खिलाया नहीं ?'

'खिलाया तो क्या हुआ ?'

'तुम लोगों ने हमें तो मुसीबत में डाल दिया !'

'मुसीबत में तू खुद पड़ा जब भगवान को पकड़वाने गया था।'

'यह देखो, फिर वही बात उठा रहे हो।'

'जा, चला जा अपने गिरजा को।'

राँची से चालकाड़ आते-आते बीरसा ने देखा कि सब जलकर ख़ाक हो गया है। उसने गहरी साँस ली। मुंडा लोगों का अनाहार, उपवास, दारिद्र्य—सब जैसे उसके मन में पत्थर की तरह बैठ रहे हों! वह भगवान है, मुंडाओं का भगवान! कमिश्नर से वादा किया है कि अब वह मुंडा-लोगों को नहीं भड़कायेगा। बीरसा समझने लगा कि वह वचन न निभा सकेगा। अब मन में कहीं—जैसे प्रतिध्वनि में—सूखी, रूखी हवा की प्रति-ध्वनि में, लौट आयीं माँ से सुनी प्राचीन गौरव की बातें! चुटिया जगन्नाथ-पुर, नौरतन में मुंडा लोगों ने मंदिर बनाये थे। उन मंदिरों की वेदी के नीचे खड़े होकर स्वयं सिंबोङा के साथ बातें होती थीं! ईश्वर और मुंडा लोगों का उन दिनों में बहुत सामीप्य था। उसके बाद माँ कहतीं: 'उसके बाद दिकू लोगों ने स—ब ले लिया। मुंडा लोग बेदखल हो गये।'

वे चालकाड़ पहुँच गये।

दिसंबर की सात तारीख को कमिश्नर स्वयं चालकाड़ में आकर उसे धमकी दे गये। बोले: 'सरकार से वादा किया है। वादा तोड़ने से और कड़ी सजा मिलेगी।'

बीरसा बोला: 'याद है।'

कमिश्नर दोपहर को चले गये। शाम को बीरसा का आँगन भर गया। सोमा, धानी, गया, सुराइ, भरतो, मुंडा-सरदार आये थे। मुंडा मरदों का जमघट इकट्ठा हो गया था।

एक आदमी आँगन में जलती मशाल गाड़ गया। मशाल की रोशनी तेज़ थी। बीरसा का चेहरा गंभीर था। बोला: 'एक-एक करके बोलो। सोमा, तुम कहो।'

'तुम जेहल में थे। इधर सावन-भादों आते सुना कि सरकार ने अकाल के लिए व्यवस्था की है। खैरात—गाँव-गाँव में कर्ज पर धान-चावल—सब देगी। हम मुँह बाये आसरा लगाये रहे। बाद में सुना कि सरकार ने सब व्यवस्था की है, सब लोगों को सब मिल गया है, रिपोर्ट सदर चली गयी। लेकिन, भगवान! हम में से एक आदमी को भी एक मुट्ठी चावल तक नहीं मिला। मैं और क्या कहूँ?'

'गया, तुम कहो।'

'मैंने थाने जाकर बताया—खूंटी, सिसल, बासिया थाना में एक सौ से ज्यादा आदमी भूख से मर गये। यह रिपोर्ट में लिखवाया कि अकाल आ

गया है। उन्होंने लिख दिया कि चालीस आदमी मरे। केवल चालीस आदमियों के मरने पर वे उसे अकाल नहीं कहते !'

'भरतो, क्या कहते हो ?'

'हाँ, मिशन के साहबों ने लंगरखाना खोल दिया था। तमाम लोगों को खिलाते थे। लेकिन ज़मींदार लोग, भगवान ! साहब के कहने पर भी क़र्ज़ न देते, न बताते कि खलिहान में कितना धान है। जितना धान-चावल था सब ग़ायब कर दिया। उसके बाद मुक़दमा ठोक दिया रकुआ और दुखा के नाम पर—वे उनके जंगल से बाँस के अंकुर तोड़ रहे थे !'

'क़ानून कौन जानता है ?'

धानी आगे आया : 'मैं जानता हूँ।'

'तुम ! जेहल से क्यों भागे ?'

'भात क्यों नहीं दिया ? घर पर भी घाटो खाऊँ, जेहल में भी घाटो ? फिर बाद में वाडर ने मुझे स्यार क्यों कहा ?'

'ग़लत किया था।'

'अब नहीं करूँगा।'

'क़ानून की बात क्या जानते हो ?'

'सब मालूम है। एक-एक कर बताऊँ ?'

'बताओ।'

'लगान बढ़ाने का क़ानून बना, लगान वसूल करने का क़ानून बना। एक ही क़ानून में कह दिया—लगान बढ़ायेंगे, और जब देखेंगे कि रैयत की सामर्थ्य नहीं है, तो लगान माफ़ कर देंगे। ज़मींदार का मुँह देखकर लगान बढ़ाया। ज़मींदार ने समझा कि आजकल मँहगाई ज़्यादा है। लगान के बढ़े बिना ज़मींदार मर जायेगा। क़ानून में कह दिया कि रैयत ज़्यादा लगान न दे सकेगी, वह बेगारी देगी। जिसके साथ बेगारी की बात हो, वह बेगारी न देकर रुपये देकर रिहाई पा जायेगा।'

'काम का क्या हुआ ?'

'तब सोमारा ने पाँच लोगों को लेकर जेकब को चिट्ठी लिखायी। जेकब राँची आया। क्यों, तुमने नहीं सुना ?'

'सुना था, जेकब ने सरकार से बहुत लिखा-पढ़ी की। अपने ख़र्च से मुंडा लोगों की ओर से अदालत में मामला दायर किया, जिससे एतराज़ रिकॉर्ड किये जा सकें। वह क़ानून पास होने से मुंडाओं को एक आने की सुविधा होती। ज़मींदार की सुविधा पंद्रह आनों की थी। तुम भी तो समझते हो। मुंडा रहते हैं जंगल में। बोला, सरकार ने लगान लगाया है, यह लगान माफ़ करो। हमारी सामर्थ्य नहीं है। मुंडा अगर मुंडारी में चिल्लायें

तभी सरकार को पता चलेगा !'

'न। नहीं सुनेगी। सरकार कान की बहरी है।'

'तब ?'

'मुक़दमा दायर कर सरकार को समझाना पड़ेगा।'

'हाँ, मुक़दमा दायर करने की सामर्थ्य मुंडा लोगों की नहीं है, कभी न होगी। तब जेकब ने ये सारी बातें सरकार को बतायीं। कुछ भी न हुआ। क़ानून पास हो गया। सो बाद में क्या हुआ, बताऊँ ? एक नयी मशाल देना।'

नयी मशाल जला दी गयी।

बीरसा कहने लगा : 'कमिश्नर स्ट्रटफ़ील्ड ने जेकब की सारी आपत्तियाँ फाइल करा दीं। बोला : 'बीरसा, मैं सब रिकॉर्ड कर रहा हूँ।' यह क़ानून फिर नये सिरे से बनेगा। लेकिन कलकत्ता से जॉन वुडबन छोटे लाट राँची चले आये हैं। कह दिया कि बीरसा मुंडा जो गड़बड़ करा रहा है उसी से मुंडा किसान बिगड़े हुए हैं। अब उनकी सुविधा के लिए कोई बात क़ानून में नये सिरे से नहीं डाली जायेगी।'

गया मुंडा बोला : 'उससे ही देखो। ज़मींदार अब बेगार ले रहा है, लगान भी ले रहा है। कौन देगा लगान ? किसके घर में चाँदी के दो रुपये हैं ? आज दो बरस से तुम जेहल में थे। तुम धरती के आबा हो। तुम जेहल में थे। धरती फ़सल दे सकती है ? दो बरस में धरती जलकर खाक हो गयी—रात-दिन क्या धन उगल रही थी ? जंगल जल गये; नदियों में पानी नहीं रहा। ज़मींदार कहता है—तुम लोगों के लिए सरकार क़ानून बना रही है, जाकर मुक़दमा करो। उससे ही हम चोर कहे जायेंगे।'

'चोर होने से ?'

'हाँ भगवान ! तुम जेहल में थे। इधर दो बरस फ़सल न हुई, ख़ैरात नहीं बँटी, कर्ज़-उधार नहीं मिला, लगान बढ़ गये, बेगारी का बड़ा शोर मचा तो उस पर धानी बोला : 'चल, धान लूट लें। ज़मींदार के घर में धान रहते हम भूखों मरें ?' उस पर हम लोगों ने धान की चोरी की। उसी से तो सरकार ने जुरमाने का दंड लगाया। जिस गाँव में धान की चोरी होगी, उस गाँव पर दंड लगेगा। सो हम अब पहले ही सलाह कर कोठा तोड़ते हैं, चावल लेते हैं, रातों-रात जंगल में भाग जाते हैं। मुंडाओं को बता जाते हैं कि कोई दंड देने के लिए गाँव में न रहे, जंगल में भाग जाये।'

धानी बोला : 'फिर घर आ जाते। फिर भाग जाते। अब मुंडा लोगों को पता चल गया है कि तुम्हारे बिना उनकी गति नहीं है।'

बीरसा बोला : 'बोर्तोदी में साली के घर सब पुकारना। वहाँ जाकर सब ठीक करूँगा।'

'करोगे ?'

'हाँ !'

एक-एक कर सब चले गये। फिर भी बीरसा को नींद न आयी। खटिया पर लेटे-लेटे वह आसमान की ओर देखता रहा। वह भगवान है। भगवान ही तो है ! भगवान न होता तो उसकी पुकार पर सारे मुंडा क्यों चले आते ? जब एक युग का अन्त होता है तो भगवान आता है ! अब भी तो युग के अन्त होने के लक्षण दिखायी दे रहे हैं। सेंगेल-दा की आग में मुंडाओं का देश जल गया ! बीच में जाल की तरह दिकू लोगों की दुनिया फैली है। तभी तो भगवान की ज़रूरत थी !

लेकिन अपने अंदर से बीरसा को जो निर्देश मिलता, वह निर्देश अभी भी क्यों नहीं मिल रहा है ? कारागार में शरीर अपवित्र हो गया, क्या इस कारण से ?

धीरे-से उसके पैरों से सारे शरीर पर जैसे रजाई उढ़ा दी गयी।

'कौन, माँ ?'

'हाँ रे, सोया नहीं ?'

'नहीं, माँ ! यह रजाई कहाँ से मिली ?'

'तेरे लिए बनायी है, बाप ! पुआल भर दिया है। रुई कहाँ से मिलेगी ? तेरी दीदी कपड़ा ले आयी थी। हम माँ-बेटी ने मिलकर सिया।'

'ऐसी रजाई तो तूने बचपन में भी नहीं दी ?'

'बचपन में सब पुआल में घुसकर सोते थे।'

'तब कैसे होता ?'

'रजाई उठा नहीं पाते थे, दुलार कर नहीं पाते थे, परब में सिर में लगायेंगे, इसके लिए नयी कंघी भी नहीं ले सकते थे।'

'दादा बहुत रोता था !'

'रोता, ज़िद करता। अब दुःख देगा, इसलिए तूने पहले मुझे कोई दुःख नहीं दिया, बाप !'

'इतना दुःख क्यों है, माँ ?'

'हाँ रे, बीरसा ! दुनिया का दुःख तू समझता है, लेकिन जो माँ तुझे दुनिया में लायी उसका दुःख नहीं समझता ? तू भगवान बना, यह अच्छा है ! लेकिन अब बाप, तू जिस राह पर चला है, उस राह पर जाने से सरकार तुझे मार डालेगी।'

'सरकार नहीं रहेगी, माँ !'

'नहीं रहेगी ?'

'नहीं, माँ ! हमारा देश फिर हमारा होगा। तुझे स—ब मिल जायेगा। सारा मुंडा देश जीतकर तुझे ला दूँगा। तू दुःख क्यों मना रही है ?'

करमी रोते-रोते बोली : 'कल से तू फिर सबका हो जायेगा। मुझे तेरे पास कोई जाने भी न देगा। आज मेरे पास थोड़ा सो ले। तुझे एक बार कलेजे से लगा लूँ।'

ठूँठ वृद्धा करमी पृथ्वी के इस देवता को कलेजे से लगाकर लेटी रही। बाहर ठंडक थी; उत्तरी हवा चल रही थी। करमी के मौन रुदन की तरह जंगल हवा के थपेड़ों से विलाप करने लगा।

भगवान आयेगा, उसके घर आयेगा। सासी, मानी पहानी ने दूसरी औरतों को लेकर आँगन झाड़-पोंछ कर झक कर दिया। डोन्का और दूसरे मर्द बीरसाइतों ने आँगन के एक कोने में नयी कोठरी बनायी। इसमें भगवान रहेंगे। जंगल के घने अंदर बोर्तोदी का छोटा-सा कुंड था। उस कुंड में पानी कभी सूखता नहीं था। गाँव में सबने सज्जी में भिगोकर कपड़े धोये; तेल लगाकर बाल काढ़े। हल्दी पीसकर सबने माथे और गले में लगायी।

हर घर में चावल नहीं थे। इस वक़्त जो जिसके यहाँ था, वही ले आया। मुखिया की हैसियत से बैठी सासी ने सारा चावल, नमक, दाल टोकरों में रखे ! अब फिर बीरसाइत आयेंगे। क्या कहेंगे भगवान—अगर कहें कि यहाँ भी एक चौकी होगी ? उसके बाद महुआ के तेल से सिर भिगोकर, रीठे का काढ़ा लेकर सासी कुंड में स्नान करने गयी। रीठे के काढ़े से वदन खूब साफ़ किया। एक बोरा रीठा सासी के घर में ही था। तरोई के खोंसे से बदन-हाथ-मुँह रगड़कर सासी ने स्नान किया। कुंड से निकलकर साफ़ कपड़े पहन एक चौड़े पत्थर पर बैठकर बाल खोले। बाल सुखायेगी; लकड़ी की कंघी से बाल बाँधेगी !

टप् से किसी ने उसके पैरों के पास पत्थर फेंका। हाथ में बलोया लेकर सासी उठी। उसके बाद बोली : 'कौन ? परमी ? धुराई मुंडा की

बहन ?'

'हाँ।'

'यहाँ आयी है ?'

'तेरे साथ बात करने के लिए।'

'मेरे साथ !'

'हाँ, तू मुझे बता दे कि मैं क्या करूँ।'

'क्यों ?'

'देख, भगवान जेहल जाने के पहले बाप को बाला[1], खाड़ू[2], साड़ी दे गये थे। कह गये थे कि तेरी लड़की के साथ मेरी सगाई होगी।'

'तेरे भाग्य !'

परमी ने मुँह फेर लिया। रोने लगी।

'रो क्यों रही है ?'

'इस तरह की सगाई मैं नहीं चाहती रे। वह कहाँ रहेगा, मैं कहाँ रहूँगी ! पति-पत्नी जैसे रहते हैं वैसे नहीं रहेंगे। सिर्फ़ बीरसाइत लोगों के लिए भात राँधा करूँगी, हल्दी पीसूँगी, उन लोगों के लिए भाग-दौड़ करूँगी। ऐसी सगाई मुझे नहीं चाहिए।'

'कनू क्या कहता है ?'

'और क्या कहेगा ! वह भी बीरसाइत हो गया है। बाप वही, दादा वही ! भगवान के वाला, खाड़ू लौटा दूँगी, वह बात भी—फिर भी कनू मेरी सगाई करेगा ?'

'तो मुझसे क्यों कह रही है ?'

'तेरे घर में आ रहे हैं, तेरे कहने से भगवान मान जायेंगे। तू बोल दे, साली।'

'यह बात ?'

साली के कलेजे से मानो पत्थर उतर गया। साली बोली : 'कहूँगी। देख परमी ! कुंड इतनी दूर है। इसलिए कोई आता नहीं। कुँदरू कितने पक गये हैं। चिड़ियों को भी पता नहीं है, नहीं तो तोड़कर ले जातीं। कड़ुए के तेल में मिर्च और कुँदरू छौंकूँगी।'

'ठहर ! पत्ते तोड़कर दो दोने बना लूँ।'

दोनों कुँदरू तोड़ने लगीं।

---

1. चूड़ियाँ।
2. कंगन।

साली ने बीरसा के पैरों पर पानी छोड़ा, आँचल से पानी पोंछा। बैठने के लिए नयी चौकी दी। दूसरी औरतें हाथ जोड़कर बैठी रहीं।

'भगवान ! एक बात है।'

'कहो ?'

'परमी से बाला, खाड़ू वापस ले लो। वह घर चाहती है; बाल-बच्चे चाहती है; पाँच ब्याहताओं से सिर में तेल-सिंदूर लगवाना चाहती है।'

'वही होगा।'

'तुम उसके नजदीक नहीं जाओगे।'

'न।'

'बस, और कोई बात नहीं है।'

'तू मुझे कुछ नहीं देगी ?'

'क्या दूँ ? मेरे मरद को ले लिया है। तुम्हारे बाप के लिए यह घर-आँगन-कोठा दे दिया है। अब तो बस लड़का ही है।'

'उसे नहीं देगी ?'

'स—ब ले लोगे ?'

'स—ब !'

साली ने बच्चे को गोद में उठाया। बोली : 'लो, तुम्हें दिया। इतना नन्हा-सा बच्चा लेकर तुम करोगे क्या ?'

'उससे मेरा नाम रहेगा।'

साली की आँखें नीची हो गयीं। बीरसा ने साली के लड़के के सिर पर हाथ रखा। बोला : 'तुम लोग जान लो कि साली और डोन्का के बेटे को मैंने गोद ले लिया। उसे नाम दिया, परिबा। तुम उसे मेरा ही समझोगे।'

हल्दी से रंगा सूत बीरसा ने परिबा के हाथ में बाँध दिया। साली की आँखें भर आयीं।

'रो क्यों रही है ?'

'मुझे अपना काम करने दो।'

'तू कर तो रही है।'

'करती तो हूँ।'

साली आँखें पोंछकर हँस पड़ी। बोली : 'मैं, मानी, फुल्ना, हम सभी करती हैं। पहले लोग बहुत हँसते थे। तुम औरतें ! तुम जाकर भगवान

का काम करोगी ? पुलिस तो दो बरस से आदमियों के पीछे फिर रही है। हम औरतें काम करती थीं। अब कोई नहीं हँसता। चलो, बाहर चलो। सब लोग आ गये हैं। समराई, रमाई, बुद्धू, बाँगिया, सब बुजुर्ग सरदार आ गये हैं। बुद्धू ज़िन्दा है, यह नहीं मालूम था।'

'चल।'

नये घर के बरामदे में बीरसा उठ खड़ा हुआ। उसके आदेश से नगाड़े पर चोट मारकर डोन्का मुंडा ने सबको रोक दिया। बीरसा उजला सफ़ेद कपड़ा पहने था। सिर पर पगड़ी, बदन में फिरन[1], पैरों में खड़ाऊँ थी।

बीरसा बोलने लगा : 'मुंडा लोगो, सुनो ! तुम लोग बड़े अच्छे समय पर आये हो। जेहल में बैठे-बैठे मैं यही सोचता रहा कि कैसे तुम लोगों को किस राह पर ले जाऊँ ! अब राह मिल गयी है। तुमको राह दिखाऊँगा।'

'दिखाओ, हे धरती के आबा !'

'पहले ही कह दूँ कि उस राह पर चलने से शरीर रहेगा या चला जायेगा, यह सोचने से काम नहीं चलेगा।'

'नहीं सोचेंगे।'

'तो सुनो ! आज से जो मुझे पूजेगा वही बीरसाइत है। तुम्हारे पास समय नहीं है। इतने दिनों तक सोचा कि मुंडाओं का दुश्मन कौन है ? कौन उनका दुश्मन है ? यही ज़मींदार-जोतदार-महाजन ? जो लोग आकर हमारे खेत-खलिहान पर जमकर बैठ गये हैं, क्या वे ही दुश्मन हैं ? या वह सरकार भी जिसने हमारे गाँव ज़मींदारों के हाथों में रख दिये !'

'तुम बताओ, कौन दुश्मन है ?'

'सभी दुश्मन हैं। हमारी लड़ाई सबके साथ है ! ऐसी लड़ाई मुंडा लोगों ने कभी नहीं लड़ी। सारे दिकू लोगों के साथ लड़ाई है। लड़ाई सरकार के साथ भी है।'

'बाद में...?'

'हमारे जंगल हैं। हम जंगल-जंगल, पहाड़-पहाड़ जायेंगे, चौकियाँ बनायेंगे। उनके पास बंदूकें हैं, लेकिन कितने लोग बंदूक चलायेंगे ? हम हज़ारों में हैं।'

'तो बताओ।'

'तो सुनो। इस वक़्त दो तरफ़ काम है। हमारा धर्म का काम, हमारा लड़ाई का काम। जलमाई के सोमा मुंडा को तुम जानते हो। सरदार सोमा। मुलकी लड़ाई के समय से बहुत मार खायी है, बहुत जेहल

---

1. ढीला चोगा।

काटी। उसे हमने धर्म के काम में एक ओर रखा है। हमारे धर्म में किसी संन्यासी से काम नहीं निकलेगा। जो लड़ सकता है, उसी की जरूरत है।'

'अच्छा कहा, हे भगवान !'

'आज से सारे बीरसाइतों का घर इस लड़ाई का गढ़ होगा। वहाँ बिरस्पत को और इतवार को सब मिलेंगे। धर्म की बातें, लड़ाई की बातें—करेंगे। जब मिलेंगे तो रात में ही मिलेंगे।'

'रात में ही मिलेंगे।'

'आज इस गाँव में, कल पाँच कोस दूर दूसरे गाँव में, हर दिशा में हमारी सभाएँ होंगी। यह सब खबर तुमको दोनों कनू से मिलेंगी—मेरा भाई कनू मुंडा और शंकरा गाँव का कनू मुंडा।'

'हम क्या करेंगे ?'

'एक दल, जिनका घर जंगल के बहुत भीतर है, थाने से बहुत दूर, वे बनेंगे प्रचारक। उन्हें प्रचारक, गुरु या जो चाहे कहो। उनके घरों में पहले इतवार को, फिर बिरस्पतवार को बीरसाइत लोग रात में मिलेंगे। जो बीरसाइत का घर है, वह सबको सोने की जगह देगा। जो जायेंगे, वे जो भी हो सकेगा साथ ले जायेंगे; सब एक साथ पकाकर बाँटकर खायेंगे।'

'यह बात अच्छी है। नहीं तो किसी की सामर्थ नहीं कि दस मुँहों को दाना दे।'

'एक दल तुम लोग। सरदार लोग, जो बुजुर्ग हैं, तुमने ही हमको लड़ाई की बातें सिखायी हैं। मैं भगवान हूँ, यह तुम लोगों को ही पहले मालूम हुआ। तुम पुराणक हो। तुम लोग लड़ाई की बातें सिखाओगे। कहाँ भागेंगे, छिपेंगे, किस तरह चौकियाँ बनायेंगे, किस तरह से हथियार जमा करेंगे—यह सब लोगों में सिखाने की सामर्थ नहीं है। तुम लोग असली काम करोगे।'

'करेंगे भगवान, करेंगे।'

'सोमा देखेगा, डोन्का देखेगा, काम के आदमी चुन लेगा। बीरसाइत बनायेगा। अब रह गये नये बीरसाइत। वे नये हैं। नये लोग इतवार को, बिरस्पत को पंचायतों में नहीं आयेंगे। वे बीरसाइत रहेंगे। पुराने लोगों से लड़ाई सीखेंगे।'

'अच्छा कहा, भगवान !'

'अब ऐसे धीमे-धीमे काम नहीं चलेगा। पहले हम एक-साथ काम करेंगे। लड़ाई सीखना, नयों की भरती करना, पंचायत, चौकी की तैयारी, रसद जमा करना—सारे काम साथ-साथ चलेंगे। लेकिन हमें पहले अपना दखल पाना होगा। पुराना देवस्थान चाहिए। इसीलिए। चुटिया और

जगन्नाथपुर के मन्दिर छीन लेंगे। मन्दिर हमारे थे—उन मन्दिरों में अब हम घुस नहीं सकते। दिकू राजा, दिकू ज़मींदार, जैसे उनके सामने हमें बड़ी धोती, पगड़ी, जूता नहीं पहनने देते—जिस तरह हमें काँसे-पीतल के बर्तनों में खाने नहीं देते—जिस तरह हमें ऊँचे आसनों पर बैठने नहीं देते—उसी तरह हमारे पितर-पुरखों के मन्दिरों में घुसने भी नहीं देते !'

'मन्दिर छीन लेंगे।'

'मुंडाओं की आदि राजधानी नौरतनगढ़ के क़िले से पानी लायेंगे, मिट्टी लायेंगे, दख़ल करेंगे।'

'दख़ल करेंगे।'

बीरसा ने दोनों हाथ उठाये; उनके बीच उतरकर आया। बोला: 'अब और धीमी-धीमी लड़ाई नहीं होगी। एक साथ सारे मुंडा पूरे देश-भर में लड़ेंगे। हमारी इस लड़ाई का नाम होगा उलगुलान। समझे? उल-गुलान !'

'उलगुलान ?'

'उलगुलान !'

बीरसा ने दोनों हाथों में लकड़ी लेकर नगाड़े पर ज़ोरों से चोट की। सैकड़ों गलों से आवाज़ उठी : 'उलगुलान।'

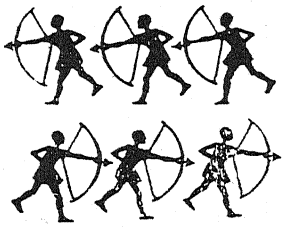

उलगुलान ! नये लड़कों—नानकों—की दीक्षा के मंत्र बने यही पाँच अक्षर ! हाट में, जंगल में, पहाड़ पर, शहर में, दो अनजान मुंडा मिलने पर कहते : 'उल।'

दूसरा कहता : 'गुलान।'

तब दोनों एक साथ कहते : 'उलगुलान।' उसके बाद अपने-अपने कामों से चले जाते।

हाट-बाज़ार में बाँसुरी बजाकर घूमना उन लोगों की हमेशा की आदत थी। अब देखा गया, बहुत-से गाँवों के मुंडा एक साथ होने पर एक आदमी गाने का एक थोड़ा-सा हिस्सा बजाता। फिर दूसरा आदमी बाद का सुर निकालता और तीसरा अगला सुर। उसके बाद कोई चौथा आदमी पूरा गाना बाँसुरी पर बजाता।

पलुस प्रचारक ने मोहनराम आढ़तिये से कहा : 'यह बाँसुरी बजाने का क्या तरीक़ा है जी ? ऐसा तो कभी नहीं सुना था।'

'इन सालों ने शहरी ढँग अपना लिया है। जेहलखाना करने शहर जाते हैं, मेला देखते हैं, नौटंकी—गाना बजाना, कुछ भी सुनने को रह गया है ?'

पलुस प्रचारक से भरतसिंह दारोगा बोला : 'तू तो मुंडा है। तेरी समझ में कुछ आता है ?'

पलुस बोला : 'नहीं, नहीं समझता।'

पलुस ने मन-ही-मन सोचा : अगर समझता हूँ तो तुम्हें बताने नहीं जाऊँगा। अब मैं निकाला हुआ हूँ। मुंडा मेरा विश्वास नहीं करते, लेकिन मेरे मन में कोई खुशी नहीं है। मेरे अपने कई लोग सब इस अकाल में मर गये। सबको तो किरस्तान होने पर भी अन्न नहीं मिला। नया क़ानून बनने से लुकास, मैथ्यू, किरस्तान वगैरह रैयतों की तकलीफ़ें भी बढ़ गयीं। मैं भला नहीं कर सकता तो बुरा करने भी न जाऊँगा।

भरत से पूछा : 'तुम किसे खोज रहे हो ?'

'सुनारा को। सूरजसिंह के मुंडा को। साले ने बेगारी के पट्टे पर निशान लगाया था, फिर भी ऐसा पाजी है कि सूरज के घर में आग लगाकर भाग गया ! उस घर में कुछ टोकरियों के सिवा कुछ न था। पर चोरी तो की। मुक़दमा हो गया।'

'क्या चोरी की ?'

'चीना-दाना एक बोरी, एक ढेला नमक। साला बेवकूफ़ है। जो वज़न चीना-दाना का होता है वही चावल का होता है। यह लिया, वह क्यों नहीं लिया ? मुक़दमे में भी फँस गया !'

'वह कहाँ है ?'

'पकड़ जो लिया गया ?'

'दो महीने की जेल होगी, और नहीं तो क्या ?'

'जेहल, यही न ?'

'हाँ। बीरसा की तो सरकार ने कमर तोड़ दी। अब मुंडा लोगों की

छाती में ज़ोर नहीं रहा। जेल हो जाने से और लोग भी डरने लगे।'

पलुस प्रचारक ने ताज्जुब से सिर हिलाया। मुंडाओं का क्या हुआ? बेगारी का पट्टा लिखकर कोई मुंडा मालिक के घर में आग लगाकर भाग भी सकता है?

भरत दारोगा बोला: 'मुंडा चोर नहीं थे; चोरी नहीं जानते थे। यह आये दिन हो क्या गया?'

'जाओ, जाओ। अब बेकार की बातें मत करो। मुझे दो-तीन जगह यीशु की वाणी सुनानी होगी।'

रोगोता की यह हाट बड़ी हाट थी। हाट में घूमते मुंडाओं को देखकर पलुस प्रचारक की आँखों में आँसू आने लगे। इस तरह अगहन में फ़सल बेचकर रुपये लेकर मुंडा हाट आते थे। मज़े उड़ाकर चूड़ी-खिलौने-बाँसुरी खरीदते थे। सफ़ेद गुड़, पेड़ा ख़रीदते थे। गमछा, कपड़ा बेचते। इस बार किसी के हाथों में पैसे नहीं थे। ख़रीदने की रुचि भी नहीं थी। छोटे बच्चों को भी मानो पता चल गया था कि ज़िद करने से कोई ज़िद मानी नहीं जायेगी। इसी से वह उतरा-सा चेहरा लिये उदास चले जा रहे हैं—बूढ़े लोग पेड़े-जलेबी की ओर आँख तक नहीं उठाते। मुंडा लड़कियों के चेहरों पर हँसी तक नहीं थी।

घर लौटते-लौटते पलुस का मन ख़राब हो गया। वह एक पत्थर पर बैठ गया। पत्थर की टेक लगा ली। टेक लगाकर बैठा था—इसलिए बाँसुरी पर जो गाना बज रहा था उसे उसने सुना।

वह ऊँचे पर पत्थर की ओट में बैठा था। नीचे सड़क थी। मुंडा लोग गाँवों के दल बनाकर चले जा रहे थे। एक गाँव के लोग पीछे थे। झुंड के साथ बात नहीं करते थे। एक कड़ी इन्होंने गायी; दूसरी कड़ी उन्होंने गायी:

बोलोपे बेलोपे हेगा मिसि होन् को...
यह सरदुला के रहने वाले थे।
होइउ डुडुगार हिजु ताना...
यह करदी के निवासी थे।
ओते रे डुडुगार सिरया रे कोआन् सि...[1]
यह माह्री के लोग थे।

1. यह गीत पहले भी आ चुका है—देखें पृष्ठ 29।

दिसूम् ताबु बुआल ताना...।
आमजोरा के लोगों ने गाया।
ताइओम् ते दो होरा कापे नामिआ...।
ये जामदा के लोग थे।
दिसूम् ताबु नुवा जाना।...
सिरुबुआ की लड़कियों ने गाया।

उनकी आवाज़ें धीमी, सिर झुके हुए थे। सभी ने गाया; फिर गाना रुका। वे चले जा रहे थे, चलते ही जा रहे थे। पलुस प्रचारक के कलेजे में अव्यक्त पीड़ा उठ खड़ी हुई थी। वे सबकों पुकार रहे थे, क्योंकि यह महा-प्रलय की आशंका में एकत्रित होने का गीत था। पलुस प्रचारक ने आँखें पोंछीं। वह दल से अलग हो गया था। अब मुंडा लोग जब एक होंगे तो वे पलुस प्रचारक को अपने दल में न लेंगे!

कुछ समझकर, कुछ समझे बिना उसके हृदय में गर्व भर आया। फिर भी तो सुनारा, एक अभागा भूखा लड़का, नौकरीपट्टे के भयानक अनुशासन में चिंगारी लगाकर भाग खड़ा हुआ है! नौकरीपट्टा ज़मींदार-महाजन-जोतदार-आढ़तिये जिस भाषा में लिखते, वह भाषा मुंडा लोग नहीं समझते थे। मुंडा लोगों को नहीं मालूम था कि नौकरीपट्टा ग़ैर-क़ानूनी था। वे अँगूठे की निशानी लगाकर जनम-जनम के लिए गुलाम बन जाते! मुंडाओं को अगर मालूम भी हो, तब भी कुछ कर नहीं सकते थे, क्योंकि तब मालिक नौकरीपट्टे का अस्तित्व अस्वीकार कर देता। मुंडा बेवकूफ़ बन जाता।

मुंडा चिल्लाता : 'तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ?'

अदालत में सब हँसने लगते।

'तो वकील बाबू ने क्यों कहा था कि तुम पर मुक़दमा कर देंगे?'

अदालत में सब हँसते रहते!

'अरे नौकरीपट्टे पर कोई अँगूठे का निशान न लगाना—यह बात कहने से भी कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि अकाल होने पर, सूखा पड़ने पर, बाढ़ आने पर गाँव-गाँव जायेंगे ही। कहेंगे : नौकरीपट्टे पर छाप लगवाकर हमें ख़रीद लो! घाटो देकर जान बचाओ। जनम-भर आपके खेत में, गोठ में, घर में काम करेंगे।'

मुंडा लोगों का जीवन ही यह है। सभी जानते हैं, नौकरीपट्टा मुंडा लोगों के जीवन को लपेटे हुए बहुत-से नागपाशों में एक और पाश है! दिकू

लोग शंखचूड़[1] की तरह विषैले हैं !

वे मुँह बाये बैठे हैं। भूखे शंखचूड़ को भोजन की तलाश में कहीं जाना नहीं पड़ता ! दूसरे साँप अपने-आप उसके मुँह में चले जाते हैं।

एक लड़का चकमक ठोंक, आग जलाकर भाग गया। पलुस पत्थर पर से उतरा। अपने गाँव की राह पकड़ी।

और वही लड़का सुनारा उतने दिनों में वीरसा के पास चीना-दाना का बोरा और नमक का डला रखकर नानक बन गया। करमी बोली : 'तेरे भी क्या कोई नहीं है, बेटा ?'

'क्यों, भगवान है न ?'

'सब खालभरों[2] के मुँह पर वही एक बात है। पूछती हूँ, बाप नहीं है ? माँ नहीं है ? भाई-बहन भी नहीं हैं ?'

'नहीं ! मैं सेवक बन गया हूँ।'

करमी ने सिर हिलाया। लेकिन सुनारा चालकाड़ छोड़कर नहीं गया। एक दिन करमी बोली : 'भगवान के पीछे न जाकर जंगल में मेरे पीछे क्यों आया ?'

सुनारा लकड़ी काट, बोझा बाँध, घसीटकर ले आया। बोला : 'तुम घर जाओ। लकड़ियाँ मैं ला दूँगा।'

'तेरे भगवान से कह दूँगी !'

'भगवान ने कहा है।'

'क्या ?'

'मेरी माँ को देखना।'

'उसकी माँ ? देखेगा तू !'

'देखना ही पड़ेगा। घर तो तुम्हारा नहीं है। भगवान का घर है। भगवान जो-जो कहेगा, वही करना होगा।'

'घर में वह रहता नहीं, माँ की फिकर उसके मन में रहती है ?'

'रहती है जी।'

सुनारा घसीटकर लकड़ियाँ ले आया। झरने से पानी ला दिया। ओखली में जुआर कूटकर सत्तू बना दिये। जंगल से आँवले, कन्द, शकरकन्द, बाँस की कलियाँ जमा कर ले आया। एक दिन करमी को बाय की दवा भी ला दी।

---

1. काला नाग।
2. औरतों द्वारा दी जाने वाली एक गाली।

'बेटों ने देखभाल नहीं की, सो तू कर रहा है !'

'तुम्हारे कोम्ता बेटा है, कनू बेटा है, सब भगवान का काम कर रहे हैं ? वे कैसे देखभाल करेंगे ?'

'तू क्यों देखभाल करता है ?'

'मैं नानक हूँ। जब वक़्त आयेगा लड़ाई पर जाऊँगा।'

'लड़ाई पर जायेगा ? खरगोश मारने पर तू रोने नहीं बैठ जाता है ?'

'उससे क्या ?'

करमी ने गहरी साँस ली। बोली : 'ले, बकरियों को घर ले जा। आज बीरसा घर आयेगा। काम है।'

'लेकिन कल मैं नहीं रहूँगा।'

'कहाँ जायेगा ?'

'जहाँ भगवान कहेंगे।'

'फिर नहीं आयेगा ?'

'मुझे क्या पता ?'

'कहाँ जायेगा ?'

'जहाँ भगवान बतायेंगे।'

शाम को बीरसा, कोम्ता, कनू—तीनों बेटों को एक साथ देख करमी ने आँखें झपकायीं। बोली : 'दासकी और चंपा, दोनों बहनें कहाँ हैं ? उनके वर कहाँ हैं ?'

बीरसा मुसकराया। बोला : 'क्यों !'

'सब आ गये, वे क्यों रह गये ?'

'वे भी आयेंगे।'

'तू भगवान हो गया, ऐं ! कोम्ता, कनू ने सगाई की, लड़कियाँ दूल्हों के घर गयीं। सबको क्यों खींच रहा है ?'

साफ़-साफ़ ग़ुस्से की बात थी। लेकिन रात में जब बीरसा लकड़ी के मचान पर चढ़ कर खड़ा हुआ तो आने वाली लड़ाई के बारे में बोलने लगा—उस समय करमी सब काम छोड़कर अँधेरे में पीछे आकर बैठ गयी। बेटे के लिए उसे जितना गर्व था, उतना ही डर भी था। अज्ञात भय से कलेजे में धमक होने लगती ! करमी को याद है—छुटपन में उनके घर में दिबाई मुंडा का, उसके पिता का, एक बड़ा-सा नगाड़ा था। उसे कोई हाथ नहीं लगाता था। तब उन लोगों का मकान पहाड़ की ढलान पर था। जब जंगल में आग लगती, नदी में ज़ोरों की बाढ़ आती, जंगली हाथियों का

झुंड निकलता, तो दिबाई मुंडा उस नगाड़े पर चोट लगाता—दिम्-दिम्-दिम् !

तब सभी को पता चल जाता कि मुसीबत आ गयी है।

करमी के कलेजे में मानो नगाड़े का वही संकेत नि:शब्द बजता रहता है—दिम्-दिम्-दिम् !

बीरसाइत लोग खड़े हो गये। सब बीरसाइतों का पहनावा था सफ़ेद धोती। घुटनों तक नीची पहनी हुई सफ़ेद धोती ! पैरों में घर के बने कच्ची लकड़ी के खड़ाऊँ। खड़ाउँओं का अभ्यास नहीं था, इसलिए उन्हें पैरों में डोरी से कसकर बाँधा गया था। ये केवल पंचायत के वक़्त पहनना होती थीं। हरएक के गले में जनेऊ, माथे पर तिलक था।

सामने की पाँत में पुराने पुरखे खड़े हुए थे। बाद की पाँत में प्रचारक, उसके बाद नानक।

पुराने पुरखे बोलने लगे : 'सबके ऊपर स्वर्ग के भगवान की जय !' पृथिवी के भगवान बीरसा की जय ! हम धरती के आबा से प्रार्थना करते हैं—हमारे तीरों और हमारे फरसों में धार रहे, तेज़ी बने रहे। हमारे दुश्मनों की बन्दूकों, गोलियों और तलवारों का नाश हो !'

अब सब लोग हाथ जोड़कर बोलने लगे :

हे धरती के आबा, राह के जितने काँटे
दुश्मनों की हिंसा, द्वेष...हमारी पीड़ाएँ
दु:ख के दिन, दु:स्वप्न...
सारे रोग—सारे पाप
और अंगरेज़ सरकार...
सारे काँटे दूर हों ! दूर हों ! दूर हों !

अब प्रचारक लोग एक साथ बोले :

हे आबा ! हे बीरसा ! तुम्हारे धर्म में जैसे बताया है,
उसी तरह हमारे होरोमो-रोया-जी
(शरीर-विदेह, सत्ता-प्राण-आत्मा-मन)
आकाश से पृथ्वी तक फैल जायें !

नानक बोले :

हे धरती के आबा ! एक तुम ही हमारे त्राता हो। हमें पवित्र करो !

बीरसा ने आकाश की ओर हाथ उठाये। ऊपर की ओर ताका। उसके बाद कहना शुरू किया : 'बड़ा शुभ दिन है। मेरा युग शुरू हो रहा है। आज जमींदार लोग मुंडा लोगों को देखकर हँसते हैं। लेकिन उनका समय खतम

हो रहा है। हमारा समय आ गया है।'

बीरसा का स्वर भीषण और गंभीर था।

'हमारा युग आ गया है। तुम लोगों को मैं देश लौटा दूँगा। हमारे राज में खेत-खेत के बीच में मेड़ें नहीं होंगी। पूरी धरती सबकी है। पूरी खेती एक साथ होगी। सारी खेती सबकी होगी। अगर उठाकर हाथ में कोई फ़सल दे भी दो तो भी मेरे राज में कोई मुंडा अकेले मालिक न होगा। मेरे राज में लड़ाई न रहेगी। धर्म का राज होगा। हमारे पुरखों ने जिस तरह धर्म के अनुसार राज किया, अपने राज में हम वैसे ही राज करेंगे। लाठियों और हथियारों से राज नहीं चलायेंगे।'

करमी की आँखें बन्द होने लगीं। कलेजे में ठंडी हवा बहने लगी थी। जलवाही पवन! सूखे की तपन शान्त करने वाली! कलेजे में वर्षा हो रही थी। खेतों में धान के पौधे खड़े हो रहे थे—'बीरसा, तू बोलता रह, तू सचमुच भगवान है!'

'ज़मींदार जमीन छीनकर अपनी मिल्कियत जमाना चाहते हैं। जिनका हक है, जमीन उन्हें ही मिलेगी। जिनके शरीर से दूध की धार की तरह रक्त बहेगा, जमीन उन्हें ही मिलेगी।

'सारे दुश्मनों को भगा देंगे! अंगरेज़, राजा, ज़मींदार...इस देश में जितने शैतान हैं, पिशाच हैं, सबको भगायेंगे।

'मुंडा लोगों को दुश्मनों का सामना करना होगा, नहीं तो सैकड़ों बरसों में भी देश को वापस नहीं पा सकेंगे। भयंकर लड़ाई होगी, तभी दुश्मनों का राज ख़तम होगा, नहीं तो नहीं। आज तमाम लोग हँसते हैं; हज़ारों मुंडा लोगों के दिन रोने में बीत जाते हैं। अपना राज हो जाने पर ही मुंडा हँस सकेंगे।

'सावधान रहो तुम सब लोग।'

बीरसा थोड़ा-थोड़ा हिलने लगा। इस माघ की ठंडक में भी उसके माथे से पसीना बह रहा था। करमी को लगा कि उसका मुँह सूखा है और दोनों भौंहों के बीच की रेखा चिरस्थायी हो गयी है, और तीखी नाक के नथुनों के दोनों ओर की रेखाएँ ओठों के कोनों के बराबर तिरछी होकर झुक रही हैं। करमी को लगा कि उसके जन्म के बाद की चौबीस होलियाँ नहीं बीती हैं, अभी बीरसा अपने बाप-दादा-परदादा की उमर के मुंडाओं से भी जैसे बुजुर्ग हो गया है! लगता था—मेरा जवान बेटा नयी सगाई कर, नयी बहू लाकर गृहस्थी बसायेगा। लेकिन नियति ऐसी है कि मुंडा लोगों के सारे दारिद्रय-वंचन-अनाहार का बोझ उसने अपने कंधों पर ले लिया है।

'सावधान हो जाओ तुम लोग। इस धरती का महाप्रलय में नाश होगा। मैं धरती फोड़कर पाताल का जल बहा दूंगा। पहाड़ों को तोड़कर बराबर कर दूंगा। दुश्मनों की फ़ौजें कहीं भी भागें, मैं खींचकर सामने ला खड़ा करूंगा। वे भागेंगी कहाँ ?

'जीत हमारी ही होगी। उस दिन तुम लोग छाती फुलाकर, हाथ उठा कर, मूँछें ऐंठकर आनन्द मनाओगे। जो लोग मुझे न मानेंगे वे मिट्टी हो जायेंगे। जो लोग मुझे मानेंगे मैं उनका ख़याल रखूंगा।'

अँजुली-भर पानी लेकर बीरसा ने सबकी ओर छिड़का। बोला : 'कल से हम हर ओर जायेंगे। उलगुलान के लिए पुरखों का आशीर्वाद चाहिए। कल सब चुटिया जायेंगे। हमारे पुरखे उसी पूर्ती मुंडा चुटिया ने जिस जगह सिंबोङा की पूजा के लिए वेदी बनायी थी, वहीं रघुनाथ राजा ने तीन सौ बरस पहले मंदिर बनवाया था। जो मंदिर बनवाया था, उस मंदिर से तुलसी लेंगे। मंदिर से तुलसी लेंगे।

'और...।'

करमी उठकर खड़ी हो गयी।

'तुम क्या कह रही हो !'

'कनू का बाप कहेगा।'

सुगाना उठ खड़ा हुआ। बोला : 'और वहाँ तुम्हारी पट्टी है। ताँबे की पट्टी पर लिखा है, जिसे दिकू छोटा नागपुर कहते हैं, रेकड[1] किया हुआ है, वहाँ मुंडा लोगों का पूरा अधिकार है। वह पट्टी मंदिर में है, हमें लेनी होगी। तुम धरती के आबा हो। मैं तुम्हारा बाप होकर भी तुम्हारा बीरसाइत हूँ। वह पट्टी लेनी होगी।'

'लेंगे। कल हम बोर्तोदि जायेंगे। वहाँ से चुटिया जाने के लिए तीन दलों में बँट जायेंगे। पहले दल के सिरे पर होंगे बनगिरि के रोकन मुंडा। दूसरे दल के आगे होंगे मेरे बड़े भाई कोम्ता। मैं तीसरे दल के आगे रहूँगा। आज सब जान रखो, धर्म में रहने से वे देखते हैं ! पहान के पैर पकड़कर हम बलि न देंगे। रोग-भोग में डाइन-ओझा-देओंरा के पास नहीं जायेंगे। लेकिन पुरखों ने जो बताया है कि स्वर्ग में सिंबोङा, धरती पर पंचायत, बीच में है सरकार—यही बात याद करके हम चलेंगे। मैं धरती का आबा, सिंबोङा को नहीं चाहता। सरकार हम बना लेंगे। लेकिन कुछ लोगों की पंचायत बनेगी जो समाज को देखेगी। कल हम सब जायेंगे।

---

1. रिकॉर्ड।

पुरखों को मालूम होगा कि मुंडा सिर्फ़ सोते ही नहीं हैं, बँधकर मार नहीं खाते, वे जाग गये हैं !'

सब बीरसाइत एक साथ गाने लगे :

सिरमारे फिरून राजा जय !
धरतिर पुड़ोइ राजा जय ![1]

अब सब चुप हो गये। औरतें गुनगुनाकर गाने लगीं :

सिरमारे फिरून राजा जय !
धरतिर पुड़ोइ राजा जय !

करमी नहीं गयी; कोई बीरसाइत औरत नहीं गयी। 'पहले घर आकर बता जाना, बाप'—करमी ने बीरसा से कहा था।

वे लोग यहाँ आयेंगे, इस आशा में करमी ने घर-द्वार लीप-पोत डाला। बीरसा चालकाड़ आकर नयी कोठरी में रहता था। आँगन के उस ओर और भी कोठे बन गये थे। तमाम घरों में नयी-नयी कोठरियाँ बन गयी थीं। पहले मुंडा लड़के-लड़कियाँ, ब्याह के पहले तबीयत होने पर, गिटिओरा[2] में रहते थे। अब बीरसा के प्रभाव से बहुत-से पुराने रीति-रिवाज़ों के साथ गिटिओरा में रहना भी खत्म हो गया था। इसीलिए जिसके कई लड़के होते उसे ही कमरे की ज़रूरत होती।

करमी के घर के चारों ओर नये-नये कमरे थे। बीरसा के धर्म में सबके लिए साफ़ रहना ज़रूरी था। घर-घर में लकड़ी के तख्त थे। तख्त पर चटाई बिछायी जाती थी। बीरसा के कमरे के फ़र्श और दीवारों को करमी ने एक बार गेरू से लीप दिया। फिर गेरू को सुखाकर राख के रंग की मिट्टी को कूँची से उस पर लेपा। सूखकर सब चमकने लगा।

बृहस्पतिवार को बीरसा का जन्मदिन था। उस दिन कोई जीव-हत्या नहीं की जाती। जाल काटकर करमी ने दो खरगोश छोड़ दिये, उसके बाद पलाश के पेड़ के नीचे चटाई के आसन पर बैठ गयी। बीरसा इसी राह आयेगा।

लेकिन बीरसा नहीं आया। आया सुनारा।

'हाँ रे, वह नहीं आया ?'

'नहीं ! यहाँ आयेगा ? बोर्लोदि की ओर यात्रा की है, वहीं लौटना

1. जय स्वर्ग के ईश्वर की—जय पृथ्वी के भगवान की !
2. बहुत-से लोगों की सोने की जगह।

होगा।'

'वहीं लौटना होगा ?'

'हाँ रे, मैं यही ख़बर देने आया हूँ। भगवान ने भेजा है।'

गाँव की दूसरी औरतें, बूढ़े, लड़के-लड़कियाँ—सब आ गये ! सभी सुनारा को घेरकर खड़े हो गये। सुनारा को बड़ा गर्व हुआ। सभी उसको देख रहे थे, उसकी बात सुनने के लिए खड़े थे। भगवान के आने पर उसे कौन देखता, कौन उनकी बातें सुनता ? करमी के छोटे बेटे कनू के आने पर भी कोई सुनारा की बातें न सुनता। कनू जब बोलता तो सब काम छोड़कर सुनना होता।

'बोल रे, नानक ?'

'ठहरो भाई, ज़रा आराम तो कर लूँ ! कोई एक बात है।'

'आराम बाद में करना। पहले बताओ।'

'तो सुनो। हम तो बोर्तोदि से क़तार बाँधकर चले। रास्ता बहुत था। एक दिन में पूरा होने लायक़ नहीं। कहाँ बोर्तोदि और कहाँ चुटिया ! भगवान ने जैसा कह दिया था, उसी तरह कोम्ता-रोकन दोनों ही ने पूछकर उनसे कहा : हम जम्बुल से आयेंगे। चुटिया जायेंगे, उसे अछूता रखकर बाहर से पूजा करेंगे। यह बात सुनकर हममें से किसी ने कुछ न कहा। हमें हाटिया पहुँचने में साँझ हो गयी। वहाँ कटहल के गाछ के नीचे हमने आग जलाकर खाना पकाया, खाया। वहाँ भगवान ने हमें बातें बतायीं। कैसी बातें, पता है ?'

'बताओ।'

'वह पत्थर-मिट्टी की बात है। नीचे तीन पत्थर, पत्थरों पर मिट्टी का ढेर, चूल्हा बन गया ! भगवान जमीन पर टेक लगाकर लेटे थे। बोले : देखो ! पत्थर उठता जाता है, मिट्टी नीची होती जाती है !'

'जय भगवान !'

'सबने एक-एक कर दो बार देखा—पत्थर नीचे हो रहे थे; मिट्टी उठ रही थी। भगवान से वह बात कही। लेकिन भगवान फिर बोले : देख आओ, पत्थर उठ रहा है, मिट्टी धँस रही है। सबने जाकर देखा, चूल्हा जैसे जलता है उसी तरह उसमें सूखकर मिट्टी का डला जाकर पत्थर के नीचे पड़ा है ! हाँ, भाई !'

'अच्छा ?'

'तब भगवान ने सबको समझा दिया। दिकू लोग आज तुम लोगों पर सवार हैं, तुम्हें नीचे ढकेल रहे हैं। लेकिन उलगुलान में सब जल जायेंगे। तब उनकी आँच से तुम ऊँचे उठोगे, वे दब जायेंगे।'

बीरसि मुंडा की पत्नी गिरि मुंडानी रो पड़ी। वह करमी से बोली : 'हाँ रे, तुम औरत-मरद को यहाँ रखा मेरे मरद ने। भगवान को नन्हा-सा लेकर तू आयी थी। मेरे पास रखकर जंगल में लकड़ी इकट्ठा करने जाती थी। मछली पकड़ने झरने पर जाती थी। तुझसे बताया नहीं था कि यह लड़का चमत्कार करेगा। इसके मुँह पर चाँद-सूर्य चमकते हैं!'

बीरसि मुंडा बोला : 'हो:, जैसे तूने ही पहचान लिया था! मैं अगर नहीं पहचानता, तो उसे लाता ही क्यों?'

करमी विरक्त हो उठी, लेकिन भगवान की माँ होने से क्षमा करना भी सीखना पड़ता है। विरक्ति दिखाना ठीक नहीं था। वह बोली : 'तुमने ठौर दिया था, जान बचायी थी, जितने दिन घर नहीं बना, रहने को घर दिया था, वह बात तो मैं सबसे कहती हूँ।'

बीरसि मुंडा बोला : 'अब सुनो, नानक क्या कहते हैं! आहा! मेरे जाने से, मैं पुराण-पुरुष हूँ, अपनी आँखों से देखता, लेकिन देह में ज्वर है। रोग होने से देह अशुचि रहती है, इसी से घर पड़ा रहा। तू आगे कह, बेटा।'

सुनारा बोला : 'हाटिया से हम चुटिया गये। राँची बहुत पास था। सभी ने मन-ही-मन सोचा—साहब को पता चलेगा तो क्या होगा? लेकिन भगवान का मुँह देखकर सब डर चला गया। चुटिया से हम पिता-पुरुष, आदि-देवता, धरती के आबा—सभी गाने गा-गाकर खूब नाचे। ओ:, बूढ़ा धानी खूब नाचा; बूढ़ा उछल सकता है, मैं उस तरह कुछ नहीं कर सकता। उसके बाद मंदिर में घुसकर हमने सारे ठाकुरों का नाश कर दिया, तुलसी ली, लेकिन ताँबे की पट्टी खोजने पर भी नहीं मिली।'

'नहीं मिली?'

'नहीं।'

'उसके बाद?'

'उसके बाद बहुत आदमी आ गये। बहु—त हल्ला हुआ। भगवान बोले : हमारे पुरखों का मंदिर है, हमने क़ब्ज़े में ले लिया है। दिकू के जितने देवता थे सबको अशुद्ध कर दिया है। मूल-तुलसी गाछ उखाड़ लिये हैं।'

उसके बाद?'

'हम चले गये सिरुमटोली। राह में भगवान सबसे कह आये—अब मत चलो। काम हो गया। सिरुमटोली में हम सोये; वहाँ पलुस प्रचारक शायद मिशन के काम से गया था। उसने जाकर भगवान को उठाया, पता नहीं क्या कहा। भगवान हमको जगाकर रात के अँधेरे में बोर्तोदि ले आये।

बोले : चुटिया से पुजारी ने घुड़सवार भेजकर राँची खबर भेजी है। राँची में साहब ने कहा है—सवेरे से मुनादी होगी—भगवान ने फिर मुंडा लोगों को भड़काया है, दंगा करा रहे हैं; उन्हें जो पकड़वायेगा, इनाम पायेगा। सब आये—शुधा, चैता, काशी। रमई मुंडा नहीं आये; वे हमारे साथ नहीं थे।'

'वे पकड़े गये ?'

'हाँ, भाई। सब बात जान आया। उसी से तो एक दिन की देरी हो गयी। कनू प्रचारक ने बताया कि चैता, काशी, रमई कह रहे थे, हम क्या करें ? जो किया, वह भगवान के हुकुम से। हमने कोई दंगा नहीं किया। दारोगा ने डाँटकर कहा : मंदिर में क्यों गये थे ? उन्होंने कहा : गये तो थे, लेकिन सबको पता है, यह मंदिर मुंडा लोगों के पुरखों का देवथान है !'

'अब वे लोग ?'

'बोर्तोदि में हैं।'

'वहाँ पुलिस नहीं जायेगी ?'

'नहीं, पता नहीं चलेगा ! अकाल के समय से उधर कोई दारोगा नहीं जाता। सब दस मील दूर थाने में बैठकर रिपोर्ट लिख देते हैं—जाकर देख आया—सब ठंडा हो गया है। कई घोड़े धानी आदि ने मार डाले न ? उससे वे लोग डरते हैं।'

कुछ सोचकर करमी ने कहा : 'पलुस प्रचारक ? वह बीरसा का कब से भला चाहने लगा ? इसी आँगन में तो वह पुलिस के साथ आया था।'

बीर्सि मुंडा और दूसरों ने हलकी भर्त्सना में कहा : 'तुम बड़ी भुलक्कड़ हो। मन-ही-मन जो भी कहो, मुँह से बीरसा क्यों कहती हो ? यह अच्छा नहीं है।'

'गलती हो जाती है। उसकी फिकर में मेरा दिमाग ठीक नहीं रहता। लेकिन तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।'

बीर्सि मुंडा सूखे गले से बोला : 'उसकी जाति के बहुत-से बीरसाइत पिछले साल अकाल में मर गये। अब साहब लोग सोचते हैं कि वह दिखावे ही की सहानुभूति रखता है—मन-ही-मन मुंडा लोगों के साथ बीरसाइत हो गया है। मुंडा लोग उसे अपने मत का बनाये रखते हैं। सो बाद में मिशन के मुंडा भी जुरमाने से नहीं बचे। अब पलुस कुछ बुरा न करेगा।'

'बाद में करेगा ?'

'अभी नहीं करेगा। वह हवा को पहचानता है। हवा बदल जाने पर क्या करेगा, यह पता नहीं। माने अगर हवा बदलती, उलटी चलती तो पता नहीं क्या करता। अभी वैसा कुछ नहीं करेगा।'

करमी ने सिर हिलाया। बोली : 'तू क्या करेगा, सुनारा ?'

'कल सवेरे लौट जाऊँगा।'

'क्यों ?'

'जगन्नाथपुर से चंदन लाऊँगा, नौरतनगढ़ से मिट्टी।'

'अभी वे लोग नहीं आयेंगे ?'

'मालूम नहीं। नानक को कुछ पता रहता है ? जो हुकुम हो, उसी तरह हम काम करते हैं। तुम्हें कितना तो समझाया !'

'समझाता तो है। मैं भूल जाती हूँ।'

बीरसि मुंडा बोला : 'भगवान ने ठीक काम किया है। हमारे पुरखों की जितनी जगहें हैं, सबसे आशीर्वाद लेंगे। करमी, तू बड़ी भाग्यशालिनी है रे !'

'भाग्यशालिनी ?'

धीमे-से कहकर करमी घर में चली गयी। कोम्ता की बहू बोली : 'भगवान के लिए माँ रात में चोरी से रोती है। उनके छुटपन की बातें कहती है, और बहुत रोती है। कहती है—उसके लिए माँ का कलेजा धुखता है !'

'नासमझ है।'

सब एक-एक कर चले गये।

वे लोग जगन्नाथपुर चले गये। उसके बाद कोई खबर नहीं, कोई भी खबर नहीं। बीरसि मुंडा और दूसरे आदमी भी चले गये थे। करमी घर छोड़कर नहीं जा सकती। बीरसा ने उससे कहा था : 'माँ ! तुम घर पकड़े रहो।' करमी को बस ऐसा लगता—पता नहीं, क्या मुसीबत आयेगी !

रो नहीं सकती थी—कहीं अमंगल न हो ! सुगाना को गाली देकर पहले शान्ति मिलती थी, अब नहीं मिलती। नातिनों के बाल बाँधने का, उनसे बातें करने का मन नहीं होता था। बहू ने कहा : 'माँ, तू क्या उपास करके सूख जायेगी ? खाती क्यों नहीं है ?'

'देह अच्छी नहीं है।'

'जंगल जाऊँ ? दवाई ले आऊँ ? बताओ तो क्या हुआ है ?'

'कुछ नहीं रे।'

'सोती क्यों नही ?'

'नींद नहीं आती।'

'वे लोग आयेंगे ? धरती के आबा के साथ गये थे, उसमें ही तो मेरा मरद गया है। फिर भी मन में डर नहीं है।'

सवेरे उठकर करमी ने एक खंती और एक टोकरी ली। नातिनों से बोली : 'चल, बन से कंद ले आयें। खाकर देखेगी कि राँधने से कैसा होता है। चल, टोकरी ले। बेर ले आयें, आँवले सूखे पड़े हैं, ले आयें। बाद में झरने में नहा भी आयेंगे।'

वे वन में गये। इस बन में पलाश, सेमल, केंदू, पियाल, महुआ, पियासाल, साल के पेड़ों की बहुतायत थी। कहीं-कहीं पहाड़ के ढालों पर आँवला और बहेड़ा के पेड़ थे। वृक्ष-हीन जगहों पर जंगली फूलों के ढेर उगे हुए थे।

खंती से कंद खोदकर करमी बोली : 'सबको पता नहीं है—इसी से बचा रह गया। नहीं तो जंगल-भर खोद डालते।'

झरने के जल में उन्होंने स्नान किया। करमी बोली : 'तुम घर जाओ। मैं कुछ देर धूप में बैठती हूँ। बूढ़ी हड्डियों को ज़्यादा ठंड लगती है। हाड़ काँपते हैं।'

उनके चले जाने पर धूप की हलकी गरमी में करमी ने अपने पके बाल सुखाये। पहले मुंडा लोग जो-जो काम करते थे, अब कुछ नहीं करते। होली पर 'जापि' नाच-गान नहीं होता; मुंडा लोग शिकार को नहीं जाते। पौष पूर्णिमा को मागे[1] उत्सव बन्द हो गया। घर के वास्तु-देवता, पितर, सबको अर्घ्य देना बन्द करने से करमी को डर तो लगता था, लेकिन बीरसा के धर्म में मागे कोई परब नहीं था !

शाल गाछ में फूल खिलने पर जवानी में करमी आदि बा-परब[2] मनाते थे। सिर पर फूल लगाकर आदमी और औरतें खूब नाचते थे। बीरसा ने वह भी बन्द करवा दिया। जिन पर्वों में बोङा-बोङी की पूजा, बलिदान, हँड़िया पीना, नाच थे—सब की बीरसा ने मनाही कर दी। करम-पूजा का नाच, पाइका[3] का नाच—सब बीरसा ने रुकवा दिये। औरतों के फूल लगाना, आदमियों के सिर पर कंघी फेरना, कानों में गहने पहनना—सब बन्द हो गया।

---

1. माघ मास का।
2. फूलों का उत्सव।
3. एक प्रकार की कृपाण।

'हाय रे, तूने स—ब बन्द कर दिया ?'

बीरसा ने माँ से कहा : 'मुंडा के जीवन में केवल दुःख हैं। इतने बोङ्गा-बोङ्गी पूजकर, नाच-गाकर वह दुःख क्या कुछ भी कम हुआ ? 'करम' उनकी पूजा नहीं है। हंड़िया वे बिलकुल नहीं पीते। हमारा नया धर्म दूसरी तरह का है, माँ। हम उन्हें न तो झुलाते हैं, न भुलाते हैं। उन्हें जिंदा रहना सिखायेंगे, उन्हें मरना भी सिखायेंगे। और मारना भी सिखायेंगे। तभी मेरे धर्म में नये रीति-रिवाज चलेंगे।'

'तू बता तो।'

'वह ऐसा कुछ धर्म नहीं है। बीरसाइत बनने के लिए नया जन्म लेना होगा। पुराने रीति-रिवाज छोड़ने पड़ेंगे। कष्ट उठाने पड़ेंगे।'

जाड़े की धूप में, हलकी ठंडी हवा में, पत्तों की झरझर-सरसर सुनते-सुनते करमी को पिछली बातें याद आ गयीं। माँ उनको गोदी में लेकर आँगन में बैठती। चने का साग बीनते-बीनते पिछली पाथर-माँ की कहानी सुनाती।

करमी की माँ खूब कहानियाँ सुनाया करती थी। गाछ, लता, घर, बरामदा, ढेंकी, सूप—सब को लेकर एक-एक कहानी कहती। पाथर-माँ की कहानी कहती, वह किस युग में किस माँ के किस बेटे ने कहा था : 'माँ, तू भात राँध, मैं भात का फेन सूखने के पहले शिकार मारकर आ जाऊँगा।' वे पहले के जमाने थे। सारे मुंडा भात खाते थे।

लेकिन तभी देश में मजूरों का ठेकेदार आ गया था। वह ठेकेदार नौजवान लड़कों को लेकर चला जाता। लड़के फिर लौटकर नहीं आते। बेटे का आसरा देखते-देखते माँ पत्थर की हो गयी !

करमी हिल-डुल कर उठी। उसे ये सब कुलक्षण की बातें क्यों सूझती हैं ?

वे कब की बातें हैं—जब करमी की पीठ सीधी थी, बाल काले थे ! सिर पर पोटली लेकर पति और देवर के साथ खेत-मजूरी के काम की तलाश में कुरुमदा गयी थी। कितने बरस हुए ? बड़ा लड़का कोम्ता, बड़ी लड़की दास्की पैदा हुए थे। तब करमी सोचती कि यही तो अच्छा जीवन है। मजूरी लाते हैं, घाटो खाते हैं, सब तरह से अच्छे हैं !

वहाँ से वाम्बा। चम्पा हुई, बीरसा हुआ। बाँस का घर, टट्टर की दीवार, छप्पर छाया रहता। करमी सोचती : यही तो अच्छी जिंदगी है। मजूरी लाते हैं, घाटो खाते हैं, सब तरह से अच्छे हैं। बेटें, बेटी, उनका बाप तो साथ में है।

वहाँ से चालकाड़। कोई नहीं पूछता था। किसी को पता नहीं कि

घर में भगवान ने जन्म लिया है। मेले में बनियों के लड़कों के शरीर पर लाल कुरता देखकर करमी की कितनी साध हुई थी कि ऐसा लाल कपड़ा अपने बेटे को भी पहनाये !

बेटे-बेटियों को पेट खाली होने पर भूख लगती। करमी गोद के बेटे कनू को पीठ पर बाँधकर, बलोया हाथ में लेकर, जंगल में जाकर, बेर, बेल, आँवला, अरबी, कंद, खरगोश, साही—जो कुछ मिलता वही लाकर उन्हें खिलाती। यह कभी नहीं कहा : 'नहीं, घर में कुछ नहीं है।'

तब सुख था, या अब ? अब सभी जानते हैं, फ़ौरन पहचान लेते हैं। सब आदर करते हैं; पेड़ के फल, तरकारी, बकरी-गाय का पहला दूध, पहले करमी को देते हैं, तब खुद लेते हैं ! कोल दुलहिन की सास बहू को साथ लाकर करमी से कहती; 'ज़रा छू दो, जच्चा ठीक रहे, भगवान की माँ !' कहती : 'कौन जानता था कि माँ ऐसे अद्भुत बेटे को जन्म देगी। अखाड़े में नाचता था, बाँसुरी बजाता था। देखो, उसकी नाक कैसी ऊँची है, कोई भी अंग मुंडा लोगों की तरह नहीं है, उसे लेकर कितनी बातें कहती हूँ। सोचती, तुम चुटिया-नागु के वंशधर हो, इसी से ! नहीं रे ! अब समझ में आता है कि भगवान थे, इसलिए उसका इतना रूप हुआ !'

अभी सुख है। करमी ने सिर हिलाया। पहले इतने लड़के-लड़कियों में अकेला बीरसा इस तरह कलेजे से लगकर नहीं बैठता था। अब बैठता है। उसने आँखें पोछीं। भगवान की माँ को रोना नहीं चाहिए।

सहसा उसके कान खड़े हुए। नगाड़ा बज रहा था। जय-जय ध्वनि हो रही थी। करमी ने भागना शुरू किया।

बीरसा आया है। नये कमरे के बरामदे में खड़ा है; पैर धूल से भरे हैं। करमी को देखकर बीरसा उतर आया। बोला : 'कहाँ गयी थी ? तुझे नहीं दिया, इसीलिए चालकाड़ में और किसी को भी जगन्नाथपुर का चंदन अभी तक नहीं दिया। चन्दन लगायेगी—क्या इसीलिए नहायी है ?'

'हाँ, वही तो। दे।'

हाथ जोड़कर करमी ने माथे पर चन्दन लगाया। सब के ही माथे पर बूँदें छपकीं।

बीरसा बोला : 'नये चावल, पैसे लेकर जगन्नाथपुर गया था। तीन सौ बरस पहले देवता का क़ानूनी शाही मंदिर बनवाया था हमारे पुरखों ने। मुंडा उस मंदिर में कभी गये नहीं। कहीं घुस न जायें, इसीलिए क़िले की तरह चारों ओर दीवार उठा दी थी। मंदिर में घुसा; मेरे हाथ में जो था चारों ओर छिड़क दिया। उसके बाद मंदिर से लेकर सबके चन्दन

लगाया।'

'इतनी देर कर दी ?'

'वहाँ से बोर्तोदि गया। उसके बाद कुछ लोगों को लेकर कोयेल नदी पर नागफेनी गया। वहाँ से पालकोट होकर आया। अब नौरतनगढ़ से मिट्टी लाना है। लेकिन नौरतनगढ़ से मिट्टी लाने के बाद उलगुलान करने में और देर नहीं करनी है। यही। सारे मुंडा। अब से काम शुरू होगा। काम बोर्तोदि से शुरू होगा। चालकाड़ से बनगाँव के पास। अभी आसानी से आना होता है। बोर्तोदि जंगल के कलेजे में है, पहाड़ों से घिरा हुआ। वहीं हमारी पहली चौकी बनेगी।'

सुनकर करमी की छाती में ढेंकी की-सी चोट लगी।

बीरसा बोला : 'उलगुलान आ गया है।'

करमी ने कानों पर हाथ रख लिये। वह समझी कि चालकाड़ के जीवन में बीरसा रुकावट लगा रहा है। उलगुलान में उतर पड़ने पर फिर बीरसा उसके पास उसका बेटा बनकर नहीं लौटेगा। अगर आयेगा, तो भगवान बनकर, योद्धा बनकर आयेगा !

तो करमी क्या पाथर-माँ हो जायेगी ? अपरूप-अलौकिक-आश्चर्य-जनक तो कोई चीज़ न होगी। अलौकिक के संसार को तो बीरसा ने मुंडा जीवन से निर्वासित कर दिया है !

तो इसीलिए करमी निष्प्राण पत्थर न होगी। फटी धरती के काले पत्थर की तरह रेखाएँ-खिंचा चेहरा लिये निश्चल बैठी रहेगी। सब लोग उसे देखकर कहेंगे : 'उसका बेटा आदमी था, भगवान हो गया, उलगुलान का दीवाना भगवान ! इसी से माँ पत्थर की हो गयी।'

सहसा करमी को होश आया। सब लोग हाथ जोड़कर गा रहे थे। करमी ने भी हाथ जोड़े। रुआँसी आवाज़ में गाने लगी :

सिरमारे फिरून राजा जय !
धरतिर पुड़ोइ राजा जय !

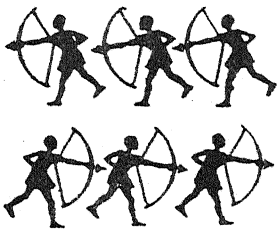

चालकाड़ से बोर्तोदि।

करमी ने डरते-डरते सुगाना से पूछा : 'मुझसे क्या कोई कसूर हो गया है ?'

'क्यों ? कसूर क्यों होगा ?'

सुगाना जरा ताज्जुब में पड़ गया। आजकल सुगाना एक व्यापक आनन्द के नशे में रात-दिन खुश रहता था। इतना सुख होगा, उसको ही होगा, जीवन में यह कभी सोचा भी नहीं था। वह ग़रीब, अभागा था। अब वह भगवान का पिता है ! उसके घर में चावल रहते हैं, नमक रहता है। वह साफ़ कपड़े पहनता है, गाँव के बहुत-से लोग उसका आदर करते हैं। इतना सुख ! इससे नशा हो जाता है। किसी महुआ, ताड़ी, हँड़िया से इतना नशा नहीं होता—वह नशा तो रात बीतने पर दूर हो जाता है। यह नशा नहीं उतरता। करमी को खुश न देखकर सुगाना हैरान हुआ।

सुगाना हैरान हुआ। उनका समाज पुरुष-शासित नहीं था। इस समाज में स्त्री-पुरुष समान रूप से मेहनत करते थे, बराबर कमाते थे, बराबर सम्मान पाते थे। मुंडा समाज में माता का सम्मान बहुत होता है। करमी ने बहुत दिनों वह सम्मान पाया। गर्व से सिर उठाये करमी घूमती फिरती थी।

लेकिन करमी आज ऐसी दीन और करुण क्यों हो रही है ? इस तरह डरकर वह बीरसा के बारे में बातें क्यों करती है ?

सुगाना ने फिर पूछा, 'कसूर की क्या बात कहती है ?'

'वह चालकाड़ से डेरा उठाकर बोर्तोदि क्यों जा रहा है ? इसी से पूछती हूँ—क्या मुझसे कुछ कसूर हुआ है ?'

'ना, ना !'

'फिर ? वहाँ डोन्का मुंडा का घर उसकी चौकी क्यों बना ?'

'तू नहीं समझती।'

'समझती हूं। डोन्का की बहू साली को देखा है?'

'देखा है। तेज औरत है।'

'खू—ब तेज। नदी की तरह तेज है। आषाढ़ की नदी-सी।'

'वही।'

'बीरसा को देखकर नदी में बाढ़ आने लगती है!'

'छि: !'

'छि: क्या? उसके मुंह पर चमक आ जाती है।'

'छि: !'

'अपने बेटे को मैं जानती हूं। लेकिन—उसको पास रखने तक में मुसीबत हो सकती है, जेहल तक जाना पड़ सकता है। हम बाप-माँ हैं; हम मुसीबत मोल ले सकते हैं। वह क्यों मुसीबत उठाये?'

'वे लोग बीरसाइत हो गये हैं।'

'तुम्हारा यह बेटा आग लगा देगा। उसकी मुसकान देखने के लिए मुंडा औरतें जाकर आग में हाथ जला रही हैं। मुझे सब पता है।'

'ऐसी बात फिर मत कहना।'

'वह तो पत्थर है। नहीं तो किसी अच्छी लड़की से सगाई कर लेता। कोम्ता और कनू की तरह घर बसाता।'

बड़ा लड़का कोम्ता हँसकर बोला: 'माँ! तू इतनी नासमझ क्यों हुई? जितने चाँद पार करने के बाद आदमी अबूझा हो जाता है, उतने चाँद तो तूने पार नहीं किये?'

'देख कोम्ता, मुझे गुस्सा मत दिला।'

'तू गुस्सा हो गयी?'

'हाँ, हो गयी।'

'क्यों?'

'एक बात कही। उसका जवाब नहीं मिला। बीरसाइतों के धर्म में है कि सबको सब बातों को समझाना चाहिए। यह देउँरा-पहान का धर्म नहीं है। वे कोई बात बात नहीं समझाते। वे हुकुम देते हैं, मुंडा हुकुम मानते हैं। तुम क्यों नहीं समझाओगे? बता, कोम्ता?'

'छोड़! मुझे इतनी बातें नहीं आतीं।'

'किसलिए जा रहा है?'

'घर में टट्टर लगाऊँगा।'

'अभी?'

'बोर्तोदि कब जाना पड़ जाये, उस समय क्या मौका मिलेगा? तब

भगवान समय देंगे ?'

करमी नाक सिकोड़कर बोली : 'तू टट्टर बनायेगा ? तूने बनाया, कनू ने बनाया, टट्टर खुल जाता है। वह टट्टर बाँधता था, कभी खुलता नहीं था।'

कोम्ता थोड़ा चिढ़ गया। बोला : 'माँ, उसके दुःख में तेरी अकल मारी गयी है। उसने कब टट्टर बनाया है ? दुनिया में कौन-सा काम किया है ? काम किये हैं मैंने, काम किये हैं कनू ने !'

सुगाना समझ गया कि बहुत दुःख में करमी उलटी-सीधी बातें कह रही है। वह बोला : 'इधर आ, बात सुन। पास बैठ।'

'ए, ए, हाथ मत लगाना। बीरसाइत हो गये हो।'

'न-न, निषेध को भूला नहीं हूँ। बैठ यहाँ।'

'लो, बैठ गयी।'

'देख, चालकाड़ का नाम अब सरकारी कागजों में चढ़ गया है।'

'क्यों ?'

'उसका घर यहाँ है, इसलिए।'

कोम्ता की बड़ी लड़की बोली : 'गाना नहीं सुना है ! चालकाड़ पर तमाम गीत हैं।'

कौन देस में नये राजा का जनम हुआ हे ?
अरे, तू मुँह उठाकर देख—आसमान में वह है धूमकेतु !
चालकाड़ में नये राजा का जनम हुआ रे !
पच्छिम में वह धूमकेतु !
मुंडाराज लौटेगा—सो नये राजा का जनम हे !
धरती को शुद्ध कर देगा वह धूमकेतु !

'कह क्या रही है ? चालकाड़ पर गाना है ?'

'ब—हुत-से गाने हैं।'

'जंगल के बीच चालकाड़ ग्राम में धरती के आबा ने जन्म लिया है।' और—'सूर्य के समान चालकाड़ में उदय हुए बीरसा।' फिर—'तुम्हारी बात सुनने को आये हम दूर से हे चालकाड़ !' और—'दिन-रात धरती का आबा गान करे ! पहाड़ बन की गोद में...चालकाड़ चले जायें...धरती के आबा वहाँ गीत गायें !'

करमी बोली : 'उसका जन्म तो यहाँ नहीं हुआ।'

'यह किसे मालूम है ? बाम्बा में जन्म हुआ, यह कौन जानता है ? सबको पता है कि जन्म यहीं हुआ।'

'क्या मुसीबत है, माँ ! उसके जन्म को लेकर इतने गान हैं ! कहाँ, कैसे हो गये, यह पता नहीं !'

सुगाना बोला : 'तो देख । चालकाड़ का नाम तमाम लोगों को मालूम हो गया है । राँची से, बनगाँव से, खूँटी से क्षण-भर में चालकाड़ आ-जाना हो सकता है । पुलिस क्षण-भर में आकर उसे पकड़ सकती है ।'

'सो तो पकड़ सकती है ।'

'बोर्तोदि में पुलिस आसानी से नहीं जा सकती । बहुत दूर है । जंगल के रास्ते बहुत मुश्किल हैं । बोर्तोदि के पास डोम्बारी पहाड़ है । उसी डोम्बारी पहाड़ के पास बोर्तोदि की चौकी बनायी गयी है । तूने डोम्बारी तो देखा नहीं है ?'

'न, सुना है वह और पहाड़ों से घिरा हुआ है...सैलराकार[1]—केरा-ओरा, बिचा-बुरू, तिरिलकूटि-बुरू । एक ओर थोड़ा खुला है...वहाँ से डोम्बारी के इलाके में घुसा जाता है । वह मुहाना पत्थर जमाकर बन्द कर देने से पुलिस नहीं घुस सकती ।'

'तुम लोग वहाँ जाओगे ?'

'जब उलगुलान होगा, भागकर रहने की कोई जगह तो चाहिए । वहाँ पहाड़ों में, जंगलों में भागने की बड़ी सुविधा है । बोर्तोदि से वे सब जगहें पास होंगी । इसी से बोर्तोदि गये हैं । तुम्हारे-हमारे कारण चालकाड़ नहीं छोड़ा है ।'

'इसीलिए वहाँ गया है ?'

'हाँ ।'

'डो—म्...बा...री ।'

डोम्बारी !

दुर्गम, कष्टसाध्य पहाड़ों से भरी डोम्बारी की घाटी है । यहाँ जंगल घने और दुर्भेद्य हैं । इन जंगलों में किसी दिन किसी भी ठेकेदार ने पेड़ नहीं काटे । किसी पेड़ पर कुल्हाड़ी की कोई चोट कभी नहीं पड़ी ।

प्राचीन शाल, पियासाल-केंदू, बहेड़ा, इमली, छितवन, पलाश, सिधा, शीशम, कुसुम, सेमल के पेड़ों के जंगल हैं । बाँस की झाड़ियाँ, कंटकारि और केंवाँच की सटी झाड़ियाँ ! कहीं हंसपदी लता के जाल से जंगल का रास्ता छाया हुआ था । जाड़े में इस जंगल में खिलकर बन-शेफाली उजाला फैलाये रहती ! बरसात होने पर गढ़ैया की छाती पर अलंजी लता छती

---

1. एक पर्वत-शृंखला का नाम ।

रहती। उस लता के फूल से महा-आकर्षक सुगंधि फैलती।

इस जंगल में आदमियों की कोई बस्ती नहीं थी। पेड़ों के नीचे की जमीन सड़े पत्तों के कारण उपजाऊ, और सरस थी। उसकी जमीन में से बहुत सुरक्षित कन्द और मूल किसी मुंडा औरत ने जमा नहीं किये। आँवले और पके बेरों को पक्षी ही खाते। बाँस के अंकुर भी इसी तरह बढ़ते रहते।

केवल बीच-बीच में पत्थर के ढोके दिखायी पड़ते—एक के बाद एक रखे हुए। ऐसा लगता था कि यहाँ कभी मुंडा लोगों का कोई गाँव था। ये समाधि के ऊपर रखे पत्थर हैं। बाद में मुंडा लोग गाँव छोड़कर चले गये होंगे।

इस जंगल में बाघ, भालू, चीते, जंगली सुअर, हिरन, भेड़िये, लकड़-बग्घे निडर घूमते थे। शिकार-उत्सव के दिन भी कोई मुंडा-युवक उन्हें तीर या बरछी से नहीं मारता था। पहाड़ों की गहराई में से होकर गंभीर गर्जन के साथ एक नदी बहती थी। उस नदी के पानी में रुपहली मछलियाँ अठ-खेलियाँ करती रहतीं!

इस जंगल में घुसने के रास्ते के नाम पर पतली-सी एक पगडंडी थी। जानवरों के आने-जाने वाले रास्तों से मुंडा जा सकते थे, दिकू नहीं। दिकू लोग वही सारे रास्ते खोजते जिनके आसपास हाट-बाज़ार-थाना-डाकघर हों। वे लोग वही जगहें खोजते जहाँ पास में अच्छा कच्चा-पक्का रास्ता हो।

यह जंगल आज भी मुंडा लोगों का है। पहाड़ों की गोद में, जंगल के हृदय में, जलधारा के पास, बोतोंदि के बहुत-से छोटे-छोटे गाँव बन गये थे। वे सारे गाँव पत्थरों के ढोकों और नागफनी के बेड़ों से घिरे थे—दुर्ग की तरह सुरक्षित।

डोम्बारी पहाड़ के नीचे जागरी मुंडा के घर पर बीरसाइतों ने पहली सभा की। फ़रवरी का महीना था। कड़ाके की सरदी! जागरी मुंडा का घर खूब लीप-पोतकर साफ़ किया गया था।

आँगन में धर्म-चूल्हा जला। सारे बीरसाइत दाल-चावल, चीना-दाना, खड़ी मसूर, जंगली सेम, सेम के बीज—जिसकी जैसी सामर्थ्य थी—ले आये थे। सब-कुछ एक ही कड़ाही में पकाया गया। सबने एक साथ बैठकर खाया।

उसके बाद सभी घर में अन्दर आकर बैठ गये।

बीरसा बोला: 'देखो! साफ़-साफ़ कह रहा हूँ। जो करने जा रहा हूँ, वह सब लोग समझ लो। आँखें बन्द कर तुम लोग उलगुलान में उतरो, यह मेरी इच्छा नहीं है।'

'कहो, हे भगवान!'

'दो रास्ते हैं।'

किस तरह ?'

'एक रास्ता है—शान्ति का रास्ता।'

निबाई मुंडा बीते दिनों का सरदार था। वह बहुत बार अनेक आन्दोलनों में शामिल हुआ था। निबाई की नाक पर गुस्सा रहता था, और वह झगड़ालू भी बहुत ही था। वह बोला : 'शान्ति की राह से तुम मुंडा लोगों के हाथों में मुंडारी राज ला दोगे ?'

'राह जब है, तो मुझे बताना ही होगा।

'तो कहो, हम सुनेंगे।'

'शान्ति की राह पर जाने से कितने दिनों में फल मिले—पता नहीं। उस राह पर चलने से काम पूरा होने में समय लगता है।'

'वह कौन-सी राह है ?'

'निबाई ! तुम पुराने सरदार हो। तुमको मैं क्या बताऊँ ? तुम, सरदार लोग, अभी तक उसी राह चलते आये हो। वह है —अर्जी भेजो, क़ानून की राह से लड़ो।'

'बहुत लड़े। जितने कागजों पर सरदारों ने अर्जियाँ लिखायीं, वे कागज बिछा देने से छोटा नागपुर ढका जा सकता है। जितनी स्याही लगी, वह स्याही एक जगह होने से नदी में हड़पा बान[1] में उतना पानी नहीं होता !'

जागरी मुंडा बोला, 'सुनने दो न हे। निबाई, तुम बहुत बोलते हो !'

डोन्का बोला : 'बोलो, हे भगवान !'

बीरसा बोला : 'जंगल काटकर जमीन मत लो, पर घर के छामू में सब्ज़ी उगाओ। आम, कटहल के गाछ में बेड़ा बाँधो, फल-पौधे बेचो। महाजन के बुलाने से बेगार दो। तीर-बलोया, बल्लम, बरछे, कुल्हाड़ी उठाकर रख दो। क़ानून की राह से हक़ के लिए लड़ो। यह हुई शान्ति की राह ! दिकू लोगों में, मिशन के साहबों में, राँची और चाईबासा के बाबुओं में बहुतेरे हैं जो मुंडा लोगों के बारे में फ़िक्र करते हैं और मुंडा लोगों के दुःख किस तरह दूर हों, वही सोचकर मेज़ पर, कुर्सी पर बैठकर चाय-दूध पी-पी कर, दुःख प्रगट करते हैं ! शान्ति की राह पर चलने से वे खुश होंगे—सोच लो।'

जागरी मुंडा बोला : 'शान्ति की राह में बहुत काँटे हैं, भगवान ! क़ानून की राह पर जाकर हम कई बार ठगे जा चुके हैं।'

तिराई मुंडा बोला : 'दूसरी राह कौन-सी है ?

---

1. अचानक आयी भीषण बाढ़।

बीरसा मुसकराया। मुसकराने से उसके अन्दर का प्रकाश प्रदीप्त हो उठता था। चेहरे की मुसकान दूर हो जाने पर भी दोनों आँखें बड़ी देर तक मुसकान से चमकती रहतीं। हँसकर, मधुर और प्रसन्न आवाज में बीरसा बोला : 'क्यों ? लड़ाई की राह !'

'उस राह में काँटे नहीं हैं ?'

'ज़रूर हैं।'

'तब ?'

बीरसा बोला : 'लड़ाई की राह में काँटे बहुत हैं, तकलीफ़ें और भी ज्यादा हैं। हो सकता है—देह तक छोड़नी पड़े। भूखों मरना पड़े। जेहल में रहना पड़े। लेकिन दूसरी कोई राह भी तो नहीं है।'

'सचमुच नहीं है।'

निबाई बोला : 'तो तुम उस राह पर ले चलना चाहते हो ?'

'क्यों नहीं ले चलूँगा ?'

'क्यों ले चलोगे, भगवान ?'

मैं तुम्हारा भगवान हूँ न ? मैं किसी को गोद में लेकर झुलाऊँगा नहीं। धोखे में नहीं रखूँगा। मेरे लिए तुमने प्रतीक्षा की, तुम मुझे पा गये। मैं तुम्हें रुलाऊँगा, दुःख दूँगा, तुम्हें हँसाऊँगा, सुख दूँगा।'

'कैसा सुख ?'

'स्वाधीन मुंडाराज में स्वाधीन होकर जीते रहने का सुख !'

निबाई रुक-रुककर बोला : 'स्वा—धी—न मुं—डा—री रा—ज! स्वा—धी—न हो—क—र जी—ना ?'

'जी हाँ, तिबाई।'

बीरसा ने भट्टी में लकड़ी फेंकी। आग भक से जल उठी। आग की आँच से बदन में गरमी लगती है। आग ही मुंडा लोगों का जाड़ों का कपड़ा है। मुंडा किसी दूसरे गर्म कपड़े से परिचित नहीं।

निबाई जैसे अभिभूत हो गया। बोला : 'मेरी बहुत उमर हुई। बहुत चाँद पार कर दिये। ऐसे किसी दिन की याद नहीं आती कि मुंडा के अधिकारों के लिए लड़ा न होऊँ। लेकिन एक बार भी कोई चीज मिली हो ऐसा याद नहीं आता। मुझे ले चलो भगवान, अपनी राह पर ले चलो।'

निबाई ने सबकी ओर देखा। बोला : 'पता नहीं, तुम लोग क्या कहोगे ? मैं कहता हूँ—लड़ाई का रास्ता। देखो ! जब कोमल फूल-सा था, तब से सबके मुँह से सुना था कि किसी दिन मुंडा लोगों का भगवान मुंडा के घर में जन्म लेगा। वह यीशु नहीं, किशन नहीं, वह मुंडा होगा। बीरसा

हम लोगों का वह भगवान है ! चलो भगवान ! तुम्हारी बतलायी राह पर चलें। इस शरीर ने बड़े कष्ट उठाये हैं, बहुत सुख भोगे हैं, अब यह तुम्हारे काम में लगे।'

बीरसा बोला : 'तुम लोग क्या कहते हो ?

'लड़ाई की राह जायेंगे।'

'हाँ, भगवान, लड़ाई की राह जाने से फिर बेगारी का पट्टा नहीं लिखा जायेगा। बेगार देने के लिए नहीं जाना होगा।'

गोत्ना मुंडा किशोर उम्र का, तिवाई का नाती था। वह बोला : 'ओः, भगवान का राज होने से हरिराम बनिये को बहुत मारूँगा। साला मुझे खड़े रखकर सबको सौदा देता है। कहता है, तू तो मुंडा है। तीन पैसे का सौदा माँगता है !'

बीरसा बोला : 'हर दिशा में सभा करनी होगी। हर ओर सब का मत लूँगा। अबकी सभा होगी सिम्बुआ पहाड़ पर, होली के दिन।'

सिम्बुआ पहाड़ सरोभाड़ा[1] मिशन के आमने-सामने था। होली की रात को उस पहाड़ पर आग जली। उससे मिशनरियों को कुछ ताज्जुब न हुआ। होली में मुंडा आग जलाते हैं, आग के चारों ओर नाचते और गाते हैं। इस बार भी आग जली, गाने हुए। लेकिन इस बार और त्योहारों के गाने नहीं थे। तीन सौ मुंडा तीर-धनुक लेकर आये थे।

इस बार होली का गान मुंडा-जाति के दो वीर—दुखन साइ और रोतन साइ के गान से शुरू हुआ।

दुंदिगारा का दुखन साइ नहीं किसी से डरता है,
रामगारा का रोतन साइ नहीं किसी से डरता है।

उसके बाद मुंडा लोगों ने कोल विद्रोह का गाना गाया :

निकल के चींटे जैसे जाते वैसे बाँध के पाँत
काँधों पर हथियार लिये वे कहाँ रहे हैं जा ?
कहाँ छोड़ते तीर ?
बड़े-बड़े चींटों-सी बाँधे पाँत, लिये कंधों पर हथियार ?
अरे अरे, वह तो लड़ते बुन्दू में
अरे अरे, वे तीर छोड़ते जाकर तामार।

बीरसा बोला : 'अंगरेज रानी की मूर्ति वह केले का पेड़ है ! होली में हम उस मन्दोदरी का सिर काटेंगे...रावण का राज खतम करेंगे।'

---

1. एक जगह का नाम

जगाई मुंडा ने एक वार में केले का पेड़ काटकर गिरा डाला। बीरसा बोला : 'इसी तरह राजा और हाकिमों को काटना होगा। अब हो गया ! नगाड़ा बजाकर नाचो।'

लेकिन होली की आग बहुत ज्यादा समय तक जलती रही। बाद में पुलिस आकर जाँच कर गयी। कुछ समझी नहीं।

उसके बाद सभा होगी डोम्बारी पहाड़ पर। बीरसा ने फिर कहा : 'दो रास्तों की बात फिर से कह रहा हूँ। किस राह चलोगे ? तुम्हीं लोग बताओ ?'

एक नानक बोला : 'लड़ाई की राह पर। जिन्होंने राज ले लिया है, वे छोड़ेंगे क्यों ? हम छीन लेंगे।'

'यह बात भी आख़िरी बात नहीं है। डोम्बारी पहाड़ पर सभा होगी। हर दिशा में सभा का प्रचार करेंगे। फिर उसके पहले नौरतनगढ़ जाकर माटी लायेंगे। डोम्बारी की सभा के पहले मनिहातू में सभा करो। वहाँ के बीरसाइतों से मेरी जान-पहचान नहीं हुई है।'

मनिहातू की सभा में मानी पहानी बोली : 'मेरी एक बात है, भगवान !'

'कहो।'

'मैं भी तुम्हारी भक्त हूँ। लड़ाई होने पर मैं भी लड़ूंगी। तुमने मुझे किसी काम में नहीं लिया, कहीं जाने नहीं दिया, इससे मेरे मन को दुःख पहुँचा है।'

'तुम भी नौरतन चलोगी।'

'चलूँगी ?'

'सभी जायेंगे। सारे बूढ़े, औरतें-बच्चे—सभी जायेंगे। मैं कह दूँगा। मेरे पुरखों ने नौरतन गढ़ में पहला गढ़ बनाया था।'

'मालूम है।'

'बाद में स — ब दिकू लोगों ने दखल कर लिया।'

सरकार चुप नहीं बैठी थी, लेकिन इस बार सरकारी पहिया इतने धीमे क्यों घूम रहा था, यह अमूल्य बाबू की समझ में नहीं आ रहा था। पाँच-

सात दिन सोचकर अमूल्य बाबू डिप्टी मुकर्जी के घर गये। मुकर्जी बोले : 'बदली होकर जा रहा हूँ, इसलिए मिलने आये हो, अमूल्य बाबू ?'

'हाँ, आप क्या चक्रधरपुर चले ?'

'हाँ।'

'पहले कलकत्ता जायेंगे ?'

'यही इरादा है।'

'मेरा एक उपकार करेंगे ?'

'कही। तुमने मेरे बेटे की जान बचायी थी तो मैंने हाथ में जनेऊ लेकर कहा था कि जो बस में होगा तुम्हारे कहने पर वह करूँगा।'

'एक लिफ़ाफ़ा कलकत्ता जाकर डाक के बक्से में छोड़ देना होगा। और...।'

'और क्या ?'

'यह बात किसी से नहीं कहेंगे।'

'ठीक। लेकिन देखो, मुझ पर किसी तरह कोई मुसीबत न आये।'

'मुसीबत की क्या बात है ? पर सरकारी काम करने में किसी-किसी बात में गोपनीयता रखनी पड़ती है न !'

अमूल्य बाबू ने उनकी आँखों की ओर देखा। मुकर्जी ने आँखें झुका लीं—एक बार मुंडा लोगों का जुरमाने का रुपया छिपाकर खुद ही दे दिया था और दोनों को छोड़ दिया था। सरकारी काम में गोपनीयता रखकर तो चलना ही पड़ेगा !

बोले : 'ठीक है, चिट्ठी कहाँ है ?'

'कल ला दूंगा। बात हो गयी, अब लिखूंगा।'

'जेकब को चिट्ठी लिख रहे हो ?'

'आपने कैसे समझा ?'

'समझता हूँ भाई, समझता हूँ। तुमसे उम्र में बीस बरस बड़ा हूँ, फिर भी नहीं समझूँगा ? मुंडा लोगों के मामले के बारे में मैंने भी बहुत सोचा है। करूँ क्या ! वह बेचारे एक अक्षर नहीं समझते कि अदालत में क्या हो रहा है। क़ानून बनना चाहिए कि जो मुंडारी जानता हो—ऐसा ही वकील इनके मामले हाथ में ले सके। जो मुंडारी जाने, वही आदमी इनकी पैरवी करे। वे क्या समझते हैं, बताओ ?'

'ऐसा क़ानून क्या किसी दिन बनेगा ?'

'बनना उचित है। असल में उनकी ओर से बोलने वाला भी तो कोई नहीं है। उनका भाग्य ही ऐसा है ! बीरसा मुंडा ने लिखना-पढ़ना सीखा था। और अधिक सीखने पर उनकी बातें कहने वाला एक सही आदमी बन

जाता। जिस तरह की अक़्ल है, उसी तरह दिमाग़ भी ठंडा है। फिर व्यवहार तो बहुत ही अच्छा है, लेकिन वह भगवान बन बैठा!'

अमूल्य बाबू मुसकराये; बाहर निकल आये। जेल में अपने घर आकर उन्होंने लिखा: 'विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि बीरसा का कोई पता नहीं है। चुटिया और जगन्नाथपुर—दोनों जगह जाने के बाद वह ग़ायब हो गया है। राँची और सिंहभूम की पुलिस मिलकर बीरसा की तलाश कर रही है। बनगाँव में पुलिस चौकी बैठी है। सिंहभूम के डी०एस०पी०[1] बनगाँव जाकर ज़मींदार जगमोहनसिंह के साथ बात कर आये हैं। मुखिया लोगों पर हुक्म जारी हुआ है कि बीरसा को पकड़वा देने पर बख़्शीश मिलेगी। यह बात उन लोगों ने फैला दी है। सुना जा रहा है कि मीअर्स भी बनगाँव जा रहे हैं। उन्होंने ही बीरसा को पहले गिरफ़्तार किया था।'

मीअर्स बनगाँव गये। चारों ओर पुलिस भी फैला दी है। गिडियन, मार्कुस, प्रभुदयाल—तीन आदमियों को पकड़कर पुलिस वापस आ गयी। सिंहभूम के पुलिस-सुपरिंटेंडेंट से मीअर्स ने पूछा: 'इन तीन बुड्ढे सरदारों को पकड़ने से ही हो जायेगा?'

सुपरिंटेंडेंट बोले: 'बेकार भागदौड़ से क्या फ़ायदा?'

'दैट बीरसा इज़ ए पोटेंशल डेंजर।'[2]

सुपरिंटेंडेंट बोले: 'उसको पकड़ने से इनाम मिलेगा, यह बात तो हर बाज़ार में फैला ही दी गयी है।'

'क्या उससे काम हो जायेगा?'

'अभी वह पकड़ा नहीं जायेगा। उस अंचल में जंगल बहुत हैं। लोगों की बस्तियाँ नहीं हैं। जंगलों में इस वक़्त खाने को काफ़ी मिलेगा। छिपने के लिए यही समय सुविधा का है।'

'हुं!'

मीअर्स भौंहें सिकोड़कर चुप रहे। सुपरिंटेंडेंट बोले: 'सरकारी काम में खूँटी थाने के दारोगा मृत्युंजयनाथ लाल ने लापरवाही की। उससे पूछिये न!'

मृत्युंजय दारोगा बोला: 'क्या लापरवाही की, साहब?'

'बीरसा पहाड़ पर लोगों को जमा कर नाच-गान करेगा, यह ख़बर नहीं मिली थी? तलाश करने वाले से तुमने नहीं कहा कि पहाड़ पर नाच

---

1. डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस।
2. असली ख़तरे की आशंका तो उस बीरसा से है।

रहा है, नाचता रहे। जब क़ानून तोड़ेगा तभी तो पकड़ूंगा !'

दारोगा ने डर से हाथ जोड़कर कहा : 'गुस्ताख़ी माफ़ हो, हुजूर। इस तलाश करने वाले ने कहा : यहाँ बीरसा देखा गया। बुंदू भागा। अजगर-सा जंगल है हुजूर, दिन-दहाड़े बाघ घूमते हैं। वहाँ एक बुड्ढा गाय चरा रहा था, उसका नाम भी बीरसा है। वह बेटा विष्युवेला[1] में पैदा हुआ, इसलिए बीरसा पुकारा जाता है। वहाँ से लौटते वक़्त बाघ की गरज सुनकर घोड़ा डर गया। मुझे जंगल में गिरा देता न ! फिर उस खोजी ने कहा कि बीरसा रोगोतो के बाज़ार में घूम रहा है। बहुत भाग-दौड़ की हुजूर, उसी से परेशान हो गया था।'

'जगमोहनसिंह की क्या बात है ?'

डर के मारे दारोगा पैर रगड़ने लगा। सिर झुका कर बोला : 'हुजूर, मैं उससे डरता हूँ।'

'तुमको क्या डर ? सरकारी नौकर हो ?'

'मुझे कुछ नहीं मालूम। भरतसिंह बतायेगा। भरत उसकी जात का है। उससे जगमोहन कुछ न कहेगा।'

भरतसिंह बोला : 'जगमोहन को डर है कि बीरसा उससे गवाही देने के लिए बदला लेगा। इसीलिए बीरसा को पकड़ने के लिए बनगाँव के पी० डब्लू० डी० बँगले का खींचने वाला पंखा फाड़ कर, प्याले-रकाबी तोड़कर उसने शोर मचाया था कि बीरसा ने जाकर दंगा किया था। केस नहीं चल सका, हुजूर।'

'हाउ सिली[2] !' सुपरिंटेंडेंट बोले।

मीअर्स गुस्से में आ गये। बोले : 'बीरसा को पकड़ने के मामले को सिंहभूम की पुलिस काफ़ी महत्व नहीं दे रही है। ख़बर मिली है कि सबूत के अभाव में प्रभुदयाल मुंडा आदि तीनों जनें छूट गये हैं।'

सुपरिंटेंडेंट बोले : 'राँची-पुलिस ही क्या सहयोग दे रही है ?'

मीअर्स बोले : 'तो तलाश जारी रखी जाये।'

सुपरिंटेंडेंट चक्रधरपुर लौट गये। मीअर्स राँची वापस लौट आये। कई दिन बाद सारे कांस्टेबल भी लौट आये।

मीअर्स बोले : 'और कुछ कहना नहीं है। लौट क्यों आये ?'

'सिर्फ़ कांस्टेबलों को तकलीफ़ होती है। उनका भय-विश्वास, उनका

---

1. वह समय जब दिन-रात का मेल होता है।
2. कितनी बेवकूफी की बात है !

शाप लग गया है, हुज़ूर। इसी से तकलीफ़ होती है।'

'व्हॅट डु यू मीन ?'[1]

'बीरसा शाप देता है, हुज़ूर।'

मीअर्स तेज़ हो उठे। बोले : 'बीरसा पाँच फ़ीट चार इंच का लम्बा मामूली-सा मुंडा है। टूटी-फूटी अंगरेज़ी सीखकर आडंबर रच रहा है। उसी का भय है ?'

कांस्टेबल चुप रहे।

रोमन कैथॅलिक मिशन के रेवरेंड जॉन हफ़मैन मुंडारी भाषा जानते थे। उन्होंने रोमन अक्षरों में उस भाषा का कोश तैयार किया था। मुंडा लोगों के बारे में सरकार उन्हें सुविज्ञ मानती थी।

हफ़मैन ने रिपोर्ट लिखी। आश्चर्य है, भरतसिंह ने अपनी रिपोर्ट की बात समझे बिना उस रिपोर्ट का सारांश दिया। प्रबल प्रतापशाली ज़मींदार जगमोहनसिंह कचहरी में एक दिन टट्टू पर सवार होकर गये। दारोगा भी था, आत्मीय भी थे। ठीक दोपहर का वक़्त था; जगमोहनसिंह ने आराम करने के लिए जाने को कहा।

जगमोहनसिंह का मकान गढ़ की तरह ऊँची दीवारों से घिरा हुआ है। दोमंज़िला कच्चा घर है। मोटी दीवार है। बड़ी-बड़ी कीलों पर जड़ा हुआ ऊँचा दरवाज़ा है। खपरैल की छत। दीवारों पर कूँची से बनाये हुए अजीब आकार के हाथी, घोड़े, राम और महावीर बने हैं। आँगन में धान, गेहूँ, बाजरा, अरहर के ढेर जमा हैं। एक कोठरी में मक्की का ढेर है। मिर्चों का पहाड़। गोशाला में बहुत-सी भैंसें हैं। बाहर कई घोड़े और टट्टू बँधे रहते हैं। बड़े-बड़े पीतलों के बरतनों में तेल और घी भरे हैं। मिट्टी के कोठलों में गुड़, सत्तू के बहुत-से बोरे रहते हैं।

रोटी, बथुआ का साग, अरहर की दाल, खट्टे दही और गुड़ से भरतसिंह ने खाना खाया। उसके बाद जगमोहनसिंह के पास जाकर बैठ गया। बोला : 'बहुत दिनों से कुछ हुकुम नहीं हुआ।'

'और हुकुम ? तुम्हारे थाने को मैं जान गया हूँ। बीरसा को अभी तक नहीं पकड़ा। अब मेरी जान जाती है। पता है, मैं डर के मारे ज़मींदारी में नहीं निकलता।'

'किसका डर ? बीरसा कहाँ है ?'

'मुझे पता है ? हमेशा ऐसा लगता रहता है कि वह सब-कुछ जानता

---

1. तुम्हारा मतलब ?

है। अब तीर मार देगा!'

'दो बरस अकाल रहा। तुम कभी दो बाँसों के गट्टर के लिए, कभी एक मुट्ठी भुट्टों के लिए मुंडाओं को मुक़दमों में फँसाओगे। धान रहने पर सरकार के सूखे की ख़ैरात चाहने पर भी एक मुट्ठी-भर नहीं दोगे। तुम सरकार को देख रहे हो, या सरकार तुमको देखेगी?'

'ख़ैरात देना सरकार का काम है कि हमारा?'

'अपना नाम बहुत बदनाम कर रखा है। अरे बाबा, सरकार को भी डर है। सरकार को उसे पकड़ना चाहिए—पकड़ती उसे तब, जब राँची-सिंहभूम की पुलिस एक साथ मिलकर काम करती। वह किया क्या? जिसके आँख-नाक-कान हैं, वही चालकाड़ तामार के थाने को समझेगा। तामार के थाने से चक्रधरपुर थाना, राँची और चाईबासा—तीनों जगह बीरसा घूम रहा है। यह तो बेवकूफ़ भी समझता है। मैं क्या कहूँ? मैंने देखा, साहब-साहब में नहीं बनती। किसी ने किसी से रिपोर्ट नहीं ली, किसी को रिपोर्ट नहीं दी! हमने समझ लिया, सरकार भी डर गयी है। या सरकार उसे पकड़ना नहीं चाहती। या सरकार काम-काज करना भूल गयी है। सोचा, तो हम ही क्यों उछल-कूद करके मरें?'

'तुम सरकार के आदमी हो।'

'इसके मतलब उसे पकड़ने के लिए पहाड़-जंगल पीटते फिरें कि बाद में वह एक तीर से मार दे?'

'तुम्हारे पास तो बंदूक है।'

'बंदूक तो तुम्हारे पास भी है। उस दिन बनगाँव में पी० डब्ल्यू० डी० बँगले में तुमने जो तमाशा किया, उससे साहब गुस्से में आगबबूला हो गये थे। समझे? बहुत ख़फ़ा थे।'

'ख़फ़ा होने से क्या होगा? सरकार जानती है कि इस राँची—चाईबासा में हम—आरा, छपरा, दरभंगा, भागलपुर, मुंगेर के ज़मींदार—सरकारी खूँटे हैं।'

'बाबा! जो जानवर दूध देते हैं उनके आगे थोड़ी घास, ज़रा-सा पानी डालना ही पड़ता है। तुम मुंडा लोगों की जमीन, बेगार, सूद का रुपया लोगे और अकाल पड़ने पर मुट्ठी-भर चावल नहीं दोगे? यह क्या ठीक है? यह सब मुझसे बतला रहे हो?'

जगमोहनसिंह ज़रा भी ख़फ़ा नहीं हुए। बोले: 'बताओ तो अब क्या करें? डर बहुत समा गया है।'

'जल्दी ही सब ठीक हो जायेगा। न हो तो तीर्थ चले जाओ। घूम-धाम आओ।'

'वह न कर सकूँगा। घर में...।'

'क्यों, रिकॉर्ड में लिखाया है कि धान नहीं है—इसलिए ?'

'रिकॉर्ड तो जो चाहो, दस रुपये देने पर ही हो जाता है !'

'तो पहरा दो।'

'पहरा देने पर मुंडा चुप हो जायेंगे ?'

'पता नहीं। पहले उन्हें समझता था, अब नहीं समझ पाता। पहले वे बात करते थे, अब नहीं करते। पर यह समझ गया कि सरकार ने नासमझी की है। कुछ गड़बड़ ज़रूर होगी। राँची से साहब आये, चक्रधरपुर से साहब आये, वे हारकर लौट गये। मैं बताये जा रहा हूँ, कुछ मुँह से नहीं कहूँगा, लेकिन बहुत-से सिपाही जमा किये बिना हम पहाड़-जंगल पीटकर बीरसा को पकड़ने नहीं जायेंगे। जंगल में बैठकर उसके साथ झगड़ा किया जा सकता है, अगर हमारे आगे-पीछे सिपाही घूमें।'

'तो समझ लो, तुम भी डरे हुए हो।'

'तुम्हारी तरह परिवार के रहते न डरें, ऐसा हो सकता है ? थाने के सब लोग तुमसे ख़फ़ा हैं।'

'क्यों ?'

'यह नहीं मालूम, क्यों। बीरसा को पुलिस पकड़ ले, इसके लिए बँगले पर हमला किया गया; कुछ न हुआ। अब पुलिस चौकी बैठी। सदर से तीस कांस्टेबल आये। पानी में गोबर मिला दिया ! सोचा कि उन लोगों को तकलीफ़ होगी। सरकार सोचेगी कि यह बीरसाइत लोगों का काम है—और अधिक पुलिस भेजेगी। नतीजा यह हुआ कि सब ही भाग गये। अपनी अक़्ल से काम करो। किसी से पूछो मत। अब भी संभल जाओ। थाने से कोई तुम्हें बुलायेगा नहीं।'

'जो सोचा था वह नहीं हुआ, खराबी ज्यादा हो गयी।'

'मुंडा लोगों को जब पता चलेगा कि उनके नाम पर मढ़ने के लिए यह काम किया गया था, तो वे बहुत खुश होंगे न !'

जगमोहनसिंह को डराकर भरतसिंह बहुत खुश होकर निकल आया। आते वक़्त कह आया : 'मुंडा क्या ऐसे बुद्धू हैं ? वे सुनेंगे कि कांस्टेबल तुम्हारी फैलायी बातें कह रहे हैं, तो कहेंगे कि यह भी बीरसा के शाप से हुआ है !'

जगमोहनसिंह बोले : 'बताओ तो और क्या करें ? दो बंदूकें और सदर से मँगाऊँगा।'

'बाबा ! सरकार सबके ऊपर है। उसके साथ धोखेबाजी करने चले हो ! यह तो छोटे नागपुर का राजा भी नहीं करता।'

बीरसा को सरकार पकड़ नहीं पा रही थी। राँची और चाईबासा के जंगलों के आसपास जितने थाने थे, उन सब जगहों में पुलिस भी पकड़ना नहीं चाहती थी, डरती थी। बीरसा ने बीरसाइतों से कहा : 'यह मत सोचना कि सरकार चुप होकर बैठी है।'

'तो पकड़ क्यों नहीं रही है ?'

'वक़्त पर पकड़ने आयेगी।'

'कब ?'

'जब वक़्त होगा।'

'तब ?'

'उन्हें वह वक़्त नहीं दूँगा।'

'नहीं दोगे ?'

'न ! उसके पहले ही आग भड़क उठेगी।'

नौरतनगढ़ जाने के लिए झुंड-की-झुंड औरतें यहाँ आ गयी थीं। वे आँगन में जमा होकर बैठी बातें कर रही थीं; साली का लड़का परिबा और लड़कों के साथ खेल रहा था। उन्हें खेलते देखकर बीरसा बोला : 'आग भड़क उठेगी।'

दूसरे दिन रात होने पर वे लोग निकले। नानक, जवान औरतें, प्रचारक, बूढ़ी, सबके अन्त में पुराण-पुरुष थे। औरतों के सिर पर छोटे-छोटे नये बर्तन थे। उन्हीं बर्तनों में नौरतन के झरने से पवित्र जल—बीर-दा—लायेंगी।

बड़ा लंबा जुलूस था। चुपचाप, सतर्क, जल्दी-जल्दी क़दम पड़ रहे थे। अँधेरे में जाना होगा, नहीं तो लोगों की नज़रें पड़ेंगी। वे चलते जा रहे थे। किसी दिन मुंडा लोगों के आदि-पुरुषों और उनके लड़कों ने यह नौरतनगढ़ बसाया था। सवेरा हो गया, तब भी वे चले जा रहे थे। सूरज जब बहुत ऊपर चढ़ गया, तो बीरसा ने हाथ उठाये।

सामने ही सरना[1] था। जरिया गाँव का सरना बहुत प्रसिद्ध था। सरना पवित्र जंगल था। उस जंगल में मुंडा लोग ख़ास-ख़ास दिन आकर

1. एक जंगल का नाम।

रूठे देवता को बलि देते थे। और समय कोई उस बन में नहीं घुसता था। अब अगहन था। इस घने भीषण निर्जन वन में बीरसाइत लोगों ने आश्रय लिया। कोई बोल नहीं रहा था; सब चुप थे। बन के अंदर एक गहरी गढ़ैया थी। सभी ने वहाँ विश्राम किया; आँचल में बँधा सत्तू नमक के साथ खाया।

सुनारा पेड़ की चोटी पर चढ़कर नज़र रख रहा था। सहसा वह उतर आया। बोला : 'लोग आ रहे हैं।'

एक बूढ़ा, साथ में कई आदमी थे। बूढ़ा आगे आकर बोला : 'कहाँ हैं, बीरसा भगवान कहाँ हैं ?'

'यह रहे।'

बीरसा आगे आया।

'कहाँ ?'

'यह हैं।'

बूढ़ा बोला : 'पास आओ। मेरी आँखें नहीं हैं।'

बीरसा नज़दीक चला गया।

बूढ़ा बोला : 'तुम आ गये। हम जरिया गाँव से आये हैं। मैं उस गाँव का मुखिया हूँ। तुम यहाँ रहो, कोई चिंता की बात नहीं। जब चुटिया गये थे, जगन्नाथपुर गये थे, तब पता था कि नौरतन आओगे। कृष्ण पक्ष की रात है—अभी कोई बाधा नहीं है। इसीलिए हम कितने दिनों से राह देख रहे थे—हर महीने—कृष्ण पक्ष में। तुम आज ही मिले !'

'तुम बीरसाइत नहीं बने ?'

'न। पर जो हुआ, और जो नहीं हुआ, तुम सबके भगवान हो—सब मुंडा लोगों के।'

बीरसा ने उसके हाथ पकड़ लिये।

बूढ़े ने बीरसा के शरीर पर हाथ फेरा। बोला : 'कल लौटते वक्त जरिया में आराम करके जाना। तुम कैसे समय आये भगवान, और उलगुलान की बात कही—जब मेरी आँखें नहीं हैं। मुंडा लोगों का राज होगा ! दिकू चले जायेंगे ! सारे जंगल हमारे होंगे ! स—ब होगा, लेकिन मैं ही कुछ देख न पाऊँगा।'

बूढ़ा हाथ उठाकर पीछे हट गया; उसने साष्टांग प्रणाम किया। उसके साथियों ने भी प्रणाम किया। उसके बाद कपड़े की खूँट से कुछ गुड़ के डले, जौ के सत्तू का माँड़ निकालकर पत्थर के ऊपर रख दिया। बोला : 'हम चलें, जरिया से कोई डर नहीं है। हम कुल मिलाकर तीस घर हैं।'

बीरसा ने हाथ उठाकर उन्हें बिदा दी। उसकी आँखें विषादयुक्त

थीं; उनकी गहराई अथाह थी। जो उसके धर्म में दीक्षित थे और जो दीक्षित नहीं थे, सारे मुंडा उसे भगवान मानते थे। आज कितने दिन से यह विश्वास उसके लिए रक्षा-कवच बना हुआ था। जिन पहान, जिन देओंराओं ने, बीरसा को अस्वीकार कर दिया था, वे भी सिम्बुआ पहाड़ की सभा के बाद उससे चुपचाप कह गये थे कि सिंबोङा और बीरसा में अगर बाद में विरोध हो तो वे सब देवताओं से समझ लेंगे! उलगुलान के काम में पहान और देओंरा[1] भी सम्मिलित होना चाहते हैं, क्योंकि वे मुंडा हैं। मुंडा राज होगा—उस राज को गढ़ने के काम में वे भी भाग लेना चाहते हैं।

बीरसा ने कहा था : 'समय पर सबकी मदद की ज़रूरत होगी।'

अब अकेले पत्थर के ऊपर बैठकर, पानी में पैर डाल पानी हिलाते-हिलाते बीरसा सोच रहा था कि वह अब तक मुंडा लोगों को स्वतंत्रता नहीं दिला सका, लेकिन उनके जीवन के बहुत-से नागपाश तो उसने खोल दिये हैं। उसने असुर-पूजा, देओंरा और पहान की अलौकिक क्षमताओं में विश्वास, हज़ारों संस्कार और उनके बन्धनों को तो निस्सत्व कर दिया है।

अकेले बीरसा जानता था कि उसने कैसा असाध्य गंतव्य चुना है। प्राचीन जड़ता, अंधे कुसंस्कारों से मुंडाओं को मुक्तकर आज की दुनिया में, आधुनिक युग में उसने ले आना चाहा है। लेकिन वह एक ऐसी 'आधुनिक' सृष्टि भी करना चाहता है जिसके 'वर्तमान' में अंगरेज़ों का बनाया समाज या शासन नहीं रहे। बीरसा मुंडा लोगों को लाखों बरसों के अंधकार को एकाएक पार करवा के आधुनिक काल में ले आना चाहता है, किन्तु ऐसे आधुनिक काल में कि जहाँ पहुँचकर मुंडा लोग अपनी आदिम सरलता, न्यायबोध, साम्य की नीति को अटूट रख सकें—एक नये मानव-धर्म में आश्रय पा सकें।

मुंडा-रक्त बहुत प्राचीन है। मुंडा लोग उस कृष्ण-वर्ण के भारत की सन्तान हैं, जब कि भारत में श्वेत जाति ने क़दम तक नहीं रखे थे। बीरसा ने एक दुःसाध्य व्रत लिया था, मानो कि वह नदी की धारा को उलटा बहा देना चाहता हो। बाहर से आये हुए लोगों से सीखी हुई करम पूजा और अन्य रीति-नीति, प्राचीन असुर-धर्म की जादू-प्रक्रिया और रक्तोत्सव—सब एकबारगी हटाना चाहता था। धर्म का आचार, तंत्र-मंत्र, जादू, रीति-नीति का बोझ छाती पर रहने से मुंडा लोग सिर न उठा सकेंगे—इसीलिए एक सहज, सुन्दर, कर्मकांड, और रूढ़िगत विश्वासों के बोझ से रहित धर्म

1. एक देवता विशेष को मानने वाले।

की आवश्यकता है। इसीलिए बीरसा ने भगवान बनकर धर्म में, आस्था में क्रान्ति लाना प्रारम्भ किया।

मुंडा लोगों को जंगलों का अधिकार चाहिए—आदिम युगों की भाँति! आदिम ग्राम-व्यवस्था चाहिए; अबाध जीवन की भाँति जीवन का रहन-सहन चाहिए। और एक भूखे मुंडा और उसके प्रार्थित लक्ष्य के बीचोंबीच जो पाँत-की-पाँत दीवारें—जमींदार-महाजन-बनिये-मजदूरों के ठेकेदार-साहबों की दीवारें—और जिन अंगरेज़ों के बल पर ये दीवारें धीरे-धीरे ऊँची हुई हैं, उन्हें मिटा देने के उद्देश्य से बीरसा ने भगवान बनकर मुंडाओं को क्रान्ति-पथ पर अग्रसर किया है।

बीरसा ने उनसे कहा था कि उनके सब ध्येयों की पूर्ति अवश्य होगी। बीरसा जानता था कि तीर-धनुक-बरछा-बल्लम लेकर बन्दूक से लड़ना मुश्किल है। लेकिन उसे यह भी मालूम था कि मुंडा लोगों की एकता अस्त्र-शस्त्रों के कुल अभाव को मिटा सकती थी!

मुंडा लोग अपने को मुंडा कहने का गौरव प्रायः भूल चुके थे। उनका आत्म-विश्वास लौटाना होगा। फिर अपने को मुंडा कहकर परिचय देने में गर्व हो—यह बीरसा के निकट एक बहुत ही प्रिय और महान इष्ट था।

इसीलिए बीरसा भगवान बना था!

बीरसा पानी से उठ आया। पत्थर की टेक लगाकर चित लेट गया। औरतें गोला बनाकर बैठी थीं; धीमी आवाज़ में बातें कर रही थीं। वे एक-दूसरे के बाल बाँध रही थीं। कोई दूसरे की गोद में सिर टिकाये लेटी थीं।

देखते-देखते बीरसा की आँखों के आगे धुंधलापन छा गया। भगवान बनने का बहुत मूल्य चुकाना पड़ता है। भगवान का जीवन किसी बारात के समान नहीं कि बाजे बजाकर, आम्र-पल्लव से जल छिड़ककर औरतें वर को उतारकर, चूमने का पत्नियों-सा व्यवहार करें! बीरसा को तेल-हल्दी में नहलाकर, किसी लड़की का बाप गोद में न बैठायेगा! पाँच पंचेश[1] आकर ब्याह में नहीं देंगे! किसी दुलहिन के साथ तिलक और जनेऊ का विनिमय बीरसा नहीं करेगा—जल, अग्नि, धान, दूध, तलवार, तीर और धनुक—सात चीज़ों के सामने रहने पर भी वह किसी को स्वीकार नहीं करेगा।

---

1. जैसे उत्तरी भारत में उपनयन-संस्कार के समय पाँच ब्राह्मण मिलकर यज्ञोपवीत पहनाते हैं।

उस जीवन में, केवल रात के अँधेरे में मीलों पैदल चलते रहना था। एक के बाद एक सभा बुलाकर उलगुलान का मंत्र मुंडा लोगों के कान में फूँकना था। मनुष्य बीरसा को जो-जो अच्छा लगता था, वह सब भुला देना पड़ेगा। वह भगवान था न !

बीरसा ने आँखें बन्द कर लीं।

दूसरे दिन सवेरे नौरतनगढ जाकर अछूते जंगल के गढ़ से बीरसा ने वहाँ की मिट्टी ली। औरतें नये बर्तन में पवित्र झरने का जल भरकर लौट आयीं। लौटती बार जरिया में आराम कर तब वे बोर्तोदि लौटीं। बीरसा बोला : 'कल सवेरे मुंडा लोग डोम्बारी पहाड़ पर जायेंगे। जितने लोग आ सकेंगे, आयें। अब अगहन मास है। पूस लगने में अभी भी बीस दिन बाकी हैं। पूस लगने से पहले और भी सोलह-अठारह सभाएँ करनी हैं।'

सोमा बोला : 'कल ही ?'

'समय कहाँ है ? समय तो है नहीं।'

कोम्ता जमीन में पैर रगड़कर बोला : 'घर पर माँ फिकर में बहुत सूखी जा रही है। एक बार जाकर देख आता !'

'तो जाओ, फिर लौटना मत। पीछे का मोह रहने पर इस काम में मत आना। पहले ही कह दिया था।'

बीरसा की बात सुनकर कोम्ता बहुत ही आहत हुआ। बोला : 'भगवान ! गलती हुई।'

कोम्ता की क्षुब्ध आवाज़ सुनकर सभी एक-दूसरे की ओर देखने लगे। बीरसा बोला : 'मेरी माँ है इसलिए मैं उसकी ज़्यादा फिकर करूँगा ? या तुम फिकर करोगे ? अगर सोचते हो, तो समझ लो कि जिसने फिकर की, उसी चिन्ता की राह से तुम्हारे मन में दीमक पैठ गयी। जैसे-जैसे दिन बीतेंगे, चिन्ता की दीमक तुम्हें खा-खाकर खोखला कर देगी। फिर तुमसे उलगुलान का काम न हो सकेगा।'

डोम्बारी में पहाड़ की चोटी नाम की कोई चीज़ नहीं थी। वह ऊपर समतल, फैला हुआ था, प्रायः तीन सौ फ़ीट ऊँचा। पत्थर की दरारों में पैर रखकर, सूखी घास के गुच्छों को पकड़कर ऊपर चढ़ना होता था।

डोम्बारी के ऊपर सौ से अधिक मुंडाओं के जमा होने पर बीरसा ने एक सफ़ेद झंडा ऊँचा किया। पूरब की ओर एक दरार में उसे लगा दिया। एक लाल झंडा पच्छिम की ओर लगा दिया। बोला : 'सफ़ेद झंडा मुंडा

लोगों का है। लाल झंडा है दिकू लोगों के जुल्मों का। अब लाल झंडा मैंने फाड़कर फेंक दिया। अब तुम लोग लड़ाई करने चले हो। डोम्बारी के पत्थर इसी तरह खून से लाल हो उठेंगे। अब तुम लोग किस राह पर चलोगे ?'

'उलगुलान ! उलगुलान !'

'अब समझ लो, सारे बीरसाइतों के घर गढ़ बनेंगे, यह कह रहा हूँ। और भी समझ लो। डोम्बारी के पीछे बहुत बड़ा पहाड़ डोमरा देख रहे हो ? उस पहाड़ की जैसी चढ़ाई है वैसी ही ऊँचाई भी है। बाघ के भगाने से हिरन के पैर फिसलते हैं, लेकिन मुंडा उस पहाड़ पर चढ़ते हैं—उनके पैर नहीं फिसलते। वह पहाड़ कैसे बना है ?'

'सेंगेल-दा। सेंगेल-दा !'

'सेंगेल-दा ! आग की वर्षा हरहराकर उतरी थी—यन्त्रणा से धरती का शरीर काँप उठा था। उसी कम्पन से ये सब पहाड़ बने हैं। अब उसी पहाड़ की गुफ़ाओं में तुम चले जाओगे। सारे बीरसाइतों के घर गढ़ बनेंगे। उन घरों में आज से, यहाँ जितने लोग हैं, वे केवल बलोया-फरसा-तीर-धनुक जमा करेंगे। यह काम नानक करेंगे। क्यों करेंगे ?'

'उलगुलान ! उलगुलान !'

'प्रचारक लोग औरतों की मदद लेंगे। तुम रोगोतो, बोर्तोदि, हर ओर—गाँव छोड़कर जंगलों में फैल जाओगे। घने में, जंगलों के हृदय में घुसकर घर बनाओगे। घर ऐसा होगा जो मचान पर बनाया जायेगा। चार मानुस ऊँचा मचान, बाँस की सीढ़ी होगी, मचान पर घर रहेगा। ज़रूरत पड़ने पर उस घर से भागना पड़ेगा। क्यों घर बनाओगे ?'

'उलगुलान ! उलगुलान !'

'तुम्हारा यही काम है। तुम सदा मुझसे मिल न सकोगे। अभी बसिया, सिसाई, कोलेरि, बानो, लोहारडगा, तुरपा, करा, खूँटी, मुरुहू, तामार, बुंडू, सोनाहातू, जोरहाट, जिलिट्-सेरेत्, क्रोन्तेया, चरारी, मनिसाई, बीरता, कोटाम, सोनपुरगढ़, ताउ, तिलाई-मरचा, नागफेनी, पालकोट, तिरला, मनिहातू, चात्रादी, कुसुमटोली, दिम्बूकेल, कमरा, पीपी, दोर्मा, गुराइदी, बिचाकुटि, कारिका, कोटागर—जहाँ-जहाँ मुंडा हैं—सारी जगहों पर मैं जाऊँगा; एक ही बात कहूँगा। क्यों जाऊँगा ? किसने हाथ उठाया ? बतायेगा ?'

'मैंने ! एतकेदि का गया मुंडा।'

'क्या कहना है ?'

'भगवान ! सारे मुंडा लोगों ने तुम्हारा धर्म नहीं लिया है। वे उल-

गुलान में आयेंगे ?'

'तुम नौरतन नहीं गये। जाने पर जरिया गाँव का मुखिया, एक अंधा मुंडा, तुम्हारी आँखें खोल देता। मुंडा-राज जब होगा तो वह अकेला बीरसाइत होगा! हमारे सबके पुरखे जब मुंडा-समाज में, मुंडा-राज में थे, वे नमक मिलने पर भी बराबर का हिस्सा पाते, सोना पाने पर भी बराबर-बराबर हिस्सा करते थे। मुंडा-राज लाने पर सारे मुंडा लोगों को शामिल करना पड़ेगा, समझे ?'

'शामिल होंगे ?'

'होंगे, होना पड़ेगा। दिकू लोगों के हाथों सभी मुंडा एक-से मरते हैं, एक-सा कष्ट पाते हैं। मैं सबको बुलाऊँगा जी, यही मेरा काम है।'

'समझा।'

'तुम्हें जिस तरह अलग-अलग काम दिया है, वे भी वही करेंगे। तो समझ लो! राँची जिला में उलगुलान चलेगा। चाईबासा में उलगुलान चलेगा। वे लोग कितने सिपाही लगायेंगे ? कितनी बंदूकें दागेंगे ?'

'तुम अकेले किस-किस ओर जाओगे ?'

'मैं अकेला हूँ ? तुम सब साथ नहीं हो ?'

'हैं, हैं...भगवान !'

'तो सुनो, आज अगहन की दस तारीख को कह रहा हूँ। पौष की दस तारीख को साहब लोगों का बड़ा दिन होगा। उस दिन से उलगुलान शुरू होगा। सात तारीख से चारों दिशाओं में, पहाड़ों पर, जंगलों में आग जलेगी, वही इशारा होगा। और !'

'कहो हे !'

'सारा मुंडा क्षेत्र घूम आकर उलगुलान के पहले मैं फिर डोम्बारी में तुमसे मिलूँगा। क्यों मिलूँगा ?'

'उलगुलान ! उलगुलान ! उलगुलान !'

'वही 'बोलोपे बेलोपे' गान गाओ। रात देखो न तुम्हारे-हमारे शरीर की तरह काली है, तारे गान सुनेंगे इसलिए उतरकर देख रहे हैं, जंगल में बतास बह रही है, जंगल जाग उठे हैं, पत्तों की सरसराहट सुनो !'

'बोलोपे बेलोपे हेगा मिसि होन् को...' काली रात, काले पत्थर, काले शरीर ! काले-काले हाथ हाथों में पकड़कर तीन झुंड बीरसा को घेरकर गान गाने लगे, धीरे-धीरे चक्कर लगाने लगे। मंत्र की तरह गान छाती की गहराई से निकलने लगा। रात बढ़ रही थी। आकाश से तारे धीरे-धीरे खिसकने लगे थे। हवा में ठंडक थी। जंगल के काले शरीर पर कुहासा छा रहा था।

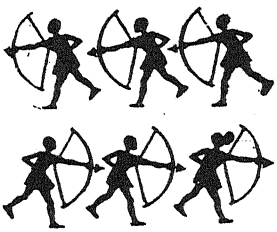

चुटिया और जगन्नाथपुर के मन्दिर पर क़ब्ज़ा कर, फिर वह क़ब्ज़ा बनाये रखे बिना ही बीरसा चला गया था। न उसे पकड़ा गया; न उसका पता चला। कंघी से जिस तरह बाल काढ़े जाते हैं, उसी तरह पुलिस ने जंगल और पहाड़ छान डाले।

कोई पता नहीं चल रहा था, इससे मीअर्स परेशान हो गये। सारी परेशानी उनकी ही थी। ऊपर वालों को कुछ समझा नहीं पा रहे थे। उन्हें क्यों लग रहा था कि मुंडा अंचल अब अग्नि-गर्भ की तरह फटने को है। किसी भी दिन, किसी भी समय आग भड़क उठेगी!

'लेकिन मुंडा हैं कहाँ?'

मुंडा लोग जंगल और पहाड़ों में छिपे थे। पुलिस के व्यर्थ के यत्न करने और चक्कर लगाने को देखकर वे हँसी से चुपचाप लोट-पोट हुए जा रहे थे। पुलिस के चले जाने पर वे गान गाते। उनके खून में नशा छाया हुआ था। ऐसा नशा किसी शराब से नहीं होता। उलगुलान या पूर्ण क्रान्ति के नशे में मुंडा पागल हो रहे थे।

सब जगहों पर बीरसा सशरीर उपस्थित नहीं था। फिर भी सब गान बीरसा को लेकर ही थे।

वे गाते थे :

बीरसा भगवान ने पुकारा, ओ भाई चलो, चलें
चुटिया मन्दिर।
उस मन्दिर से निकलकर बोले
चलो, चलें जगन्नाथपुर के मन्दिर।
हम गये, रहे तीन रात
देवता को प्रणाम किया।
चुटिया काँप उठा
देखो, काँप रहे राँची और डुरांडा।

जैसे कहीं से उनके मानव-मन में अपार शक्ति उतर आयी हो ! रक्त में कठोर विश्वास जाग्रत हो उठा था—विश्वास की ज्वालाएँ लपलपाने लगी थीं।

वे गा रहे थे :

जमींदार के अत्याचारों की यंत्रणा से
मानव के दुःख से देश आज उछल रहा है।
चलो, उठा लो धनुक, तीर और बलोया
जीने से मरना भला आज।
हमारे नेता बीरसा भगवान
हमारे लिए ही वे आये यहाँ
जीने से मरना भला आज।
चल तैयार हों तूणीर, तीर और तलवार ले
डोम्बारी पहाड़ पर जमा हों सब
धरती के आबा बात करेंगे वहाँ।
बन्दरों की किचकिच से डरेंगे नहीं हम
किसी तरह छोड़ेंगे नहीं जमींदार, महाजन,
बनियों-विदेशियों को।
उन्हीं ने तो छीन लिया है हमारा देश !
अपना अधिकार छोड़ेंगे नहीं
चीता, बाघ के दाँतों, साँप के आक्रमण से पाया था देश।
इस सुन्दर देश को उन्होंने छीन लिया।

ऐसे गान सुनकर बीरसा की छाती भी रह-रहकर काँप उठती थी। मुंडा लोग यह क्या कह रहे हैं ? जीवन से मृत्यु अच्छी है ? किसने ये गान रचे ? किसने इन्हें स्वर दिये ?

कोई बता न सका। बीरसा समझ गया कि इन गानों का रचने वाला समय स्वयं है—स्वर भी समय के दिये हुए हैं !

क्योंकि समय बहुत विस्फोटक, अस्थिर, व्यग्र होता है—समय के हाथों में तीर, हृदय में ज्वाला, आँखों में एकाग्र लक्ष्य रहता है ! बीरसा की समझ में आया कि सुगाना या करमी उपलक्ष्य मात्र थे—उसे युग ने उत्पन्न किया है। मुंडा लोगों के जीवन में होली की अग्नि हर बरस जलती है। उलगुलान की आग बीरसा के सिवा कोई जला नहीं सकता था। अब आवश्यकता थी अग्नि के उत्सव की, इसलिए समय बीरसा को आगे ले आया है।

बीरसा सोच रहा था : पाँच बरस हो रहे हैं : साल 1895 में मुंडा

लोगों ने सोचा था—जो कुछ सरदारों ने उन्हें समझाया था, वही समझा था।

मुंडा लोगों ने सोचा था कि लड़ेंगे तो निश्चय ही। लेकिन लड़ाई के माने क्या हैं ? उसके अर्थ, अभीष्ट क्या हैं ?

ज़मींदारों को लगान नहीं देंगे !

बिना कर के जमीन चाहिए !

जंगलों पर फिर से आदि-जातियों का अधिकार होना चाहिए !

हाँ, बीरसा सरदारों के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ था। उन लोगों ने आन्दोलन को जीवित रखा था जिससे मुंडा लोगों के सपनों में यह बात उभरने लगी थी, उनके लिए अनजान नहीं रही थी। बीरसा का काम उससे बहुत आसान हो गया था।

बीरसा ने अपने से प्रश्न किया। बीरसा ने क्या भगवान बनना चाहा था ? उसके निकट आकर मुंडा लोगों ने उसे स्वीकार क्यों कर लिया था ?

सरदारों ने उसकी कामना क्यों की थी ? उनका लड़ाई करने का मन है—सेनानी नहीं हैं इसीलिए न ?

उनका रास्ता क़ानून का रास्ता था—बीरसा का रास्ता युद्ध का है। दोनों रास्ते मिले कैसे ?

आज तो बीरसा मुंडा जाति को लेकर सशस्त्र संग्राम के पथ पर उतर पड़ा है। फिर भी सरदार लोग उसके साथ क्यों शामिल हैं ?

बीरसा ने क्या चाहा था ? प्राचीन मन्दिर में क्यों गया था ? बीरसा को पता होगा, क्यों गया ! आदिम मुंडा-धर्म ने आदिम सरलता खो दी थी। मुंडा लोगों के मन में अपने ऊपर आस्था लौटा लाने की आवश्यकता थी।

मुंडा लोगों के जीवन से सारे खर-पतवार उखाड़ फेंकने की ज़रूरत है। जाति के जो शत्रु हैं, चाहे अर्थनीति में हों, या धर्म में, उनके बहिष्कार की आवश्यकता है।

और कोई राह नहीं है। क्योंकि बीरसा का वह आदिम जंगल—धर्षिता, अशुद्ध, अशुचि माँ—रो रही थी : 'मुझे शुचि करो, बाप !' मुंडाओं को संगठित कर, उनके हाथों में अस्त्र देकर घूमते-फिरते प्रति क्षण बीरसा समझ रहा था कि उनका शरीर ही छोटा नागपुर की धरती है, उनका रक्त कौताजने[1] और काञ्ची[1] नदी का प्रवाह है, उन नदियों के तटों पर ही उनकी जंगल-माँ रो रही है !

---

1. नदियों के नाम।

इसीलिए तो चार-पाँच बरस में बीरसा खुद समझ गया था कि वह मुंडाओं को विश्वास दिला सका था, कि वे जो चाहते थे वही हुआ :

जो आदिवासी नहीं वे जबरन दखल करने वाले हैं !
मुंडा ही धरती के असली मालिक हैं !

और इस स्वर्ग-समान स्वप्न को मुट्ठी में भर लेना चाहिए—एक मुंडा-अधिकृत मुंडारी देश, जिस देश में साहब-सरकारी कर्मचारी और मिशनरी न हों। मुंडा लोगों के निकट अब सबसे अधिक वांछनीय धन है बीरसा का राज। बीरसा का राज—माने बीरसा का धर्म। बीरसा का धर्म—माने बीरसा का राज। इस स्वर्ग-समान स्वप्न को प्राप्त करने के लिए अपना रक्त बहाना होगा, दूसरों का रक्त लेना पड़ेगा !

हर सभा में बीरसा ने एक ही बात कही। डोम्बारी में अगहन मास में भी सभा हुई थी।

भयानक ठंड थी—थकाने वाली रात में, चंद्रमा रात को बारह बजे के बाद निकला था। डोम्बारी पहाड़ के ऊपर बीरसा एक समतल पत्थर पर बैठा था। एक-एक कर सत्तर-अस्सी लोग इकट्ठा थे—कूड़ाग्राम का रतन मुंडा सबसे बाद में आया।

बीरसा ने पूछा : 'कहो, तुम्हें कुछ कहना है ?'

कुड्डा के जगाई आदि तीन-चार लोग एक साथ बोल पड़े : 'ज़मींदार, जागीरदार, ठेकेदारों के अत्याचार की कहानी।'

बीरसा बोला : 'तो तीर-धनुक-बलोया तैयार रखो।'

वे बोले : 'रखेंगे।'

बीरसा ने कहा : 'हथियार किस काम आयेंगे ?'

वे बोले : 'तुम बता दो।'

बीरसा ने तब कहा : 'हथियारों से तुम लोग ठेकेदार, जागीरदार, राजा-हाकिम, किरस्तानों को मारो-काटोगे।'

वे बोले : 'राजा, हाकिम, किरस्तान अगर हम पर बंदूकें दागें ?'

बीरसा ने फिर कहा : 'उनकी बंदूक-गोली पानी की फुहार बन जायेंगी। देखो, चौदह दिन बाद मैं फिर तुमसे मिलूंगा। उस दिन किरस्तानों का बड़ा दिन है। तुम लोग हथियार तैयार रखो।'

बातें करते-करते भोर हो गयी।

सभा-सभा-सभा ! सभा के बाद सभा ! बीरसा कितनी राह चल चुका था ? साल 1899 के अक्तूबर से दिसम्बर के बीच राँची और चाईबासा की

कितनी ही जगहों पर बीरसा गया था।

चालकाड़ में बैठकर करमी रोती थी : 'बीरसा ! बीरसा ! बीरसा !'

करमी को पता नहीं था कि बीरसा माने छोटा नागपुर—बीरसा का रक्त अब छोटा नागपुर की बरसात की नदी के समान था। करमी को पता नहीं था, कि बीरसा के रक्त में बैठी है एक नंगी जंगल-माता। वह करमी की तरह नहीं थी, साली की तरह नहीं थी, सबसे अलग, भिन्न—वह स्वयं में संपूर्ण थी। उसी माता का रोना सुन रहा है, इसलिए बीरसा इतनी राहें पार कर सका है।

उसी माँ का रोना सुन रहा है, इसलिए बीरसा मुंडा लोगों को विश्वास करा सका था कि बीरसाइत मुंडा एक अलग जाति है !

वे सारे मुंडा लोगों के लिए मर सकते हैं। उनके निकट जीवित रहने से मरना बहुत श्रेयस्कर और प्रिय है। उनकी राह खून से लथपथ राह है।

किन्तु बीरसाइत मुंडा, बीरसाइत न होने से बाप-माँ-भाई-बहन किसी के हाथ का नहीं खाते, किसी के घर नहीं रहते।

बीरसा ने उनके मन में यह गर्व भर दिया था। बीरसाइत बनने के बाद उसी अहंकार से सिर ऊँचा करके वे चलते थे। बूढ़ा धानी मुंडा, पगला दीवाना, सबसे बेसुरे गले से गान गाता, और हाथ उठाकर नाच-नाचकर कहता : 'मुंडा बनकर पैदा हुआ, कभी इतना गरम खून रगों में गरजेगा, यह पहले नहीं मालूम था। हे भगवान, यह पता चल गया तो मेरे हाथ में चाँद आ गया। अब और कुछ न मिलने पर भी तुमसे कुछ न माँगूंगा !'

रात में पहाड़ों पर पहाड़ और जंगलों से होकर मील के बाद मील चलते-चलते बीरसा बोला : मेरी माँ, अब मत रोओ। तू मेरे खून में थी, इसीलिए टुइला-बाँसुरी बजाकर अखाड़े में नाचने को मन नहीं करता था। हमेशा मन में होता रहता था कि मुझे और भी कुछ करना है। मैं दुनिया में यही काम करने आया हूँ।

मेरा मन नहीं भरा, मिशन में जाकर, बनगाँव से। मन भरा नहीं, माँ—नहीं तो साली की तरह, परमी की तरह किसी लड़की से सगाई करता—गाँव के पहान का हुक्म मानकर—करमी-सुगाना का वंश चलाकर—जीवन बिता सकता था। कैसा दंश मुझे हो रहा था—तब मुझे पता नहीं था ! बस, मन में यही होता था कि कोई और काम करने को आया हूँ। अब मालूम हुआ कि तेरा ही दुःख मेरी रगों में आग लगा रहा था !

अपने गाँव से उखड़ते-उखड़ते, सारे अधिकारों से वंचित होते-होते मुंडा लोगों की रीढ़ में बिलकुल शक्ति नहीं रही।

माँ, इसीलिए मैं इतना कठोर हो गया हूँ। जिस-जिस चीज, भाव, रीतिरिवाज को लेकर मुंडा सब भूले रहते थे, मैंने वे सब छोड़ दिये हैं। हाँ, मैं तेरा भगवान हूँ।

फिर नाच-गान—

करम-होली-सोहराइ[1] परब में मस्ती नहीं।
सिर पर फूल—बालों में फूल—हंडिया-ताड़ी का नशा अब नहीं।
सब भूलकर एक मन, एक लक्ष्य रहो।

इस तरह मुंडा लोगों को एक बंधन में बाँधा है, उन्हें मरना सिखाया है।

जो सिखाया है वह उन्होंने सीखा भी है या नहीं, इसकी परीक्षा लूंगा 24 दिसंबर को।

24वीं दिसंबर...24वीं दिसंबर...24वीं दिसंबर...मुंडा मन-ही-मन जप रहे थे!

साहब लोगों को कुछ पता न था।

साहब लोग क्या कर रहे थे?

राँची के यूरोपियन क्लब की बिलियर्ड टेबल असाधारण थी—खूब लम्बी-चौड़ी। जैसी पॉलिश थी, वैसी ही श्रेष्ठ उसकी कारीगरी भी थी। डिप्टी-कमिश्नर को बिलियर्ड का खेल बहुत अच्छा लगता था। बिलियर्ड का क्यू हाथ में लेकर सफ़ेद गेंदों को जमा कर पॉकेट में डालकर उनके उत्तेजित स्नायु ठंडे हो जाते थे। राँची के श्वेतांग-समाज ने डिप्टी-कमिश्नर की ओट में उनके बिलियर्ड-प्रेम की एक व्याख्या दी थी!

राँची की तरह की एक जंगली जगह पर पड़े रहने से डिप्टी-कमिश्नर की मेमसाहब खुश नहीं है। यहाँ है क्या? पहाड़? जंगल? सुन्दर आब-हवा? उसके लिए वह यहाँ क्यों पड़ी रहे? डिप्टी-कमिश्नर आदमी हैं। वह शिकार-उकार करके खुश रह सकते हैं। लेकिन उनकी पत्नी को यह सब-कुछ क्यों अच्छा लगे?

---

1. पौष मास का एक उत्सव।

डिप्टी-कमिश्नर मेमसाहब को समझा नहीं पाते थे कि प्रमोशन हुए बिना राँची से बदली होना असंभव है। भारत में रहने लायक़ शहर, इस पूर्व भारत में, एकमात्र कलकत्ता है। कलकत्ता कौन नहीं जाना चाहता ? लेकिन लाल फ़ीते का फंदा बहुत भयंकर रहता है न ! उसे तोड़कर आगे बढ़ जाना मुश्किल है !

मेमसाहब के साथ होने वाली बहस में डिप्टी-कमिश्नर के स्नायु तन जाते ! तब वे बिलियर्ड का खेल शुरू करते और खेलते रहते।

इस बार भी वे जैसा खेलते हैं, खेल रहे थे। पुलिस-सुपरिंटेंडेंट जिस तरह देखते थे, देख रहे थे। भयंकर ठंडक थी, जैसी कि राँची में ही पड़ती है। बेयरा क़ायदे से पेय दिये जा रहा था।

डिप्टी-कमिश्नर ने सुपरिंटेंडेंट से कहा : 'दैट बोगीमैन, दैट बीरसा ?[1] क्या मर गया ?'

'मरा ही-सा है।'

'क्यों ?'

'एकदम ख़ामोश है। रीढ़ तोड़ दी है न उसकी ! समझ गया है कि ज्यादा टें-टें करने से फ़ायदा नहीं होगा।'

'मीअर्स का क्या कहना है ?'

'मीअर्स ? बीरसा के बारे में जो शोर फैलता है सब पर विश्वास कर लेना उसकी विवशता है।'

'मीअर्स बेकार आदमी नहीं है जी।'

'उस बार, ओहो, साल 1898 के मई महीने में सिंहभूम पुलिस के साथ क्या मीअर्स ने झगड़ा नहीं खड़ा कर दिया था ?'

'वह भी तो बीरसा को पकड़ने के बारे में ही था। सिंहभूम की पुलिस बिगड़ गयी थी कि बीरसा राँची में छिपा है, क्योंकि गिडियन और प्रभु-दयाल को पकड़ने के लिए सरकार ने इनाम नहीं दिया। राँची पुलिस को रेवरेंड हफ़मैन ने चिढ़ा दिया। कहा : बीरसा ने तामार थाने की झोंपड़ी छोड़कर चक्रधरपुर थाने के उत्तर की ओर के पहाड़ पर चौकी बाँधी है, और सिंहभूम की पुलिस कुछ नहीं कर रही है।'

'अच्छा, ऐसा भी तो हो सकता है कि बीरसा राँची और सिंहभूम दोनों जगह काम चला रहा हो ? अगर वैसा हो तो ?'

'वह सुपरमैन तो नहीं है[2]।'

---

1. वह शैतान का बच्चा, वह बीरसा।
2. वह दैवी शक्ति से सम्पन्न तो नहीं है।

'मुंडा लोग उसे सुपरमैन ही मानते हैं।'

'हफ़मैन क्या कहता है ?'

'कुछ कहता तो ख़ैरियत थी। लिखता है, लगातार लिखता जा रहा है। उसके सर पर बीरसा का भूत सवार है। चारों ओर उसे बीरसा का प्रभाव दीख रहा है। मिशन के जितने मुंडा हैं, सब जैसे बीरसाइत होते जा रहे हैं!'

'हो रहे हैं, पता लगाया है क्या ?'

'क्या पता ? मुंडा लोग इस बार ज़रूरत से ज़्यादा ख़ामोश हैं। होली के बाद शिकार तक नहीं खेला।'

'लक्षण तो अच्छे नहीं हैं!'

'जाड़े का मौसम है। इन दिनों उनकी तकलीफ़ बहुत बढ़ जाती है। मिशन में झुंड-के-झुंड जाया करते हैं।'

'हर मिशन में कहलवा दिया है कि इस बार बड़े दिन पर ज़्यादा कम्बल और कपड़े बाँटना।'

'यह ठीक है। धर्म क्या करता है, यह देखने से क्या पुलिस की चलती है ? धर्म को कौन छेड़ने जाये ? ज़रूर तुम भी नहीं जाओगे। छोटा नागपुर की मालगुज़ारी जमा करने के सवाल को लेकर ही दिमाग़ ख़राब होने को है। उस पर हफ़मैन की एक के बाद एक चिट्ठी!'

'हफ़मैन भी फ़ालतू आदमी नहीं है।'

'वह तुम्हारे लिए। उसने तो 'एन्साइक्लोपीडिया मुंडारिका'[1] लिखा है कि उसे सब मालूम है।'

'हफ़मैन मुंडा लोगों के समाज, स्थिति, सब को बहुत अच्छी तरह ही समझता है, समझा है। वह अगर डरता है तो हालत सीरियस[2] है। दो अकाल पड़ चुके हैं; देश की हालत यों ही ख़राब है।'

'बिना खाये मुंडा मरेंगे नहीं। उन्हें खाने को मिला ही कब, कि खाना न मिलने पर मर जायेंगे ? वे पैदा भी होते हैं सुअर की तरह—झोल-के-झोल बच्चे पैदा करते हैं! देखा नहीं है ?'

'न, बीरसा ने एक काम-सा काम किया है! मुंडा लोगों को क्या समझा दिया—पता नहीं। उन लोगों के यहाँ बच्चे अब पहले की तरह पैदा नहीं होते।'

'अरे बाबा! बड़ा दिन सामने है। डिन्नर, नाच, फ़ेट, शिकार—इस

---

1. जॉन हफ़मैन द्वारा लिखित मुंडा जीवन पर बृहत्कोश।
2. ख़तरनाक।

सब के बारे में नहीं सोच सकते ? तुम भी हफ़मैन की-सी बातें करते हो !'

हफ़मैन, कैथॅलिक मिशन के रेवरेंड हफ़मैन ने हाउज़ में बैठकर हाथ ऐंठे, हाथ सिर पर फेरा। उन्हें अमंगल का आभास हो रहा था, लेकिन वह डिप्टी-कमिश्नर को समझा नहीं पा रहे थे। हफ़मैन ने डिप्टी-कमिश्नर को लिखा : 'मुंडा लोगों के प्रति मुझमें कोई विद्वेष की भावना नहीं है। लेकिन दिखायी दे रहा है कि अंगरेज़ या दूसरे हिंदुओं, विदेशियों पर उनको बहुत आक्रोश है। दो बरसों से उन्हें समझा रहा हूँ कि इस सरकार को तुम नहीं बदल सकोगे। रुपये देकर सामू मुंडा और दूसरे बीरसाइतों की मदद की। अब सुन रहा हूँ कि साहब होने के कारण वे लोग मेरा और फ़ादर कार्बेरी का भी खून कर डालेंगे। जो जेल गये थे उनमें कितने ही के परिवारों की भी मदद करके देखा, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ...।'

हफ़मैन जानते हैं कि राँची में सब उन्हें पागल समझते हैं। फिर भी उन्होंने डिप्टी-कमिश्नर को चिट्ठी लिखी है।

ताज्जुब है कि डिप्टी-कमिश्नर ने इस बार हफ़मैन की बात को बिलकुल उड़ा नहीं दिया। मुंडारी जानने वाले एक दारोगा और कांस्टेबल को जाँच करने के लिए भेजा है। ख़ुद भी टूर पर निकले हैं।

'कुछ भी पता नहीं चला। सिर्फ़ घूमना ही पल्ले पड़ा।' राँची से लौटकर डिप्टी-कमिश्नर ने सुपरिंटेंडेंट से कहा : 'अगिया बैताल ! अगिया बैताल के पीछे भागना असंभव है !'

'क्या सुन आये ?'

'सुना है कि बीरसा ने एक दिन निर्जन में बैठकर तपस्या की। अब वह प्रगट होगा।'

'कब ?'

'कब, यह नहीं पता चला। पर सुना है कि बीरसा को सैकड़ों मील के इलाक़े में देखा जायेगा।'

'इसके मतलब ?'

'पता नहीं।'.

डिप्टी-कमिश्नर और सुपरिंटेंडेंट जब बातें कर रहे थे तब तारीख़ 23 दिसंबर 1899 थी। बीरसा ने मुंडा लोगों से कह दिया था कि उलगुलान के दो खंड हैं। पहले खंड में आग जलाकर, तीर छोड़कर किरस्तानों को डराना होगा। दूसरे खंड में शुरू होगा सशस्त्र संग्राम !'

24 दिसंबर—क्रिसमस ईव[1] है। यूरोपियन क्लब रोशनी में जगमगा रहा है। ट्रे में शीशे के गिलास और बोतलें सजाकर बेयरे चक्कर लगा रहे हैं। रंगीन काग़ज़ की लड़ियाँ लटक रही हैं, मालाएँ झूल रही हैं। सजे हुए क्रिसमस के पेड़ के चारों ओर बहुत-से लोग और महिलाएँ बातें कर रही हैं।

सहसा बाहर गड़बड़ सुनायी पड़ी।

नाच रुक गया। बाजा भी। सबने एक-दूसरे की ओर देखा। भागा-भागा हाँफता हुआ ख़ानसामा अन्दर आया। डिप्टी-कमिश्नर से बोला: 'हुजूर, हम जा रहे हैं हुजूर, बीरसाइत शहर में तीर चला रहे हैं। साहबों की तलाश कर रहे हैं।'

सुपरिंटेंडेंट ने डाँटकर कहा: 'झूठी बात! इस शहर में एक भी बीर-साइत नहीं है।'

'हुजूर, खाना लेने जो लोग आये थे, इधर-उधर बैठे थे, वही तो बीरसाइत हैं। जर्मन मिशन पर तीर छोड़े। छेदी मिस्त्री तीर लगने से मर गया, हुजूर।'

'झूठी बात!'

'आपके बँगले के सामने तीर चल रहे हैं। आपका गारद ज़ख्मी हो गया है। हम भागते हैं, हुजूर। अब यहाँ रहने से वे मार डालेंगे।'

सहसा जेल में पगली घंटी बजने लगी। वहाँ क्या हुआ?

डिप्टी-कमिश्नर बोले: 'सुपरिंटेंडेंट, जेल जाइये। मैं पुलिस की बैरकों में जा रहा हूँ। वहाँ से ऑफ़िस।'

डिप्टी-कमिश्नर की तबियत हुई कि हाथ काट डालें। बड़ा दिन है। सारे दफ़्तरों में लोगों की छुट्टी है। सरकारी दफ़्तर बन्द हैं। किस तरह पता चलेगा? कैसे इंतज़ाम होगा?

'घोड़ा लाने को कहो।'

उनके डिप्टी बोले: 'किससे कहूँ? नौकर-चाकर-अर्दली तो सब भाग गये।'

'रियली? फ़ूल्स! इसके कोई माइने होते हैं?'

डिप्टी-कमिश्नर बाहर आये। पुलिस-बैरक में आये। बोले: 'शहर में राउंड लगाओ। हालत देखो। गड़बड़ देखो तो जब तक बहुत ज़रूरी न हो

1. बड़े दिन के उत्सव से पहले की शाम।

गोली मत चलाना। मैं दफ़्तर जा रहा हूँ।'

घर से लगा हुआ दफ़्तर था। डिप्टी-कमिश्नर की पत्नी कलकत्ता में थी। देखा कि घर की रोशनी बुझाकर नौकर-खानसामा, बेयरा, भिश्ती, मेहतर, माली साईस, बावर्ची—सभी बैठक में बैठे हैं। उनसे कहा : 'कचहरी के कमरे में बिस्तर लगा दो। दरवाज़ा खुला रहे। मैं बन्द कर लूँगा।'

'हुज़ूर!'

'क्या है?'

'हम...!'

'डरने की कोई बात नहीं है।'

'लेकिन...!'

'चौबीस घंटे में सब ठीक किये दे रहा हूँ।'

रात बीती। सवेरे से समाचार आने लगे। शहर में गोली चलाने की कोई ज़रूरत ही नहीं पड़ी, क्योंकि कोई तीर चलाने वाला मुंडा दिखायी नहीं पड़ा। बीरसा का नाम जिस तरह अगिया बैताल की तरह जलता है, भुलावे में डालता है, ग़ायब हो जाता है, मुंडा लोगों के अभिव्यक्तिशून्य चेहरों की तरह अंधकार के मौन में बीरसाइत लोग भी ग़ायब हो गये। फिर मौन अंधकार छा गया। राँची शहर में वे कहीं नहीं थे।

जेल के डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट अमूल्य बाबू अँधेरे में खड़े रहे। देखा कि हटिया की राह पकड़कर झुके हुए बदन का दोहरा किये मुंडा चले जा रहे हैं। देखकर वे जेल में लौट आये। आज रात को जेल-अधिकारियों को मुस्तैद रहने का हुक्म था। जेल से क़ैदी भाग सकते थे। सुपरिंटेंडेंट ने कहा : 'न, आज क्वार्टर पर नहीं जाऊँगा।'

सवेरे से समाचार आने लगे। दिन-भर राँची में घुड़सवार आते रहे। डिप्टी-कमिश्नर और पुलिस-सुपरिंटेंडेंट समाचार पाने लगे। सिंहभूम ज़िला के अधीन हर थाने से ख़बर आयी है कि तीर छूट रहे हैं, आग लग रही है।

मीअर्स बोले : 'मुझे पता था।'

'क्या पता था? कि क्रिसमस ईव पर मुंडा विद्रोह करेंगे?'

'न, जानता था कि जिसे हम शान्त हालात समझे थे, वह प्रलय की आँधी के पहले का सन्नाटा था।'

डिप्टी-कमिश्नर जानते थे कि उनको सब लोग—गोरे अफ़सर, मिशनरी, ज़मींदार—मुंडा लोगों के बारे में ज़्यादती करने के दोष में मन-

ही-मन दोषी मानते थे।

वह बोले : 'मैं कर ही क्या सकता था ?'

'मैं इस बात पर कुछ भी कहने का अधिकारी नहीं हूँ।'

'गाँवों पर जुरमाना नहीं ठोका ?'

'उसे रोका गया था।'

'सरकारी कामों में बहुत-से नियम-क़ानून मानने पड़ते हैं। जुरमाना अनिश्चित समय के लिए तो नहीं लगाया जा सकता !'

'तभी से हालत विस्फोटक हो रही है।'

डिप्टी-कमिश्नर ने उँगलियों से बालों को खींचा। रूखी आवाज़ में बोले : 'हाँ, दो बरस का सूखा-अकाल, खेती का नुक़सान, ज़मींदार और महाजनों का अबाध लालच—छोटा नागपुर का रेंट लॉ—सबने ही ईंधन जुटाया।'

'लेकिन अब ?'

'बीरसा ने वचन दिया था।'

डिप्टी-कमिश्नर किसी तरह यह न कह सके कि अब वह ज़रूरत पड़ने पर फ़ौज की मदद से विद्रोह का दमन करेंगे। फिर भी, फिर भी बीरसा पर उन्हें श्रद्धा हो रही थी ! लौंडे ने ग़रीब मुंडा होकर एक विशाल, विराट शक्तिशाली, प्रबल प्रशासनिक व्यवस्था को बड़ा धोखा दिया। हाँ, श्रद्धा होती है। दिन के अन्त में जरा-से चीना घास का आटो जिसको खाने को मिले, पहनने को जिसके पास लँगोटी भर हो, जिसके पास हथियार केवल तीर और धनुक हों, जिसके कंधे दर-सूद के बोझ से दबे रहें, उसी मुंडा जाति को अंगरेज़ी सरकार के शेर के उठे पंजे के विरुद्ध खड़ा कर दिया ! और वह कैसा शान्त, नम्र, निरीह लगता था... !

याद आया कि चालकाड़ से चले आने के पहले घोड़े पर सवार होकर उन्होंने कहा था : 'सरकार से वादा किया है गड़बड़ नहीं करोगे, याद रखो। वादा तोड़ने पर सज़ा मिलेगी।'

दिसंबर का महीना। ज़मींदार के घर फ़सल उठाकर लायी जा रही थी—मुंडा लोगों के आँगन में घुने धान, जौ और बाजरा ! औरतें जमा होकर कहतीं—फ़सल साफ़ कर रही हैं। जाड़े की हवा तेज़ रुख से बह रही थी। बीरसा के बदन पर चादर थी, पैर नंगे थे; बीरसा उनके एक घोड़े के शरीर पर हाथ फेर रहा था।

वह बोले : 'याद रखो !'

बीरसा ने आँखें उठायीं। हँसी से दोनों आँखें चमक रही थीं। बोला : 'याद है।' उसके बाद उनके साथ-साथ पैदल ही वह गाँव की हद तक गया। लड़के-लड़कियाँ, बूढ़े-बुढ़िया—सभी खड़े हो उसे देख रहे थे। बीरसा खड़ा रहा, वह चले गये। गरदन घुमाकर देखा : वह इमली के पेड़ के नीचे हाथ उठाये खड़ा है। उसे फिर न देखा। फिर देखेंगे—इसकी आशा भी नहीं थी !

मीअर्स ने कहा था : 'जेल में भी बीरसा का रहना, बातें करना, सारी बातों में एक सर्वनाशी आत्म-विश्वास का भाव दिखायी पड़ता था। जैसा राजा वैसे ही उसके विचार !'

किन्तु राजा की तरह सहज, स्वाभाविक आभिजात्य, चलना-फिरना, बातचीत—बीरसा में ही क्यों—स्ट्रटफ़ील्ड को भरमी, सोना, डोन्का, और तमाम लोगों में देखने में आया था। हर बार उन्हें नये-नये आश्चर्य में पड़ जाना पड़ा था। निःस्व, दीन—अभागे मुंडाओं में यह सहज, स्वाभाविक आभिजात्य कहाँ से आ गया ? वे तो एक प्राचीन सभ्यता की धारा में प्रवाही जीव थे ? इसीलिए ? लेकिन उनकी वह सभ्यता है क्या ? वे तो बर्बर, असभ्य हैं...!

डिप्टी-कमिश्नर ने फिर सिर हिलाया। जैसे अभी सब-कुछ समझ जायेंगे, बीरसा के बारे में सब समझ लेंगे, मुंडा लोग उसे क्यों मानते हैं—वह विद्रोह क्यों कर रहा है—लेकिन किसी तरह यह समझ में नहीं आ रहा था। पारा जिस तरह फिसल-फिसल जाता है, उसी तरह उनके हाथों से असली सत्य फिसला जा रहा है...।

लेकिन वह डिप्टी-कमिश्नर हैं। बीरसा विद्रोही है। सबूत मिलने पर, नालिश हो जाने पर वह निश्चय ही उसे बहुत बड़ी सजा देंगे। छोटा नागपुर के जिस रेन्ट लॉ से मुंडा लोगों का कोई भी स्वार्थ संरक्षित नहीं रहता था, उस क़ानून को संशोधित करने का तो उन्होंने भी प्रयत्न किया था। क़ानून संशोधन करने में बरसों लग जाते हैं। कुछ बरस और इंतजार कर लेने में क्या लगता है ? सरकार क्या ज़मींदारों की मदद कर रही है ? ज़मींदार और सरकार—दोनों ही क्या मुंडा लोगों का शोषण कर रहे हैं ? उसमें धीरज खोने की क्या बात है ? कब मुंडाओं का शोषण नहीं हुआ ? कब उन्हें भरपेट खाना मिला ? न्याय ही कब मिला ?

डिप्टी-कमिश्नर सूखे गले से बोले : 'रिपोर्ट पढ़ो।'

'तामार थाने में दो जगह क्रिस्तानों पर हमले हुए। बीरसा के आदिम

स्थान उलिहातू में गाँव के गिरजे में तीर छोड़े गये। तोरपात में भी क्रिस्तानों पर तीर छोड़े गये। मारचा गाँव में पहान की, बस जान-भर ही बची। बासिया में जर्मन मिशन के चर्च में तीर चले, काजारा में भी। रामटोलिया में एक क्रिस्तान लड़का घायल हो गया।'

'और भी है?'

'खूँटी थाने में बहुत-से गाँवों में आग लगा दी गयी।'

'वह गाँव मुंडा लोगों का है?'

'न। मुरहू में ऐंग्लिकन चर्च स्कूल में रेवरेंड लास्टी पर तीर छोड़ा गया। कोई घायल नहीं हुआ।'

'बीरसा के पहले गिरफ़्तार होने के वक़्त लास्टी चालकाड़ गये हुए थे। वह भी घायल नहीं हुए।' फिर आगे पढ़ा :

'न। दिस आई डोन्ट क्वाइट अंडरस्टैंड।'[1]

'आई डू।'[2]

'क्या?'

'मार डालना या गहरा ज़ख्म करना इस वक़्त उनके कार्यक्रम में नहीं है। वैसा हो सकता है। लेकिन इस वक़्त सारे कार्यक्रम का, इस हालत में, अभी दूसरा ही उद्देश्य है।'

'तब?'

'देअर इज़ मोर टू फ़ालो।[3] रिपोर्ट पढ़ो।'

'सरयाड़ा मिशन के गोदाम में आग लगायी गयी। रेवरेंड हफ़मैन और रेवरेंड कार्बेरी को निशाना बनाकर तीर छोड़े गये। एक दूसरे आदमी की छाती में चोट लगी। चंदागुटू का एक प्रचारक भी तीर की चोट से घायल हुआ। हफ़मैन, कार्बेरी और दूसरे लोग ईंट-पत्थर जमा-जुटाकर विद्रोहियों को रोकने के लिए पहले से ही तैयार थे।'

'हर जगह पुलिस भेजो।...उसके बाद?'

'सिंहभूम की घटनाएँ और भी गंभीर हैं। कुंदरूगुटू में जर्मनों का मिशन चर्च जलकर राख हो गया। लागरा में एक कांस्टेबल मारा गया। चक्रधरपुर में जर्मन चर्च में एक चौकीदार मारा गया। सोमपुर अंचल में एक जर्मन व्यवसायी मारा गया। बीरसाइत लोग युद्ध के नारे लगा रहे हैं: 'हेन्द्रे रान्ब्रा केचे-केचे। पुंड्रि रान्ब्रा केचे-केचे।' इसके क्या माने होते हैं?'

'काले क्रिस्तानों को काट फेंको। सफ़ेद क्रिस्तानों को काट फेंको।

---

1. यह मेरी समझ में नहीं आता।
2. मैं समझ रहा हूँ।
3. आगे भी तो पढ़िये। देखिये—क्या है।

उसके बाद ?'

'अभी तक यही खबर है।'

'डुरांडा को ख़बर भेजो।'

'कहाँ?'

'आर्मी ऑफ़िस में। कमांडिंग अफ़सर से कहो, छोटा नागपुर के डिप्टी-कमिश्नर ने ख़ासतौर पर बुलाया है...हाँ ज़ुबानी ही बुलाने का हुक्म दे रहा हूँ, लिखकर नहीं...। कैप्टेन रोश को छुट्टी से वापस बुला लिया जाये। मैं रोश को लेकर, सिक्स्थ जाट राइफ़ल्स को लेकर उपद्रव-ग्रस्त इलाक़े में स्वयं जाऊँगा।'

'हाँ, सर! लेकिन...।'

'आर्मी को ज़ुबानी बुलाना विधिवत् नहीं है, यही न ? लेकिन आर्मी छोटा नागपुर में है क्यों ? विद्रोह होने पर दमन करने के लिए ही न! मैं सोचता हूँ कि यह मुंडाओं के विद्रोह की शुरुआत है, बीरसा इसका नेता है। कमांडिंग अफ़सर आर्मी-दफ़्तर के साथ समझ लेगा। अभी उनसे यही कहना, मुझे सिक्स्थ जाट राइफ़ल्स की ज़रूरत है।'

'येस, सर।'

यह बातचीत 25 दिसंबर 1899 को हुई।

29 दिसंबर को डुरांडा के कमांडिंग अफ़सर के पास से एक डिस्पैच[1] एडजुटेंट-जनरल इन इंडिया, होम डिपार्टमेंट को गया :

'छोटा नागपुर के कमिश्नर की मौखिक माँग पर डुरांडा के कमांडिंग अफ़सर ने आज सवेरे (29-12-1899 को) कैप्टेन रोश के नेतृत्व में सिक्स्थ जाट राइफ़ल्स के अस्सी लोगों की फ़ौज की टुकड़ी को डुरांडा से लगभग बीस मील दक्षिण चाईबासा रोड पर स्थित खूंटी को भेजा है, क्योंकि उस इलाक़े में आदिवासियों में असंतोष की आशंका की जाती है। पार्टी ने रेगुलेशन के अनुसार गोला-बारूद भी ले लिया है...।'

29वीं दिसम्बर को स्ट्रटफ़ील्ड और कैप्टेन रोश सेना को लेकर निकल पड़े। उद्देश्य था उपद्रव-ग्रस्त इलाक़े का निरीक्षण और विद्रोह को फैलने से पहले दबा देना।

इसी संदर्भ में स्ट्रटफ़ील्ड ने लेफ़्टिनेंट-गवर्नर को एक नोट भेजा।

---

1. टेलीग्राम नं० 350, तारीख़ 29-12-1899, प्रोग्रेस नं० 326। दृष्टव्य : होम डिपार्टमेंट मीमो नं० 453—कैम्प। तारीख़ 30-12-1899।

इसके मसौदे में उसने लिखा : 'बनगाँव, सिंहभूम में तथा और जगहों पो जाँच से पता चला, बीरसाइत संगठन इन इलाक़ों में बहुत शक्तिशाली ह गया है। सिंहभूम ज़िले के 150 वर्गमील के इलाक़े, खूँटी और तामार थाने के 300 वर्गमील के इलाक़े और राँची ज़िले के बसिया थाना के 100 वर्ग-मील इलाक़े में फ़ौरन पुलिस के दल भेज दिये जायें। पुलिस इन सब इलाक़ों के सारे गाँवों में गश्त लगायेगी और गाँव के लोग इस पुलिस या सेना के रहने का खर्च उठाने को बाध्य होंगे। दो ज़िलों के मध्य सीमांत पर स्थित बनगाँव इस नियंत्रण-व्यवस्था का केन्द्र होगा। समाचारों से पता चला है कि दुमका और चुंचुड़ा से मिलिटरी-पुलिस की एक टुकड़ी राँची की ओर रवाना हुई है।'

इसी समय राँची में रहने वाले एक वकील लछमनप्रसाद को सब-इंस्पेक्टर हजारीप्रसाद ने एक चिट्ठी दी : 'योग्य सम्मान के निवेदन के बाद और हज़ारों प्रणाम करने के उपरान्त काकाजी, बिनती है कि मेरी बदली के लिए आप दफ़्तर में जैसे भी हो कोशिश करें। अपनी जान चली गयी तो नौकरी लेकर मैं करूँगा क्या ! आपसे जो रुपये लिये थे उन्हें ससुर की जमीन बेचकर चुका दूंगा। जिस मुसीबत में पड़ा हूँ, महावीरजी भी उससे उद्धार करेंगे—ऐसी आशा दिखायी नहीं देती।

'काकाजी ! कमिश्नर साहब खफ़ा हो गये हैं—बीरसा को पकड़ेंगे ! मेरी सारी जमीन-जायदाद, जो कुछ ससुर ने दी थी, सब आपकी कृपा से आदिम गाँवों को उजाड़कर ही मिली थी। बीरसाइत लोगों ने पहले ही मेरा खलिहान जला डाला था। अब हमारे खलिहान में तीर छेदकर ससुर की कचहरी में रखा गया है ! इस तरह की हालत में इस इलाक़े में दौरा करने के मतलब हैं आत्महत्या करना। बहुत मुसीबत में ये सब बातें कह रहा हूँ।

'चौथी से छठी जनवरी तक बीरसा की तलाश में हम जमकोपाई, रोगोतो और संकरा गाँवों में घूमे। जमकोपाई से रात के अँधेरे में रिज़र्व फ़ॉरेस्ट के नाले का किनारा पकड़कर कुछ दूर जाकर गाइड भाग गया। बीरसा के डर से वे जाना पहचाना रास्ता भी भूल गये। संकरा गाँव में जाकर देखा कि सब घर बिना किसी प्राणी के खाँय-खाँय कर रहे थे। समझ में आया कि गाइड ने खबर दे दी थी कि तलाशी होगी। सभी भाग गये थे। पेड़ के ऊपर बैठकर बालक बीरसाइतों ने देखा था, सतर्क किया था। समझ में आया कि बड़ी फ़ौज लेकर, रोशनी जलाकर, शोर मचाकर तलाशी लेने पर बीरसा को पकड़ा नहीं जा सकेगा। मैं क्या करूँ ! रोगोतो गाँव भी जन-शून्य है। मालगो मुंडा के घर से बीरसा की इस्तेमाल की हुई तीन

चारपाइयाँ और एक घोड़ा ज़ब्त कर ले आया। लेकिन मुंडा मार देंगे—इस डर से मैं खुद मरा जा रहा हूँ। अधिक क्या! जमादार ईश्वरसिंह राँची से डाक लेकर जा रहा है, उसके हाथों यह चिट्ठी दी है।'

कैप्टेन रोश की डायरी का एक पन्ना इस तरह लिखा गया :

'जहाँ मुंडा लोगों को पकड़ा गया, वहाँ जिरह करने पर जो कुछ पता चलता है वह भरोसे के क़ाबिल नहीं है। जिरह का पूरा विवरण यूँ है :

डिप्टी-कमिश्नर : 'तुमने मिशन में आग क्यों लगानी चाही थी?'

'बीरसा ने कहा था—भगवान ने कहा था।'

'बीरसा ने डर दिखाकर कहा था?'

'न, डर क्यों दिखायेगा?'

'तुमने खुद सुना था? अपने कानों से?'

'न, मैंने उसे आँखों से नहीं देखा। मेरा घर बहु—त दूर है।'

'लँगड़े पैरों से जंगल के रास्ते क्यों आ रहा था?'

'मिशन में आग लगाने के लिए। मुझे क्या पता कि सब कुछ पहले ही भस्म हो गया है!'

इसी समय स्ट्रटफ़ील्ड ने लेफ़्टिनेंट-गवर्नर को एक चिट्ठी में लिखा : 'केवल आतंक पैदा करने वाली हरकतों से डर दिखाकर अगर बीरसा जन-साधारण के बड़े हिस्से को अपनी ओर खींच लेने में समर्थ हो तो आक्रमण का कार्यक्रम बढ़ता ही रहेगा—यह आंदोलन एक व्यापक विद्रोह में परिणत होने तक बढ़ता ही जायेगा—इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं है।'

पोराहाट के दुर्गम जंगलों में बीरसा की तलाश में स्ट्रटफ़ील्ड चक्कर लगाने लगे। इस समय बीरसा उनके लिए एक चुनौती, बड़े अपमान का कारण बन रहा था। अब स्ट्रटफ़ील्ड को लगने लगा कि जैसे बीरसा को सब पता है—वह पास ही कहीं मुँह छिपाकर हँस रहा है!

रोश कुछ गरम होकर बोले : 'अगर गोली नहीं चलाने देते तो, व्हाई कॉल द आर्मी? व्हाई?'[1]

स्ट्रटफ़ील्ड बोले : 'नहीं, गोली नहीं चलेगी।'

---

1. अगर गोली दागने की मनाही है तो फ़ौज को बुलाया ही क्यों गया है?

'क्यों ?'

'किस पर गोली चलायेंगे ? बुढ़िया-बूढ़ों, बच्चो पर ?'

'बट दिस इज़ रिबेलियन।'[1]

'इज़ इट ? आपने क्या डिक्शनरी देखी है ?'

'नहीं।'

'डिक्शनरी में कहा है, प्रतिष्ठित सरकार के विरुद्ध संघबद्ध सशस्त्र विरोध का नाम रिबेलियन है। अभी तक वैसा कुछ नहीं हुआ है। व्यापक रूप से आक्रामक, आगज़नी के काम हुए हैं। लेकिन वे क्रिस्तान और साहबों के विरुद्ध हुए हैं। प्रतिष्ठित सरकार के विरुद्ध सशस्त्र और संघबद्ध विरोध इसे नहीं कहा जा सकता।'

'उसमें देरी क्या है ?'

'न, जितना मेरी समझ में आ रहा है, अब ज़्यादा देर नहीं है।'

'कोई खबर मिली है ?'

'न, दो और दो मिलाकर देख रहा हूँ कि चार होते हैं।'

रोश ने सिर हिलाया। सिविल प्रशासन की युक्तियाँ उनकी समझ में नहीं आती थीं। छोटा नागपुर के लिए वर्तमान डिप्टी-कमिश्नर शायद बहुत योग्य नहीं हैं !

लेकिन डिप्टी-कमिश्नर ने समझने में बहुत ग़लती नहीं की थी। पाँचवी जनवरी तक डिप्टी-कमिश्नर चक्कर लगाने लगे। डिप्टी-कमिश्नर के सैकड़ो पुलिस और गुप्तचरों का एक बड़ा भाग खूंटी में रात-दिन बीरसा की तलाश करने लगा।

उसी खूंटी से ही 27वीं दिसंबर को बीरसा का आह्वान फैल गया :

'बड़े दिन के बाद दो दिन बीत गये। सरकार अब मुंडा लोगों के, विद्रोही मुंडा लोगों के दमन के लिए तैयार हो गयी है। इस बार हम लोगों ने किरस्तान मुंडा लोगों पर तीर ज़रूर छोड़े, पर अब से बीरसाइत और किसी मुंडा पर हमला नहीं करेंगे। उनके दुश्मन दिकू और सरकार हैं— खासतौर पर सरकार। साहब और सरकार ही हमारे दुश्मन हैं। मुंडा, वे किरस्तान हों या न हों, उन्हें कोई डर नहीं रहना चाहिए।'

बुर्जू मिशन के रेवरेंड पार्ट्सिग ने डिप्टी-कमिश्नर से कहा : डिप्टी-कमिश्नर मुंडा लोगों का नामोनिशान तक नहीं पा रहे हैं, यह बड़े ताज्जुब

1. लेकिन यह तो एक विद्रोह है।

की बात है। उन्हें ख़बर मिली है कि मुंडा जंगल में जमा हो रहे हैं—उद्देश्य है पुलिस और मिलिटरी के साथ लड़ाई। छठी जनवरी को बुर्जू मिशन के पास जंगल में लकड़ी के ठेकेदार जियेस साहब और उनके नौकर की तीरों से बिंधी लाश मिली।

जिउरा के दुष्कर, घने जंगल में, दिन में मुंडा नहीं घुसते। जिउरा के जंगल में, ताज्जुब है, मीलों तक हर पेड़ प्राय: बहुत ऊँचा था। सारे पेड़ ही देखने में एक-से थे। कोई जलाशय नहीं, इसीलिए अधिक जीव-जंतु भी दिखायी नहीं पड़ते थे। उसके सिवा, लोगों का कहना था कि यह जंगल जंगल-माँ की रक्षयित्री परियों की लीलाभूमि है—किसी आदमी को देखते ही वे हाथ के इशारे से जंगल में एक बार अंदर ले जाकर बालों के फंदे से उसका दम घोंट के मार डालती हैं!

रात को जिउरा के जंगल में बीरसाइत जमा हुए। चंद्रमा का प्रकाश भी जंगल में प्रवेश नहीं पाता था, पर दूधिया-सा अँधेरा फैल गया था।

बीरसा बोला : 'इसके बाद साहब, सफ़ेद चमड़ी के साहब और सरकार के साथ लड़ाई शुरू है। जितनी बातें पहले कहीं, तुम लोगों ने सब याद रखीं। सरकार किसी को पकड़ न सकी। हमारे हथियारों से उनके हथियार बहुत अच्छे हैं। वे तार से ख़बर भेजते हैं, रेल से सिपाही मँगाते हैं। बहु—त बन्दूकें, बहु—त रुपये, बहु—त सिपाही उनके पास हैं। लेकिन हम लोगों की अपनी दुनिया भी चलती है। उनकी दुनिया की क्या बात! सिपाही पैसा लेकर लड़ते हैं। हाँ! सरकार आसानी से छोटा नागपुर को हमारे हाथों में नहीं देगी। लेकिन हमने कभी नहीं सोचा, मैंने तुमसे कभी नहीं कहा कि यह लड़ाई आसान होगी। उलगुलान आसान होने वाली चीज़ नहीं है।'

मुंडा चुप थे।

'एतकेदी में गया मुंडा के घर साठ बीरसाइत जायेंगे। वहाँ सभा कर लड़ाई की बात साठों लोग साठ दिशाओं में जाकर सुना आयेंगे।'

'भगवान!'

'कहो, गया!'

'मैं मुंडा लोगों का सरदार हूँ, इसीलिए बीरसाइत बना। हमारे सभा करते-करते ही अगर सिपाही आ पहुँचें?'

'जैसी हालत हो, उस तरह अपनी समझ से लड़ना, गया! सारे बीरसाइतों के साथ मैं हर समय शरीर से हाज़िर नहीं, मन से हाज़िर रहता हूँ। बस, सभा ख़तम। जैसे चुपचाप आये हो, वैसे ही चुपचाप चले

जाओ।'

गया बोला : 'जो सभा नहीं करते, हमारे साथ बात करके काम नहीं करते, वे, वे सारे मुंडा भी, हमारी तरह ही भगवान की राह पर उलगुलान करते हैं, फिर उत्तेजित होकर एतकेदी की पुलिस की ओर निगाह डालते हैं। हमारा एक दिन तीर छोड़ने का, आग लगाने का काम हुआ।। हम फिर रुक गये। लेकिन इधर-उधर साइको में तमाम मुंडा बेलगाम हो गये—तीर छोड़ते हुए जहाँ-तहाँ आग लगाकर मुसीबत खड़ी कर रहे हैं।'

बीरसा बोला : 'कोई उपाय नहीं। ऐसा तो होगा ही, भाई!'

खूँटी का हेड-कांस्टेबल चौथी जनवरी को एतकेदी पहुँचा।

एतकेदी से कुछ दूर पर तम्बू लगाया। सामने ताजने नदी थी। नदी का पानी बड़े-बड़े पत्थरों के बाँध से स्वयं अटककर एक सुन्दर-सा कुंड बन गया था। साइको और एतकेदी गाँवों के लोगों के लिए यह पूरे बरस-भर का आसरा था।

शाम को औरतें नदी पर पानी लेने गयीं। बोलीं : 'घोड़ा हटाओ जी, लात मारकर हमारे घड़े फोड़ देगा।'

'घोड़ा कहाँ है, तुम कहाँ हो?'

'हमें डर लगता है। कनात क्यों लगायी हैं?'

'तमाशा दिखाऊँगा। कल देखना।'

दाँतू मुंडा की माँ हमेशा से कड़ुआ बोलने वाली बेपरवाह, गुस्सेवर स्त्री थी। वह बोली : 'दो बरस तक तुम लोगों के तमाशे देख-देखकर अब उनमें हमारी तबीयत नहीं जमती। तमाशा दिखाया तो हमारा भी तमाशा देख लोगे!'

'क्या करेगी?'

'तेरी कनात में मधुमक्खियों का छत्ता फोड़ दूंगी। पेड की डाल पर छत्ता लगा है—डाल काटकर ले आऊँगी!'

'अरे, हम तो सरकारी काम से आये हैं।'

सवेरे खबर मिली कि हेड-कांस्टेबल तंबू में बैठा है। दो कांस्टेबल और तीन चौकीदार गाँव में आयेंगे, इसलिए नदी के कछार पर उतरे हैं।

कछार की बालू और पत्थर तोड़ते-तोड़ते कांस्टेबलों ने सिर उठाया। वे निचाई पर थे। ऊपर किनारे की ऊँचाई पर पत्थरों पर क़तार-की-क़तार मुंडा खड़े थे। हाथों में बलोया और तीर-धनुक थे।

गया ने हाथ उठाकर कहा : 'सामारे हिजूले नाको मार गोयेको ये! शायद हिरन आये हैं, उन्हें मारो।'

कांस्टेबल और चौकीदारों ने भागने की कोशिश की। कांस्टेबलों के हाथों में बन्दूकें थीं। ऊपर से पानी की धार की तरह मुंडा उतर पड़े। गया बोला : 'अरे, जयराम को मैं मारूंगा ! उसने मेरे धान के कोठे को तोड़कर ज़मींदार का हाथी घुसाकर सब धान खिला दिया था।'

'मुझे मारना मत, गया...' जयराम की बात पूरी न हो पायी। बलोया की झलक चमक रही थी...इस्पात झकझक कर रहा था...दमकता फ़ौलाद नीचे आया...उठा...फिर गिरा...उठा...!

उसके बाद मुंडा लौट गये। कांस्टेबलों के शरीर वहीं पड़े रहे। दोपहर को हेड-कांस्टेबल ने देखा कि चारों ओर सन्नाटा छा गया है : 'कुछ नहीं छोड़ा !' वितृष्णा में यह कहकर, जयराम और बुद्धू की देह को बोरों में भरकर, घोड़े की पीठ पर लाद वह वापस राँची चला गया। सीधी राह पर बीरसाइत थे।

मुंडा गाँव में लौट आये। उनके ख़ून में नगाड़े, ढोल, मादल—सब एक साथ बज रहे थे। यह होली के बाद सफल शिकार के आनन्द की तीव्र अनुभूति थी—प्राचीन धर्म के रक्तोत्सव का अपार आनन्द !

औरतों ने आदमियों के पैरों को पानी से धोया। आदमी और औरतें मिल-कर गाना गाने लगे।

बनगाँव में तम्बू में बैठकर रोश ने स्ट्रटफ़ील्ड से कहा : 'अब ?'

डिप्टी-कमिश्नर बोले : 'रिबेलियन !'

'फिर ?'

'हैज़ टु बी क्रश्ड।'[1]

'कौन जायेगा ?'

'मैं।'

'कमिश्नर फ़ॉर्ब्स ?'

'नहीं, मैं जाऊंगा।'

हज़ार होने पर भी सरकारी प्रशासन में एक नियम से ही सब-कुछ चलता है। संकट के मुंह में पहले जाता है कांस्टेबल, उसके बाद हेड-कांस्टेबल, उसके बाद छोटे दारोगा, उसके बाद क्रम से ऊपर के अफ़सर।

---

1. इसे बलपूर्वक दबाना होगा।

इसी हिसाब से पहले डिप्टी-कमिश्नर, फिर कमिश्नर।

उधर एतकेदी में गया मुंडा की पत्नी माकी कमर पर हाथ रखकर गया को डाँट-डाँटकर रुई की तरह धुनने लगी।

'हा: रे! तेरे किसी दिन भी अकल नहीं रही; बस जिद बनी रहती है। पुलिस को मार दिया। अब साहब तुझे छोड़ेंगे? घर में बैठकर बलोया तेज कर उलगुलान कर रहा है। जा, जंगल में भाग जा।'

'हा:, तेरे भागने के सिर पर झाड़ू! भगवान ने मुझे एतकेदी को संभालकर बैठने को कहा है।'

'अरे बुद्धू! गंदे! अरे गँवार! भगवान ने यह नहीं कहा कि हालत देखकर काम कर? अब न जाने किस वक्त वे लोग आ जायें? फिर भी एतकेदी पकड़कर बैठा रहेगा। आदमियों को मरवायेगा?'

'तुझे छोड़ जाऊँ?'

माकी बोली: 'पत्थर से पैर तोड़ दूँगी। मुझे छोड़कर नहीं जायेगा? तू कितने दिन घर रहता है! मुलकी लड़ाई से आज तक घर किसके सहारे चलता रहा है? मेरे सहारे! मेरे ऊपर अभी तक भरोसा नहीं है?'

गया मुंडा अविचल था। बाहर जाकर अपने बेटे सामरे से बोला: 'तेरी माँ बहुत बिगड़ गयी है।'

'तुम भी खफ़ा हो जाओ। माँ की बात का जवाब नहीं देना। कल मुझे जंगल जाने के लिए मारने तक को उठी थी।'

'बहुत तेज है रे! एक बार बाघ ने मेरा पैर पकड़ लिया था; तू उसकी पीठ पर बँधा था। बलोया से बाघ का मुँह फाड़ मुझे खींचकर ले आयी थी!'

डिप्टी-कमिश्नर बनगाँव कैम्प से चले आये। मुंडा लोगों को बुलाकर कहा: 'तुम लोग आत्म-समर्पण करो। मैं यहाँ का डिप्टी-कमिश्नर कह रहा हूँ।'

अन्दर से गया ज़ोर से बोला: 'डी० सी०[1] हो, डी० सी० रहो! मेरे घर में घुसने का अधिकार नहीं है तुम्हें। ज़रा भी अधिकार नहीं है।'

'आत्म-समर्पण करो।'

'अभी सवेरा है। मुझे काम है, तुम जाओ।

---

1. डिप्टी-कमिश्नर।

इस घटना[1] की जो रिपोर्ट डी० सी० ने कमिश्नर को दी थी, वह है :

'मैंने भरसक समझाया, बतलाया कि मैं कौन हूँ, पर कोई नतीजा नहीं निकला। अंत में सब-इंस्पेक्टर अलताफ़ हुसैन घर के भीतर जो लोग थे उन्हें समझाकर कहने के लिए घर और बरामदे के बीच की कच्ची दीवार के पास पहुँचा। साथ ही एक भारी फरसा अलताफ़ के सिर का निशाना बाँध करके फेंका गया। काठ के शहतीर से टकरा जाने से फरसे की चोट नहीं लगी, नहीं तो अलताफ़ वहीं मर जाता। अलताफ़ की पगड़ी से फरसा लगा था, और पगड़ी बरामदे में छिटककर गिर गयी।'

अलताफ़ चिल्लाया : 'साहब गोली चलाइये।'

'गॉड ! घर-भर में औरतें-बच्चे हैं।'

डी० सी० ने छत की शहतीर की तरफ़ गोली छोड़ी। माकी चिल्लाकर बोली : 'हम निकलेंगे नहीं, तेरे इधर आने पर मार देंगे।'

गया के हाथ में तलवार थी। वह बोला : 'आ तो, देखता हूँ कैसा साहब है। मार गोली।'

डी० सी० ने गया के हाथ को लक्ष्य करके गोली छोड़ी कि वह तलवार फेंक दे। गोली खाली गयी।

'घर जला दूँगा, गया,' डी० सी० ने दियासलाई दिखायी।

'जला दे। दो सौ बीरसाइत यहाँ आ जायेंगे !'

डी० सी० ने दियासलाई जलायी; घर के छप्पर पर फेंकी। छप्पर हू-हू कर जल उठा। पछुआ हवा बह रही थी।

घर में से आवाज़ आयी : 'है, तेरा साहब मरद है रे—किसे डरा रहा है ?'

वे निकल आये। गया के हाथ में तलवार थी, माकी के हाथ में बड़ी-सी लाठी थी, उनके छोटे लड़के के हाथ में बलोया था, चौदह बरस के नाती रामू के हाथ में तीर-धनुक था, दोनों पतोहुओं के हाथों में छोटे-दा[2] और

---

1. कमिश्नर के लिए डी० सी० स्ट्रटफ़ील्ड/ता० बनगाँव/7-1-1900/चिट्ठी के साथ—पत्र नं० वन-टी-बी०, ता० कैंप साइको/10-1-1900/ए० फ़ार्ब्स के पास से सी० एम०, गवर्नमेंट ऑफ़ बंगाल के लिए। प्रोग्रेस नं०335/अगस्त 1900/होम डिपार्टमेंट/एन-ए-वन।
2. एक तरह का फरसा।

टाँगी[1] थी। तीनों लड़कियों—धीगी, नागी और लेम्बू—के हाथों में लाठी, तलवार और टाँगी थीं। गया बोला : 'सामने चले आओ।'

डी० सी० ने रिवाल्वर छोड़ा। गया के दाहिने कंधे में गोली लगी। डी० सी० समझे—अब गया गिर जायेगा, लुढ़क पड़ेगा। लेकिन नहीं, गया तलवार फेंककर भागकर उन पर झपट पड़ा। पीछे से गया की पत्नी माकी डी० सी० के सिर पर लाठी मारने लगी। अब पुलिस गुस्से से पागल होकर औरतों और बच्चों पर झपट पड़ी। गया की पतोहू की पीठ पर नन्हा-सा बच्चा बँधा था। उसके हाथ में लाठी, टाँगी और तलवार थी। पुलिस के पास संगीनें थीं। घर ज़ोरों से जल रहा था। पछुआ हवा बह रही थी।

अब गाँव से जो खाली हाथ मुंडा भागे आये, उनमें से कोई भी बीरसाइत नहीं था। और भी पुलिस दौड़ी-दौड़ी आ पहुँची। संगीनें चलने लगीं। दो घंटे तक लड़ाई जारी रहने के बाद संगीनों से घायल गया, माकी, लड़कियों, पतोहुओं, बच्चों को क़ैद कर लिया गया। दूसरे मुंडा लोगों को भी गिरफ़्तार कर लिया गया।

चार महीने बाद, मई महीने में, राँची की अदालत में बैरिस्टर जेकब ने पूछा : 'औरतें और बच्चे हैं—यह जानकर भी दो गोलियाँ छोड़ने के लिए डी० सी० का क्या कहना है? किस तर्क से वह अपने को उचित ठहरा सकते हैं?'

'गया को मारना ही मेरा उद्देश्य था। सबसे कम खून-खराबा कर मौक़े को क़ाबू में लाने के लिए ही मैंने गोलियाँ छोड़ी थीं।'

बंगाल के शासक लेफ़्टीनेंट-गवर्नर छोटे लाट साहब ने डी० सी० का समर्थन किया। जेकब द्वारा सचाई को प्रगट करने का प्रयत्न बेकार कर दिया।

राँची लौटकर डी० सी० ने बताया कि गया का साहस और युद्ध, औरतों का प्रतिरोध—सब-कुछ उन्हें अत्यन्त आश्चर्यजनक लगता है। बीरसाइत लोग निश्चय ही अब मिशन पर हमला करेंगे।

लेकिन बीरसा की फ़ौजें खूँटी थाने की ओर सातवीं जनवरी को बढ़ गयीं। डी० सी० को यह पता न था। गया ने जमीन पर थूककर कहा था :

---

1. दाँती।

'डी० सी० को रोक रखा। भगवान ने यही कहा था। नहीं तो खूंटी में लड़ाई होती।'

बीरसाइतों को पहनने को उजली नीची धोती, सिर पर पगड़ी थी। तीर और धनुक, ढाल और तलवार, बरछी और बलोया सूर्य की ओर उठाकर वे नाचते हुए आ रहे थे—बीच-बीच में उछल पड़ते थे। डोन्का और माझिया आगे और पीछे थे। वे गा रहे थे :

जिलिबा जिलिबा
जोलोबा जोलोबा
पानतियाकानाले बीरसा हो !
तिरोदा सेनदेरा
लेंगा तिरिया
जोम तिरेसार
पानतियाकानाले बीरसा हो ![1]

बीच-बीच में डोन्का गाने के बीच में बोलता था : 'मुंडा इलाक़े में खूंटी का यह थाना सरकार बनकर बैठा है।'

चिल्लाकर कहता था : 'चलो हे मुंडा लोगो ! हथियार लेकर चलो। खूंटी में अरहर पक गयी है, चलकर काटेंगे हे ! हम तामार थाना से, हाग।दा थाने से आये हैं, चलो हे !'

हुटुबदाग, पतरा, गौरमारा—सारी जगहों से मुंडा आकर मिल रहे थे; मुंडा लोगों का जुलूस लम्बा हो रहा था। आकाश में सूरज चमक रहा था, और उनके हाथों में हथियार !

खूंटी में केवल पाँच कांस्टेबल—दो साईस, और दो बंदूकें थीं। खूंटी के लोग कहते थे : 'कोई नहीं है। बीरसाइतों को पकड़ने के लिए बाक़ी सब चारों ओर गये हैं।' यह बात सुनकर मुंडा लोग युद्ध की ललकार—

1. हमारे हथियार हाथों मे चमक रहे हैं। ओ बीरसा ! हम पाँत बाँधकर चले हैं ! बायें हाथ में धनुष, दाहिने हाथ में तीर—हमारे हाथों में हथियार चमक रहे हैं। ओ बीरसा ! हम पाँत बाँधकर चले हैं।

'कुलकुलि'—दे रहे थे, सूरज की ओर हथियार उठाकर छलाँगें लगा रहे थे। उनकी चिल्लाहट सुनकर ही कांस्टेबल और साईस थाना छोड़कर भागे, लेकिन कांस्टेबल रघुनीराम भाग न सका, गिर गया और जान की भीख माँगने लगा ! डोन्का ने कहा : 'तूने मुंडा लोगों पर कब दया दिखायी रे ? दया क्या पेड़ पर फलती है जो तोड़कर ला दें ?' डोन्का और माझिया का हाथ उठा, गिरा, उठा, गिरा। उसके बाद रघुनीराम का खून और मांस राह में फैल जाने पर बीरसाइतों ने खुशी से नाचकर—'यह है वही थाना ! यहीं से मुंडाओं को मारने के लिए पुलिस जाती है,' कहकर फूस का गोला तीर के फल में बाँधकर, उसमें आग लगाकर, थाने को जलाने के लिए छप्पर की ओर उसे छोड़ दिया। आग भरभराकर जल उठी।

थाने में वेतन का रुपया था। बहुत-सा रुपया था। बीरसाइतों ने वह छुआ तक नहीं। फिर वे लौटकर महुआ टोली की ओर चले। वे गाँव के एक भी मकान में नहीं घुसे; कोई सामान नहीं लूटा। वे गा रहे थे, बीच-बीच में सूरज की ओर हथियार उठाकर छलाँगें लगाते थे।

12 जनवरी को बड़े लाट ने सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट फ़ॉर इंडिया को तार भेजा : 'जन-विद्रोह फैल रहा है।'

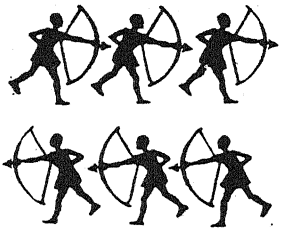

सब कुछ हो जाने से बहुत-बहुत बाद, रेवरेंड हफ़मैन की बात को काफ़ी महत्व न देने के लिए सुपरिंटेंडेंट ने अपना हाथ काट लिया था।

24 दिसंबर की घटना के बाद हफ़मैन ने लिखा था : 'सिंबुआ गाँव के एक नये बीरसाइत को उसके भाई ने समझा-बुझा कर शान्त किया था। उससे सुना, 24 दिसंबर के बाद एक के बाद एक तीन इतवारों को तीन पंचायतों में क्रिस्तानों पर हमला करने की योजना बनायी गयी थी। पहली पंचायत में पुराण-पुरुष मौजूद थे।

'तभी तारीखें निश्चित की गयी थीं। तीन या चार बीरसाइतों के अलग-अलग दल अलग-अलग दिशाओं में बिखर गये थे। उन्हें 24 दिसंबर को क्रिस्तानों के घरों में आग लगाने और तीर छोड़ने का आदेश मिला था। अंतिम पंचायत में नानक या नये दीक्षित बीरसाइतों को यह बात मालूम हुई। मैं जिसकी बात कह रहा हूँ, वह उस दिन ही अपने भाई के पास गया और कहा कि आज से उसका भाई का सम्बन्ध टूट गया।'

लेकिन हफ़मैन की रिपोर्ट को राँची की सरकार ने कभी उचित महत्व नहीं दिया था।

छोटा नागपुर की इवैंजेलिकल पत्रिका का नाम 'घर-बन्धु' है। उसके 15 जनवरी 1900 में अंक में एक समाचार प्रकाशित हुआ : 'आठ जनवरी को बीरसाइत राँची पर हमला करेंगे, यह पढ़कर शहर में आतंक फैल गया। स्वयंसेवक, पुलिस-कांस्टेबल और अफ़सर कंधे पर बंदूकें रखकर चौबीस घंटे शहर में आने के रास्तों पर पहरा देने लगे हैं!'

खूँटी थाने पर हमले की खबर मिलते ही राँची की सुरक्षा के लिए चार सौ सैनिक बुलवा लिये गये। अँधेरा होते-होते रास्ते सुनसान हो गये। 'द इंग्लिशमैन' ने लिखा : 'नगरवासियों को डर था कि झाड़ियों की ओट से बीरसाइत ज़हर में बुझाये हुए तीर छोड़ेंगे। 16 जनवरी के बीच हर अंगरेज़-अफ़सर के बँगले के आगे हथियारबन्द पहरा बैठ गया। राँची में पुलिस और सैनिक नियमित रूप से गश्त लगाने लगे। सिक्स्थ जाट राइफ़ल्स डुरांडा सेना-छावनी का पहरा देती रही...।'

लेकिन बीरसा कुछ और ही सोच रहा था।

डुरांडा के कमांडिंग अफ़सर सिक्स्थ जाट के डेढ़ सौ राइफ़लधारी सैनिकों को लेकर खूँटी चला गया। कमिश्नर फ़ॉर्ब्स खुद राँची से आ गये। राह में उनके साथ हो लिये सेना के कर्नल वेस्टमोरलैंड। खूँटी में 'तूफ़ानी जाँच' हुई। सब-इंस्पेक्टर रामबक्षसिंह दस सिपाही लेकर बाग़ियों की तलाश में निकल गया। फ़ॉर्ब्स और कर्नल बुर्ज़ू चले आये, और स्ट्रट-फ़ील्ड के साथ मिल गये।

फ़ॉर्ब्स बोले : 'डॉक्टर नॅट्रट ने पहले ही कहा था...हाँ, मिशन के नॅट्रेट ने...कि मुंडा लोग जन-विद्रोह ज़रूर करेंगे। बुर्जू से छ: मील दूर साइको में वे जमा होंगे, ऐसी उनकी धारणा थी।'

'लेकिन...!'

'नहीं, डी०सी०। हर एक की धारणा नकारकर अपनी धारणा पर अड़े रहने का नतीजा पहले भी बहुत अच्छा नहीं हुआ।'

'हुं!'

'अब मैं चार्ज में हूँ। मौजूदा हालात अच्छे नहीं है। देखो, जब दो बरस पहले प्लेग फैली थी, उस वक़्त क्या कुछ नहीं हो गया था! दूर सही, फिर भी महाराष्ट्र में टेर्ररिज़्म[1] चल रहा है। चापेकर ब्रदर्स को फाँसी तक लग गयी। गवर्नर-जनरल कर्ज़न प्रदेश को सीरियसली विभाजित कर, छोटा करने की बात सोच रहे हैं। कलकत्ता में नेटिव प्रेस में भी काफ़ी असंतोष पढ़ने में आता है।'

'वह तो शिक्षित लोगों का विरोध है।'

'डीयर डी०सी०! शिक्षित लोग हज़ार विरोध करें, लेकिन उनसे भी हताश अवस्था का पता लगता है जब कुछ बर्बर आदि-वासी प्रतिष्ठित सरकार को ललकारते हैं!'

'फिर?'

' 'पंच' का कार्टून याद है? बारूद के ढेर पर बैठकर दो अंगरेज़ अफ़सर पाइप पी रहे हैं, राख-आग झाड़ रहे हैं, बारूद से धुआँ उठने लगा है!'

'हाँ, लेकिन...।'

'तुम और मैं—वही दोनों आदमी हैं। छोटा नागपुर अब बारूद का ढेर है। अब हर चीज़ मुझ पर छोड़ दो। हज़ार होने पर भी लेफ़्टिनेंट-गवर्नर को जवाबदेही मुझे ही करनी होगी, तुमको नहीं।'

'ठीक।'

'राँची की रिज़र्व पुलिस साइको चली जाये। मैं बनगाँव जा रहा हूँ। वहाँ सिंहभूम के डी०सी० टॉमसन हैं। सिंहभूम के बनगाँव, बेरिंग, कुंदरू-गुटू, लागरा, सांग्दा, गिर्गा, और डोर्का गाँवों से बीरसाइतों को उखाड़ निकालना ही होगा। फ़ौज की आठों टुकड़ियाँ गाँव-गाँव में बैठी रहेंगी। बाक़ी सिपाही लेकर सब-इंस्पेक्टर घूम-घूमकर इन टुकड़ियों को मिले समाचार लेगा, सदर भेजेगा, हथियार ज़ब्त करेगा। उसके बाद देखा जायेगा।'

---

1. आतंक।

'मैं क्या राँची लौट जाऊँ ?'

'तुम कैप्टन रोश के साथ रिजर्व पुलिस और जाट राइफ़ल्स के चालीस आदमियों को लेकर साइको चले जाओ।'

'अच्छा। तो अब से...।'

'जस्ट ओबे मी !'[1]

स्ट्रटफ़ील्ड शाम को सात बजे साइको पहुँचे। दूसरे दिन, 9 जनवरी को सवेरे आठ बजे सब-इंस्पेक्टर रामवृक्षसिंह कैंप में आया। सूखे गले से बोला : 'हुजूर, सैलराकार पहाड़ बीरसाइतों से एकदम भर गया है।'

'खुद देखा है ?'

'रात को पेड़ पर चढ़कर बैठा था, हुजूर। रात-भर वे आते रहे। पत्तों की खड़खड़ से उनके पाँवों की आवाज़ मिलती रही। लगता है—औरतें भी हैं, हुजूर। दूर से छोटे बच्चों के रोने की आवाज़ भी आ रही थी।'

'कमिश्नर को बताना होगा।'

'उन्हें मालूम है। वह आ रहे हैं।'

स्ट्रटफ़ील्ड ने रोश से कहा : 'साइको के बाद दाऊदी। दाहिनी ओर डोम्बारी-बुरू है।'

'व्हॅट ?'[2]

'बुरू। छोटा पहाड़। डोम्बारी-बुरू के उत्तर-पूर्व में बोर्तोदो एक गाँव है। सैलराकार के दक्षिण-पूर्व में बिचा-बुरू, उत्तर में कुरुम्बा-बुरू, गुटूहाटू गाँव हैं—पच्छिम में तिरिलकूटि-बुरू, केराउरा-बुरू हैं।'

'व्हाई टेल मी आल दिस ?'[3]

'सैलराकार के चारों ओर के पहाड़ों में, गाँवों और जंगलों में विद्रोहियों के अड्डे बने हैं।'

'सो ?'

'अब गोली चलाने का मौक़ा मिलेगा।'

'तुम्हारी तरह अब बैठकों में रहने वाली लड़कियों पर नहीं छोड़ूँगा !'

'देखा जायेगा।'

पच्छिम में खूँटी से फ़ौज आयी, दक्खिन में साइको से पुलिस की फ़ौज। सिर पर फ़ौलाद की जाली की टोपी, कंधों पर किरचें और बंदूकें थीं।

---

1. बस, मेरी आज्ञा मानो।
2. क्या ?
3. यह सब मुझे क्यों बता रहे हैं ?

कमिश्नर, डी०सी०, पुलिस-सुपरिंटेंडेंट, फ़ौज के कर्नल, कैप्टन—सभी क़दम मिलाकर बढ़ रहे थे। आधे मील की दूरी जाने पर ही सैलराकार पर आदमियों का चलना-फिरना देखने-समझने में आ गया।

सरकारी फ़ौज जंगल में घुस पड़ी। नाले के किनारे-किनारे चलती रही। जोजोहाटू के मागन मुंडा ने साल के पेड़ पर से बैठकर उन्हें देखते ही नीचे की ओर सीटी बजायी। कुछ दूर पर एक दूसरे साल के पेड़ की चोटी से एक नानक ने सीटी सुनकर फिर सीटी बजायी। पेड़ों के सिरों-सिरों पर से सीटियों का इशारा चलता रहा। सैलराकार से सीटी की आवाज आयी। उसके बाद सब चुप हो गये।

पहाड़ के दक्खिन में बड़ी-सी दरार थी। उसी दरार में खड़े होकर बीरसा देखने लगा। वे बढ़े आ रहे हैं, बढ़ते आ रहे हैं। पुलिस की फ़ौज ने बढ़कर पहाड़ घेर लिया। भागने के रास्ते बन्द कर रहे हैं।

'क्या समझे ?' धानी ने पूछा।

'असली दल रूखा की ढलान की ओर गया है। पुलिस को घेराव करने का वक़्त दिया जा रहा है।'

'उनके आगे बढ़ने पर बताना।'

'अब बढ़ रहे हैं। किसी ओर चढ़ने की राह नहीं है। वह कमिश्नर पच्छिम में तिरिलकूटी-बुरू पर चढ़ रहा है। शायद वहीं से गोली चलायेगा।'

'बीच में नाला है।'

'लेकिन उनके पास बन्दूकें जो हैं।'

'उसके पहले उन्होंने बहुत-सी गोलियाँ छोड़ी हैं। तुम्हारे नाम पर वे गोलियाँ पिघलकर हवा बन गयी थीं। को—ई नहीं मरा था।'

'अब मैं ख़ुद हाज़िर हूँ...डोन्का कहाँ है ?'

'डोन्का, गुटूहाटू का हाथीराम, हरि—सब सामने हैं।'

'बर्तोली के बीरसाइत ?'

'सभी पूरब में हैं।'

'जिउरा के मुंडा कहाँ हैं ?'

'वहाँ।'

जिउरा का बस्कान मुंडा, मंझिया मुंडा, दुडांग मुंडा की पत्नी बोले : 'वहीं। उनका काम पत्थर इकट्ठे करके फेंकना है। उन्हें कोई रोक नहीं सकता।'

'हम बीरसाइत बने हैं बच्चों की देखभाल के लिए ? भगवान साथ

रहेंगे; मरने पर हम स्वर्ग में जायेंगे !'

बीरसा ने माथा और आँखें पोंछीं। बदन में खून के कण-कण में अधीरता उछल रही थी। 25वीं दिसंबर से सैलराकार पर बीरसाइत आते ही जा रहे थे; गुफ़ा-गुफ़ा में पानी और परिवार लेकर घुसते हैं। 'अरे, तुम्हारी गोद में बच्चा है,' यह बात कह कर भी उन्हें कोई रोक नहीं सकता। पहाड़ के चारों ओर बीच-बीच में छोटे-छोटे पत्थर ला-लाकर बुर्ज बनाने पड़ते हैं। बुर्ज के पीछे भारी-भारी पत्थर इकट्ठे किये गये हैं। बलोया-तीर धनुक और गुलती[1]—सब प्रबंध करने पड़ रहे हैं।

बीरसा जानता है कि बंदूक में क्या सामर्थ्य है! लेकिन वह तो भगवान है। उसके कहने पर ही मुंडा मरने या जीतने पर तुल गये हैं! उन्हें पता है कि बीरसा कुचला के तीरों से उन्हें जिताकर दुश्मन की गोलियों को बेकार कर देगा! लेकिन बीरसा को पता है कि बंदूक की गोली की क्षमता कुचला के तीरों से बहुत अधिक है। साथ ही बीरसा यह भी जानता है कि केवल अपेक्षातर आधुनिक हथियार लेकर सब युद्ध नहीं जीते जाते हैं। बीरसा यह भी जानता है कि केवल हार-जीत, सफलता-असफलता की संभावनाओं को सामने रखकर ही सब युद्धों की योजनाएँ नहीं बनायी जातीं! संथाल हूल में नहीं जीते! सत्तावन बरस पहले कोल में नहीं जीते! सरदार नहीं जीते! खरुआ में नहीं जीते! हमेशा अंगरेज जीते—हमेशा, सभी लड़ाइयों में!

साहब नहीं जीते हमेशा, सभी लड़ाइयों में।

संथाल, कोल, खरुआ, सरदार जीते, क्योंकि हर पराजय ने प्रमाणित कर दिया कि जीतने वाले के नाम का रिकॉर्ड रहता है—पराजित का नाम मनुष्य के रक्त में, बेगारी में, अभाव में, भूख में, शोषण में, धान के पौधे की तरह रोपा रहता है—वह नाम काले आदमी के हर गान में, स्मृति में, घाटो के फीके, नीरस स्वाद में, नंगे मुंडा शिशु की विवर्ण चमड़ी में, मुंडा-माता के फूले पेट में और महाजन के धान के बोरे को एक बार ढोने की मेहनत में...!

बीरसा ने आँखें पोंछीं। आँखों में ज्योति नाच रही थी; किरच के फल में सूर्य चमक रहा था। उससे किसी ने कहा : 'दो साहब बढ़े क्यों आ रहे हैं?'

---

1. धनुष जिससे गोली छोड़ी जाती है।

बीरसा ने घूमकर देखा, सुनारा—वही किशोर लड़का था। उसके होंठ सफ़ेद थे। आँखों में आश्चर्य था!

लड़के को मुर्गी कटती देखकर भी डर लगता था। उससे एक दिकू ने बेगारी का पट्टा लिखा लिया था। वही दिकू उसका महाजन था—उसके इस जीवन और अगले जीवन का मालिक था। मुंडा से बेगारी का पट्टा लिखाना बहुत आसान है न! अँगूठे की निशानी लगाते ही वह महाजन या जमींदार या जोतदार का गुलाम बन जाता है! दास-प्रथा व्यवसाय नहीं है, यह कहने भी से कोई फ़ायदा नहीं। कोई मुंडा कचहरी में मुक़दमा करने नहीं जायेगा, क्योंकि पट्टे का मालिक सब कुछ अस्वीकार कर देगा। मुंडा जानते हैं कि दिकू का पंजा बाघ के पंजे से भी भयंकर होता है। वह पंजा मुंडा के इहकाल और परकाल पर हमेशा तना रहता है!

यह लड़का उस सबको हेच करके आया है। सैलराकार पहाड़ पर बंदूक हाथ में लिये खड़ा है; बीरसा की ओर देखकर कह रहा है: 'दो साहब बढ़े क्यों आ रहे हैं?'

बीरसा ने समझा कि उसने इसी असंभव को संभव किया है। वह ईश्वर है। अभी एक अणु-क्षण में उसे लगा—'मैं भगवान हूँ। मिशन में सीखा था कि यीशु ने एक रोटी से अगणित लोगों को खिलाया था! आनन्द पाँडे ने सिखाया था कि प्रह्लाद की भक्ति से खंभा चीरकर नरसिंह रूप में भगवान विष्णु निकल पड़े थे! यह देखो, मैं उनका-सा ही हूँ। मैं भगवान हूँ! लँगोटी पहने, दासों के दास, अत्यन्त ग़रीब मुंडा लोगों को हाथों में बाँस के धनुष, और केवल कुचला-तीरों के साथ मैंने आधी दुनिया के मालिकों की फ़ौज के सामने का खड़ा किया है! उनके मन से डर दूर कर दिया है! मैं भगवान हूँ, मैं भगवान...।

'मैं मुंडा हूँ। मिशन में सीखी थोड़ी-सी अंगरेज़ी की तरह हमारी भाषा नहीं है—उस भाषा में हज़ारों-लाखों शब्द हैं। दिकू लोगों की भाषा में भी हज़ारों-लाखों शब्द होते हैं। हमारी मुंडारी में इतने शब्द नहीं हैं, लिखने के अक्षर भी नहीं हैं। जितने शब्द देखते-सुनते हो, सभी हमारी आँतों को नोचकर, रक्त में भिगो कर सिरजे गये हैं। हम लिखते नहीं हैं—गान सिरजते हैं। जिनके लिखने के अक्षर नहीं हैं वे क्या बर्बर हैं, असभ्य हैं? उस तरह के बर्बर लोगों को मैंने ढेले और गुलती थमाकर खड़ा कर दिया है! मैं भगवान हूँ...।

'हे, भगवान हूँ मैं! जो वे ढेले मार कर बढ़ते हैं, उनके देश में, इस मुंडा देश में उनके घरों में तमाम गलीचे, पंखे, खाट, बिस्तर, कौच, कुर्सी,

शीशे की बत्तियाँ, चाँदी के थाल, शराब की बोतलें, गाड़ी, घोड़ों की जोड़ियाँ और सैकड़ों नौकर हैं। हम मुंडा लोगों के घरों में कुछ नहीं है; कुछ नहीं रहता। अकाल आता है; सूखे में सब जल जाता है। मेरे बाबा ने कहा था : रिकॉर्ड में मुंडा लोगों को 'चोर बदमाश' के सिवा किसी दूसरे नाम से कभी नहीं पुकारा गया ! मुंडा लोगों के प्राण और मन नहीं होते। वे घर जलने पर आग नहीं बुझाते, घर छोड़कर चले जाते हैं। मुंडा लोगों का घर जब जलता है, उस समय जलता क्या है ? इस मुंडा देश में मुंडा के घर काठ-पत्ते-लता, ऊबड़-खाबड़ मिट्टी-पत्थर से बने रहते हैं। उस घर में रहती हैं घास की बनाई चट्टियाँ, मिट्टी की हाँड़ियाँ—और रहता ही क्या है ? जो लाठी मारकर आगे बढ़ते हैं, वे ही असल में बढ़ते हैं, वे ही दुश्मन हैं; दिकू लोग उनके साथ मिले रहते हैं; मुंडा लोगों के खून में मैंने यह बात डाल दी है। मैं भगवान हूँ। भगवान !'

बीरसा ने मुँह फेरा। सुनारा के सिर पर हाथ रखा। बोला : 'वे कमिश्नर और डी०सी० हैं। बातें करेंगे।'

'क्यों ?'

बीरसा हँसा। बोला : 'वे साहब हैं न ! गया को पकड़ने से पहले कहा था, मेरे लिए भी कहेंगे। यह उन लोगों का अजीब क़ायदा है। पहले दो-तीन बातें कहकर आरोप लगायेंगे।'

'उसके बाद ?'

'गोली छोड़ेंगे। खूब गोलियाँ छोड़ेंगे, हमें मारेंगे। लेकिन रिकॉर्ड में लिखवायेंगे कि पहले हमने क़ायदे से मुंडा लोगों से अपनी पकड़ाई देने को कह दिया था। वे पकड़े जाने के लिए तैयार नहीं हुए—इसी से गोली चलानी पड़ी !'

'पकड़वा देने पर गोली नहीं चलायेंगे ?'

'चलायेंगे। तब कहेंगे कि हमारे बोलने से मुंडा खफ़ा होकर बढ़े आ रहे थे, इसीलिए गोली चलानी पड़ी। तब वही बात रिकॉर्ड में लिखायेंगे।'

'वह कौन है ?'

'दुभाषिया। साहब लोग मुंडारी नहीं जानते न !'

'नहीं जानते ? दिकू कहते हैं कि साहब सब जानते हैं ?'

'ना रे। मुंडारी नहीं जानते। मुंडा लोगों का मुक़दमा करते हैं। दुभाषिया जो समझा देता है, वही समझते हैं।'

स्ट्रटफ़ील्ड खड़े हो गये। हाथ उठाये। अब उन लोगों को वे साफ़-साफ़ देख सकते थे। आँखों में प्रकाश सुलग रहा था। उनके बलोया के फलों पर सूर्य चमक रहा था। वे हाथ उठाये बलोया लिये खड़े हैं। दुभाषिये को इशारा कर कुछ कहा। दुभाषिया उनकी ओर से बोलने लगा :

'तुम अपने को पकड़वा दो। सब लोग हथियार रख दो।'

बीरसाइतों ने सूर्य की ओर बलोया उठाया। चिल्लाकर बोले : 'हथियार रखकर तुम चले जाओ, हे।'

'इस लड़ाई में जो सरदार हैं, वह आगे आओ। बात करो।'

'हम सारे मुंडा इस लड़ाई में सरदार हैं।'

'बीरसा को हमारे हवाले कर दो।'

अब नरसिंह मुंडा आगे आया, बोला : 'राज किसका है? साहब लोगों का? हमारा राज है! हम उनके देश में राज करने गये? या वे यहाँ आये? तो हथियार कौन डाले? हम? साहब लोग हथियार डालकर चले जायें! हम हथियार डालने के लिए यहाँ आये हैं? अपना राज़ लेने के लिए आये हैं!'

और कुछ बात करने को न थी, कुछ भी नहीं। फ़ॉर्ब्स बोले : 'पहाड़ घेर लिया है। अब उत्तर की ओर से चढ़ाई करने से विद्रोही परास्त हो सकते हैं। तब गोली चलाने की ज़रूरत भी नहीं होगी।'

लेकिन कैप्टेन रोश ने कहा : 'इतने क़रीब जाने से सिपाहियों की जान मुसीबत में पड़ सकती है। पच्छिम में तिरिलकूटि-बुरू से गोली चलायी जाये।' तब तीन बार गोलियाँ चलायी गयीं। किसी के लगीं नहीं। मुंडा लोगों ने चिल्लाकर कहा : 'भगवान, तुमने दुश्मनों की बंदूकों को बेकार कर दिया है। गोली निष्फल हो गयी हैं। देखो, सारी गोलियाँ बेकार हो गयीं। कोई भी गिरा नहीं, कोई भी मरा नहीं।'

लेकिन मिलिटरी रेजिमेंट के हाथों में राइफ़लें रहने से कुछ देर तो उनके हाथ राइफ़लों को चलाते हैं, उसके बाद राइफ़लें हाथों को चलाने लगती हैं! हाथों को रोककर एक-के-बाद एक गोली चेम्बर में भरी जाती है—

उँगलियाँ को ट्रिगर दबाने पर लाचार करती हैं। कैप्टेन रोश का आँखों की तारीफ़, आवाज़ की तारीफ़—'बक् अप बॉयज़'[1]—चिल्लाना बेजान राइफ़लों में भी जान डाल देता है। तब दिल अगर कहे भी कि मुंडा प्राय: निरस्त्र हैं, तो बुद्धि कहती है कि राइफ़ल की बात सुनने से अनिवार्यत: प्रमोशन ही मिलेगा!

इसीलिए गोलियाँ फिर चलीं। अब हवा में बारूद की गंध भर गयी थी। आश्चर्यजनक रूप से रूखी, खटाखट आवाज़ आ रही थी। गुटूहाटू का हाथीराम, बर्तोली का सिंगराई पत्थरों पर गिर गये। बीरसा को बीरसाइतों ने खींचकर पीछे कर दिया। लाल-लाल खून काले-काले शरीरों से निकलकर काले पत्थरों पर बहने लगा था।

'मंगल मुंडा का हाथीराम के अलावा एक लड़का और है'—लँगोटी पहने, धनुक उठाये हाथीराम का भाई हरि आगे बढ़ आया। एक और किशोर बालक—'हातू कौन है?' 'नानक हूँ हे!' 'उमर कितनी है?' 'बारह हो गयी है।' 'तो आ, मुंडा किसी उमर में भी मर सकते हैं...।' 'वे क्यों मरे?' 'पत्थर पर चढ़ जा, गुलती उठा।' 'गुलती का पत्थर चूके नहीं। वह क्यों मर गया?' 'पता नहीं।' 'मेरे पास रह, अकेले मरने में बड़ा डर लगता है।' 'पास? हुं!'

गोलियों की आवाज़ें! बारूद की गंध! गोलियों की आवाज़ें! बच्चे धनुष की तरह झुककर नीचे गिर गये—हरि पत्थर के ऊपर लुढ़का।

पुलिस और सेना की टुकड़ियाँ आगे बढ़ रही हैं। फ़ॉर्ब्स की आवाज़: 'स्टॉप फ़ायरिंग[2]। अब चारों ओर से पहाड़ पर चढ़ो। गोली मत चलाओ। न, फिर से ऑर्डर देने तक कोई गोली नहीं चलायेगा। नो मोर किलिंग[3]।'

संगीनें आगे कर बंदूकें उठाये हुए सैनिक चढ़ रहे हैं, पुलिस भी। गौरी मुंडानी की पीठ पर बच्चा है, हाथों में पत्थर। 'मनझिया की मुंडानी कहाँ है? बंधन की मुंडानी?' अब गौरी मुंडानी अपने बाईस बरस के भरे यौवन की सारी शक्ति से दोनों हाथों को मुँह पर लाकर चिल्लायी: 'जिउड़ी गाँव का कौन है, हे। आगे आओ।' घूमकर: 'बुड्ढे, तुम कौन हो?' 'नाम से क्या होता है रे, मैं पुराण-पुरुष हूँ! पकड, हाथों में पत्थर

1. शाबाश, मेरे बहादुरो!
2. गोलियाँ चलाना बंद करो।
3. और मार-धाड़ नहीं होगी।

थमाये देता हूँ।'

पत्थर धड़ाधड़ बरस रहे थे। संगीन-बन्दूकें आगे बढ़ रही थीं। रेजिमेंट की पुकार—'कैप्टेन साहेब ! क्या ऑर्डर है ?' कैप्टेन रोश का जवाब : 'बक् अप, बॉयज़।' 'कैप्टेन साहब ! क्या ऑर्डर है ?' फ़ॉर्ब्स की चीख : 'डोन्ट शूट !'[1] कैप्टेन रोश का जवाब : 'फ़ायर !'[2] सिपाहियों की चिल्लाहट : 'उनके बच्चे, औरतें ! पीठ पर बच्चे बँधे हैं।' लेकिन राइफ़लें बोलीं : 'शूट !' किसी ने कहा : 'छोटा बच्चा रो रहा है।' लेकिन राइफ़ल ने कहा : 'शूट !' अब एक-के-बाद एक गोली। अब सिपाही-पुलिस, बीर-साइत आदमी-औरतें एकदम आमने-सामने थे। डोन्का मुंडा की चिल्लाहट : 'भागो।' सोमा मुंडा की चीख : 'औरतो ! पीठ पर बच्चा बँधा है।' लेकिन राइफ़लें बोलीं : 'शूट !' गोली-संगीनें। संगीनें-गोलियाँ। गौरी ने समझा कि संगीन का फल उसके बच्चे को छेदकर उसकी पीठ में घुसा है, छाती में गोली लगी—तभी गौरी निश्चल हुई ! उसके बाद किरचें, गोलियाँ, चीत्कार, आर्तनाद, उल्लास, बूटों की आवाज़, बारूद की गंध—कॉक्नी[3] में गाली-गलौज ! 'मा रे !' कोई बच्चा चिल्लाया—फिर गोली !

ऑपरेशन सैलराकार ओवर ! येस...ओवर। ओवर-ओवर-ओवर-ओवर-ओवर... ![4]

बाद में. बहुत बाद में, मुंडारी औरतों की हत्या के लिए फ़ॉर्ब्स, रोश और स्ट्रटफ़ील्ड को हलकी-सी डाँट पड़ी। लेकिन तीनों ने ही कहा : गोली न चलाने का हुक्म ठीक से समझ में नहीं आया। मुंडा आदमी और औरतें लम्बे बाल रखते हैं; उनका रंग घोर काला होता है। इसी से आदमी-औरतों में फ़रक नहीं किया जा सका। न, छोटे बच्चों का रोना सुनकर भी फ़रक नहीं किया जा सका। लेकिन फ़ौजी और दीवानी दफ़्तरों ने तीनों को निर्दोष क़रार दिया, प्रत्येक के साहस और वक़्त पर ज़रूरी विवेक की प्रशंसा की। स्वयं गवर्नर-जनरल ने भी प्रशंसा की !

इसी तरह हताहतों की ठीक संख्या को लेकर भी भिन्न-भिन्न अनुमान

1. गोली मत चलाओ।
2. गोली चलाओ।
3. संदन की बाजारू भाषा।
4. सैलराकार का अभियान समाप्त हो गया है—समाप्त, समाप्त, समाप्त !

मिले। 20 जनवरी के 'द इंग्लिशमैन' समाचार-पत्र ने बताया : 'सरकारी मुखपत्र हताहतों की संख्या के विषय में मौन हैं। अफ़वाह है कि पंद्रह से बीस लोग तक मारे गये हैं। यह संख्या कहीं अधिक होना स्वाभाविक है, क्योंकि मुंडा लोग जंगल में भाग गये, वहाँ भी मरे होंगे, और रात के अँधेरे में पहाड़ से कुछ साथियों की लाशें ले जाकर समाधि भी दी होगी।'

25 मार्च को 'द स्टेट्समैन' अख़बार ने लिखा : 'कम-से-कम चार सौ मुंडा मारे गये। आवश्यक जाँच होनी चाहिए।' बैरिस्टर जेकब ने इसी अनुमान को सही माना।

16 फ़रवरी के 'बंगाल पुलिस इंटेलिजेंस' ने लिखा : 'सरदारों ने बताया कि सात सौ मुंडा मारे गये।'

'द स्टेट्समैन' ने फिर लिखा कि चालीस आदमी मरे। रेवरेंड हफ़मैन बोले : सिर्फ़ बीस मरे। अब सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया : सैलराकार पर दस लोग मरे और सात लोग घायल हुए। सरकारी विज्ञप्ति के विरोध में कई पाठकों ने 'द इंग्लिशमैन' के संपादक को चिट्ठी लिखी : 'हमारे साथ बहुत दिनों का परिचय ज़िनसे है ऐसे सारे विश्वस्त सूत्रों ने बताया है कि जंगल में जाकर, छिपाकर कहाँ-कहाँ मुंडा लोगों को समाधि दी गयी है—वह दिखायेंगे। बात बहुत महत्वपूर्ण है। अब इसकी विस्तृत जाँच ज़रूरी है।' 'एक पाठक' की चिट्ठी वर्ष 1900 की 17 अप्रैल को प्रकाशित हुई। उसके बाद पता चला कि सरकारी विज्ञप्ति ही अंतिम रूप से सही है। इस संबंध में और कोई चिट्ठी किसी समाचार-पत्र में प्रकाशित न होगी।

शाम तक सिपाही लौट गये थे। पुलिस सैलराकार पर पहरा दे रही थी। शाम तक उन्होंने सैलराकार की गुफ़ाओं से औरतें, बच्चे, हथियार, धान, चीना-दाना, घास की चट्टी, मिट्टी की हाँड़ियाँ निकाल लीं। शाम तक क़ैदी बीरसाइतों ने लकड़ी काटकर डोलियाँ बनायीं। शाम को डोलियों में ढोकर घायलों को ले जाने का काम भी हो गया।

उसके बाद अँधेरा उतरा। शरद् की रात। उसके बाद हवा ने बहना शुरू किया। आसमान में फटे-फटे बादल, हलकी बूँदा-बाँदी, जंगली पत्तों पर बरसात, धीमी मीठी उसाँस—जंगल ने उसाँस छोड़ी है!

जंगल के भीतर घने में, अंधकार में, धरती से मुँह उठाकर नरसिंह मुंडा बोला : 'किसने माटी खोदी रे, गोमी ?'

'हमारे लड़कों ने खोदी, दादा!'

'क्यों ?'

'जो यहाँ मरे, उन्हें गोर[1] में गाड़ेंगे।'

'मुझ भी गोर में गाड़ेगा ?'

'प्रेत के पास नहीं ले जाऊँगा ?'

'ना ! जहाँ बीरसाइतों की गोर है वहीं मुझे रखना। तू मुझे घसीटकर लाया, या और कोई ?'

'घसीटकर मैं लाया। अभी वे लोग औरों को भी ला रहे हैं। सैलरकार से जंगल तक बहुत लोग पड़े हैं—अनगिनत !'

'कि—सी को पता न चले कहाँ गोर में गाड़ा है रे, गोमी। गोरों को गुस्सा बहुत होता है। जिसकी लाश देखेंगे, उसी की लाश जला देंगे। परिवार-के-परिवार उजाड़ डालेंगे !'

'किसी को पता नहीं चलेगा।'

'तुम लोग ?'

'भाग जायेंगे।'

'भागो। मेरे मुँह पर हाथ रख दे।'

'क्यों ! दादा ?'

'भीतर से कराह निकल रही है रे, गोमी ! रात में बहु—त दूर तक आवाज़ जायेगी। गोरे सुन लेंगे।'

'रखे देता हूँ।'

नरसिंह मुंडा के मुँह पर गोमी ने हाथ रखा, दाहिना हाथ। अपना खून से सना बायाँ हाथ अपने मुँह पर रखा। उसके कलेजे में से भी हाहाकार उठने को हो रहा था...!

मिट्टी खोदने, लाश घसीटने की आवाज़ें। पत्तों पर वर्षा का मर्मर ! गोमी का हाथ हटाकर नरसिंह बोला : 'यहाँ जंगल उग आयेगा। कोई निशान नहीं रहेगा। पेड़ देखकर मुंडा समझ जायेंगे कि यहाँ किसी की लहास है।'

11वीं जनवरी। फ़ॉर्ब्स ने खूँटी से मुंडा लोगों को, मुखिया लोगों को बुलाया, उनसे बातें कीं।

स्ट्रटफ़ील्ड बोले : 'रेवरेंड हफ़मैन जो कुछ कहेंगे, वही हमारी राय है। रेवरेंड हफ़मैन मुंडारी जानते हैं। मुंडा लोगों को जानते हैं। वह मिशन के आदमी हैं। उनका दृष्टिकोण उदार है; मन भी करुणा से भरा है !'

हफ़मैन बोले : 'उन पर दया दिखाना सहरा में बीज बोना होगा !

---

1. क़ब्र।

बीरसा के भक्त मरदों की बात कर रहे हैं न ? उनकी औरतें एक सामूहिक लक्ष्य क्या होता है, इतना ही जानती हैं। न, इन सबको कड़ी सज़ा दीजिये।'

'क्या सज़ा ?'

'बीरसा लोगों की जायदाद ज़ब्त कर लें। औरतें गाँव के बाहर न जा सकें। जो पकड़ा जाये, उसे मार डालें। पहला दल तुरंत मारा जाता तो अच्छी मिसाल बनता।'

'नाइस !'[1]

'जब तक प्रत्येक सशस्त्र बीरसाइत को पकड़ा नहीं जाता, तब तक दूसरे बीरसाइतों को क़ैद में रखें। मुखिया लोग बीरसाइतों के मुचलके लिखकर दें कि उनके दल को अभी या भविष्य में आश्रय नहीं देंगे।'

'डी०सी० की भी यही राय है ?'

'हाँ !'

'ताज्जुब है। एक मिशनरी, और दूसरा डी०सी० ! उपयुक्त प्रस्ताव है। सुनिये, इतनी उत्तेजना में सोचा गया अत्याचार नहीं चलेगा, क्योंकि वैसा करना बीरसाइतों को फिर से विद्रोह के रास्ते पर ढकेलना होगा। क़ानून तोड़ने के सब प्रयत्नों को अवश्य रोकना होगा। पर, बीरसा के फैलाये धर्म पर सरकार को कोई आक्रोश नहीं है। अब नयी नीति से काम निकालना होगा।'

'जैसे...?'

फ़ॉर्ब्स ने एक काग़ज़ बढ़ा दिया जिस पर लिखा था :

'आंदोलन-कारियों के दल को आवश्यकता होने पर बल के प्रयोग द्वारा तोड़ना होगा। जिन लोगों ने दंगा या कुछ और दंडनीय अपराध किये हैं, उन्हें क़ैद में डाल सज़ा देनी होगी।

'हत्या, हत्या के प्रयत्न और पुलिस के अनुसार अन्य अपराधों में अभियुक्त व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया जायेगा और उन पर मुक़दमे चलाये जायेंगे।

'वर्तमान घटनाओं के समय जो लोग अपने गाँवों से ग़ैर-हाज़िर थे—जिन बीरसाइतों के बारे में इसके प्रमाण मिलेंगे उनकी उल्लिखित अनुपस्थिति के लिए संतोषजनक कैफ़ियत तलब की जायेगी। क्यों वे शान्तिपूर्ण आचरण के लिए ज़मानत न दें—इसके लिए उन्हें कारण बताना

---

1. ख़ूब !

होगा।

'इन सारे क्षत्रों में इसलिए अतिरिक्त पुलिस रखनी पड़ेगी जिससे भविष्य में शान्ति और व्यवस्था बनी रहे।'

हफ़मैन बोले : 'बहुत ठीक ! आप लोगों ने जो चाहा था उससे भी अधिक सज़ा दी गयी है। सिर्फ़ गोली से मारा नहीं जायेगा।'

'पुलिस अगर गाँवों में घूमती ही रहे तो स्लो डथ[1] है।'

'बिलकुल ठीक ! पुलिस रखने के और मतलब क्या हैं ? पुलिस रहेगी, मिलिटरी रहेगी, उनके घोड़े घास खायेंगे, उनके लकड़ी, पानी, खाने का खर्च उन पर लगेगा। मुंडा लोगों के लिए वह तिल-तिलकर मरना नहीं है तो क्या है ?'

'विद्रोहियों के पकड़े जाने से पहले थानों और मिशनों पर पहरे का इंतज़ाम ?'

'सब हो गया है।'

फ़ॉर्ब्स हँसे। बीरसा ! बीरसा दाऊद ! बीरसा भगवान ! बीरसा उनके जीवन में क्या सचमुच भगवान बनकर आया है ? छोटा नागपुर की-सी एक अभागी जगह पर कमिश्नर बनकर आने के बाद ऐसा सौभाग्य मिलेगा—यह किसे पता था ? राजद्रोह को दमन करने का सुयोग मिलना क्या इतनी आसान बात है ?

बोले : 'राँची और सिंहभूम के सारे उपद्रव-ग्रस्त इलाक़े में, हर थाने में, हर गाँव में, हर मिशन में राइफ़लधारी पुलिस, मिलिटरी है। दुमका और दूसरी जगहों से मिलिटरी-पुलिस आ रही है। हालात क्या हैं—कुछ समझ में आ रहा है ?'

'बहुत बड़ा काम है।'

फ़ॉर्ब्स फिर हँसे। बीरसा ! बीरसा दाऊद ! बीरसा भगवान ! बोले : 'डी० सी० ! नेवर इग्नोर द ब्रिटिश लॉ।[2] ब्रिटिश क़ानून को कभी हेय मत समझना। क़ानून के शिकंजे में डालने से मुंडा लोगों को जो सज़ा मिलेगी, वह और किसी भी तरह नहीं मिलेगी। पहली सुविधा है कि जज मुंडारी नहीं समझते। दूसरी सुविधा है कि मुंडा लोग क़ानून और

---

1. धीमी-धीमी मौत ही है।
2. अंगरेजी क़ानून-व्यवस्था की कभी उपेक्षा न करना।

अंगरेज़ी नहीं समझते। तीसरी सुविधा है : पहले गिरफ़्तार कर उन्हें जेल में डाल दो। मुक़दमा खड़ा करने के लिए जाँच चलती रहे। महीनों जेल में रहने से मुंडा लोगों की रीढ़ अपने आप टूट जायेगी !'

फ़ॉर्ब्स हँसे। मन की आँखों से देखने लगे कि राजद्रोह दबाने के लिए पुरस्कार मिल रहा है। न, 1857 के ग़दर का-सा सुअवसर फिर नहीं आयेगा ! तब इधर प्रमोशन हुआ, उधर राजा-ज़मींदारों के मकान लूट-कर वे ख़ुद राजा बन बैठे थे ! मुंडा लोगों के मकान लूटने से राजा नहीं बना जा सकेगा। लेकिन प्रमोशन तो होगा ही। प्रमोशन ज़रूर होगा। फ़ॉर्ब्स बोर्ड ऑफ़ रेवेन्यू के मेम्बर बनेंगे; अब कौन रोक सकता है ?

'एक नोटिस देना चाहिए ?'

'डी० सी० ! सब इंतज़ाम कर लिया है। नोटिस पढ़िये। यह हर गाँव के मुखिया, हाट, सरकार को और अन्यत्र भेजा जायेगा। सरगुजा, उदयपुर, जसपुर, रामगढ़, बनाई—इन सारी देशी रियासतों को भी जायेगा। सरायकेला और पोराहाट के राजा लोग सिपाही भेजेंगे; ख़ुद बीरसा की खोज करेंगे। नोटिस सरकारी ऑर्डर का हिन्दी और मुंडारी में अनुवाद है। ज़रा ज़ोर से पढ़िये।'

स्ट्रटफ़ील्ड पढ़ने लगे : 'इस विज्ञप्ति द्वारा घोषित किया जाता है कि बीरसाइतों द्वारा की गयी ज्यादतियों के लिए सरकार-बहादुर ने बीरसा और उसके मुख्य अनुयायियों की ज़रूरी गिरफ़्तारी का परवाना जारी किया है। उक्त उद्देश्य से बनगाँव, खूंटी और सिंहभूम और राँची के अलावा भी और जगहों पर सरकारी फ़ौजें भेजी गयी हैं। आदेश दिया जाता है कि सब लोग सरकारी कर्मचारियों की सब तरह से सहायता करें। बीरसा और उसके मुख्य लोग अगर तुम्हारे गाँव के पास आयें या दीखें; या पास के किसी जंगल में छिपे हुए हों तो फ़ौरन तुम राँची या सिंहभूम के डी० सी० को या सिपाही/पुलिस के किसी ज़िम्मेदार सरकारी कर्मचारी को सूचना दो; और तुम और तुम्हारे गाँव के रहने वालों को जब ज़रूरत हो, तभी बीरसा और उसके अनुयायियों की तलाश और गिरफ़्तारी के लिए सरकारी कारिन्दों के साथ तुम जाओगे। यदि उक्त आदेश की किसी भी प्रकार अवहेलना हुई तो तुम ख़ुद ज़िम्मेदार होगे और तुम्हारे बारे में उपयुक्त व्यवस्था की जायेगी; तुम्हारे साथ गाँव के सभी रहने वाले पुलिस का ख़र्च उठाने के लिए बाध्य होंगे। अगर तुम और तुम्हारे गाँव वाले समर्थ हों, तो बीरसा को ख़ुद गिरफ़्तार करो और उसे क़ैदी बनाकर डी० सी० के पास ले आओ।

कोई व्यक्ति बीरसा या निम्नलिखित व्यक्तियों के गिरफ्तार करने पर, या गिरफ़्तारी में सहायता दे सकने वाली किसी प्रकार की खबर देने पर निम्नलिखित दर से पुरस्कार पायेगा :

बीरसा की गिरफ़्तारी के लिए ...500 रुपये

डोन्का मुंडा :

ग्राम बोर्तोदि, थाना खूँटी, की गिरफ़्तारी के लिए...100 रुपये

माझिया मुंडा :

ग्राम सेरांदी, थाना तामार, की गिरफ़्तारी के लिए...100 रुपये

बुद्धू मुंडा :

ग्राम सितीवी, की गिरफ़्तारी के लिए ...100 रुपये

परान पहान :

ग्राम कार्टिकेल, की गिरफ़्तारी के लिए ...100 रुपये

(ह०) ए० फ़ॉर्ब्स

12-1-1900 छोटा नागपुर के कमिश्नर।'

स्ट्रटफ़ील्ड ने नोटिस फ़ॉर्ब्स को लौटा दिया। फ़ॉर्ब्स बोले : सिंहभूम के कमिश्नर और डी० सी०—सिक्स्थ बंगाल इनफ़ैंट्री की एक कम्पनी लेकर कैप्टेन रोश बनगाँव और सिंहभूम के सिवा दूसरी जगह घूमेंगे। डी० सी०, तुम और कर्नल वेस्टमोरलैंड पूर्व की ओर खूँटी और तामार थाने के इलाक़ों में घूमोगे। असिस्टेंट एस० पी० स्टीफ़ंस और लेफ़्टिनेंट मिडलमैंन तुरपा और बसिया थाने के इलाक़ों में घूमेंगे। प्रत्येक बीरसाइत गाँव की कोने-कोने की तलाशी लेनी होगी। मिलिटरी-पुलिस घायल और दूसरे बीरसाइतों को पकड़ेगी। फ़रार बीरसाइतों के धान, गेहूँ, दाल, बाजरा और दूसरी हर क़िस्म की जायदाद ज़ब्त कर ली जायेगी जिससे कि विद्रोहियों को खाने के लिए एक दाना भी न मिले। प्रदेश सरकार की इच्छा से मुंडा देश में सरकारी आतंक और सामर्थ्य कुछ ज़्यादा मात्रा में प्रदर्शित किया जाये। बीरसा और उसके मुख्य चेलों को पकड़ने के बारे में किसी तरह की भी ढील देना ठीक न होगा।'

स्ट्रटफ़ील्ड हलकी और दुर्बोध हँसी हँसे।

'डी० सी०, क्या सोच रहे हैं, क्या ऑपरेशन फ़ेल होगा ?'

'नहीं, वैसा नहीं सोच रहा हूँ।'

'तब ?'

'कुछ नहीं।'

बीरसा को देखने पर डी० सी० गिरफ़्तार करेंगे, गिरफ्तारी में रुकावट

होने पर गोली चलायेंगे ! डी० सी० मुंडा लोगों के लिए फ़ॉर्ब्स से भी अधिक निर्दयी सिद्ध होंगे। फिर, उसी के साथ डी० सी० यह भी जानते हैं कि बीरसा को पकड़े न जाने पर वह शायद नाखुश न होंगे। हज़ार होने पर भी ऑपरेशन-बीरसा से लाभान्वित होंगे फ़ॉर्ब्स ही, वह नहीं !

सब-कुछ हुआ। ढोल बजाकर जगह-जगह ऐलान पढ़ा गया। सब जगह छपे हुए इश्तहार लगा दिये गये। मिलिटरी, पुलिस, अंगरेज़ अफ़सर, देशी राजे, सभी—सैकड़ों गाँवों को चूसने लगे। बीरसाइतों के गाँवों को लूटकर धान का अन्तिम दाना तक उठा ले गये; बीरसाइत भूखों मरने लगे। बहुत लोग पकड़े गये; बहुतेरे लोगों को निर्दयता से पीटा गया, लेकिन बीरसा नहीं मिला। जिउरी गाँव का बूढ़ा, अंधा मुखिया बोला : 'बीरसा पर नज़र रखने के लिए मैं रुपये पाऊँगा ? तुमको मिले तो तुम पकड़ लो।' तब उसकी पीठ पर लोहा-भरे चमड़े की चोट की शुरुआत की गयी—कलकत्ता की एक बड़ी दूकान से बनवाया हुआ वह स्पेशल चाबुक था। नील के व्यापारी साहबों ने इस चाबुक को 'श्यामचाँद' का नाम दिया था। चालीस बरस बाद दूकान को फिर श्यामचाँद का ऑर्डर मिला !

बूढ़ा मुखिया चाबुक की सांघातिक मार खाते-खाते बोला : 'जंगल ने उसे छिपा रखा है, तुम जंगल से बड़े हो ?'

बीरसा नहीं मिला। ऑपरेशन-बीरसा चलता रहा। फ़ॉर्ब्स बोले : 'चल रहा है, चलेगा, और भी चलेगा।'

सैलराकार से बोर्तोदि, बोर्तोदि से आयूभातू, आयूभातू से बीरसा मारांगहाड़ा घूम रहा था। साथ में डोंका, माझिया, सुनारा और दूसरे लोग थे। दिन में जंगल में रहते, गभिन जंगल में। पेड़ की सबसे ऊँची डाली पर बैठकर कोई नानक नज़र रखता। धीरे से सीटी बजाता, गाँव से जो लोग गोरू चराने आते वे आँखें उठाकर ऊपर की ओर न देख, सीटी बजा इशारा कर लौट जाते। दिन-रात गाँवों में पुलिस का पहरा था। रात को अँधेरे में कोई तीन औरतें 'बाहर जा रही हैं'—कहकर निकल आतीं। 'हो गया जी'—कहकर दो लौट आतीं। बाक़ी एक कभी बालिका, कभी युवती, कभी वृद्धा, सफ़ेद कपड़ा उतार, नंगी होकर, काला शरीर अँधेरे के कालेपन को समर्पित कर, जंगल में जाकर खाना और पानी रखकर चली आती। कह जाती : 'यहाँ से उस गाँव में डर कम है। पुलिस अभी नहीं पहुँची है। उधर से होकर हाथियों का झुंड गया है, इसी से सिपाही डर से मरे जा रहे हैं। परसों जायेंगे।'

वे लोग ठीक ही चले जा रहे थे। बीरसा भी जाता; उन्नीस दिन से वे पुलिस और मिलिटरी की आंखों को धोखा-चकमा दे रहे थे। लेकिन सुनारा को बीरसा को कंधे पर डालकर चलना पड़ रहा था, इसलिए उन्नीसवें दिन इच्छा रहते भी वे जा न सके। तिलाडुबू के जंगल में वे रुक गये। सुनारा बोला : 'मैं अब न जाऊँगा, भगवान। मुझे रखकर चले जाओ। सैलराकार पर छाती में पत्थर लग गया था; आज इतने दिनों तक मुझे उठाकर तुम लेते चले, लेकिन मुझे लगता है कि अब मैं बचूँगा नहीं।'

बीरसा को बुरा लगा। यहाँ जंगल वैसा घना न था। उसके सिवा जंगल दो बड़े-बड़े हाटों को आने-जाने वाले रास्ते पर पड़ता था। सुनारा को उठाकर ले जाना सचमुच कष्टकर था। वह सुनारा से बोला : 'इस पत्थर पर लेटे रहो। मैं सुन तो लूँ कि तिमाडुबू से मुरू मुंडा क्या कहता है। उसने खबर भेजी है कि आयेगा।'

'यहाँ क्यों आये ? यह जंगल घना नहीं है।'

'मुरू तुझे दवा ला देगा।'

'दवा का क्या होगा ? तुम इधर आओ।'

'मैं यहीं तो हूँ।'

'भगवान !' सुनारा फीके होंठों को पीड़ा से दबाकर हँसा : 'याद है—बनगाँव में मैंने तुम्हें एक गान सुनाया था ?'

'अच्छा हो आ, सुनारा। मैं तुम्हें वह गान सुनाऊँगा, अब मैंने भी अच्छी तरह सीख लिया है।'

बीरसा हलकी आवाज़ से बोला, उठकर आया। डोन्का और माझिया सर पर हाथ रखकर बैठे हैं—सामने साली, परमी थीं।

'तुम लोग ?'

'मुरू नहीं आयेगा, वह सवेरे पकड़ा गया है। मुखिया के भाई ने उसे पकड़वा दिया है, भगवान।'

परमी की ओर देखने में बीरसा को कष्ट हुआ। बीरसा ने परमी के पिता के अनुरोध पर कभी कहा था कि उससे सगाई करूँगा, लेकिन परमी का मन बहुत दिनों से बँधा था बीरसाइत कनू से, रोगोता के कनू मुंडा से। कनू सैलराकार की लड़ाई में मारा गया।

डोन्का ने पूछा : 'परिबा कहाँ है ?'

'माँ के पास।'

'क्या खबर है ?' बीरसा ने पूछा।

साली बोली : 'तुम्हारे धर्म में जिनका विश्वास है, उन सब

मुखियाओं के पट्टे सरकार ने छीन लिये हैं। नये मुखियाओं को मुचलके लिखवाकर पट्टे दे रहे हैं। गुइपाई, रोगोता, कोटागारा, संकरा—बारह गाँवों के मुखियाओं के पट्टे चले गये हैं। जो तुमको पकड़वा देगा उसे नया पट्टा मिलेगा, वह मुखिया बनेगा।'

'और बता,' डोन्का बोला।

'सा—रा धान—जौ, दाल, नमक—मेरे घर से—सबके घरों से ले गये हैं। मुंडा लोगों को भूखा मारेंगे, और...।'

'और क्या?'

'कोड़े मार-मारकर जान निकाले डाल रहे हैं। और...।'

'जब तुम लोगों को नहीं पाते तो कोड़े मार-मारकर, धान-चावल छीनकर हर घर में भूख, अकाल, रोना डाल दिया है। और औरतों-बच्चों की इज्जत ...।' साली का गला भर आया।

कुछ देर बाद साली ने आँखें उठाकर कहा: 'बोर्तोदि में मेरे मुंडा के लिए, सेरांग्दि में माझिया के लिए—सारे घर पोराहाटी के राजा के हाथी से तुड़वा डाले हैं। मैं अब न जाऊँगी। जाने से इज्जत नहीं बचेगी।'

बीरसा ने डोन्का और माझिया की ओर देखा। उनकी आँखों में वेदना, प्रश्न, दुःख और लज्जा थी। डोन्का और माझिया ने भी एक-दूसरे की ओर देखा। डोन्का बोला: 'जितने मुंडा पकड़े गये हैं, उनसे अधिक भागे हुए हैं। तुम्हारे बाहर रहने पर उलगुलान का काम होगा। मेरे पकड़े जाने पर गाँव बच जायेगा। मुंडा बच जायेंगे।'

'तेरे अकेले से?'

डोन्का ने हाथ की लकड़ी जमीन पर फेंकी। बोला: 'मैं इस काठ की तरह था, भगवान। तुमने मुझे पहले प्रचारक, बाद में सिपाही बनाया। मेरे पकड़े जाने पर कोई नुक़सान नहीं होगा।'

साली से बोला: 'अब मैं तेरे भगवान के हाथों खो गया!'

डोन्का और माझिया सुनारा को कंधों पर डालकर उसी रात तिलाडुबू का का जंगल छोड़कर चले गये। रात रहते सवेरे, पैदल वहाँ से नौ मील दूर तुरपा-आउटपोस्ट पर ले जाकर अपने को पकड़वा दिया। बोला: 'बीरसा वहाँ तुराबू के जंगल में छिपा है।' तुराबू तिलाडुबू से उलटी दिशा में बीस मील उत्तर में जमकोपाई इलाक़े में है।

जमकोपाई और आस-पास के गाँव पीटते हुए पोराहाट के राजकुमार, कमिश्नर, डी० सी०, टॉम्सन, बॉक्सवेल, पुलिस-मिलिटरी और एक हज़ार

गाँव वालों को लेकर निकल पड़े।

डोन्का बोला : 'मुझे पकड़वाने के लिए मानी पहानी ने कहा है, बोर्तोदि की मानी पहानी। कहा है, पकड़वायेगा नहीं तो मैं पकड़वा दूँगी। उसे कुछ दे देना। जैसे सबको रुपये दिये हैं।'

मानी पहानी को बुलवाया गया। उसने कुछ कहे बिना बीस रुपये ले लिये। डोन्का बोला : 'सेंत्रा में अपने भाई के पास जाकर रह। बीरसाइत को पकड़वाया है; बोर्तोदि में रहेगी तो लोग थूकेंगे।'

'क्यों ! तेरा भगवान कहाँ है ? धरती का आबा ?'

मानी चली गयी।

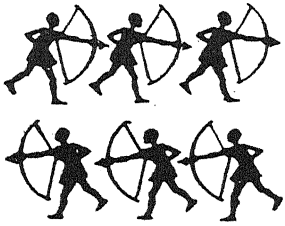

सरकारी काग़ज़ों में जो मुंडा गाँव विशेषरूप से विद्रोही बताकर चिह्नित कर दिये गये हैं, रोगोता उनमें अन्यतम है। इस गाँव में कम-से-कम दस बार पुलिस और मिलिटरी चक्कर लगा गयी है। उस सेंगेल-दा की अग्नि-वृष्टि के बाद धरती पीड़ा से सिकुड़कर काँप उठी थी; उसके बाद, उसी अनादि अतीत में सिंबोङा ने जंगल के आँचल से व्यथा के स्थानों को ढक दिया था। भू-स्तर के अनुयायी घने-पतले जंगल कहीं ऊँचे, कहीं नीचे थे। रोगोता गाँव के पास के जंगल में साल के पेड़ों की लकड़ी पर मचान, मचान के ऊपर घर थे। साली वहाँ रहना नहीं चाहती थी, लेकिन बीरसा ने पहले पीड़ा-भरी आवाज़ में कहा : 'भागकर ज़िन्दा रहूँगा ?' उसके बाद कहा था : 'यहीं रह। सरकार फ़िकर भी नहीं करेगी—जिन्हें पकड़ने के लिए मुंडा देश रौंद डाला है, वे यहाँ है।'

सीढ़ी चढ़कर मानी पहानी ऊपर गयी। बोली : 'डोन्का और माझिया को पकड़वा देने को कहा था, उससे यही बीस रुपये मिले हैं। साली चावल ले आयी है, उन्हें चबाकर पानी पी ले—पकाना मत, धुआँ उठेगा। सबको पता चल जायेगा।' मानी ने बीरसा को प्रणाम किया।

'खबर क्या है ?'

'बहुत खराब। देउँरा, पहान, जमींदार, बनिया—सभी मुंडा लोगों को डराते हैं; पुलिस कोड़ों से पीटती है। साहब के कोड़े में कैसी तो तेजी है ! डर के मारे सब किरस्तान बने जा रहे हैं।'

'फिर ?' साली ने पूछा।

'उससे क्या ? मुंडा यों ही किरस्तान बनते हैं, फिर मिशन छोड़ देते हैं। जब फिर उलगुलान होगा, फिर चले आयेंगे। उलगुलान होगा न, क्या कहते हो, भगवान ?'

मानी पहानी के बुढ़ापे में झुर्रियों से भरे चेहरे पर बेफ़िक्री की मुसकान देखकर बीरसा की छाती फट गयी। मुंडा देश की छाती पर सेना-पुलिस-राजा के हाथी का मदमत्त अभियान चल रहा था। होली के बाद जिस तरह मुंडा धर्म के अनुसार शिकार पर जाते थे, सरकार उसी तरह मुंडा के गाँवों और धान के खलिहानों को जलाकर होली की आग जला रही थी—बीरसा और बीरसाइतों को जंगल छानकर निकाल पकड़ने के उत्सव में दीवानी हो रही थी। केवल इस बार उत्सव का नाम था रक्तोत्सव !

मुंडा लोगों की छाती में संगीन के फल और बंदूकों की गोलियाँ खुभी थीं। जंगल में छिपाकर जिन मुंडा लोगों की समाधि हुई, किसी को पता नहीं चलेगा कि वे कभी बीरसा के उलगुलान की पुकार सुनकर लँगोटी पहने, हाथों में कुचला से बुझे तीर लिये, समुद्र-पर्यन्त धरती के मालिक की फ़ौजों के साथ लड़ने गये थे ! केवल भविष्य के मानव देख-देखकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे। काली जंगल-माँ के कलेजे में कहीं-कहीं कोई-कोई साल-पियाल-काँदू पेड़ों के सिरे मानो बहुत अधिक ऊँचे हैं। उन्हें नहीं मालूम होगा कि उलगुलान के दीवाने मुंडा के शरीरों के रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियों ने पेड़ों की धात्री धरती को पुष्ट किया है, इसीलिए ही वे इतने ऊँचे हो सके हैं !

फिर भी मानी पहानी हँस रही है, कहती है कि उलगुलान फिर होगा। तब बीरसा निश्चित रूप से भगवान, धरती का आबा है !

मानी बोली : 'साहब और पोराहाट के राजा के दस हाथी, हज़ार आदमी, सिपाही लेकर जंगल पीटते-पीटते इधर आ रहे हैं। डोन्का ने कहा है कि तुम सेंत्रा के जंगल में चले जाओ। जो भागे हुए हैं, वे भी धीरे-धीरे पहुँच जायेंगे। देखो भगवान ! सरायखेला, कराईखेला के राजा क्यों डरते हैं ? उनके देश में मुंडा हैं ? उन्होंने क्यों सरकार से हाथ मिला लिया है ?'

'सब एक-से हैं।'

मानी चली गयी। परमी पत्थर पर चावल पीसने लगी। पिसा हुआ चावल चबाकर पानी पी लेगी। आश्चर्य है; रोगोता के कनू मुंडा के मर जाने के बाद से परमी कनू के कहने से भगवान के साथ घूमती है। बीरसा की कोई बात अमान्य नहीं करती। वह बीरसा की किसी बात को नकारती नहीं। लेकिन चावल देखकर उसके मन में आया कि बीरसा की बात न मानकर भी अभी लकड़ी जलाकर भात राँधे, भात खाये! बीरसा उसे भात नहीं पकाने देता, इसलिए बीच-बीच में मन में उठता कि पकाये, भात खाये—उससे भगवान पकड़े जायें तो पकड़े जायें! रोगोता के कनू मुंडा को तो मुंडा-राज होने पर भात खाने को मिलेगा ही—यही सोचकर न उलगुलान करने गया था। परमी ने भी सोचा था कि सब मुंडा लोग मुंडा-राज में दोनों वक़्त भात खायेंगे। लेकिन इस समय वह ठंडी साँस लेकर पत्थर पर चावल पीसती रही।

परमी को देखते-देखते ठंडी साँस लेकर बीरसा खिन्न हँसी हँसकर बोला: 'बहुत लोगों की बड़ी साध लेकर आग जला दी थी सालो, लेकिन उलगुलान की रीत अलग है। तेरा बेटा, मरद, धान, घर—सब छीन लिया गया। परमी का भी सब-कुछ ले लिया।'

'दुःख कर रहे हो क्या?'

'न। तमाम लोग नहीं रहे, बाक़ी भी नहीं रहेंगे। समझता हूँ कि मैं भी इस शरीर में नहीं रहूँगा। लेकिन उलगुलान सफल न होने से उलगुलान समाप्त नहीं होगा। मेरा मरण नहीं होगा। तू यह बात सबसे कह देना, सालो।'

रात में वे रोगोता के जंगल को छोड़कर सेंत्रा के जंगल की ओर चले गये।

बाद में, बहुत बाद में बैरिस्टर जेकब ने अमूल्य बाबू से पूछा था: 'बीरसा की अन्तिम परिणति क्या होगी, क्या तुम इसकी चिन्ता में पड़ गये थे? तुमने जो सोचा था, क्या उसकी वही परिणति हुई? क्या बात है कि उसका नाम लेते ही तुम्हारा चेहरा चमक उठता है?

'पहले एक बात का जवाब दीजिये।'

'कहो।'

'क्या आप विश्वास करते हैं कि वह भगवान है ?'

'नहीं। मैं सोचता हूँ कि बीरसा दलित मुंडाओं का उपयुक्त नेता, योग्य अगुआ है।'

'मैं अब सोचता हूँ कि वह ईश्वर है।'

'किस कारण से ?'

'क्यों ? धोखाधड़ी के, उससे हुए विश्वासघात के कारण से ! आदमी जब भगवान बन जाता है, तो किसी-न-किसी प्रकार की बेईमानी उसके पराभव का कारण बन जाती है—तब वह भगवान ही हो जाता है। अन्त में विश्वासघाती लोगों ने ही उसे पकड़वाया, यही न ?'

'ऐसा कह सकते हो; ताज्जुब है !'

'क्या ?'

'जब मुंडा मर रहे थे, शोषित हो रहे थे, बेगार दे रहे थे, ग़ुलामी के पट्टों पर अँगूठे लगा रहे थे, अपने गाँव के गाँव खो रहे थे, ज़मींदार, महाजन, सरकार से, तीनों तरफ़ से मार खा रहे थे, तब किसी ने उनकी बात नहीं सोची !'

'जब वे लड़ रहे थे, उस समय भी नहीं सोचा।'

'अब बीरसा के आन्दोलन के टूट-फूट जाने के बाद मुंडा लोगों के बारे में लोगों का झुकाव बढ़ रहा है, सहानुभूति भी।'

'और कैसी असंभव बातें हुईं ! चार सौ बयासी लोग पकड़े गये। एक बरस तक गवाही और सबूत जमा करने के बहाने उन्हें जेल में रखा गया। गवाही और सबूत जमा कर मुक़दमा दाख़िल करते-करते बीरसा के अलावा चौदह आदमी जेल में, हवालाती हालत में ही, ज़ख्मों के ज़हरीले हो जाने से मर गये। मुक़दमा आख़िर में चला सिर्फ़ अस्सी लोगों के बख़िलाफ़ !'

'तब भी बहुतेरे मामलों में हलके-से अपराधों के लिए बड़ी-बड़ी सज़ाएँ हुईं। मिशनरियों की तरफ़ तीर फेंकने के लिए परान मुंडा को आजीवन कालापानी हुआ। गया की औरत, लड़के की पत्नी, आठ बरस के नाती को भी जेल हुई।'

'जो कुछ भी हुआ उस पर 'बेंगाली' अख़बार में सुरेन बैनर्जी ने, उधर 'स्टेट्समैन' अख़बार ने बड़ा शोर मचाया। जाँच कर पाया गया कि जो लोग सरकारी लापरवाही से जेल में सड़कर मर गये, उनमें से बहुत बेक़सूर बरी हो सकते थे। सुरेन बैनर्जी को जानते हो न ? उनकी तरह तो कोई परिवाद नहीं कर सकेगा। बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिल में खड़े होकर

जब एक-एक कर पूछा :

'क्या यह बात सच है कि मुंडा लोगों के ख़िलाफ़ फ़ौजदारी क़ानून की धारा 107 में जो मुक़दमा चल रहा था, वह उठा लिया गया है ?

'अगर उठा लिया गया है तो मुक़दमा उठा लेने के पहले कितने दिनों तक मुंडा, कितने महीने जेल में क़ैद रहे ?

'हवालाती हालत में कितने मुंडा मर-खप गये ?

'अख़बारों में जो कुछ छपा है, क्या वह सच है, कि बहुत-से मुंडा लोगों को फिर नये मामलों में पकड़ लिया गया है ?

'अगर पकड़ लिया गया है, तो सरकार क्या जाँच करायेगी और बतायेगी कि क्यों जेल में पाँच महीने सड़ने से पहले वही अभियोग उनके विरुद्ध नहीं दायर किये गये ?

'जिन लोगों ने उस दिन सुरेन बैनर्जी का भाषण सुना था, उन्होंने कहा : 'बाई जोव[1] ! इस बूढ़े ने तो फिर आग भड़का दी है।'

'फ़ायदा क्या हुआ ? हाँ, मुक़दमा उसके बाद ज़रूर चला। लेकिन उसके पहले फिर कई-एक हवालाती हालत में क़ैदी के रूप में ही मर गये। जनवरी में खूँटी थाने पर हमले से गिरफ़्तारियाँ शुरू हुईं। मुक़दमे का फ़ैसला जाकर हो सका दिसंबर में। जिन कमिश्नर, डी० सी०, पुलिस ने उन्हें बिना मुक़दमे के जेल में सड़ाया, इतनी अधिक ज़्यादती की, लेफ्टिनेंट-गवर्नर के आदमी बुडबर्न ख़ुद राँची आकर उनकी प्रशंसा कर गये ! गवर्नर-जनरल कर्ज़न भी कुछ न बोले।'

'सभी अंगरेज हैं न ! बीरसा ने चाईबासा स्कूल में क्या कहा था ?'

'वह तो मेरे सामने ही कहा था। कहा था : 'पता है, पता है। साहब-साहब सब एक ही टोपी के हैं,' बस ! इस तरह उसे डाँट दिया।'

'मैं क़ानून की राह पर ही लड़ा, लेकिन मुंडाओं के मुक़दमे के दिनों और बाद में अंगरेज़ी न्याय का जो रूप सामने आया, ऐसा कभी नहीं सोचा था। कहने में भी अच्छा नहीं लगता !'

'आप भी तो अंगरेज़ हैं !'

'अंगरेज लोग मुझे पसन्द नहीं करते।'

'मुंडा लोगों की सा—री कोशिशें बेकार हुईं !'

'नहीं, अमूल्य बाबू।'

जेकब ने स्नेह के साथ अमूल्य बाबू के हाथों पर हाथ रखा। बोले : 'ऐसा

---

1. हे परमात्मा।

कभी मत सोचना। मैं सरदार-आन्दोलन के वक़्त से मुंडा लोगों की ओर से लड़ रहा हूँ। मैं क्या कोई मुक़दमा जीत सका ? नहीं, नहीं जीता। फ़िर भी समझ लो—सारे युद्ध, सारे आन्दोलन कब व्यर्थ हुए या कब सार्थक हुए—यहाँ गणित का कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता है !'

'पता है कि आप कहेंगे कि व्यर्थ होकर भी यह आन्दोलन व्यर्थ नहीं हुआ। लेकिन मुझे बहुत ही विश्वास था अंगरेज़ों के न्याय पर। मैंने जब देखा कि कुछ भी नहीं हो रहा है—कमिश्नर, डी० सी०, एस० पी० सब मज़ा ले रहे हैं, जब देखा कि मुंडा लोगों को कुछ भी पता नहीं है कि उन्हें क़ैद क्यों किया गया है, किस अभियोग में, तो बड़ी कोशिशों के बाद 'बेंगाली' के एक रिपोर्टर को लाया। उसी ने लिखा : मुंडा लोगों के हाथों में हथकड़ी, पैरों और कमर में ज़ंजीरें हैं। इतना बोझ खींच-खींचकर वे जेल से मैजिस्ट्रेट के दफ़्तर आने-जाने की तकलीफ़ से ही थक कर मुँह के बल गिर पड़ते हैं ! और अभी वे विचाराधीन हैं ! मुक़दमा तैयार नहीं है, इसलिए उन्हें महीनों पर महीने इसी तरह जाना पड़ता है !'

'पता है।'

'जब उसने लिखा तो सभी ने धिक्कारा। लेकिन ज़ंजीरें तो नहीं खुलीं। बीरसा भी तो...बीरसा को भी तो...।'

'जिन लोगों ने पकड़वाया उनके प्रति ऐसे निर्मम मत बनना। मुंडा के निकट पाँच सौ रुपये बहुत होते हैं। सोचकर देखो, सैकड़ों मुंडा क़ैद की दीवारों से बन्द रहने पर भी बीरसा को पकड़वाने नहीं गये। उसे पकड़वा कर वे बच जाते !'

'लेकिन शशिभूषण राय और छः मुंडाओं ने बीरसा को पकड़वा दिया, अपने भगवान को ! क्योंकि पाँच सौ रुपये बहुत होते हैं। पकडवा दिया परमी ने, क्योंकि भात पाने-खाने का-सा लालच और कोई नहीं होता !'

बीरसा दो दिन, दो रात—पैदल चला था। सेंत्रा के जंगल में आश्रय लेने के बाद साली और परमी को सोने को कहकर बीरसा जागता बैठा रहा। इस समय उसके हाथों में दो तलवारें थीं। पता नहीं कि समय आने पर वह एक भी चला पायेगा या नहीं। शरीर शिथिल होकर नींद आ रही थी—बस, नींद ही आ रही थी।

साली ने कहा : 'भगवान, नींद नहीं आयी ?'

'तू जाग रही है ?'

'नींद नहीं आती।'

'जागती रह, बिहाने सोना।'

'परमी सो रही है।'

'सोने दे।'

बीरसा ने और कुछ नहीं कहा, वह जंगल की आवाजें सुन रहा था। पत्तों के मर्मर में, हवा के रुदन में, बाघ के जल्दी-जल्दी चलने-फिरने में जंगल उससे बातें कर रहा था। कह रहा था : वह सब जानता है, सब समझता है। वह जानता है कि बीरसा ने सारे मुंडा लोगों को उसकी गोद में लौटा देना चाहा था। वह समझता है, कि बीरसा वैसा कर नहीं सका।

करमी की समझ से, अबोध मुंडा माँओं की स्वीकृति से जंगल-माँ गुनगुना कर बीरसा को सान्त्वना दे रही थी। 'बाप! तुमने जो चाहा था, तुम्हें तो पता नहीं था कि सब-कुछ तुम्हारे हाथों में नहीं है। मैं, यह बन-भूमि क्या अब मेरी है? तुम्हारे पुरखों ने जब इस अछूते जंगल का पेट काटकर इसे आबाद किया था, उस समय मैं अपना था। उसके बाद, मुंडा लोगों के हाथों से दिकू लोगों के हाथों, दिकू लोगों से हाथों में सरकार के हाथों इसे खरीदा-बेचा, बेचा-ख़रीदा जाते-जाते मैं, तुम्हारी आदि-माँ, अशुद्ध, अपवित्र हो गयी, बीरसा। तुम्हारा कोई दोष नहीं है, बाप!'

आदि-माँ का कंठस्वर बीरसा के अन्तर में फुहार की तरह पड़ता था। उसी को सुनते-सुनते भोर हो गया। बीरसा की आँखें लाल हो रही थीं। वह बोला : 'साली, तू सो। मैं भी सोता हूँ रे। मुझे कालघूम[1] आ रही है, नींद के विष से शरीर गिरा जा रहा है। परमी, तू जाग रही है। आग मत जलाना, रे।'

लेकिन परमी ने आग जलायी। हवा में धुआँ उठा था। परमी भात राँध रही थी। भात की गन्ध को सूँघ रही थी।

वे लोग धुआँ देखते ही बढ़ आये थे। पाँच सौ रुपये बहुत रुपये होते हैं! देखा कि बीरसा शीर्ण, क्लान्त सो रहा है। दूर जमीन पर साली सो रही है। उन्होंने बीरसा को धर दबोचा। पाँच सौ रुपये! साली पकड़-धकड़ की आवाज़ से, परमी के करुण, भयार्त चीत्कार से जग गयी थी। वह पहले ही चीख़ उठी, क्योंकि उसने शशिभूषण राय और तमरिया माझी को कुछ और लोगों के साथ देखा। शशिभूषण और माझी ने इस सुअवसर पर बीरसा के सिवा और मुंडाओं को पकड़वा कर दोनों हाथ रुपये पीटे थे;

1. चिरनिद्रा, मृत्यु।

दो सौ पच्चानवे और रुपये पाये थे। उनके, बीरसा के दाम पाँच सौ थे। साली चीख़ उठी—बिजली छू जाने-सा बीरसा हथियार तलाश कर रहा था, उठने की कोशिश कर रहा था, लेकिन बीरसा ने उससे भागने को कहा : 'मेरा हुकुम है!' साली भागी, क्योंकि बीरसा उसकी आँखों में आँखें डालकर हँस रहा था। चिल्लाकर कहा : 'तू बड़ा आदमी हो गया है माझी, पाँच सौ रुपया, जमीन का पट्टा। कहाँ ले जायेगा?'

'बनगाँव।'

साली इतना ही सुन पायी। तभी बीरसा ने ताका। उसके बाद साली इतने दिनों की सावधानी भूलकर सेंत्रा गाँव की राह पकड़कर चीख़ती-चिल्लाती चली गयी। 'भगवान को शशिभूषण राय ने पकड़ लिया, माझी-तमरिया ने। बनगाँव लिये जा रहे हैं। मुंडा लोग, मर गये हो, ज़िन्दा नहीं हो? देखो, पाँच सौ रुपयों के लिए वे भगवान को पकड़कर ले गये।' आर्त चीत्कार के साथ छाती पीटते-पीटते साली गाँव की राह पकड़कर चली गयी। जितने मुंडा बचे थे, निकल आये। सेंत्रा से बनगाँव के रास्ते गाँव-पर-गाँव—हेसादी, कारिका, सोत्रा, जलमाई में ख़बर फैल गयी।

बनगाँव से खूँटी, खूँटी से राँची की राह के दोनों ओर आदमी-ही-आदमी थे। पुलिस को नहीं मालूम था कि इतने अत्याचारों के बाद भी इतने मुंडा गाँव-गाँव में बाक़ी बचे थे। राइफ़ल-धारी पुलिस और मिलिटरी बीरसा के आगे-पीछे पहरा देती जैसे राजसम्मान से लिये जा रही थी! बीरसा के सिर पर पगड़ी, बदन पर चादर, हाथों में ज़ंजीर, माथा ऊँचा, चेहरे पर मुसकराहट, दृष्टि भविष्य की ओर थी। उस अकेले को पता था कि राँची से खूँटी, खूँटी से बनगाँव होते चालकाड़ को जाने वाली राह से अब वह किसी दिन घर नहीं लौटेगा!

वह चालकाड़ कभी न लौटेगा, माँ के पास जाकर कभी खड़ा न होगा। और न खड़ा होगा बीरसाइतों के सामने। काले जंगल, लाल मिट्टी, पर्वत-श्रेणियाँ—जो बहुत ऊँची न थीं—सब दिखाकर न कह सकेगा : 'इन सबको हम लौटा लेंगे।' और जंगलों में से होकर रात के अँधेरे में एक गाँव से दूसरे गाँव को भी कभी नहीं जायेगा।

बीरसा को लाया जा रहा है। एक कोठरी अलग से उसके लिए ख़ाली हो, इस हुक्म पर पहले तो अमूल्य बाबू ने विश्वास नहीं किया। उसके बाद मागूराम वार्डर उनसे चुपचाप कह गया कि भरमी और धानी ने उससे मिलने को कहा है। धानी की आँखों से आँसू बह रहे थे। धानी बोला :

एक दिन उसे मेरे साथ रखो।' अमूल्य बाबू बोले : 'नहलाने के लिए उसे बाहर लायेंगे, तभी बातें कर लेना।' उदास-सी हँसी हँसकर धानी बोला : 'मुझसे तो वह बात करेगा नहीं, नहीं तो मैं ही बोल लेता।'

कोठरी तैयार करने में अमूल्य बाबू को बीस मिनट लगे। बीस मिनट तक बीरसा भरमी आदि की कोठरी में रहा। बीरसा नीची आवाज़ में बोला : 'रोना बाद में, बात बाद में करना, अभी वक़्त नहीं है। जो कहता हूँ, सुनो। मैजिस्ट्रेट के सामने जाकर जब जिरह होगी, तुम चार सौ मुंडा यही कहना कि तुम मुझे नहीं पहचानते। मैंने क्या कहा था तुम नहीं समझते थे। कुछ भी समझे बिना यह उलगुलान किया था।'

'भगवान...!'

'मुझे ठग कहो, धोखेबाज़—सब लोग गाली दो तो नुक़सान नहीं है। लेकिन तुम सब बच जाओ। मुझे इसी से शान्ति मिलेगी।'

'और तुम ?'

'मुझे ये लोग जेल से ज़िन्दा नहीं निकलने देंगे।'

'अकेली कोठरी में रखेंगे, भगवान ?'

'रखें ! मैं भगवान हूँ इसी से तुम्हारा साथी बना, यहाँ आया, भरमी। तुम्हें छोड़ा नहीं। कितने लोग मर गये ?'

'करा का दूना मुंडा, लोहाजिमी का सुखराम।'

'कोई दवा दी थी ?'

'जो दी वह उसी बंगाली बाबू ने।'

बीरसा थोड़ा-सा मुसकराया।

बाद में तनहाई कोठरी में लोहार ने आकर बीरसा की कमर और पैरों में ज़ंजीरें डाल दीं; धीमी आवाज़ में बोला : 'मुझे शाप न देना।' बीरसा समझ गया, अब वह ज़िन्दा जेल से नहीं निकलेगा। हाथों में हथकड़ी, कमर और पाँवों में ज़ंजीरें—छोटी-सी कोठरी की दीवारें भी पत्थर की थीं। सामने गारद का दरवाज़ा था। दरवाज़े के सामने चौबीस घंटे हथियारबन्द पहरेदार रहते थे। दरवाज़े के सामने छता हुआ बरामदा; बाहरी रोशनी और हवा की राह बन्द थी। दीवार में ऊँचे पर एक ही छेद था। सरकारी निर्णय था कि मामूली फ़ौजदारी आसामी की तरह उस पर मुक़दमा चलाया जायेगा। अपराध था—बहुत दिनों से आदमियों की हत्या और आगज़नी में सहायता करना। सरकारी निर्णय था—उसे मुंडा लोगों के आगे एक सामान्य फ़ौजदारी अभियुक्त सिद्ध करना, लेकिन सावधानी और सतर्कता ली जा रही थी एक महत्वपूर्ण राजनैतिक अभियोगी की तरह। बीरसा समझ गया कि अंगरेज़ सरकार उसे माफ़ नहीं करेगी !

डी०सी० खुद उससे कह गये थे कि वह पुलिस-अफ़सरों की मदद से मौक़े की जाँच करके सबूत और गवाह इकट्ठा करेंगे—इसलिए उपद्रवग्रस्त इलाक़े में जा रहे हैं। बीरसा समझ गया कि अब डी०सी० वक़्त लगायेंगे। बीरसा ने सुना कि जेकब आये हैं। उसके बाद, जिस दिन उसे मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया, उस दिन जेकब उसे केवल देख सके। उसे जेकब से कोई बात नहीं करने दी गयी। जेकब ने बार-बार कहा : 'क़ैदी को बिना मुक़दमे के जनवरी से अप्रैल तक क़ैद कर रखा गया है, और आज तक भी मुक़दमा तैयार नहीं हुआ है। अंगरेज़ी न्याय के नाम पर मुंडा लोगों पर यह हद दर्जे का अत्याचार हो रहा है। उनकी पैरवी के लिए सरकार ने कोई इंतज़ाम नहीं किया है। मैं स्वयं अपनी ओर से आया हूँ। जो अपराध मुंडा लोगों ने नहीं किये, उन दोषों के लिए उन्हें अपराधी बनाया जा सके, इसलिए चार महीनों से महज़ सबूत ही जमा किये जा रहे हैं! असल में एक कांस्टेबल की हत्या होने से पुलिस विक्षुब्ध हो उठी है। बिना मुक़दमे के क़ैद रखना मुंडा लोगों को केवल परेशान करना ही है। बिना मुक़दमे के क़ैद रखने से एक-एक कर आठ आदमी मर भी चुके हैं। अब हर हालत में मुक़दमा शुरू होना चाहिए।'

बीरसा ने सुना कि मैजिस्ट्रेट कह रहे हैं : पुलिस द्वारा इस्तगासा फ़ाइल हुए बिना वह कुछ नहीं कर सकते।

इसी तरह महीनों पर महीने बीतते गये। मानो यह भी कोई-कोई तमाशा हो! 'बेंगाली' और 'स्टेट्समैन' अख़बार मुंडाओं के मुक़दमे को लेकर लगातार लिखकर सरकार का विवेक जगाने का प्रयत्न करते रहे; मुंडा लोग हाथों-पैरों और कमर में बँधी ज़ंजीरें घसीटकर मई महीने की भीषण गरमी में भी कचहरी में हाज़िरी देते रहे। फिर, उनमें से एक-न-एक बीच-बीच में मरता भी रहा।

बीरसा पैरों और कमर की ज़ंजीरें घसीटते-घसीटते कोठरी में ही घूमता रहा! पडोस की कोठरियों में ज़ंजीर में बँधे हुए, अँधेरे में चुप बैठे धानी और भरमी, गया और सोना, डोन्का और माझिया—मुंडा लोग सुनते रहे; झन्-झन्-झन्—लोहे और पत्थर में परस्पर लगातार घिसटने की आवाज़! पत्थर पर ज़ंजीर खींचकर चलने की आवाज़! बीरसा जानता था कि उसके पाँवों में इतनी ताक़त नहीं थी कि वह बराबर इसी तरह खींचकर चलता रहेगा। ज़ंजीरें भारी थीं। लेकिन बीरसा को यह भी मालूम था कि डरे हुए, घबराये हुए बन्दी मुंडा पास की कोठरियों से इन्हीं

जंजीरों की आवाज़ को सुनने के लिए कान लगाये रहते हैं। उसने जिन्हें विस्तृत बन-शृंखला और असीम पर्वत-भूमि देना चाही थी, उन्हें दे सका केवल जेल की कोठरियाँ! अब उसे देने को कुछ नहीं है—बस, जंजीरों की यही आवाज़—वह भी यह बताने के लिए कि वह मरा नहीं है।

यह अकेली निस्संग कोठरी—नितान्त सूनी, निःशब्द, निर्वाक् थी। सवेरे दरवाज़ा खुल जाता। बाहर निकलकर, आकाश के नीचे जंजीर घसीटते-घसीटते, बीरसा कचहरी जाता। बैसाख-जेठ की भयंकर गरमी में ज़ंजीरें खींचते हुए बारह बजे के वक़्त जब वह लौटता तो गरमी से बेहोश-सा हो जाता; उसका चेहरा लटक जाता!

जाते समय किसी से बात न हो पाती, आने के वक़्त भी नहीं। बीरसा समझता था कि मुंडा लोगों को अँधेरी कोठरियों में क़ैद कर रखना प्राणदंड के समान ही निष्करुण सज़ा थी। उसे लगने लगा—सिर्फ़ मन में ही आने लगा—अब वह जंजीरें खोलकर कभी बाहर न जा सकेगा; अब यहीं अन्त होगा। इसीलिए, गोली का घाव सड़ जाने पर जिस दिन डेमखानेल का मनदेउ मुंडा मर गया, मरने के पहले रोकर चीख उठा : 'गोली के घाव से नहीं मरा, शशी दारोगा ने कोड़े मार-मारकर मुझे भगवान के नाम पर हाकिम के सामने झूठ कहलवाया, उसी पाप से मर रहा हूँ!'

उस दिन गारद के शरीर पर हथकड़ी ठोंककर बीरसा ने चिल्लाकर कहा था : 'सुनो ए मुंडा लोगो। मैं धरती का आबा हूँ, मिट्टी की रची यह देह छोड़े बिना तुम्हारा उद्धार नहीं है। हिम्मत मत छोड़ो; यह मत कहना कि भगवान हमें जेहल में ठूँसकर चले गये। सारे हथियार तुम्हें दिये थे, कलेजे में साहस दिया था, पहचनवा दिया था कि कौन तुम्हारे दुश्मन हैं। हथियार मत छोड़ देना; एक दिन तुम ही जीतोगे।'

मागूराम वार्डर भागा-भागा आया, बोला : 'चुप रहो, बीरसा।'

'मुझे क्या दिया है—मेरा कंठ जल रहा है, गला सूखा जा रहा है, नसों से खून उतरा जा रहा है?'

'चुप रहो।'

'मैं चुप नहीं रहूँगा। एक दिन लौटकर आऊँगा। थाने-थाने में होली की आग जला दूँगा—सोमपुर में आँधी उठा दूँगा!'

जेलखाने में घंटा बजना शुरू हुआ; संतरी भागे-भागे आये; दरवाज़ा खोलकर घुसे। बीरसा पीड़ा से तड़प रहा था, उसने संदिग्ध आँखों से

उनकी ओर ताका। बोला: 'मुझ पर पहरा दे रहे हो? किसी दिन तुम भी देखना, इस मुंडा देश के लिए, देश की धरती के लिए मैं सब तहस-नहस कर दूँगा। दुश्मनों को मैं छोटा नागपुर के बावनों परगनों से खदेड़ दूँगा। मुझे क्या दिया है? मेरा कंठ जला जा रहा है? क्या दिया है?'

'साहब को बुलाऊँ?'

'साहब के दवाई देने से मैं खाऊँगा? मेरा गला क्यों सूखा जा रहा है?' फिर बोला:

'जा रहा हूँ, अभी जा रहा हूँ। माघ मास की दस तारीख़ से आज तक! ज्येष्ठ मास ख़तम हो रहा है। कचहरी जाता हूँ, जाऊँगा। लेकिन साहब ने जो सोचा है, वह नहीं होगा। मेरा मरण नहीं होगा।'

अमूल्य बाबू बोले: 'उसे कोई ले जाये बिना काम नहीं चलता?'

सुपरिंटेंडेंट बोले: 'क्यों?'

'वह बीमार है।'

'मुझे लगता है कि वह बिलकुल स्वस्थ है।'

जून महीने की गरमी। जंजीरों की गरमी और उनका बोझ! निर्मम सूर्य की तपन! बादल-वर्षा का नाम नहीं। सुनने में आया कि बीरसा को कचहरी में मूर्छा आ गयी थी।

सवेरे सुपरिंटेंडेंट ने सोचा था कि वह बिलकुल स्वस्थ है। तीसरे पहर जेकब ने बहुत शोर मचाया। डी० सी० भागे हुए आये। तब सुपरिंटेंडेंट को अमूल्य बाबू ने बुलाया। अमूल्य बाबू बोले: 'उसकी नाड़ी धीमी है; आँखें गड्ढों में धँस गयी हैं; उसे भयंकर प्यास सताती रहती है।'

सुपरिंटेंडेंट ने डी० सी० को अब कहा: 'उसे हैज़ा हो गया है; उसके बचने की आशा कम है।'

अमूल्य बाबू ने यह बात सुनी। सुनकर उनके अंदर डर से कँपकँपी उठ खड़ी हुई। उलटी नहीं, दस्त नहीं, हैज़े का कोई लक्षण नहीं! हैज़ा होने का कोई कारण नहीं। सुपरिंटेंडेंट के निर्देश के बिना बीरसा को एक दाना भात, एक गिलास पानी तक नहीं मिलता था। डॉक्टर होकर भी सुपरिंटेंडेंट क्यों कह रहे हैं कि उसे हैज़ा हुआ है? क्यों कह रहे हैं कि उसके बचने की आशा कम है?

प्रशासन की नाराज़गी की उपेक्षा कर अमूल्य बाबू डी०सी० से बोले: 'मैं उसे देख सकता हूँ?'

'येस डू।'[1]

अमूल्य बाबू दरवाज़ा खोलकर घुसे। बीरसा के मुँह के पास तक झुक कर कहा : 'तू मुझसे बात नहीं करेगा; मुझे कुछ बतायेगा नहीं। लेकिन मागूराम वार्डर जो दे उसे छोड़कर कोई दवा, कोई खाना मत लेना। बीरसा, पानी भी मत पीना। आज पहली जून है। तेरे मुक़दमे के लिए बहुत शोर मचा हुआ है। अब लगता है कि फ़ैसला हो जायेगा।'

बीरसा क्षीण हँसी हँसा। धीमे-धीमे बोला : 'बात नहीं करता हूँ, वह गुस्से से नहीं। मुझसे बात करने से तुम मुसीबत में पड़ जाओगे, इससे। मैं जानता हूँ कि तुम मुंडा लोगों के दुश्मन नहीं हो। लेकिन सब चेष्टा विरथा है।'

'क्यों ?'

'मुझे हैज़ा नहीं हुआ। वह बात सुपर साहब से ज़्यादा किसी को नहीं मालूम। समझते नहीं, वह मुझे यहाँ से ज़िंदा निकलने देना नहीं चाहते !'

'मैं जा रहा हूँ।'

'जाओ। चेष्टा विरथा है। मेरी बात सच होती है या नहीं, देख लेना।'

'मुंडा बहुत टूट गये हैं !'

'उनका क्या क़सूर ? साहब कैसे और क्या हैं, उन्हें क्या पता था ?'

छः दिनों में ही बीरसा के स्वास्थ्य में सुधार हुआ। मुंडा लोग समझे कि अब उनके भगवान बच गये।

लेकिन आठ जून को डी०सी० फिर आये। सुपरिंटेंडेंट और डी०सी० के बीच छिपकर बातें हुईं। सुपरिंटेंडेंट बोले : 'अब से बीरसा की कोठरी में मेरे सिवा और कोई नहीं जायेगा।'

अमूल्य बाबू ने देखा, बीरसा की कोठरी के सींखचों पर काले कम्बल का पर्दा खिंचा है। वह सिर हिला कर चले गये।

नवीं जून को सवेरे सुना गया कि पिछली रात बीरसा को तीन बार दस्त हुए थे।

सवेरे आठ के वक़्त बीरसा ने ख़ून की क़ै की, बेहोश हो गया। सुपरिंटेंडेंट ने उसकी नब्ज़ देखी; हाथ में घड़ी लेकर खड़े हो गये। अब राँची जेल की हर कोठरी से रोना सुनायी पड़ने लगा, लेकिन सुपरिंटेंडेंट ने उस

---

1. ज़रूर, ज़रूर।

पर ध्यान न दिया। अब निश्चित जान पड़ा कि बीरसा मर गया।

सुपरिंटेंडेंट ने मन-ही-मन सारा तमाशा दुहरा लिया। मृत्यु का कारण बताना होगा—हैज़ा। शाम को पोस्टमार्टम करना होगा। शाम के बाद लाश जला देनी होगी। पोस्टमार्टम में लिखना होगा : बीरसा की छाती को इस तरह ऊँचा-नीचा होते देखते ही सुपरिंटेंडेंट ने सोच लिया...कि लिखना होगा : 'पाकस्थली जगह-जगह पर सिकुड़कर जमा हो गयी थी; क्षय होते-होते छोटी आँत पतली हो गयी थी! बहुत परीक्षा के बाद भी पाकस्थली में ज़हर नहीं मिला। मृत्यु का कारण हैज़ा ही है।'

उसके बाद लाश जलानी होगी। मुंडा लोग क़ब्र बनाते हैं, लाश को जलाते नहीं। जलाने से समझने लगेंगे कि बीरसा भगवान नहीं, मामूली आदमी था—नश्वर मानुस! किसी भी मनुष्य की तरह उसकी देह भी एक दिन प्राणहीन होनी थी।

लाश जलाने से जेकब और शोर मचाने वाले दूसरे लोग देह की चीर-फाड़ कराने की फिर माँग भी न कर सकेंगे।

सवेरे के नौ बजे। सुपरिंटेंडेंट झुके। बीरसा की नब्ज़, छाती, आँखों की पुतलियाँ देखीं। उठ खड़े हुए।

जेलर से बोले : 'अभी लिखो, बीरसा मुंडा, सुगाना मुंडा का बेटा, जन्म 1875। उम्र पच्चीस बरस। डाईड ऑफ़ एशियाटिक कॉलरा।[1] तारीख—9 जून 1900।'

वार्डर से कहा : 'मेहतर को बुलाओ। लाश ढक दो।'

9वीं जून, 1900 ई०। राँची जेल : सवेरे नौ बजकर दस मिनट!

---

1. एशिया में होनेवाले हैज़े से मरा है।

उपसंहार

अमूल्य की नोटबुक से : 'आज 1901 का वर्ष समाप्त हुआ। मुझे नोटबुक में लिखना भी बन्द करना पड़ेगा। मेरे जीवनकाल में बीरसा, अगर कोई तुम्हारी आश्चर्यजनक, अद्‌भुत गाथा जानना चाहे तो उसे यह नोटबुक दे दूँगा। अगर नहीं चाहेगा, तो ऐसी व्यवस्था कर जाऊँगा कि जिससे भविष्य में अगर कोई तुम्हारे बारे में जानना चाहे तो वह इसकी मदद से पूरी कहानी जान सके।

'बैरिस्टर जेकब को धन्यवाद। उनकी सहायता से मुझे बहुत-से काग़ज़ मिल गये।

'मेरे सामने हैं—'प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द होम डिपार्टमेंट—अगस्त 1900, प्रोगेस नं० 330, राँची ज़िले में मुंडाओं का विद्रोह।' उसमें पढ़ने को मिल रहा है कि राँची में 1899 ई० की 24वीं दिसंबर, रात 9 से 10 के बीच राँची थाने के इक्कीस गाँवों में, बसिया थाने के चार गाँवों में, खूँटी थाने के दो गाँवों में, तामार थाने के दो गाँवों में, तुरपा, बुंडू और राँची के एक-एक गाँव में बीरसाइतों ने क्रिस्तानों पर तीर चलाये, आग लगायी, दो आदमियों की हत्या की, पंद्रह लोगों को बुरी तरह घायल किया।

'सिंहभूम ज़िले में 24 से 28वीं दिसंबर के बीच आठ थानों के 34 गाँवों में आग लगी, 36 लोग घायल हुए, दो मरे—घायलों में एक पुलिस कांस्टेबल भी था। सिंहभूम ज़िले में सब-कुछ चक्रधरपुर थाने में ही हुआ।

'पढ़ते-पढ़ते सोचता हूँ बीरसा, कि तुम्हारी संतानों ने अगर तीर ही छोड़े थे, तो ऐसे तीर क्यों नहीं छोड़े जिससे कि हर बार शिकार मरता?

'मैं जानता हूँ, तुम क्या कहोगे। कहोगे—साले अमूल्य बाबू, तुम दिकू

हो, तुम्हारे हाथों ने कलम ही पकड़ी है, कभी धनुक नहीं लिया। कहोगे कि 24 दिसंबर के विद्रोह का असली उद्देश्य ही था भय पैदा करना। सो हम लोगों ने कर दिखाया। ब्लडी सैंलराकार—याद नहीं ?

'याद है, खूब याद है। उसी तरह, जिस तरह याद हैं तुम्हारी आश्चर्य-जनक आँखें, आश्चर्यजनक मुसकराहट ! आँखें इस तरह मुसकराती थीं कि तुम उस तरह बात भी नहीं कर सकते थे !

'और याद है जेल में तुम्हारी शक्ल।

'जानते हो कि लगता है—तुम्हारी मृत्यु अभी भी रहस्यपूर्ण लगती है ! मैं तो जानता हूँ, क्या हुआ था। विचाराधीन अवस्था में ही तुम्हारी मृत्यु सरकार को अभीष्ट थी। जीवन-भर जेल की सज़ा भी तुम्हें जिलाये रखती। तुम्हारे जीवित रहने से मुंडा लोगों बल मिलता रहता। तुम्हारी मृत्यु ही अभीप्सित थी—वह भी विचाराधीन अवस्था में !

'तुम्हारी सन्तानों के मुक़दमे का हाल लिख रहा हूँ।

'सैंलराकार में जो गोली चली थी, उससे ही अन्त का संकेत मिलता है। सैंलराकार में गोली चलाने के बाद 10वीं जनवरी को कमिश्नर ख़ुद ही गाँव-गाँव में घूमे, और विद्रोही मुंडाओं को पकड़वाने को कहा।

'उसके बाद जो कुछ हुआ, वह तुम्हें मालूम है।

'जो नहीं जानते वह था—घायल क़ैदियों को पैदल लाने से, उनमें से कोई-कोई राह में ही मर गया।

'गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया के सेक्रेटरी ने कहा : राँची के डी०सी० और भी गवाही-सबूत जमा करने के लिए विद्रोही इलाक़ों को लौट जायें।

'गवर्नमेंट ने कह दिया कि वह ख़ुद मामले का फ़ैसला न करें। वैसा करने से अपील की कचहरी कह सकती कि डी० सी० की कोई व्यक्तिगत दिलचस्पी हो सकती है। डी०सी० द्वारा फ़ैसला करने से उक्त कोर्ट आसामियों के प्रति उसे पूर्वाग्रही समझ सकती है।

'बीरसा, इनके शासन की नींव ऐसी सख्त, कड़ी, जटिल है—कि मुंडा लोगों के भगवान ! क्या तुम्हारे लिए यह साध्य है कि अपने लोगों के भाग्य की बाज़ी लगाकर योद्धा भगवान बन तुम इस नींव को हिला डालो ? तुम पच्चीस बरस-भर के एक ही तो मुंडा युवक हो ! तुम्हारे विरुद्ध उस दिन बड़े लाट की दफ़्तर-मशीन ने पूरी ताक़त जुटा दी थी।

'ठीक तरह से विचार हो, झटपट फ़ैसला हो—ऐसा यह सरकार नहीं चाहती थी। सरकार ने गवाही-सबूत इकट्ठा करने के नाम पर अनन्त काल विचाराधीन हालत में तुम्हें रखकर तुम लोगों की रीढ़ तोड़ देना चाहा था। विद्रोहियों को विचाराधीन अवस्था में रख कर, तरुण और किशोरों

को चहारदीवारी में बंदी बनाकर रखना सरकार के बड़े काम आया। आसमान न देखने देने से, रहने के लिए अंधकार में निर्वासित अवस्था में रहने पर बाध्य करने से मुंडा लोगों के मन के भीतर अंधकार उतर आयेगा, सरकार को यही आशा थी।

'सबसे अधिक जो सोचा था, वही हुआ—मुंडा लोगों को पता भी नहीं लगा पाया कि उन्होंने अपराध क्या किया था!

'जिरह में उन्होंने कहा : भगवान ने पुकारा था, हम शामिल हो गये। अपने आदि-अधिकार चाहते थे हम। हम किसी दुःख से दुःखी नहीं। तुम क्या कह रहे हो, इतना क्या लिख रहे हो? हम कुछ नहीं समझते।

'सरकार ने समझा था कि मुंडाओं की ज़िन्दगी में यह भी नहीं समझाया जा सकेगा कि अपनी जमीन पर फिर से अपना अधिकार पा लेने की इच्छा एक भयानक, अमोघ, दंडनीय अपराध है?

'इसीलिए, वे लोग जो न्याय-व्यवस्था के बारे में कुछ भी नहीं समझते, उसके फंदे और जाल में, उनके हाथ और पाँव जकड़कर, उनका मनोबल ही तोड़ देना सबसे अच्छा माना गया।

'इसीलिए गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया के सेक्रेटरी के यहाँ से जो निर्देश आया, वही बहाल रहा।'

वर्ष 1900 के फ़रवरी और मार्च में पुलिस के दो स्पेशल एस० आई०[1] गवाही और सबूत जमा कर, झटपट मुक़दमा समाप्त करने के उद्देश्य से डी० सी० की सहायता करने के काम के लिए भेजे गये।

जिनकी सहायता करने गये थे, उन्होंने कैम्प डाला 9वीं अप्रैल को। 14वीं मई तक उन्होंने दौरा किया। तब हम लोगों ने सुना, जितने मुंडा जेल में हैं, उनके विरुद्ध कुल गवाही-सबूत जमा करने का काम समाप्त हो गया है।

बड़े लाट के आदेश से लीगल रिमेंबरेंसर ने 22वीं मई को राँची आकर जो बीरसाइतों के विरुद्ध साक्ष्य-प्रमाण इकट्ठा हुआ था, उसे जाँच-पढ़कर तरतीब से लगा डाला। बीरसाइतों का मुक़दमा किस तरह पेश करें, लड़ें—वह भी बता गये। उन्होंने कहा : (1) जाँच पूरी करनी होगी, (2) किसी को बेकार के लिए सज़ा देने से काम नहीं चलेगा, लेकिन (3) सरकार की असावधानी से कोई दोषी छूट भी न जायें।

'समझ रहे हो न, बीरसा? पकड़े गये फ़रवरी में। लीगल रिमेंबरेंसर

1. सब-इंस्पेक्टर।

बड़े लाट के हुक्म से चले आये। मई महीने में उन्हें मालूम हो गया कि गवाही-सबूत को इकट्ठा करने का काम ख़त्म हो गया है। तुम्हें क्या पता था कि तुम कितने महत्वपूर्ण आदमी हो ? शिमला में बड़े लाट के दफ़्तर को तुमने हिला दिया ! उस समय तुम तनहाई कोठरी में बन्द थे। ज़ंजीरें घसीटकर तुम चला करते थे, मैं सुनता था।

'ज़ंजीरें घसीटकर तुम चला करते थे। एक दिन—9वीं जून को—तुम मर गये !'

जून गया, जुलाई गयी, अगस्त बीतते-बीतते, 22 अगस्त को लीगल रिमेंबरेंसर साहब फिर राँची आये ! फिर देखकर वे ख़ुश हुए कि गवाही-सबूत इकट्ठा करने का काम ख़त्म हो गया था ! फ़ाइलों का ढेर अब पहाड़-सा बन गया था।

लेकिन गवाही और सबूत इकट्ठा किस तरह हुए थे ? स्ट्रटफ़ील्ड क्या जानते नहीं थे कि पुलिस के अत्याचार के डर से कम-से-कम एक सौ आदमी, जो कुछ भी कहलवाना ज़रूरी था, वही कह जायेंगे ?

उन्हें अदालत में खड़ा करने पर क्या असली बात सामने आ सकती ? उसी डर से क्या उन्होंने मई-जून महीनों में कुछ क़ैदियों को बिना शर्त छोड़ नहीं दिया था ?

वह डी० सी० हैं। लेकिन जो केस बड़े लाट के निर्देश से चल रहा है, उस केस के आसामी को छोड़ने के वक़्त उन्होंने अपने तत्काल ऊपर वाले कमिश्नर को भी कुछ नहीं बतलाया। कारण बताया था : 'इन्हें बहुत हड़-बड़ी में पकड़ा गया था, इसीलिए रिहा कर दिया।'

कमिश्नर बिगड़ गये। उन्होंने छोटे लाट को सूचित किया। छोटे लाट बोले : 'हड़बड़ी में पकड़े नहीं गये थे, हड़बड़ी में रिहा किये गये !' गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया भी ख़फ़ा हो गयी। सूचित किया : 'उन पर मुक़दमा चलेगा या नहीं—यह छोड़ देने के पहले सोच-विचार लेना ठीक था।'

'बीरसा, बीरसा, तुम्हें और तुम्हारी सन्तानों को लेकर सरकारी हलक़ों में ऐसी रोमांचक-सी औपन्यासिक घटना घटी !

'कलकत्ता के अख़बारों में अवश्य शोरगुल मचा। अन्त में बात कहाँ जाकर रुकी ? चार सौ बयासी लोगों में से सिर्फ़ अट्ठानवे लोगों के ख़िलाफ़ मुक़दमा चला।'

उस समय बड़े लाट के दफ़्तर ने ही राँची की सरकार पर दोष थोप दिया। कहा : 'प्रदेश के अफ़सरों की कारगुज़ारी ही ग़लत हुई है। समझने

में आ रहा है : बदले की भावना से ही इतने लोगों को गिरफ़्तार किया गया था ! गवाही-सबूत देखने के वक़्त ही प्रदेश के अफ़सरों को समझ लेना उचित था कि जिनके खिलाफ़ सात महीने कोशिश करने पर भी कोई मामला नहीं बनता—उन्हें क़ैद रखना अनुचित है।

ज़रूर ही एक बात पहले ही तय हुई थी—गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया का निर्णय कि बीरसा पर राजनीतिक क़ैदी के रूप में मुक़दमा नहीं चलेगा। बहुत दिनों तक हत्या और आगजनी में मदद करने के लिए मामूली अपराधी की तरह मुक़दमा किया जायेगा।

'उसके बाद अवश्य ही तुम्हारे विरुद्ध निर्णय उलट जाता है। क्यों उलट जाता है, जानते हो ? चुपके-से बता रहा हूँ—फ़रवरी से मई तक जेल में डाले रखकर, पीठ पर कोड़े मार-मारकर, प्यास से तड़पने पर भी पानी न देने से मुंडा लोगों का मनोबल नहीं टूटा—तुम पर से विश्वास नहीं हिला !'

'रात में जाकर मैं उनकी कोठरी की दीवार से कान लगाकर सुना करता था। कोड़ों के ज़ख्मों से खून से लथपथ बदन पर—काले बदन पर खून बहुत लाल दिखायी पड़ता था—खून से लथपथ होने पर भी वे बड़बड़ाकर मंत्राविष्ट की तरह कहते रहते :

'भगवान ने कहा था कि जब तक माटी की यह देह नहीं छूटेगी, तुम जिन्दा नहीं रहोगे। टूट मत जाना। सोचना भी मत कि तुम्हें बीच में छोड़कर मैं चला गया। तुम लोगों को इतने, सारी तरह के हथियारों का उपयोग मैंने सिखा दिया है न ! तुम उन्हें ही लेकर लड़ते रहना। हाँ, भगवान ने कहा है। मारो कोड़े, सालो, और भी जो हो ले आओ। बीरसाइत मरने से नहीं डरते हैं ! जो बीरसाइत नहीं हैं, वे ही मरने से डरते हैं। जिस दिन धरती का आबा बनकर बन से निकले, उसी दिन तो कहा था : तुम्हारे पास से हटकर कहीं जाऊँगा नहीं, तुम्हें भूलूँगा नहीं, तुम्हें मरना सिखाऊँगा। मार कोड़ा।'

'सुनते-सुनते मैं शुद्ध-पवित्र हो जाता, बीरसा ! बीरसा ! अपने अनाथाश्रम के जीवन में किसी को प्यार नहीं किया था। तुम मेरे पहले और अन्तिम प्यार के अधिकारी मनुष्य थे ! तुम मेरे मित्र, भाई, साथी थे ! तुमने जेल में, मुंडाओं की जेल में, मैं मुसीबत में न पड़ूं—इसलिए मुझे पहचानना तक न चाहा। मागूराम ने एक दिन यही बात कही थी।

'बोला : 'डॉक्टर बाबू, आज मन दुःखी हो गया।'

'मैंने पूछा : 'क्यों ?'

'वह बोला : 'कल आँधी आयी। एक गौरैया चिड़िया बीरसा की कोठरी में जा गिरी। उसने चिड़िया से बातें कीं! बोला : मेरी प्यारी, कोई डर नहीं है! आज सवेरे देखा कि गौरैया उड़ गयी। पूछा : चिड़िया उड़ गयी ? बीरसा हँसा। बोला : वह क्यों यहाँ रहे ? मेरी कोठरी में तो धूप की किरन तक नहीं आ सकती, हवा नहीं चलती। मेरा मन बहुत ख़राब हो गया।''

'बीरसा, तुम जेल में हो, तुम्हारी सन्तान जेल में है। मैं महा-पातक में पड़ा हुआ हूँ।

'तभी भागा गया और रात में मुंडा लोगों की कोठरियों की दीवारों पर मैं कान लगाकर सुनने लगा। कोड़े की मार से ज़ख़्मी और घायल हुए शरीरों के—काले शरीरों पर ख़ून का रंग गहरा लाल दिखलायी पड़ता है—ख़ून से लथपथ होने के बावजूद मंत्राविष्ट की तरह दोहराते जाते थे :

'भगवान ने कहा था : एक दिन मैं लौटकर जन्म लूँगा। होली की अग्नि जलाकर बुंदू, तामार, सिंहभूम, केउँझड, गपुर और बसिया को भस्मीभूत कर दूँगा! सोनपुर में धूल का अंधड़ खड़ा कर दूँगा! बानो थाने के कायकोटा गाँव के पहाड़ पर रेशम के कीड़ों ने अंडे दिये हैं। हमारी बात सब तरफ़ फैला जायेंगे। मार कोड़ा, सालो! मार-मारकर लहू बहा दो! हम बीरसाइत हैं। हम मरने से नहीं डरते हैं। जो बीरसाइत नहीं हैं वे ही मरने से डरते हैं। यह देख, साले! बीरसा जिस दिन आँधी-तूफ़ान की रात में बन से धरती के आवा होकर निकले, उसी दिन बोले—हाँ, मैं तुम लोगों का भगवान हूँ, लेकिन गोदी में उठाकर झुलाने वाला भगवान नहीं—मैं तुम्हें मरना सिखाऊँगा। हाँ रे सालो, यही कहा था उन्होंने। मार अपना कोड़ा! हमें मार डाल!''

'यह सब सुनते-सुनते मैं शुद्ध, पवित्र हो जाता। वे कहते : 'कितना मार सकता है ? तू नहीं जानता न ? उस दिन भगवान ने गारद से कहा था : आज तुम मेरे ऊपर पहरा देते हो। एक दिन देखोगे कि देश की धरती के लिए मैं क्या कुछ करता हूँ। जैसे जाँता में बाजरा पिसता है, वैसे-ही-वैसे मैं तुम्हें माटी में पीसूँगा! जैसे एड़ी जलती है, उसी तरह आग में तुम्हें भूनूँगा। देश टुकड़े-टुकड़े हो जाये; मैं जंगल की दावेदारी, उस पर दखल नहीं छोड़ूँगा! अपने बावन परगनों से छोटा नागपुर के दुश्मनों को भगाकर

ही लौटूँगा; उनका नाश कर दूँगा। मैं किसी को नहीं छोड़ूँगा। देश को हिला दूँगा। हाँ रे सालो! भगवान ने कहा है। तो मार मुझे; कितना मारेगा?''

'बीरसा! मुंडा लोगों के मन की यह ताक़त है—तुम पर इस क़दर विश्वास है—यह देखकर, यह जानकर तुम्हारे बारे में मुझे राय बदलनी पड़ी। तब किसने फ़ैसला किया था कि अगर तुम्हारी विचाराधीन क़ैदी की हालत में ही मृत्यु हो जाये, वही सबसे अच्छा रहेगा—यह मुझे नहीं मालूम!

'जानने में भी डर लगता है, बीरसा! जब तुम तनहाई कोठरी में जंजीरें घसीटते-घसीटते टहलते थे, तब कहीं तय हो रहा था—कुछ मुंडाओं को छोड़ दिया जाये, क्योंकि उनकी गवाही जिरह में जमेगी नहीं, उड़ जायेगी—तभी कहीं तय हो रहा था कि तुम्हारा एशियाटिक हैजे से अचानक मर जाना सरकार के लिए सब तरह से ठीक सिद्ध होगा—सोचकर भी डर लगता है। क्योंकि लगता है कि तब पृथ्वी, चंद्रमा, सूर्य—सब-के-सब झूठ हैं। सोचकर भी डर लगता है—जब तुम जीवित थे, 9वीं जून की सुबह तक, तभी कहीं तय हो गया था कि तुम्हारी मौत की रिपोर्ट कैसे लिखी जायेगी!

'तुम्हारी मृत्यु के रहस्य को लेकर प्रश्न उठेंगे, विरोध-प्रतिवाद होंगे, उसी का पूर्वाभास पाकर मैंने पत्थरों की दीवारों से बहुत बार सिर टकराया है।

'सुना : कमिश्नर, डी०सी०, पुलिस-सुपरिंटेंडेंट, जेल के सुपरिंटेंडेंट—सभी बहुत खुश हैं। यूरोपियन क्लब में शायद बहुत शराब पी गयी। डी० सी० ने कहा : उन्हें हमेशा डर था कि बीरसा के सामने खड़े होने पर उसके विरुद्ध मुंडाओं ने जो कुछ पहले कहा है, उससे पलट जायेंगे।'

'तुम्हारे मुक़दमे के लिए कितना-कितना आयोजन हुआ था।'

राँची में बीरसाइतों के मुक़दमे के लिए जे० ए० प्लैंटेल को स्पेशल मैजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया।

राँची के डी० सी० से कहा गया कि वह खुद मुक़दमा न करें। वैसा होने पर कोर्ट ऑफ़ अपील में आपत्ति हो सकती है। डी० सी० तो खुद कुल कार्यवाही में रहे थे—उनके सामने ही मुक़दमा चलाये जाने पर वह क़ानून के आड़े आते।

और सिंहभूम में मुक़दमे के वक़्त क़ानून उलट गया। राँची के डी० सी० स्ट्रटफ़ील्ड का हाथ अगर खुद सब कार्यवाही में था, तो सिंहभूम के

डी० सी०, डब्ल्यू० बी० टॉम्सन ने भी तो विद्रोहियों को स्वयं पकड़ा था लेकिन सिंहभूम में मुक़दमे का दायित्व उन्हें ही सौंपा गया।

1899 की 24वीं दिसंबर से 1900 ई० की 9वीं जनवरी तक जो-जो हुआ, उसे लेकर कुल पंद्रह मुक़दमे दायर किये गये। एतकेदी में ग़ैर-क़ानूनी तौर पर इकट्ठे होना और कांस्टेबलों की हत्या—जाउरी में जयपालसिंह नाग का मकान जलाना—सरोपाड़ा में दो मिशनों पर हमला—भारी आगजनी और खून-खराबा कर वर्तमान सरकार को उखाड़ कर बीरसा-राज स्थापित करने के उद्देश्य से उसके अनुयायियों का ग़ैर-क़ानूनी रूप से जुटना-जमा होना—यही सब मामले उनमें प्रमुख थे।

सिंहभूम में दो मुक़दमों को सबसे अधिक महत्व दिया गया। एक था—चक्रधरपुर में एक कांस्टेबल का खून; और दूसरा था—कुंदरुगुटू के जर्मन मिशन को जलाना। सैलराकार में ग़ैर-क़ानूनी जमाव के लिए कोई मुक़दमा नहीं चलाया गया। मुंडा लोगों के लिए सैलराकार कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, सरकार का खयाल इसके विपरीत था। सरकार मानती थी कि खूंटी के थाने पर हमला, सैलराकार में ग़ैर-क़ानूनी इरादों से इकट्ठे होने से बड़ी घटना थी। सैलराकार को मुक़दमों के सिलसिले में घसीटने से वहाँ जो खून की होली हुई थी—लोगों की नजरों में वह बहुत ज्यादा सामने आ जाती।

उसके सिवा देखा गया—अदालत में बीरसा और बीरसाइतों पर राजद्रोह का अपराध सिद्ध करना बड़ा मुश्किल था। गवाहियों और सबूतों की फ़ाइलें पहाड़ की-सी ऊँची हो गयी थीं, लेकिन उनसे आसामियों के विरुद्ध प्रामाणिक माने जाने योग्य तथ्य प्राय: उनमें नहीं थे।

'मई मास से ही तुम अदालत में आते-जाते रहे, बीरसा! जेकब तुम लोगों की ओर से लड़ते रहे, लेकिन बराबर सरकार कहती रही—उसे और वक़्त चाहिए! अभी भी सबूत जमा नहीं हुए हैं! इसी से तुम्हारा कचहरी में जाना-आना आवश्यक था। विचाराधीन अवस्था में ही मुंडा मरते रहे, तो मरते ही रहे। लेकिन विचाराधीन मुंडाओं की बीच-बीच में मौत कोई ऐसी महत्व की घटना नहीं थी कि उसके लिए सरकार मुंडाओं को परेशान और तंग करके उनके मनोबल को भंग करने की नीति का त्याग कर दे!

'मुक़दमे के वक़्त राँची में एक कम्पनी मिलिटरी-पुलिस की रखी गयी—जितने दिनों तक जेल की हवालात में बन्द क़ैदियों के विरुद्ध दायर किये विभिन्न मामलों का फ़ैसला नहीं होता, विद्रोह की मन:स्थिति

पूरी तौर पर ठंडी नहीं पड़ जाती, उतने दिनों तक उस कम्पनी को वहीं टिकना था !'

'बीरसा, बीरसा, तुमने और मुंडाओं ने अपने को जितना महत्व दिया था, भारत सरकार ने भी तुम्हें उतना ही महत्व दिया था। समझते हो यह ?'

'राँची में जेकब ने मैजिस्ट्रेट के इजलास को सरगरम रखा। वह तुम्हारे वकील हैं। सरदारों के वह पुराने मित्र हैं। कलकत्ता में बैरिस्टरी करके पैसे कमाते हैं, और मुंडा लोगो की ओर से हमेशा बिना पैसे लिये मुक़दमा लड़ते हैं।

'उनके निर्भीक डिफ़ेंस और उनकी असाधारण जिरह के सामने सरकार के गवाहों की गवाही टूट-टूट कर बिखरने लगती।

'कलकत्ता के 'द बेंगाली' और 'द स्टेट्समैन' अख़बार जेकब के बारे में संपादकीय लिखते रहते—उनकी सहानुभूति पक्षपातपूर्ण है—और इसलिए वह जब लड़ते हैं तो जान लगाकर लड़ते हैं। वह भले और विवेकी हैं, उनका लक्ष्य निश्चित रहता है। यह मुंडा लोगों का सौभाग्य है कि उनका-सा व्यक्ति उनके साथ है।'

'हाँ बीरसा, मैं छिपाकर जेकब को रिपोर्टें भेजता था। वह उन ख़बरों को प्रचारित करते। सुरेन बैनर्जी का भी ऐसा ही आग्रह था। 'द बेंगाली' भी तुम्हारे बारे में समाचार छापता।'

न्याय ठीक से हो, मुंडा लोगों को अपने पक्ष की पैरवी का उचित अवसर मिले, इसे लेकर जनमत का प्रबल दबाव था।

कहा गया था, यानी ख़बर थी, कि मुक़दमे के लिए रुपये जमा करने के लिए सहानुभूति रखने वाले मुंडा लोगों की सभा को पुलिस ने तितर-बितर कर दिया था—रुपये छीन लिये थे !

समाचार प्रकाशित हुआ था कि जेल के अधिकारियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए सरकार ने ग़ैर-क़ानूनी ढग से, जेल में ही मुक़दमा निपटाना चाहा था।

आसामियों की ओर से बात करने वाला कोई नहीं है। उन्हें स्थानीय वकीलों की सहायता नहीं मिल रही है। अपने पक्ष के समर्थन का उनका अबाध अधिकार बेकार होता जा रहा है !

जो क़सूर उन्होंने किया नहीं, जिसके लिए वे इतने दिनों से हवालात

में बन्द हैं, यह बात ख़ौफ़नाक है।

एक कांस्टेबल की हत्या का बदला लेने के लिए दृढ़-संकल्प पुलिस बचाव-पक्ष के लिए हर क़िस्म की बाधा उत्पन्न कर रही है। 'द स्टेट्समैन' में इस आशय का एक समाचार छपा था।

डी० सी० स्ट्रटफ़ील्ड ने इसके जवाब में 'द स्टेट्समैन' अख़बार के संपादक को चिट्ठी लिखी : महाशय, आपके संवाददाता द्वारा भेजी गयी ख़बर झूठी है। मैं उसके द्वारा लगाये गये प्रत्येक अभियोग को अस्वीकार करता हूँ। अपने पक्ष के समर्थन के लिए अभियुक्तों को पूरा अवसर दिया गया है। उनके खिलाफ़ कोई निश्चित अभियोग नहीं है, यह बात मैं मानता हूँ। बाहर संभावित गड़बड़ी की रोकथाम के लिए उन्हें जेल में रखा गया है, क्योंकि गड़बड़ तो अब भी चल ही रही है। अधिकारी और ज़मींदार-एकजुट हैं, यह नीति और ज्ञान-हीनता केवल हंगामा मचाने वालों की साज़िश की-सी बात है!

'द स्टेट्समैन' अख़बार में चिट्ठी की तारीख थी 3 अप्रैल 1900 ई०। उसी दिन 'हमारे संवाददाता का उत्तर' के साथ यह चिट्ठी भी प्रकाशित हुई। संवाददाता ने लिखा : इस प्रतिरोध की कोई बात नहीं मानी जा सकती। आत्म-पक्ष के समर्थन का पूरा मौक़ा मुंडा लोगों को दिया गया है, यह बात बिलकुल झूठ है।

'मुक़दमा किस तरह चलता है, बीरसा! मुक़दमे के दौरान ही प्लैंटेल को दूसरी ओर फ़रीदपुर भेज दिया गया। बाक़ी वक़्त स्ट्रैचेन ने मुक़दमा सुना।'

'उस एक दिन की बात याद है, बीरसा?'

1900 ई० की सोलहवीं मई। 217 लोगों में से तीन लोगों की जमानत के लिए जेकब ने अर्ज़ी दी।

बोले : उनके विरुद्ध कोई अभियोग नहीं है। है केवल डी० सी० स्ट्रटफ़ील्ड की एक रिपोर्ट कि वे विद्रोह में शामिल हैं। यह मात्र अनुमान है। उनके विरुद्ध कोई गवाही-सबूत बाद में मिल जायेगा, इसी उम्मीद से उन्हें बहुत दिनों तक हवालात में रखा गया है। बहुत-से विचाराधीन क़ैदी मर भी गये हैं।

जेकब की बात के जवाब में हुआ वाक्-युद्ध!

जेकब : मैं जानना चाहता हूँ कि फ़ौजदारी क़ानून की धारा 112 के मुताबिक़ मेरे मुवक्किलों को कभी कचहरी में आने का नोटिस दिया गया है? यह तो बहुत गंभीर मामला है। अब तक बहुत-से मर भी गये हैं।

इन्हें पता भी नहीं कि यह पाँच महीने-भर किस क़सूर में, घर-बार से अलग, वकील के बिना, इस हालत में क़ैदी बना के रखे गये हैं ? उनके प्रतिनिधि के रूप में मुझे यह बात जानने का अधिकार है। माननीय महोदय से मैं इसका कारण बतलाने के लिए कह रहा हूँ।

मैजिस्ट्रेट : आपको यह बात बताने के लिए मैं यहाँ नहीं आया हूँ।

जेकब : यह क्या ! मेरे मुवक्किलों को किस अपराध में अभियुक्त बनाया गया है, आप यह भी नहीं बतलायेंगे, जिससे कि मैं अपने पक्ष के समर्थन को तैयार कर उनकी सहायता कर सकूँ ?

मैजिस्ट्रेट : मुवक्किलों से ही वह बात पूछिये।

जेकब : उन्हें तो कुछ भी मालूम नहीं है कि उन्हें क्यों पकड़कर रखा गया है। वह अगर मुझे नहीं बतलाया जायेगा तो इस मुक़दमे के विरुद्ध मुझे कहीं और अपील करनी पड़ेगी।

मैजिस्ट्रेट : आप जो चाहें कर सकते हैं।

जेकब : इस लंबी मियाद की क़ैद के पहले क़ैदियों की अदालत में जिरह हुई थी या नहीं, यह जानने का भी मेरा अधिकार है।

मैजिस्ट्रेट : इसका कोई सवाल ही नहीं उठता !

मैजिस्ट्रेट : आपके मुवक्किल कौन हैं ?

जेकब : उनके नामों की यह सूची है।

मैजिस्ट्रेट : अच्छा ठीक। पहले आसामी चाँद मुंडा—इसके विरुद्ध कोई निश्चित अभियोग नहीं है।

जेकब : तो मैं उसे जमानत पर छुड़ा सकता हूँ ?

मैजिस्ट्रेट : रिकॉर्ड में देख रहा हूँ कि मेरे पहले के मैजिस्ट्रेट ने 7वीं अप्रैल को एक ऑर्डर फ़ाइल पर लिखा था जिसमें एक सौ रुपये देने पर उसकी जमानत का अधिकार मंजूर कर लिया गया था—उसका और बाक़ी अभियुक्तों का भी।

जेकब : यह क्या ! अपराधों की गंभीरता किसी की कुछ भी हो, सबकी एक ही शर्त पर जमानत की आज्ञा हुई थी ?

मैजिस्ट्रेट : ठीक यही बात है।

जेकब : पूछ सकता हूँ कि इस ऑर्डर की बात उन लोगों को कभी बतलायी भी गयी है या नहीं ?

मैजिस्ट्रेट : यह मुझे नहीं मालूम।

जेकब : रेकॉर्ड में तो वह बात लिखी होगी ?

मैजिस्ट्रेट : नहीं।

जेकब : यह तो ताज्जुब की बात है !

मैजिस्ट्रेट : यह मामले भी ताज्जुब के हैं।

जेकब : बहुत ताज्जुब के। आप क्या जमानत का ऑर्डर कन्फ़र्म[1] कर रहे हैं ?

इंस्पेक्टर ऑफ़ पुलिस : हुजूर, मैं एक अर्ज़ी पेश कर रहा हूँ। मेरी प्रार्थना है, क़ैदियों में 67 लोगों के विरुद्ध हत्या, हत्या में सहायता और दूसरे चार्ज भी लाये जायें।

जेकब : यह क्या ? अब ? यह तो बहुत अन्याय है। 7वीं अप्रैल को अगर मेरे मुवक्किलों को मालूम हो जाता कि उन्हें जमानत मिल सकती है, तो वे आज तक जेल में नहीं रहते। उसके सिवा इनके विरुद्ध चार्ज लगाने में पुलिस को पाँच महीने और लग गये, यह अन्याय शोचनीय है।

इन्सपेक्टर : हुजूर, अगर कल तक का वक़्त दें तो और भी कुछ लोगों के विरुद्ध शायद एक ही चार्ज लगा सकूँगा।

मैजिस्ट्रेट : क्या कहते हैं, मि० जेकब ?

जेकब : मैं सिर्फ़ यही कहूँगा कि ये सब कार्रवाई मुझे ताज्जुब में डाल रही है। जो लोग शायद बिलकुल बेक़सूर हैं, उनके ख़िलाफ़ चार्ज लगाने तक में पाँच महीने हो गये ! वे जेल में पड़े सड़ रहे हैं। और भी ताज्जुब की बात यह हो रही है कि पुलिस अब अर्ज़ी दे रही है—दूसरों के ख़िलाफ़ चार्ज बनाने के लिए एक दिन का वक़्त और चाहिए ! बनाने में—मैं कह रहा हूँ 'बनाने में' ! तो क्या आप मि० प्लैटेल के ऑर्डर का संशोधन करेंगे ? वह आप नहीं कर सकते।

मैजिस्ट्रेट : क्यों ? आपने ही तो उस ऑर्डर का संशोधन—रिव्यू चाहा है !

जेकब : कभी नहीं। मैंने यह बिलकुल नहीं कहा। 7वीं अप्रैल को ही मेरे मुवक्किल जमानत पर रिहा हो सकते थे—उन्हें यह नहीं मालूम था। इसीलिए कहा था कि अब उनकी जमानत तुरंत हो जानी चाहिए—वही ऑर्डर लागू हो।

मैजिस्ट्रेट : वे 67 आदमी तो किसी तरह जमानत पायेंगे ही नहीं। औरों के बारे में इंस्पेक्टर ने क्या कहा, वह आपने सुन ही लिया है।

जेकब : उनके ख़िलाफ़ इस वक़्त कोई भी चार्ज नहीं है। उन्हें आपने कैसे हिरासत में डाल रखा है ? मेरा कहना है, क़ानून का बहुत बड़ा अपमान हुआ है—बहुत बड़ा अपमान। यहाँ 217 लोग प्रायः पाँच महीनों से

---

1. आज्ञा की सम्पुष्टि कर रहे हैं।

क़ैद में हैं। किस क़सूर में, यह उन्हें कभी बतलाया नहीं गया। अभी, आज ही, अचानक एक पुलिस की अर्जी के आधार पर उन पर एक नया और ऐसा अभियोग लगाया जा रहा है ताकि उन्हें ज़मानत भी मिल न सके।

जेकब ने फिर कहा : इन अभागों में 93 लोग मेरे मुवक्किल हैं। लेकिन कितनी ज्यादा बेइंसाफ़ी हो रही है! उनमें 67 लोगों को आज ही जिस अपराध में अभियुक्त बनाया गया, उसे अगर सही मान भी लें, फिर भी प्रार्थना है—उनके विरुद्ध क्या-क्या गवाही और सबूत हैं वे मुझे बतलाये जायें, जिससे कि उन्हें ज़मानत पर छुड़ाने के लिए मैं अपील कर सकूँ।

मैजिस्ट्रेट : पुलिस की अर्जी पाकर ही मैंने हुक्म दे दिया है। वह जो 67 लोग अभियुक्त हैं, उन्हें ज़मानत नहीं मिलेगी। बाक़ी जो रहे, उनके नाम, उनके गाँव के नाम, सब ब्यौरा मिलने के बाद ही उनकी ज़मानत की बात पर सोच सकूँगा।

जेकब : लेकिन सम्मानित महोदय, उन 67 लोगों की रिहाई के बारे में भी मेरी बात आपको सुननी ही होगी, जिन्हें कि अभी-अभी ज़मानत न मिल सकने वाले अपराध में अभियुक्त बनाया गया है।

मैजिस्ट्रेट : अरे! बताया न कि मैंने उनके बारे में हुक्म जारी कर दिया है। और लोगों के नाम, गाँव, पता वग़ैरह मुझे दें; उन सब लोगों के नाम प्रायः एक-से ही तो हैं।

जेकब : गाँव के नाम मिलने में कुछ वक़्त लगेगा। वह काम चलता रहेगा, लेकिन मैं फिर कह रहा हूँ—जिन 67 लोगों को पुलिस ने अभी-अभी चार्ज किया है, उनकी ज़मानत के बारे में मेरी बात आपको सुननी ही पड़ेगी।

मैजिस्ट्रेट : उस बारे में मैं निर्णय दे चुका हूँ।

जेकब : लेकिन फ़ौजदारी के क़ानून की धारा 499 के मुताबिक़ मैं यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि मेरा वक्तव्य अदालत सुने। उसी धारा में, मैं पढ़ रहा हूँ, आप सुनें—किसी भी व्यक्ति को ज़मानत के अयोग्य अपराध में अभियुक्त होकर थाने के अधिकार-प्राप्त अफ़सर द्वारा बिना वारंट के गिरफ़्तार, या अदालत में ले जाये जाने पर, ज़मानत पर रिहाई दी जायेगी। जिस अपराध में वह अभियुक्त बना है, उससे उसे अपराधी कह-कर विश्वास करने का तर्कसंगत कारण रहने पर ही उसे ज़मानत नहीं मिल सकेगी।

जेकब ने फिर पढ़ा : इसके बाद के पैरा में कहा गया है—इस तरह अफ़सर या अदालत के सामने जाँच या मुक़दमा चलने के दौरान अगर लगे कि आसामी ने ज़मानत मिलने के अयोग्य अपराध किया है—यदि

ऐसा लगने का यथेष्ट कारण नहीं हो और उसके अपराध के बारे में और भी जाँच की ज़रूरत हो, तो इस तरह जाँच के जारी रहने पर भी आसामी को ज़मानत पर रिहाई दी जायेगी।

जेकब ने जिरह जारी रखते हुए कहा : इसलिए महोदय, पुलिस ने जिन 67 लोगों को चार्ज किया है, उनके विरुद्ध लगाये अपराध अगर ज़मानत के अयोग्य भी हों, फिर भी उनकी ज़मानत पर रिहाई के बारे में मेरा वक्तव्य सुना जाये, यह मेरी प्रार्थना है।

बातचीत जब इतना आगे बढ़ गयी, तब डी०सी० स्ट्रटफ़ील्ड (जो सुनवायी चलने के वक़्त एक पास के ही कमरे में बैठे थे) सहसा इजलास में घुस आये, और मैजिस्ट्रेट के साथ बहुत देर तक बातें करते रहे। उनकी बातें समाप्त होने पर मि० जेकब इजलास को संबोधित कर बोले।

जेकब : क़ानून की जो धारा पढ़कर सुनायी गयी, उसके अनुसार क्या मेरी बात सुनेंगे ?

मैजिस्ट्रेट : उस बारे में निर्णय दिया जा चुका है।

जेकब : लेकिन किस तर्कसंगत कारण से आप मेरी बात सुनना अस्वीकार कर रहे हैं ?

मैजिस्ट्रेट : तर्कसंगत कारण न होने पर तो वे अभियुक्त भी न रहते।

जेकब : सिर्फ़ इसीलिए मेरी बात न सुनेंगे ? इसी एकमात्र तर्क से ?

मैजिस्ट्रेट : पुलिस की अर्ज़ी भी है। इसे पढ़कर देख सकते हैं।

जेकब : धन्यवाद ! मेरी बात सुनने में आपको राज़ी न होने का कोई तर्कसंगत कारण दिखायी पड़े—ऐसा इस अर्ज़ी में कहीं नहीं कहा गया है। इसमें सिर्फ़ इतना ही कहा गया है कि क़ैदियों में 67 लोगों के नाम को ज़मानत के अयोग्य अपराध में अभियुक्त माना जाये। मैं यह और भी प्रार्थना कर रहा हूँ कि फ़ौजदारी कार्यविधि क़ानून की 107-108-109-110 धाराओं के अनुसार इनके विरुद्ध लगाया गया अभियोग रद्द किया जाये (इन चार धाराओं के अनुसार आसामी को कोई भी मैजिस्ट्रेट निश्चित समय के लिए ठीक चाल-चलन में रहने के लिए ज़मानत माँगने का आदेश दे सकते हैं—पुलिस हैंडबुक, पृ० 83-84)। मुझे नहीं मालूम कि उन्हें कब अभियुक्त बनाया गया; पता नहीं कि इस नये अभियोग में उन्हें अब तक जेल में बन्द रखा गया या नहीं। पुलिस ने चालाकी तो खूब दिखायी है, लेकिन वह सब व्यर्थ है। इस देश में कहीं-न-कहीं कानून का शासन है, न्याय का सम्मान है। इन 67 लोगों के अपराध पर विश्वास करने का यदि कोई तर्क-संगत कारण है उसे महामान्य महोदय मुझे बतलायेंगे ?

मैजिस्ट्रेट : मैंने तो आपसे कहा, तर्कसंगत कारण न रहने पर पुलिस

उन्हें हिरासत में ही न लेती।

जेकब : क्या यही आपकी एकमात्र युक्ति है ? 67 अभियुक्तों के अपराधों पर यक़ीन हो, ऐसी एक बात भी पुलिस की इस दरख़ास्त में नहीं लिखी गयी है। कितने अपराधों के लिए उन्हें ज़िम्मेदार ठहराया गया है और उन्हें और भी दिन हवालात में रखने की अनुमति माँगी गयी है ? कहाँ है वह तर्क-संगत कारण जिससे आप मेरी बात न सुनने के लिए प्रभावित हुए हैं ? उनके ख़िलाफ़ ज़रा-सा भी सबूत क्या रिकॉर्ड में है ?

मैजिस्ट्रेट : हाँ !

जेकब : किसकी गवाही ?

मैजिस्ट्रेट : वह आपको अभी बतलाने के लिए मैं बाध्य नहीं हूँ।

जेकब : लेकिन मैं कहता हूँ, आप बाध्य हैं। उनकी रिहाई की पैरवी में मैं कैसे सवाल उठाऊँ, अगर यह न मालूम हो कि उनके अपराध की गंभीरता में क्या-क्या तर्कसंगत कारण रिकॉर्ड किये गये हैं ?

मैजिस्ट्रेट : औरों के बारे में आपको कुछ कहना है ?

जेकब : तो इन 67 लोगों के अपराध में आपके विश्वास का तर्कसंगत कारण क्या है, आप मुझे यह नहीं बतलायेंगे ?

मैजिस्ट्रेट : गवाहों का रिकॉर्ड है।

जेकब : यह एक नयी बात मालूम हुई ! आसामियों में कोई इसके बारे में जानता है ? वह कैसी, किसकी गवाही है ? यह मेरा जानने का अधिकार है।

मैजिस्ट्रेट : क़ानूनन दरख्वास्त दीजिये। गवाही है।

जेकब : मैं कहता हूँ कि उन गवाहों द्वारा लगाये गये मुख्य अभियोग को जानने का मेरा अधिकार है। गवाहियों की आधिकृत प्रतिलिपि माँगने की मैं अभी दरख्वास्त देता हूँ।

मैजिस्ट्रेट : दरख्वास्त दीजिये। एक मिनिट ठहरिये। (कुछ मिनिट बाद उन्होंने अदालत के चपरासी के हाथों एक पुर्ज़ा स्ट्रटफ़ील्ड को भेजा।) हाँ, कहिये मि० जेकब !

जेकब : जिन 67 लोगों को अभी अभियुक्त बनाया गया है, उनके विरुद्ध सबूत और बयान आप मुझे बतलायेंगे, महाशय ? (फिर रुकावट पड़ी। कोर्ट का चपरासी एक पुर्ज़ा लेकर लौटा। मैजिस्ट्रेट उसे पढ़ते रहे।)

मैजिस्ट्रेट : आखिर में आपने क्या कहा, सुन नहीं सका।

जेकब : मैंने कहा था, जिन सारे तर्कसंगत कारणों से आपको इनके अपराधी होने का विश्वास उत्पन्न हुआ है उन 67 दोषी लोगों पर—उसका सारांश मुझे बतलायें।

मैजिस्ट्रेट : डिप्टी-कमिश्नर मि० स्ट्रटफ़ील्ड ने एक हलफ़िया वक्तव्य दिया है, वह है।

जेकब : कब दिया ?

मैजिस्ट्रेट : जब प्रतिलिपि मिलेगी तो पता चल जायेगा।

जेकब : अच्छा ! वकील साहब, अर्ज़ी बनाइये।

मैजिस्ट्रेट : उन 67 लोगों के बारे में मैं कुछ और नहीं सुनना चाहता। आपकी फ़ेहरिस्त तैयार है ?

जेकब : तो क्या मैं यह मान लूँ कि 217 अभागे लोग—जो पिछले पाँच महीनों से जेल में हैं—वे डिप्टी-कमिश्नर के हलफ़िया वक्तव्य के आधार पर ही क़ैद हुए हैं ? मेरे 93 मुवक्किलों के नाम आपने जानना चाहे थे। गाँव अनगिनत हैं, और दूर-दूर पर हैं। जिन कथित अपराधों पर उन्हें पकड़ा गया है, जिसके लिए वे पाँच महीनों से जेल में हैं, तो क्या डिप्टी-कमिश्नर ने उन 217 लोगों को अपराध करते देखा है ? हलफ़नामे में क्या हलफ़ लेकर यह कहा गया है ?

मैजिस्ट्रेट : मैंने पुलिस की अर्ज़ी पर ऑर्डर दे दिया है। उन 67 लोगों को ज़मानत नहीं मिलेगी।

(यहाँ मैजिस्ट्रेट का ध्यान दिलाते हुए यह कहा गया कि केस उनकी फ़ाइल में ही नहीं है। डिप्टी-कमिश्नर तो साथ के कमरे में ही बैठे थे, इसलिए यह भूल-क्षण भर में ही ठीक कर दी गयी !)

जेकब : तो क्या मैं समझ लूँ कि पुलिस ने आज जिन 67 लोगों पर चार्ज लगाया है उनके सिवा और सभी (सभी फिर मेरे मुवक्किल नहीं है) ज़मानत पा सकेंगे ?

मैजिस्ट्रेट : मैं पुलिस से पता लगा लूँ कि उनके खिलाफ़ और कोई चार्ज तो नहीं है।

मि० जेकब की लिस्ट में जिनके नाम हैं, आज जिन पर नये चार्ज लगाये गये हैं—सबके नाम मैजिस्ट्रेट और इंस्पेक्टर ने ग़ौर से देखे।

मैजिस्ट्रेट : जिन्हें ज़मानत मिल सकती है यह है उन 26 नामों की लिस्ट। उनमें से हर एक को एक-एक सौ रुपयों के मुचलके देने होंगे।

जेकब : हर एक पर लगाये गये अलग-अलग अभियोगों और उनकी गंभीरता पर ध्यान दिये बिना ही ?

मैजिस्ट्रेट : ठीक ही कह रहे हैं।

जेकब : ज़मानत की रक़म कम करने के बारे में मेरा बयान आप नहीं सुनेंगे ?

मैजिस्ट्रेट : मेरे पहले के मैजिस्ट्रेट ज़मानत की रक़म तय कर गये हैं।

जेकब : तो महोदय, मैं कहूँगा कि मेरे मुवक्किलों के विरुद्ध इजलास की कार्रवाइयाँ एकदम ग़ैर-क़ानूनी हुई हैं। फ़ौजदारी कार्यविधि क़ानून की धारा 112 साफ़-साफ़ कहती है : 107-108-109-110 धारा के अनुसार कोई मैजिस्ट्रेट जब उक्त धाराओं के अनुसार किसी व्यक्ति को ज़मानत देने का विचार करें, तो वह एक लिखित ऑर्डर देंगे। 'देंगे' शब्द पर ध्यान दें। उसमें विस्तार से प्राप्त सूचना का सारांश लिखेंगे—कितने रुपयों की ज़मानत, कितने दिनों तक यह ज़मानत चलेगी, ज़मानतनामे की संख्या, क़िस्म, श्रेणी क्या है। मेरे मुवक्किलों को पाँच महीने हवालात में रहने के दौरान क्या किसी वक़्त कभी यह ऑर्डर दिखलाया गया ?

मैजिस्ट्रेट : रिकॉर्ड में कुछ नहीं है।

जेकब : तो क्या मान लूँ कि सरकार की निर्देशित कार्यपद्धति का इस मामले में पालन नहीं किया गया है ?

मैजिस्ट्रेट : मेरे पहले के मैजिस्ट्रेट ने क्या किया, क्या नहीं किया, इस बारे में मेरी जानकारी नहीं है। आपने जिन सारे नियमों की बात कही है वे माने गये हैं या नहीं, उसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। मैं मानकर चलता हूँ कि वे माने गये होंगे।

जेकब : लेकिन नियम के अनुसार काम होने पर उसका कुछ रिकॉर्ड तो होगा ?

मैजिस्ट्रेट : रिकॉर्ड कोई नहीं है।

जेकब : बहुत ताज्जुब है ! मि० प्लैटेल जैसे मैजिस्ट्रेट का इस मामले से बदली किया जाना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण हुआ है। तो क्या समझ लूँ कि क़ायदे के मुताबिक़ काम नहीं हुआ है ?

मैजिस्ट्रेट : मुझे नहीं मालूम। कहीं कुछ ग़लती हो भी सकती है; मैं यह नहीं कह सकता कि ग़लती ही हुई है।

जेकब : ग़लती ? पुलिस उनके ख़िलाफ़ मामले बनायेगी, इसीलिए तो मेरे मुवक्किल हवालात में हैं। घटना-क्रम का संबंध विचित्र है ! पाँच महीने से वे जेल में सड़ रहे हैं। उसके बाद उनकी ओर से मैं आज पैरवी करने आया हूँ कि किसलिए वे बेचारे जेल में सड़ रहे हैं, तब पुलिस ने आज ही अभियोग ईजाद भी कर लिया ! देखता हूँ कि डिप्टी-कमिश्नर भी अभी-अभी शहर से लौटकर आये हैं।

मैजिस्ट्रेट : मेहरबानी कर अपने मामले तक की ही बात रखें।

जेकब : मैं कहूँगा कि फ़ौजदारी कार्यविधि क़ानून की 117 धारा के अनुसार 67 लोगों को इजलास में हाज़िर किया जाये ! उनका अपराध क्या है, वह समझाया जाये।

मैजिस्ट्रेट : ओह !

जेकब : उनके खिलाफ़ जो चार्ज लगाये गये हैं उनकी सचाई की जाँच करने के लिए उन्हें इजलास पर लाने तक का हुक्म भी आप क्या नहीं देंगे ?

मैजिस्ट्रेट : ठीक ही कह रहे हैं।

जेकब : किस क़ानून की किस धारा के अनुसार ?

मैजिस्ट्रेट : अपने और मुवक्किलों की बात कहिये। मुझे और भी मामलों पर अभी विचार करना है।

जेकब : जमानत की रक़म को कम करने के बारे में मैं कहना चाहता हूँ।

मैजिस्ट्रेट : मैं उस बारे में ऑर्डर दे चुका हूँ।

जेकब : आपका तो कहना है कि जमानत मि० प्लैटेल ने निर्धारित की है !

मैजिस्ट्रेट : हाँ।

जेकब : लेकिन किस धारा के अनुसार क़ैदियों को किस अपराध में पकड़ा गया था ?

मैजिस्ट्रेट : मैं इतना ही जानता हूँ। रिकॉर्ड में देख रहा हूँ कि अदालत ने ही जमानत तय की थी।

जेकब : 112 और 115 धाराओं के अनुसार उन पर कोई नोटिस जारी किया गया था ?

मैजिस्ट्रेट : मुझे नहीं मालूम।

जेकब : मेहरबानी कर मुझे रिकॉर्ड देखने देंगे ? क्या-क्या प्रमाण हैं ?

मैजिस्ट्रेट : कोई प्रमाण नहीं है।

जेकब : उनके ख़िलाफ़ किसी भी गवाही या सबूत के बिना ही उन्हें एकदम पाँच महीने हवालात में रखा गया ? कहिये, यह हुआ न ?

मैजिस्ट्रेट : उनके खिलाफ़ अभी तक केस नहीं उठाया गया।

जेकब : उठाया नहीं गया ? उन्हें क्या इसके पहले एक बार भी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया ?

मैजिस्ट्रेट : वह मैं नहीं बता सकता।

जेकब : रिकॉर्ड देखकर वह ज़रूर जाना जा सकता है।

मैजिस्ट्रेट : नहीं, नहीं जाना जायेगा। तो समझे ले रहा हूँ कि वे पेश किये गये थे, क्योंकि जमानत देने का हुक्म लिखा गया है।

जेकब : किसने जमानत तय की ? अदालत ने या पुलिस ने ?

मैजिस्ट्रेट : यह मि० प्लैटेल का ऑर्डर है।

जेकब : बस—यही बात क्या रिकॉर्ड में है ?

मैजिस्ट्रेट : आपको बता तो रहा हूँ—कोई गवाही या सबूत रिकॉर्ड नहीं किये गये हैं।

जेकब : अब पुलिस ने जिन्हें अभियुक्त बनाया है, उन 67 लोगों की ज़मानत के बारे में अदालत क्या मेरा वक्तव्य सुनेगी या नहीं ?

मैजिस्ट्रेट : उस बारे में मैंने ऑर्डर दे दिया है।

जेकब : लेकिन मैं आपसे कह रहा हूँ कि जिस ख़बर के आधार पर यह फ़ैसला लिया गया है, उसकी सचाई के बारे में पता लगाने के लिए धारा 117 के मुताबिक़ आप बाध्य हैं। पाँच महीने तक उन्हें जेल में रखा गया, उनके विरुद्ध लगायी गयी ख़बर सत्य है या झूठ—उसकी जाँच तक न होगी—यह सरासर अन्याय है। क्यों, कल ही तो पाँच महीने बाद 45 लोगों को हवालात से रिहाई मिली है ! ये लोग भी तो बेक़सूर प्रमाणित हो सकते हैं। फिर भी उन्हें पाँच महीने जेल में ठूँसकर रखा गया।

मैजिस्ट्रेट : समझ में नहीं आता कि आप कहना क्या चाहते हैं।

जेकब : उन 67 लोगों की ज़मानत के बारे में मेरी बात आपको सुननी होगी।

मैजिस्ट्रेट : ओह !

जेकब : ये लोग जितने दिनों से जेल में हैं उस बीच उन पर 107-112-119-117 धाराओं के अनुसार कभी कोई नोटिस जारी किया गया ?

मैजिस्ट्रेट : कह नहीं सकता।

जेकब : धारा 107 के अनुसार विश्वसनीय प्रमाण रिकॉर्ड किये गये हैं ? रिकॉर्ड में उनकी क्या कोई नज़ीर है ? उनके न रहने पर इन्हें बन्द रखना सरासर ग़ैर-क़ानूनी काम हुआ है।

मैजिस्ट्रेट : ओह !

जेकब : यह एक बहुत ही ताज्जुब पैदा करने वाला मामला है।

मैजिस्ट्रट : जी हाँ !

जेकब : जिस कार्यविधि का सहारा लिया गया है वह भी बहुत ताज्जुब पैदा करने वाली है।

मैजिस्ट्रेट : ओह !

जेकब : जिन 67 लोगों को अभी-अभी, अभी पहली बार ही, अभियुक्त बनाया जा रहा है, उनकी बात सुनने के लिए तो आप राज़ी नहीं हैं। जिनका ज़मानतनामा रखकर छोड़ने के लिए आप राज़ी हैं, क्या उनकी निर्धारित ज़मानत की रक़म कम करने के बारे में मेरा कहना सुनेंगे ? एक व्यक्ति के पीछे 100 रुपये के माने हुए केवल 26 लोगों के लिए 2600 रुपये ! इतना रुपया इनके लिए जमा कर पाना असंभव है। इस ऑर्डर के अर्थ

होते हैं, किसी को छोड़ा नहीं जायेगा। यह एकदम इनकी सामर्थ्य के बाहर की जमानत की रक़म है। जमानत कम करने के बारे में क्या अदालत मेरी बात सुनेगी ? जमानत का मामला पूरी तौर पर अदालत के फ़ैसले पर है। यह रक़म इतनी ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

मैजिस्ट्रेट : जिस ऑर्डर का रिकॉर्ड है उसमें दख़ल देने को मैं तैयार नहीं हूँ।

जेकब : बहुत ही अजीब बात है !

मैजिस्ट्रेट : अजीब या बहुत ही अजीब, यह भी मैं देखने के लिए तैयार नहीं हूँ।

जेकब : जमानत बहुत ही ज्यादा है। आप क्या उन्हें अदालत में बुला नहीं सकते ? उनके बस में क्या कुछ संभव है, यह जान लेने पर हर एक की कमबेशी जमानत तय नहीं कर सकते ? उन 67 लोगों के बारे में पुलिस ने जो कुछ करने में पाँच महीने का वक़्त लिया, वही वैसा ही इनके बारे में भी करेगी—इस आशा से ही उन्हें जेल में ठूँसकर रखा है—ऐसा मुंडा लोगों को शक है।

मैजिस्ट्रेट : उन 26 लोगों की जमानत का इंतज़ाम करने को आप तैयार हैं ?

जेकब : जमानत की रक़म में कमी करने के बारे में क्या मेरी बात आप नहीं सुनेंगे ?

मैजिस्ट्रेट : मैंने ऑर्डर दे दिया है।

फिर मैजिस्ट्रेट ने ऑर्डर पढ़ा और इंस्पेक्टर से पूछा : उन 26 लोगों के खिलाफ़ आपका कोई अभियोग है ?

इंस्पेक्टर : अभी तो नहीं है, लेकिन हुजूर अगर मुझे कल तक का वक़्त दें—मैंने उसी लिए वक़्त माँगा था—अगर वक़्त दें, मैं रिकॉर्ड उलट-पलट-कर देखूँगा कि उन्हें किस जुर्म में मुजरिम बनाया जाये।

जेकब : बहुत अन्याय है। पैशाचिक अन्याय है ! 67 लोगों के विरुद्ध चार्ज तैयार करने में चार महीने लग गये, और बाक़ी कुछ लोगों को मुजरिम बनाने के लिए एक दिन चाहते हैं ! (मैजिस्ट्रेट से) मैं हुजूर से कह रहा हूँ। यह दरख़ास्त नामंजूर कर दें। इसी तरह तो निर्दोष लोग जेल के अंदर मरते हैं !

मैजिस्ट्रेट : (इंस्पेक्टर से) मि० जेकब की लिस्ट से अपनी लिस्ट चेक कीजिये। मुझे बताइये, अभी जिन पर चार्ज लगे हैं, वे 67 व्यक्ति कौन हैं ?

जेकब : यह क्या हो रहा है, मेरी समझ में नहीं आ रहा है !

मैजिस्ट्रेट : नहीं समझ पा रहे हैं ? बहुत अफ़सोस है। तो, आपका

रास्ता तो खुला है।

जेकब : डिप्टी-कमिश्नर क्या कहते हैं, मैं सुनना चाहता हूँ। मेहरबानी कर मुझे रिकॉर्ड देखने देंगे ? और भेद क्या है, यह जानने का मेरा अधिकार है।

मैजिस्ट्रेट : हमेशा जो होता है, उसके सिवा किसी भी दूसरी तरह आपको कुछ बतलाने के लिए यह अदालत नहीं बैठी है। दरख़ास्त कीजिये, वक़्त के मुताबिक़ उसका फ़ैसला किया जायेगा।

जेकब : मुँह से प्रार्थना की है, दरख़ास्त भी दे रहा हूँ। लेकिन वक़्त बचाने के लिए मेहरबानी कर डिप्टी-कमिश्नर का हलफ़नामा मुझे एक नज़र-भर देखने दें।

मैजिस्ट्रेट : दरख़ास्त दीजिये। अदालत अभी मुल्तवी कर रहा हूँ।

जेकब ज़मानत कम करने के बारे में मेरी बात नहीं सुनेंगे ?

मैजिस्ट्रेट : उस बारे में भी एक दरख़ास्त दीजिये। मामले पर सोच-विचार करने में वक़्त लगेगा। अपना फ़ैसला 22 को सुनाऊँगा।

'बीरसा, ! 'बेंगाली' अख़बार से एक दिन बीती यह सत्य घटना तुम्हें सुना दी।

'बीरसा, बीरसा ! जेकब की मर्मपीड़ा मैंने देखी थी। देखा था कि वह डाक-बँगले में रहते हैं। कोई भी साहब उनसे बात नहीं करता।

'देखा कि वह बीच-बीच में कलकत्ता चले जाते थे। क़ानून की किताबें और फ़ाइलें लेकर लौट आते। बड़ी लगन के साथ लड़ते।

'मुझसे कहते : 'ऑलराइट, ऑलराइट, बीरसा तुम्हारा दोस्त है, तुम बहुत परेशान हो। किन्तु ट्राई टू अंडरस्टैंड दिस[1], माई बॉय।'

'मैं कहता : 'क्या ?'

'बीरसा भगवान है, मुंडा लोगों का मुक्तिदाता—बीरसा योद्धा है; बीरसा को लेकर हज़ारों लोकगीत बन गये हैं; बीरसा को याद करके ही मुंडा लोग जेल में हो रहे अत्याचारों को सह पाते हैं।'

'हाँ।'

'वह जब तक बाहर था, उतने दिनों अंगरेज नौकरशाही उससे डरती थी। लेकिन जेल में डालने के बाद बीरसा उनके निकट है क्या ?'

'बीरसा तो मर गया।'

'न-न, उसका शरीर नहीं रहा, लेकिन उसका आदर्श मुंडाओं के मन में

1. यह समझने की कोशिश करो।

वेरी मच[1] जीवित है।'

'आप मुंडाओं की तरह बात कर रहे हैं।'

'चमड़ी के नीचे तो मैं भी आधा मुंडा हो गया हूँ। कब से तो उनकी ओर से लड़ रहा हूँ!'

'उससे मुंडाओं का—माने, जो जेल के भीतर और बाहर हैं, उनका—मनोबल बहुत कुछ लौट आया है।'

'लेकिन मैं कर तो कुछ भी नहीं पा रहा हूँ। माई बॉय, डोन्ट मेक वन मिस्टेक।'[2]

'क्या बात कह रहे हैं?'

'बीरसा मस्ट हैव बिन ए फ़ोर्स।'[3] क्योंकि एक बात कह रहा हूँ—जितनी बार मुंडाओं की ओर से लड़ा हूँ, जाना कि मेरी असुविधा कहाँ है। मुंडा लोगों की कोई लिखित भाषा नहीं है। वे आदिवासी हैं। हमेशा उन पर अत्याचार हुए हैं। बदमाश वकील उन्हें मामलों में फाँसकर बिलकुल ग़रीब बना देते थे। कचहरी-क़ानून—छायी हुई महिमा—अंगरेज़ों की न्यायप्रियता, ईमानदारी की—उसके बारे में वे कुछ भी नहीं समझते थे।'

'नहीं।'

'वे सब बाधाएँ जानते हुए ही मैं केस लड़ता हूँ। लेकिन कभी इस तरह योजनाबद्ध रूप से क़ानून का अपमान नहीं देखा। मैं लड़ ज़रूर रहा हूँ, लेकिन 'द बेंगाली' की रिपोर्ट पढ़कर देखो। मानो हवा में तलवार भाँज रहा हूँ।'

'यही लगता है।'

'इस तरह डेलिबरेट मिस्कैरेज ऑफ़ जस्टिस[4] क्यों? क्यों सारे नियम अमान्य कर उन्हें हवालात में रखा जा रहा है? सिंहभूम के लोगों को राँची के केस में, राँची के लोगों को सिंहभूम के केस में क्यों फाँसा गया है? क्यों विचाराधीन क़ैदियों की मौतें हो रही हैं? न, इसी से समझता हूँ कि बीरसा वॉज़ ए फ़ोर्स। उसने मौलिक मानवीय अधिकारों की माँग कर अंगरेज़ों में डर भर दिया, समझे?'

'समझा।'

'देखो, अंगरेज़ शासक तुम्हें शिक्षा, अख़बार, यूनिवर्सिटी, रेलवे

---

1. खूब-खूब जी रहा है।
2. मेरे दोस्त, एक ग़लती मत कर बैठना।
3. बीरसा एक भारी ताक़त रहा होगा।
4. जान-बूझकर न्याय की यह हत्या क्यों?

वग़ैरह दे सकते हैं। उससे उनका स्वार्थ भी सिद्ध होता है। लेकिन तुम्हारे ये शासक तुम्हें मौलिक मानवीय अधिकार भी नहीं देना चाहते। देना चाहने पर उनके जो छोटे-छोटे प्रश्रय छोटे नागपुर में हैं—उन महाजनों, बनियों, ज़मींदारों, राजाओं के स्वार्थ पर चोट लगती है।'

'आप क्या निराश हो गये हैं?'

'बिलकुल नहीं। उसके सिवा इतने दिन सरकार ख़फ़ा हो जायेगी—इसलिए बंगाली वकील भी चुप थे। मेरा सौभाग्य है, कलकत्ता में शोरगुल के कारण इस ओर भी उनका ध्यान खिंचा है, वहाँ के स्थानीय बहुत-से वकीलों में से बहुतों ने मेरी सहायता की है। यह ज़रूर है कि अदालत में आकर खड़े होने की हिम्मत वे नहीं करते। वह मैं चाहता भी नहीं। देख तो रहे हो कि सरकार ने डरकर राँची शहर में साम्राज्य क़ायम कर रखा है। 'द बेंगाली' के निजी संवाददाता की रिपोर्ट पढ़ लो।'

'मैंने पढ़ी है।'

'उसमें लिखा था : 'आज सवेरे राँची पहुँचा। इस समय रात के 8-30 बजे हैं। अभी तक मुंडाओं पर चलाये जा रहे मुक़दमों को लेकर जितने लोगों के साथ भी बातचीत हुई—सभी ज़ुबान बन्दकर गूँगे बने रहे! यहाँ 'रेन ऑफ़ टेर्रर'[1] चल रहा है। इतने लोगों को इतने महीनों तक बेदर्दी से क़ैद करके रखने के बाद दौरा अदालत में उनके बारे में कहा गया है कि उन्हें क़ैद करके रखने में ग़लती हुई। इस बारे में भी कोई कुछ भी बात नहीं करता। जेल में अब भी 217 आदमी क़ैदी विचाराधीन हालत में हैं। उनसे ऐसा क्या भयंकर अपराध हुआ है, इस बारे में सन्देह-भर ही है! लेकिन वह क्या अपराध है, उसके बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं चला है; उस बारे में कोई कुछ नहीं जानता। रिपोर्टर के रूप में भारत के विभिन्न शहरों में तीस बरस से घूम रहा हूँ। निडर होकर, प्रतिवाद की परवाह किये बिना मैं कह सकता हूँ कि मुंडाओं के विद्रोह के मामलों में न्याय का जो तरीक़ा अख़्तियार किया गया है, अँगरेज़ी न्याय की धारणाओं से वह जितना विपरीत है, वैसा मेरी नज़र में कभी पहले देखने में नहीं आया।' आगे टिप्पणी की गयी :

'मामलों के फ़ैसला होने पर हाईकोर्ट में अपील के लिए जायेंगे। मुफ़स्सिल में क़ानून के नाम पर क्या चलता है, ज़िले के मालिक बनकर बैठे लोगों के आगे क़ानून को किस तरह सर झुकाना पड़ता है, उसे आप तभी जान सकेंगे।

---

1. आतंक का साम्राज्य।

'आप लोग कहते हैं, बेचारे क़ैदी सड़ रहे हैं। शुरू में ही जिन्हें पकड़ा गया, उनमें से कितने क़ैदी-हालत में ही मर गये—यह जानने की क्या इच्छा होती है ? तथाकथित विद्रोह में कितने लोगों को गोलियों से मारा गया ? यह मालूम हो जाता तो ज़्यादा अच्छा होता। भगवान जानते हैं, डिप्टी-कमिश्नर ने कहा, कौन-सा विद्रोह देखा था ! शायद दो-एक दिन बाद मैं भी बता सकूंगा कि कितने लोगों को मार डाला गया।

'जन-साधारण शायद चौंकेंगे !

'निर्दोष—समझ में आ रहा है कि वे निर्दोष हैं ! डिप्टी-कमिश्नर ने ही उन्हें अभियोगी माना है। वह भी माना है मीलों दूर से मिली ख़बरों के आधार पर। इनके हाथों में हथकड़ी लगाकर, पैरों और कमर में वज़नी ज़ंजीरें डालकर हर रोज़ अदालत में लाया जाता, जहाँ कि कोई सुनवायी नहीं होती—यह सभ्यता के नाम पर कलंक है !

'जेल से मैजिस्ट्रेट का इजलास तीन सौ गज से कुछ ज़्यादा दूर है। ज़ंजीरें इतनी भारी हैं कि थोड़ा-सा चलने पर ही बेचारे रुककर खड़े हो जाते हैं। वे जेल से बाहर आते हैं। इजलास सवेरे सात बजे बैठता है। पता नहीं सवेरे उसके पहले उन बेचारों को कुछ खाने को भी मिलता है या नहीं ! लेकिन डाकबँगले में बैठे-बैठे देखता हूँ कि जेल से लौटते वक़्त वे चूर-चूर होकर रास्ते में गिर पड़ते हैं।''

'बहुत लड़ा था, बीरसा ! राँची में मैजिस्ट्रेट, डी०सी० और पुलिस की दुश्मनी के चेहरे के पीछे छिपी मैत्री को लेकर अच्छी अंगरेज़ी में विवेचन किया था। सुरेन बैनर्जी ने केवल 'द बेंगाली' में संपादकीय लिखा था। रिपोर्टर राँची में बैठा रखा था, यही नहीं—लेजिस्लेटिव काउंसिल में भाषण भी दिये थे।

'जर्मन मिशन के डॉ० ए० नारकॉट मिशनरी हैं, प्रेम और दया में दीक्षित ! अकेले उन्होंने डिप्टी-कमिश्नर स्टूटफ़ील्ड का अभिनंदन किया। बन्दी मुंडाओं पर फ़ौजी मुक़दमे चलाये जायें, यह माँग उन्हीं ने उठायी !

'लेकिन इस माँग में वह अकेले ही थे।

'द स्टेट्समैन' और 'द बेंगाली' अख़बारों ने मुंडा लोगों के मुक़दमों से जो मज़ाक चल रहा था, उसे लेकर ख़ूब झगड़ा खड़ा किया, उससे ही क्या भारत सरकार का ध्यान भंग हुआ ?

'मैजिस्ट्रेट की जाँच और मुक़दमा 1900 ई० के अक्तूबर के अन्त तक चले।'

'सुरेन बैनर्जी मुंडाओं के मुक़दमे की बात अपने मन से निकाल न सके। तुम जानते हो बीरसा, वे कितने बड़े हैं, कितने नामी और कितने अमूल्य व्यक्ति हैं ?

'तुम तो किसी दिन टुइला बजाते थे, वंशी बजाते थे ! अखाड़े में तुम्हारी तरह कोई नाच नहीं सकता था ! चाईबासा के मिशन में बीच-बीच में हाथ में कुरता लिये मेरे पास चले आते थे। कहते थे : 'बता तो ? किधर से सिर डालू और किधर से हाथ डालूँ ?'

'तुम कहते : 'एक दिन देखना कि बाज़ार से सारा नमक खरीदकर अपनी माँ को ला दूँगा।'

'मौलिक मानवीय अधिकारों की बात के अर्थ तुम्हारे लिए क्या थे, यही सोचता रहता हूँ।

'नमक—घाटो के साथ, जंगल की ज़मीन में फ़सल उगाकर अपने ख़लिहान में उसकी उपज को ला रखना, बेगारी न देना, जंगल में अपने जीवन को शांति के साथ बिताना !

'यह क्या आसमान से सूर्य को पा लेने की इच्छा के समान हुआ ?

'उसी तरह की स्पर्द्धापूर्ण उद्धत यह इच्छा है क्या ?

'शायद यही हो।

'नहीं तो क्यों न्याय के नाम पर, सभ्यता के मुँह पर कालिख पोतकर, विचाराधीन बन्दियों पर इतना जुल्म हुआ ?

'क्यों सुरेन बैनर्जी को काउंसिल में गरजना पड़ा था—फ़ौजदारी कार्य-विधि क़ानून की धारा 107 के अनुसार मुंडा लोगों के विरुद्ध जो मुक़दमे हैं वे उठा लिये गये हैं ?

'अगर अब ठीक हुआ है तो उक्त धारा में विचार चलने के समय तक कितने दिन मुंडा बन्दी बने रहे ?

'हवालात में कितने विचाराधीन मुंडा मर गये ?

'अख़बार में जो प्रकाशित हुआ है कि रिहा हुए मुंडा लोगों को फिर पकड़ लिया गया है, यह समाचार क्या सही है ?

'अगर उन्हें नये चार्ज में पकड़ा गया है तो क्या सरकार जाँच करेगी कि वे जब पाँच महीने जेल में थे, तभी क्यों वे चार्ज लाना संभव न हुआ ?'

'द स्टेट्समैन' ने कहा कि सबसे बड़ी दुखदायी बात हुई है निर्दोष लोगों को कैद रखना ! लॉर्ड कर्ज़न से सुविचार, जल्दी विचार करने की प्रार्थना की गयी थी।

किन्तु शासन का पहिया क्या आसानी से हिलता है ?

'सब-कुछ हो रहा था, बीरसा। किन्तु जेल में आकर जब मुंडा लोगों के आगे खड़ा होता तो मेरी छाती फट जाती !

'वे सब-कुछ समझते थे।

'कितने प्यार से धानी मुंडा, भरमी मुंडा कहते : 'बाबू ? तू क्या करेगा ? तेरा कोई दोस नहीं। उन्हें हमारे विरुद्ध कोई दोस नहीं मिल रहा है। तभी तो जेल की यंत्रणा देकर सबको मारना चाहते हैं। उनकी समझ में नहीं आता। भगवान जहाँ मरे, वहीं हम मरें—बीरसाइत तो यही चाहते हैं।''

'शासन का पहिया नहीं हिलता, बीरसा ! मैं उस समय कोई करामात कर दिखाना चाहता था। हाँ, कुछ चमत्कार हो जाये ! मुंडा विद्रोह के मुक़दमे का कलंक-पूर्ण दुःस्वप्न किसी तरह समाप्त हो !

'बड़े लाट छोटे लाट पर दबाव डालते। छोटे लाट स्ट्रटफ़ील्ड को दबाते। स्ट्रटफ़ील्ड और कूट्स की उस समय धारणा हो गयी थी कि वे ही भगवान हैं ! सबके ऊपर और सबसे बाहर हैं।'

पहिया अजीब तरह से घूम रहा था।

गवर्नर-जनरल-इन-काउंसिल ने विचार व्यक्त किया था : 'अदालत का काम शुरू होने के समय से ही दुर्व्यवस्था दीखने में आयी'...'मुक़दमा खड़ा कर उसके बाद फ़ैसला करने में लज्जास्पद देरी हो रही है'...'रिहा हुए मुंडा लोगों में साठ को मुक़दमा शुरू होने से पहले प्रायः एक बरस तक क़ैद कर रखा गया।'

समझते थे : 'मुक़दमे का झटपट ठीक से निपटारा होना उचित था'...'अफ़सोस यह हुआ कि मुक़दमे में अड़ंगे डालने के दौरान चौदह लोग मर गये। मैजिस्ट्रेट की लापरवाही से वे शहीद हो गये ! उनमें से बहुत-से निर्दोष थे ! उनकी रिहाई का हुक्म भी हो गया था।'...इस 'देरी का नतीजा बुरा हुआ। सहज, सरल आदिवासियों में अंगरेज़ी शासन-व्यवस्था के बारे में इससे कोई अच्छी धारणा उत्पन्न नहीं होगी।'

गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया का कहना है : 'मुक़दमा तैयार करने के वक़्त इतनी देर का सबब था ठीक आदमी का नियुक्त न होना, समस्त कार्यभार को इलाक़े के शासन-तंत्र पर डाले रखना।'

इलाक़े का प्रशासन इस मत का विरोध अवश्य करता है, किन्तु मुक़दमा चलाने के दौरान कार्यनिपुण प्लैटेल को हटाकर, छोकरे और अनभिज्ञ कूट्स की नियुक्ति का कोई सन्तोषजनक कारण भी तो नहीं दिखा

पा रहा है।

गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया इस व्यवस्था को 'युक्ति और न्यायसंगत' नहीं समझती और कहती है—'बिना सोचे-समझे प्लैटेल की बदली करने के परिणामस्वरूप मुक़दमा पूरा होने में देरी हुई'...'डिप्टी-कमिश्नर स्ट्रट-फ़ील्ड ने मामले की गहरी समझ के अभाव का परिचय दिया है। मुक़दमे के दौरान इजलास में आकर मैजिस्ट्रेट ने कूट्स के साथ बातचीत कर अपने को परिवाद का शिकार बनाया।'

छोटे लाट ने 'मुक़दमे में देरी की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली,' और कहा कि 'विद्रोह को दबाने में स्थानीय प्रशासन ने तेज़ी, न्याय-परायणता और कामयाबी दिखायी'...'कठिनाई से संतुष्ट होने वाले विचारकर्ता को संतुष्ट करने योग्य यथेष्ट गवाही और सबूत जुटाने में एक विरोधी इलाक़े में उन्हें बहुत कठिनाई हुई, इसलिए ही इतनी देरी हुई। यह देर कोई ऐसी दोषपूर्ण नहीं है, उससे पहले की सफलता पर कोई धब्बा नहीं लगता।' लॉर्ड कर्ज़न ने कहा : आंचलिक प्रशासन ने जो काम किया है उससे 'इन सारी घटनाओं की संतोषजनक व्याख्या ज़रा भी मेल नहीं खाती।'

'अन्त में क्या हुआ, पता है, बीरसा ? स्ट्रटफ़ील्ड और कूट्स ने पुलिस की जिस तरह से मदद की, उससे जेल के अधिकारियों को मज़ा आ गया!

'वे क़ैदियों के सगे-सम्बन्धियों से कहते : 'रुपये लाओ, खाना लाओ, ख़ाली हाथों भी कोई आसामी से मिलने आता है ?'

'मुंडा लोगों के माँ, बाप, पत्नी, बच्चे, भाई, बहन की देने की सामर्थ्य कितनी है, वह तो तुम जानते ही हो!

'फिर भी वे लोग सामर्थ्य-भर ला-लाकर देते, और आँखें पोंछते-पोंछते लौट जाते। जेकब को बुलाकर कह जाते : 'साहबजी, आज भी नहीं मिलने दिया।'

'जेल के अन्दर जाकर पुलिस मुंडा लोगों से कहती : 'तुमसे मिलने कोई नहीं आता। कोई भी तो खोज-ख़बर नहीं लेता। अपने को बीरसाइत कहते हो ? तुम्हारे अपने लोगों ने सब बीरसा-धर्म छोड़ दिया है!'

'कहते : 'जेल में रहते हो, सरकार का भात खाते हो। उधर अकाल में तुम्हारे लोग सब मर रहे हैं। मिशन, महाजन, दिक्, ज़मींदार सबको मारना चाहा था न तुमने ? अब वे कोई मदद नहीं कर रहे हैं। करें भी क्यों ? वे ज़िन्दा रखते थे, तुम बेईमानी नहीं करते थे ? बेईमानी करते वक़्त कभी ख़याल नहीं आया ?'

'मैं उनके पास जाऊँ, सांत्वना की बात कहूँ, ऐसा कोई साधन भी नहीं था। मुंडा लोगों से किसी को मिलवाने का, बात कराने का हमें हुक्म नहीं था।'

मैजिस्ट्रेट के इजलास से दौरा अदालत। अन्त में 1900 ई० के बीचोंबीच दौरा अदालत में जुडीशियल कमिश्नर एफ़० आर० टेलर की सहायता के लिए एक अतिरिक्त दौरा जज भी नियुक्त हुआ।

टेलर ने षड्यंत्र के अपराध से सारे अभियुक्तों को रिहा कर दिया। उन्होंने षड्यंत्र के क़ानून की एक नयी व्याख्या निकाली। कहा : 'अपराध की व्यवस्था के समय की अवधि में षड्यंत्र में सम्मिलित थे इसे एकदम सन्देह-हीन रूप से प्रमाणित न कर सकने पर, किसी को षड्यंत्र के अपराध में सजा नहीं दी जा सकती।'

दल-के-दल मुंडा रिहा होते रहे। उससे गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया प्रादेशिक प्रशासन पर और भी ख़फ़ा हो गयी। 'द स्टेट्समैन' और 'द बेंगाली' जो कहकर शोर मचा रहे थे, अन्त में वही तो प्रमाणित हुआ! दोनों अखबार तो बराबर कहते आ रहे थे : 'अधिकांश मुंडा निरपराध हैं! कोई गवाही-सबूत नहीं है—फिर भी उन्हें गैर-क़ानूनी ढंग से जेल में बरस-भर रखा गया है!'

अब छोटे लाट भी लीगल रिमेंबरेंसर पर बिगड़ गये। उन्होंने कहा था न : 'हर एक के विरुद्ध काफ़ी संतोषजनक प्रमाण-गवाही जुटायी गयी है।' उन्होंने कहा था : 'पूरे-के-पूरे दल को ही सजा मिलेगी।

जेकब, 'द बेंगाली' और 'द स्टेट्समैन' के एक साथ लड़ाई करने के परिणामस्वरूप 1900 ई० के नवम्बर में एक दिन मुंडा विद्रोह का मुक़दमा समाप्त हो गया। उस दिन दिखायी पड़ा कि राँची और सिंहभूम में 482 मुंडाओं का फ़ैसला हुआ। सिर्फ़ 98 मुंडाओं को ही सजा मिली। 68 लोगों से शान्तिपूर्वक रहने को कहा गया; 296 लोग रिहा हुए। 462 लोगों का विचार तो हुआ! विचाराधीन अवस्था में मृतकों की संख्या, बीरसा को लेकर, इतने दिनों में बीस तक आ पहुँची!

एतकेदी में कांस्टेबल को मारने के लिए गया मुंडा, उसका बेटा सान्रे मुंडा, और चक्रधरपुर में कांस्टेबल की हत्या के लिए सुखराम मुंडा को फाँसी का हुक्म हुआ।

40 लोगों को जीवन-भर के लिए कालापानी की सजा हुई। पाँच लोगों को सात या उससे अधिक बरस के लिए बामुशक्कत कारावास की सजा हुई। 24 को पाँच बरस के कड़े कारावास की सजा हुई। चार लोगों को तीन बरस का कठोर कारादंड मिला। गया मुंडा की लड़की,

पत्नी, लड़के की पत्नी, और साथ में एक बरस-भर का बच्चा था। लड़की, लड़के की पत्नी और बच्चे को अन्त में एक दिन का कारादंड देकर छोड़ दिया गया।

सिर्फ़ बयासी लोगों की बात लिख सका। शेष सोलह लोगों की बात नहीं जानता।

गया, सान्रे और सुखराम की फाँसी का हुक्म रद्द करने के लिए जेकब ने बड़े लाट के पास भी अपील की। बड़े लाट ने वह प्रार्थना नहीं मानी।

'सब के जाने के बाद मेरे साथ गया, सान्रे और सुखराम की बातें हुईं। उस समय उनसे बातें करने के लिए मुझ पर कोई रोक-टोक नहीं रही थी।

'गया ने सहसा मुझसे कहा : 'जब तक हम हैं, तब तक तू भी रह, बाबू।''

क्यों कहा था, बीरसा ? उसने क्या समझा था कि उसके साथ-साथ मेरे अंदर, मेरे मूल्यबोध में, मेरे विवेक में कहीं एक अध्याय की मृत्यु हो जायेगी ?

'उसने क्या समझा था कि मैं काम छोड़ दूँगा ? नहीं तो क्यों पिता की तरह, स्नेहशील पिता की तरह, उसने पूछा : 'तू खायेगा क्या ? तू क्या मुंडा है कि जिसे न खाने का, भूखे रहने का अभ्यास हो ?'

'पिता की तरह...! पिता क्या होता है, माता क्या—मुझे पता नहीं। मैं तो अनाथाश्रम की ड्योढ़ी पर फेंका गया अनजान नवजात शिशु था।

'मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे। फाँसी का हुक्म सुनकर, अपील की अर्जी विफल हो गयी। यह जान कर भी एक निरन्न, ग़रीब, वृद्ध मुंडा, यही सोच रहा था कि मैं क्या खाऊँगा !

'धानी मुंडा ने कहा : 'लड़का रोया क्यों ?'

'गया मुंडा ने कहा था : 'मेरे सान्रे, मेरे जईमासि का-सा तो लड़का है ! मेरे दुःख से रो रहा है।'

'मुझसे बोला था : 'रो मत रे ! मरने का मुझे सचमुच डर नहीं है। बीरसाइत मरने से क्या डरता है ? उन्हें मरते देखा था न ? वे क्या डरे थे ?''

गया और सुखराम को पहले फाँसी हुई थी, उसके बाद सान्रे को। मरने के पहले उसने बहुत-से पानी से नहाना चाहा था, नया और साबित कपड़ा

पहनना चाहा था, कुछ खाना नहीं चाहा।

'उन तीनों में कोई भी पहान का मंत्रोच्चार नहीं सुनना चाहता था वे केवल तुम्हारा नाम ही ले रहे थे।'

'उसके बाद मैंने नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया।

'जेकब ने पूछा : 'क्यों ?'

'क्यों, यह क्या मुझे भी खुद खाक-धूल पता है ? मेरा कुछ भी तो नहीं है ! मैं इसी शिक्षा-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था का आदमी हूँ। यह व्यवस्था न तो देती है मौलिक मानवीय अधिकार, न सिखाती है विवेक-बोध। मुंडा विद्रोह के मामले में बंगाली क्रिस्तान अमूल्य अब्राहम को क्यों तकलीफ़ होती है ? क्यों मुक़दमे के खत्म होने पर मैंने नौकरी छोड़ दी ?'

'मुझे अब और कुछ छोड़ने को नहीं रहा ! मैं अब और कुछ कर नहीं सकता। मेरी उँगलियाँ कितनी पतली हैं, चमड़ा कैसा मुलायम है, मैं न तो तीर छोड़ सकता हूँ, न जानता हूँ बलोया चलाना। मैं इतना ही कर सकता था ! बाक़ी जीवन-भर तुम्हें समझने की कोशिश करूँगा।

'तुम्हें ! तुम कौन हो ? तुम क्या समय से पहले पैदा हुए थे ? या समय ने ही तुम्हें पैदा किया था ?

'तुम्हारा आन्दोलन क्या था ? मुंडा लोग क्या जंगल पर अधिकार पा सकेंगे ? आदिम गाँव में उनके पैदा होने का अधिकार क्या कभी माना जायेगा ? उनके जीवन से महाजन, बनिये, जोतदार, ज़मींदार, हाकिम, अमले-थाना, बेगारी के पत्थरों का-सा भार कभी उतर जायेगा ?

'जब तक नहीं उतरेगा, तब तक क्या तुम मर सकते हो ? शरीर के मर जाने से अमूल्य अब्राहम की तरह के आदमी मर जाते हैं। शरीर के मरने पर बीरसा भी मरता है ?'

'मैं चालकाड़ गया था, पहले बोर्तोदि गया था। डोन्का मुंडा को पहले हुआ फाँसी का हुक्म, उसके बाद अपील के परिणामस्वरूप सज़ा घट कर रह गयी जन्म-भर के लिए काला पानी।'

'बीरसा, वह छतनार का पेड़ देखा ? अब 1901 ई० का नवंबर है। अभी भी उस पेड़ में फूल हैं।

'पेड़ के नीचे साली बैठी थी। मुझे धानी ले गयी थी। धानी के साथ मुझे देखकर ही वह समझ गयी कि मैं उसका दुश्मन नहीं हूँ।

'मुझे बरामदे में बैठाया। चावल की किनकी पकाकर खाने को दी। परिवा धूल से लिपटा खेल रहा था। साली बोली : 'बात नहीं सुनता। बस खेलता रहता है।'

'मेरे लौटने के वक़्त साली और धानी पेड़ के नीचे आकर खड़ी हो गयीं। मैंने कहा : 'डोन्का नहीं रहा। अब तुम्हारा कैसे चलेगा ?'

साली की आँखें मुसकरा उठीं। बोली : 'क्यों ? तकलीफ़ होगी। भगवान सिखा गये हैं कि उलगुलान का अन्त नहीं है। भगवान का मरण नहीं हुआ। मुंडा के जीवन में कष्ट का अन्त होना ही तो भगवान का मरण होना है। उलगुलान का अन्त मानना होगा ? बताओ ?'

'मैं कुछ कह न सका। उसके बाद आया चालकाड़।'

'मैं जहाँ बैठकर यह नोटबुक लिख रहा हूँ बीरसा, यह एक चौड़ा-सा पत्थर है। पत्थर के बीच से होकर नदी बह रही है। नदी का नाम नहीं मालूम, किसी दिन मालूम कर लूँगा।

'लिख रहा हूँ, और बीच-बीच में सिर उठाकर देख लेता हूँ। सामने नदी की ओर देखती हुई एक बुढ़िया मुंडा माँ बैठी है। तुम्हारी माँ ! करमी !

'रोज़ सवेरे कोम्ता की लड़की उसे हाथ पकड़कर ले आती है, यहाँ बैठा जाती है। दोपहर को कोम्ता की स्त्री उसे यहाँ खाना लाकर खिला जाती है। रोज़ तीसरे पहर, नदी में बाघ के पानी पीने का वक़्त होने पर मैं, या सुगाना तुम्हारा बाप—उसका हाथ पकड़कर उसे वापिस उठा ले जाते हैं।

'उसका निश्चित विश्वास है कि किसी दिन तुम लौट आओगे, इसलिए वह तुम्हारी राह देखते-देखते पत्थर हो जायेगी। उस दिन उसे घर नहीं लौटना होगा।

'वह कहती है : 'तुम लोग मुझे घर क्यों उठा ले जाते हो ? यह नदी, गाछ, पहाड़, धरती, देख-देखकर ही मैं उसे लौटा पाती हूँ।'

'यहाँ से देखने पर वह पत्थर की मूर्ति ही-सी लगती है। उसके रूखे सफ़ेद बाल इकट्ठे कर बँधे हैं, शरीर के चमड़े में और मुँह पर असंख्य झुर्रियाँ हैं, आँसू-रहित आँखें बहुत दूर पर अभी भी तुम्हारी राह देख पाती हैं।'

'मैं लिख रहा हूँ। मेरे बिलकुल नीचे से नदी बहती है। मैं अन्तर में उसकी बात सुन सकता हूँ। पथरीली धरती, बिना फल के पेड़ों के जंगल का बन,

क्षितिज तक लहरों से खेलते उद्धत पहाड़ ! मेरे शरीर से बरफ़ीली हवा टकराती है। वे सब मुझसे कहते हैं : 'हम जिस तरह चिरकाल से हैं, संग्राम—बीरसा का संघर्ष—भी वैसा ही है। धरती पर कुछ समाप्त नहीं होता—मुंडारी देश, धरती, पत्थर, पहाड़, बन, नदी, ऋतु के बाद ऋतु का आगमन—संघर्ष भी समाप्त नहीं होता, इसका अंत हो ही नहीं सकता। पराजय से संघर्ष का अंत नहीं होता। वह बना रह जाता है, क्योंकि मानुस रह जाता है, हम रह जाते हैं।'

'मैं सुन रहा हूँ। अभी भी विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन सुनते-सुनते, तुम्हारी माँ को देखते-देखते, एक दिन विश्वास कर सकूँगा, यह भी मालूम है, बीरसा ! तो अभी सुनूँ ही ? उलगुलान का अंत नहीं। बीरसा का मरण नहीं। बीरसा का मरण...!'

'मुझे सुनने दो। सुनना सीखे बिना मैं विश्वास कैसे करूँगा ?'

●

महाश्वेता देवी

बंगला की प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी का जन्म 1926 में ढाका में हुआ। वह वर्षों बिहार और बंगाल के घने कबाइली इलाकों में रही हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में इन क्षेत्रों के अनुभव को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ उभारा है।

महाश्वेता देवी एक थीम से दूसरी थीम के बीच भटकती नहीं हैं। उनका विशिष्ट क्षेत्र है दलितों और साधन-हीनों के हृदयहीन शोषण का चित्रण और इसी संदेश को वे बार-बार सही जगह पहुँचाना चाहती हैं ताकि अनन्त काल से गरीबी-रेखा से नीचे साँस लेनेवाली विराट मानवता के बारे में लोगों को सचेत कर सकें।

गैर-व्यावसायिक पत्रों में छपने के बावजूद उनके पाठकों की संख्या बहुत बड़ी है। 1979 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।